अध्यक्ष कौन हो?

लेखक

केमेरोन हावले

Hindi Translation of the Book
'EXECUTIVE SUITE" by CAMERON HAWLEY]

अनुवादक

सूर्यनारायणसिंह शर्मा
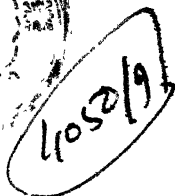
पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड
बम्बई

मूल्य — एक रुपया

विशाल संस्था के रूप में जमाया जा सकता है; उसके लिए किस प्रकार के परिश्रम, मनोयोग, त्याग और निष्ठा की आवश्यकता है, उसकी सफलता के लिए किस प्रकार ढूंढ़-ढूंढ़ कर सहयोगियों का संग्रह करना आवश्यक होता है और किस प्रकार प्रत्येक व्यवसायी का अपने व्यवसाय की राई-रत्ती से परिचित होना आवश्यक है।

प्राय: व्यवसायी लोग—विशेषत: भारत के व्यवसायी—अपने कर्मचारियों से व्यवहार करने का कौशल नहीं जानते। उन्हें बताया भी नहीं जाता। किन्तु इस उपन्यास को पढ़कर उन्हें ज्ञात हो जायगा कि अपने वैयक्तिक सचिव (प्राइवेट सेक्रेटरी) तथा अन्य कर्मचारियों से किस मृदुता और आत्मीयता से व्यवहार करना चाहिए और किस प्रकार उन्हें अपना विश्वासपात्र और आदरणीय बनाना चाहिए। इससे यह भी ज्ञान होगा कि अपने अधिकारियों के आगे अपने मनोभावों को किस प्रकार से छिपाना चाहिए, वाणी में किस प्रकार संयम रखना चाहिए; गोपनीय बातें किस चतुराई और निष्ठा के साथ छिपाये रखनी चाहिए और अवसर पड़ने पर कहनी चाहिए।

इस उपन्यास का रचना-कौशल भी अत्यन्त अद्भुत है। इसके दो खण्ड हैं। पहले खण्ड का शीर्षक है—'राजा चल बसा' और दूसरे का शीर्षक है 'राजा चिरजीवी हो'। यद्यपि प्रत्येक खण्ड में कुछ अध्याय हैं; किन्तु उन अध्यायों को और भी छोटे-छोटे अध्यायों में बाँटने के बदले उपन्यासकार ने एक नयी पद्धति का प्रयोग किया है और वह है प्रत्येक प्रसंग को उस प्रकार से स्थान और समय का निर्देश देकर प्रारम्भ करना, जिस प्रकार से नाटक का दृश्य प्रारम्भ किया जाता है। एक तो इस कुशलता के कारण यह उपन्यास नाटकीय वैचित्र्यपूर्ण हो गया है; दूसरे इसमें स्थान-स्थान पर, जहाँ कोई व्यक्ति अकेला पड़ता है, वहीं तत्काल ठहर-ठहर कर उपन्यासकार उसका मानसिक विश्लेषण का प्रारम्भ कर देता है जिससे पाठक को उसके मानसिक विक्षोभ और उसकी बाह्य प्रवृत्तियों का सामंजस्य स्थापित करने में सुविधा हो जाती है।

कथा-वस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद, देश और काल का वर्णन, शैली, कुतूहल, द्वन्द्व और उद्देश्य सभी दृष्टियों से यह उपन्यास ऐसा सफल हुआ है, कि प्रत्येक नये उपन्यासकार को इससे घटना-गुंफन के कौशल और कुतूहल की रक्षा का चातुर्य सीखकर नयी शैलियों के प्रवर्तन में योग देना चाहिए।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि 'पर्ल प्रकाशन' ने इस उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद कराया है। और मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि साहित्य-

रत्न श्री सूर्यनारायणसिंह शर्मा ने यह अनुवाद इतना सुन्दर और भावार्थपूर्ण रूप में किया है कि इसका व्यावसायिक जगत् के साथ-साथ हिन्दी साहित्यिक संसार भी सम्मान करेगा। मैं अनुवादक को हृदय से उनकी सफलता पर बधाई देता हूँ।

सीताराम चतुर्वेदी

पहला-भाग

शुक्रवार, २२ जून

राजा चल बसा....

प्रथम अध्याय

न्यूयॉर्क नगर,
२–३० तीसरा पहर

बाईसवीं जून के तीसरे पहर ढाई बजने से एक या दो मिनट पहले, ऐवरी बुलार्ड को कोई ऐसा आघात हुआ जो पीछे चलकर सिद्ध हो पाया कि उसके सिर की रक्त की कोई धमनी फट गयी। छप्पन वर्ष के पश्चात् उसके सिर के किसी कोने में कोई नन्हीं-सी लहू की नस बराबर वेगसे रक्त की धार बहाते-बहाते अचानक फट गयी। यह अत्यन्त तुच्छ-सी गड़बड़ी क्या हो गयी कि इस संसार के भीतर के एक संसार का पूरा रूप और ढाँचा ही अचानक उलट-पुलट हो गया। एक व्यावसायिक साम्राज्य अचानक सम्राट्हीन हो गया। ट्रेडवे कॉरपोरेशन का अध्यक्ष चल बसा और ऐसा कोई कार्यवाहक उपाध्यक्ष चुना नहीं गया था जो उसके बाद उसका स्थान ग्रहण कर पाता।

अपनी मृत्युके ठीक कुछ मिनट पूर्व से ही ऐवरी बुलार्ड का यह सोचना कि नया कार्यवाहक अध्यक्ष किसे बनाया जाय, कोई आकस्मिक संयोग की बात नहीं थी। पिछले तीन महीनों से, जब से जॉन फिट्जेराल्ड की मृत्यु हुई तभी से उसके मनमें अनेक बार यह प्रश्न आ-आकर चक्कर लगा चुका था। आज भी उसके मनमें इसके अतिरिक्त कोई दूसरी बात नहीं आ रही थी।

आज सबेरे जॉर्ज कासवेल ने उसे फिर स्मरण दिलाया था कि न्यास-कोष (इन्वेस्टमेंट फंड) के अधिकारी बार-बार पूछ रहे हैं कि ट्रेडवे कॉरपोरेशनका कार्यवाहक अध्यक्ष अभीतक क्यों नहीं नियुक्त किया गया? कासवेल ने कहा था, "इस बात के लिए आप उन्हें दोष नहीं दे सकते, क्योंकि जिनके सिर पैर व्यावसायिक सुरक्षा के इतने बड़े उत्तरदायित्व हों उनकी दृष्टि में प्रबंध की क्रमिक व्यवस्था का बड़ा भारी महत्व होता है।"

कासवेल सचमुच ठीक कहता था। ऐवरी बुलार्ड ने यह बात भलीभाँति मान भी ली थी। यदि हमें वर्ष के अन्त में नियमपत्र चलाने हों तो न्यास-सुरक्षा (इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट) की सहायता लेनी ही पड़ेगी। वहाँ के सधे-सधाये क्लर्क उन बन्धकों की जाँच उसी ढंग से करते हैं और सब लिखा-पढ़ी ठीक वैसी ही चाहते हैं जैसी उनकी हार्वर्ड व्यापारकी पोथियों में लिखी रहती है। किसी भी बड़े व्यवसायिक संघ में कार्यवाहक अध्यक्ष होना ही चाहिए। यदि आपके व्यवसाय-संघ में कोई कार्यवाहक अध्यक्ष न हो तो उनकी दृष्टि में कागजपत्र अधूरे हैं। बुलार्ड ने कासवेल को विश्वास दिलाया था कि और अधिक देर नहीं की जायगी। अगले मंगलवार को बोर्ड की बैठक में कार्यवाहक उपाध्यक्ष चुन ही लिया जायगा। आज आधी रात से पहले ही वह निर्णय कर लेगा कि यह पद किसे दिया जाय। इस विलम्ब का कारण केवल यही था कि वह अपने व्यवसाय-संघ से बाहर के योग्य व्यक्तियों को भी ठोकबजाकर देख लेना चाहता था कि इस पदके लिए हमारे अपने उपाध्यक्षों से बढ़कर कोई व्यक्ति कहीं और मिल सकता है या नहीं। ऐसे बाहरवालों की सूची में उसके पास जितने नाम थे, उनमें वह अंतिम नाम ब्रूस पिल्चर तक उतर आया था। शेष सब नाम उसने पहले ही छाँट डाले थे। आज दोपहर को वह उसी पिल्चर के साथ भोजन कर रहा था। कासवेलका मत था कि इस पदके लिए पिल्चर का नाम भी विचारणीय है। कासवेल ने कहा था—"बहुत लोगों का विश्वास है कि जबसे यह ओडेसा कम्पनी का अध्यक्ष होकर आया है, तबसे इसने उसे कहाँ-से-कहाँ पहुँचा दिया है। यह बात तो स्पष्ट ही है कि यह है अत्यन्त कुशल संचालक।"

अभी अपनी मृत्युसे पाँच मिनट पहले ऐवरी बुलार्ड ने चिपैन्डेल भवनके पाँचवें खण्ड के छोटे-से निजी भवन-कक्ष में पिल्चर तथा ओडेसा स्टोर्स कॉरपोरेशन बोर्ड के अध्यक्ष वृद्ध जूलियस स्टीगलके साथ भोजन किया था। लिफ्ट की प्रतीक्षा करते समय तक उसे इसका भान तक नहीं था कि मुझपर प्राणसंकट आनेवाला है। वह असाधारण स्वस्थता का अनुभव कर रहा था। भोजन का कार्यक्रम भी अत्यन्त सफल रहा था, क्योंकि वहीं उसने यह सिद्ध कर दिया था कि ब्रूस पिल्चर इस पद के योग्य नहीं है। वह मन-ही-मन इस बात का रस भी लिए जा रहा था कि पिल्चर या स्टीगल को अपनी यात्रा के वास्तविक उद्देश्य की तनिक-सी गन्ध दिये बिना ही मैंने यह बात सिद्ध कर दी।

कासवेल ने पिल्चर की जो प्रशंसा की थी, उसे सूने छज्जे के ढँके हुए एकान्त में स्मरण करते ही ऐवरी बुलार्ड के मुखपर संयत मुस्कान फैल गयी—"अत्यन्त

कुशल संचालक?" पिल्चर ने दो मिनट से भी कम समय में अपनी पोल खोल दी। बुलार्डने पिल्चर से यों ही चलता-सा प्रश्न पूछ लिया था कि "जिस संस्था के हाथ में छब्बीस ओडेसा–फरनीचर स्टोर हों उसका नकद मूल्य क्या होगा?" उसे फँसाने के लिए बस इतना-सा ही लालच पर्याप्त था। सुनते ही पिल्चर ऐसा उछल पड़ा था जैसे भूखा भेड़िया हो। आप चाहते तो उस धन-लोलुप की ठंडी भूरी आँखों के पीछे उसके मस्तिष्क की लगभग सारी प्रक्रिया देख सकते थे, जिसे करोड़ों डालरों के सौदे के खून की अचानक गन्ध मिल गयी थी।

लिफ्ट का द्वार सरकने लगा और ऐवरी बुलार्ड उसमें घुस गया। वह छः फीट चार इंच का लम्बा-चौड़ा, कसरती पुट्ठों वाला, भारी-भरकम व्यक्ति होते हुए भी ऐसे वेगसे घूमा कि वह लिफ्ट का द्वार पूरा खुलने के पहले ही द्वारकी ओर मुँह करके भीतर खड़ा हो गया। हाँ, पिल्चर धन-लोलुप था। उसे भाँप लेना कुछ कठिन नहीं था। उसकी आँखोंमें चमकती हुई ठंडी ज्वाला देखते ही आप बता सकते थे कि वह ऐसा ही है। उसमें उन मनुष्यों जैसी आग थी, जिनका मस्तिष्क सदा निन्यानवे के फेर में पड़ा रहता है। यह वह खेल है जो कागज के टुकड़ों पर बने हुए अंकों से खेला जाता है। कर आदि चुका डालने के पश्चात् नकद डॉलर के रूप में जो बचत हो उसीका उनके लिए महत्व होता है। उनके लिए डॉलर ही सर्वस्व होते हैं। अन्य किसी बात का उनके लिए कोई महत्व नहीं होता। वे कारखाने को कोई साँस लेनेवाला जीवित प्राणी न समझकर केवल डॉलर चिन्ह और बचत के खाते में अंकों की पंक्ति मात्र समझते हैं।

"नहीं, पिल्चर उस काम के योग्य नहीं है.... और पिल्चर का नाम उसकी सूची में सबसे अन्त में भी है। नहीं,.... बाहर वालों में से कोई भी योग्य नहीं है........क्लार्क भी नहीं, रटलेज भी नहीं; यूनाइटेडवालों का आदमी भी नहीं, अन्य लोगों में से भी कोई नहीं। सबमें कुछ-न-कुछ कमी मिल रही है।" कासवेल के शब्द उसके मस्तिष्क में गूँज रहे थे, "तुमने योग्यता का जो मानदंड बना लिया है, वह क्या तुम्हारी समझ में कुछ बहुत ऊँचा नहीं जान पड़ता? यदि तुम दूसरा ऐवरी बुलार्ड खोजने के फेर में हो तो मैं अभी से बता देता हूँ कि वह तुम्हें ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा। वह उत्पन्न ही नहीं हुआ। वह एक ही बनाया गया और फिर साँचा तोड़ दिया गया।"

यह बात उसने अस्वीकृत कर दी थी और आज भी अपने मन में फिर इन्कार कर रहा था—"मैं दूसरा ऐवरी बुलार्ड खोज कहाँ रहा हूँ और खोजूँ भी क्यों? मैं स्वयं अभी ले-देकर कुल छप्पन वर्ष का ही तो हो पाया हूँ। अभी

मुझे पैसठ होने में पूरे नौ वर्ष पड़े हैं। यही समय तो मेरे जीवन का सबसे बढ़िया समय होगा। अब बड़े वेग से मैं आगे बढ़ सकता हूँ। मेरा हाथ भलीभाँति सध गया है। अब न कोई गड़बड़ी होगी, न कोई नया काम प्रारम्भ करने में भूलें ही होंगी; न अनुभव-हीनतावाले ऐसे दोष ही हो पावेंगे जिनके कारण ट्रेडवे के निर्माण-कार्य की, प्रारंभिक वर्षोंमें गति मन्द पड़ गयी थी। जितना [illegible] कर डालूँगा। फिर छप्पनमें कोई बूढ़ा तो हो नहीं जाता। अभी तो ठीक-ठीक जवानी चढ़ पायी है।" कासवेल ने कहा था—"मै समझता हूँ तुम्हें कोई ऐसा आदमी ढूँढ़ लेना चाहिए जिससे तुम्हें थोड़ा विश्राम मिले। क्योंकि, ऐवरी! जिस ढंगसे तुम अपने शरीरको पीसे डाल रहे हो यह तुम्हारा अपने ऊपर अत्याचार है।"

"अत्याचार?" ऐवरी बुलार्ड मन-ही-मन मुस्कराया। "जार्ज कासवेल समझ नहीं पाया। यह अत्याचार नहीं है। यह गति प्रगतिशील मनुष्यके लिए आवश्यक तत्व है। यदि यह न हो तो जीवन रह कहाँ गया?"

लिफ्ट का द्वार खुला और ऐवरी बुलार्ड अपने चौड़े कन्धोंसे दालान की भीड़ चीरता हुआ आगे बढ़ गया। वह जिन पुरुषों और स्त्रियों के पास से होकर निकला वे झट उसकी ओर आँख उठाकर देखने लगे—आदर के भावसे नहीं, वरन् उसकी आकृति में ही कुछ ऐसा तेज था जो सहसा ध्यान आकृष्ट किये बिना नहीं रहता था।

उसने निश्चय कर लिया कि "अब मैं अपने ही सहयोगियों में से किसी को कार्यवाहक उपाध्यक्ष चुनूँगा और आज रात को ही चुन लूँगा। अगले सप्ताह होनेवाली बोर्डकी बैठकमें यह स्पष्ट भी कर दिया जायगा। पर वह हो कौन .....पाँचों में से कौन?"

उसकी सतर्क आँखोंने दालान के दूसरे छोरपर 'वेस्टर्न यूनियन' के नाम की तख्ती पढ़ ली। झट एक विचार उसके मस्तिष्क में घूम गया। आज निर्णय करनेसे पूर्व मैं अंतिम बार इन सबको एक साथ बुलवा लेता हूँ। हाँ, बस यही उपाय ठीक है। मैं उनके सामने कोई समस्या रख दूँगा... कोई भी, जैसे नार्थ केरोलिना में नया कारखाना खोलने की संभावना। यह सुनते ही सब सन्न रह जायेंगे। किसीको भान तक न होगा कि मैं इस विषय में कभी सोच भी सकता हूँ न हाँ, यह अच्छी परीक्षा होगी। मैं यह प्रस्ताव सुझा कर चुपचाप बैठ जाऊँगा ... ध्यानसे देखता हुआ, सुनता हुआ, विचार करता हुआ और फिर जो सबमें अच्छा जँचेगा उसे चुन लूँगा। हाँ, यही ठीक होगा... एक को चुनना

होगा। .... केवल एक को... अन्य लोग संभवतः मन-ही-मन बहुत कुढ़ेंगे ..कुछ दिन उन्हें हाथ-पैर पटकने दूँगा... पर धीरे-धीरे सब ठंडे पड़ जायेंगे। वे सभी भले हैं। सभी...होने भी चाहिए... न होते तो मेरे सहयोगी कैसे हो पाते ? वे समझ ही जायँगे कि हममें से केवल एक ही तो कार्यवाहक उपाध्यक्ष हो सकता है....वाल स्ट्रीट वाले भी तो केवल इतना ही चाहते हैं। पर इससे बनता-बिगड़ता क्या है...केवल कागज-पत्रों में नाम ही भरना। इससे कोई व्यावहारिक परिवर्तन तो हो जानेवाला नहीं...कुछ भी नहीं... कम-से-कम नौ वर्षों तक तो नहीं ही। नौ वर्ष—कुछ कम लम्बा समय नहीं होता। नौ वर्षों में कुछ-का-कुछ हो सकता है। एक वर्ष पहले कौन सोच सकता था कि फिट्जेराल्ड आँखे मूँद लेगा ?

वेस्टर्न यूनियन-कार्यालय के काउण्टर पर खड़ी हुई लड़की ने कोरे पन्नोंकी पुस्ती उसके आगे बढ़ा दी। उसने गंभीर आदेश के स्वर में कहा—"तार लिखो। कुमारी एरिका मार्टिन, ट्रेडवे टावर, मिलबर्ग, पेन्सिलवेनिया। ...अगली गाड़ी पकड़ रहा हूँ। छः बजे समितिकी बैठक बुलाओ। नीचे बुलार्ड नाम दे देना।" साधारण प्रतिरोध के भाव से अपने ओंठ खोलते हुए ज्योंही उसने यह समझानेके लिए अपना सिर उठाया कि आपको अपना संदेश स्वयं लिखना चाहिए, त्योंही वह अनुभव करने लगी कि उसके हाथकी पैंसिल कागज पर खुद चलने लगी है। उसने किसी ऐसे अज्ञात भयकी आशंका से वह संदेश फुर्ती से लिख लिया कि कहीं मेरे व्यवहार से ये अप्रसन्न न हो जायँ। जब उसने संदेश दुहरानेके लिए ऊपर सिर उठाया तो देखा कि वहाँ कोई नहीं है और मुड़ा-तुड़ा एक डॉलरका नोट उसके आगे काउन्टर पर पड़ा है।

चक्रिल-द्वार के बाहर गर्मी के सूर्य की तपन उस दालानकी अपेक्षा ऐसी प्रचंड प्रतीत हुई कि ऐवरी बुलार्ड ने उस चकाचौंधसे बचनेके लिए अपनी आँखें नीची कर लीं। उसी समय उसने देखा कि नीचे, धरतीपर कोई छोटा-सा सिक्का पड़ा हुआ चमक रहा है। कुछ सोचने-समझने से पहले ही वह उसे उठाने के लिए झुक गया। पर वह सिक्का नहीं था; केवल बसका टोकन था। जब उसने देखा कि सड़क की भीड़ भी उसे ताड़ गयी है तो वह शीघ्र सावधान हो गया। उसने वह टोकन जल्दी अपनी जेबमें सरका दिया और सूर्यकी चमक से बचनेके लिए आँखें झपकाते हुए उन आने-जानेवालों की भीड़ में से ही वह कोई खाली गाड़ी ढूँढ़ने लगा। अचानक सूर्यका प्रतिबिंब लेकर किसी गाड़ी की खिड़कीके काँच की चमक उसके मूँह पर क्षण भरके लिए ऐसे विचित्र ढंगसे

कौंध गयी, [illegible] 'गयी हो। किन्तु यह संवेदन जिस वेगसे महसूस हुआ उसी वेगसे निकल भी गया।

इतने में एक गाड़ी पटरीतक आयी और सड़क के कोने पर खुले हुए आग बुझानेवाले पानीके बम्बेकी नालीसे बहते हुए गँदे पानी की धारा को छपाक से उछाल गयी। छींटोंकी तनिक भी चिन्ता न करते हुए ऐवरी बुलार्ड उस गाड़ीके खुले हुए द्वार पर अपना अधिकारपूर्ण हाथ जमानेके लिए आगे बढ़ गया। उसमें बैठी हुई महिलाने किरायेके लिए नोट निकालकर दिया, पर चालकने अपने कंधे हिलाकर उसे स्वीकार करनेमें असमर्थता दिखायी। ऐवरी बुलार्ड ने झट से अपना बटुआ खोला और नोट भुनाकर उसका भुगतान कर दिया। ज्योंही वह स्त्री उतरी, त्योंही बुलार्ड उस महिलासे टकराकर सरसराता हुआ, आगे झुककर अपने दाहिने हाथका सहारा देता हुआ झपटकर बढ़ा। तभी अचानक उसे ऐसा जान पड़ा कि प्रचंड शूलका एक कोड़ा-सा उसकी आँखके पीछे तड़ाक से पड़ा और तत्काल किसी अत्यन्त भीषण शक्ति ने उसका सिर पकड़कर दाहिनी ओर को ऐसा मरोड़ दिया मानो कंधे परसे उसके गलेकी नस उखाड़ ली जा रही हो, उसका सिर बेकाम हुआ जा रहा हो, मस्तिष्क रक्त-प्रवाहके आवर्त में डूबा जा रहा हो और किसीने उसे किसी अन्धकारमय शान्त कन्दरा में ले जाकर पटक दिया हो।

२.३२ तीसरा पहर

पुलिस का सिपाही—ऐड केनेडी चुपचाप आग बुझानेवाले पानी के बम्बेका बहता हुआ पानी रोकनेवाले दो कारीगरों को खड़ा देख रहा था। इसी बीच उसकी दृष्टि चिरैन्डेल भवन के सामने खड़ी हुई गाड़ी के चारों ओर थोड़ी देर में आ जुटनेवाली भीड़की ओर घूम गयी। अपने काम में सधे होने के कारण, वह पुलिसमैन उस वेग से बढ़ती हुई भीड़के अर्द्धवृत्त को अपने लम्बे-लम्बे हाथोंसे चीरता हुआ भीतर बढ़ गया।

किसी भारी-भरकम आदमी की अधटँगी देह उसके सामने औंधे मुँह फैली पड़ी थी, जिसका आधा भाग गाड़ी के भीतर था और जिसकी टाँगें खुले हुए द्वार के बाहर बड़े विचित्र ढंगसे झूल रही थीं। मदिरा के वेग की कुछ आशंका से केनेडी लम्बी साँस खींचकर उसके शरीर पर झुका। पर मदिराकी कहीं कोई गंध नहीं थी।

"दुहाई ईसा की ! यह सब झँझट आज मेरे ही साथ न जाने क्यों हो रही है?" यह गुनगुनाहट कानोंमें पड़ते ही केनेडी ने ऊपर सिर उठाकर देखा। सुस्त ओठोंवाला, उदास मोटर-चालक पीछेकी गद्दी की ओर चुपचाप आँखें गड़ाये देख रहा था।

केनेडी का मुख गंभीर हो गया –"क्या बात है, मैक !"

"कुछ भी नहीं। मैं कहता हूँ न ! दुहाई ईसा की ! जो मैं कुछ भी जानता होऊँ। मैं तो अभी पैसे ही गिन रहा था, देखते हो न। इतने में धमाका सुनाई पड़ा। पटरीपर खड़ी एक महिला चिल्ला उठी और यह काण्ड हो गया।"

केनेडी ने हुंकार के साथ बात वहीं काट दी और अपने कंधे मोड़कर तथा घूमकर द्वार से बाहर निकल आया।

उसी समय एक बेतार (रेडियो) से समाचार देनेवाली पुलिसकी पहरा-गाड़ी सड़क के उस पार आ खड़ी हुई। केनेडी ने अपने हाथ का भोंपू बनाकर धीरे से पुकारा–'एम्बुलेन्स !' (रोगियों को ढोने वाली गाड़ी) पहरा-गाड़ी में बैठे हुए सार्जेंट ने स्वीकृतिसूचक सिर हिलाया और केनेडी उस आगे बढ़ती हुई भीड़के धक्के को पीछे ठेलने का व्यर्थ प्रयास करता हुआ घूम पड़ा। वह पुनः गाड़ीके भीतर पड़े हुए शरीर पर झुक गया और उसकी उँगलियाँ उस व्यक्तिकी जेबमें बटुआ ढूँढ़ने लगी, जिससे उसके नाम-ठिकाने का कोई ब्यौरा तो मिल सके। पर उसकी जेबोंमें कोई ऐसी वस्तु नहीं मिल सकी जो उसके शरीर को बिना हटाये हाथ लग सके।

केनेडी ने उस चालककी ओर फिर देखा, जो अभी तक उदास दृष्टिसे पिछली गद्दीकी ओर आँखें गड़ाये बैठा था –"इसने तुम्हें अपना कोई ठिकाना बताया था ?"

"दुहाई ईसा की ! मैंने कहा न कि इसने अपना कागज तक नहीं खोला और जब तक मैं कुछ समझ सकूँ, तबतक तो यह उलट गया।"

पुलिस के सिपाही के ओठ सिकुड़ गये और उसने झट जेबमें से अपनी पुस्तिका निकाली। पन्ने उलटते-उलटते उसे एक कोरा पन्ना मिल ही गया, जिसपर एक छोटी-सी पैन्सिल से उसने लिखा–'दो बजकर पैंतीस मिनट पर तीसरे पहर चिपैन्डेल भवन के सामने सड़क पर एक अज्ञात मनुष्य गिरकर समाप्त हो गया।'

उसके नेत्र पुस्तिकाके पन्नेसे खिसकते हुए हट गये। पहली ही बार उसने देखा कि उस औंधे पड़े हुए व्यक्तिका दाहिना पैर नालीके बहते हुए गन्दे पानीके

कारण झूल रहा है। उसने नीचे हाथ डालकर उसके पैरको टखने से ऊपर उठाना चाहा, किन्तु जान पड़ा कि वह किसी प्रकार भी उठाये नहीं उठ रहा है। उसने उसे छोड़ दिया और फिर पैर वैसे ही झूलने लगा। नालीका पानी उसके जूतेके चारों ओर बहता और लहरें लेता हुआ, उसपर गीले कागज की ऐसी तह लपेटता रहा कि एक-पर-एक परत जमते-जमते उसका अत्यन्त चमकदार चमड़ा पूरा-का-पूरा छिप गया।

२.३६ तीसरा पहर

जूलियस स्टीगलके निजी कार्यालयके मेडीसन एवेन्यूकी ओर अत्यन्त कलात्मक शैलीसे निर्मित खिड़कीकी चौखटपर खड़ा हुआ ब्रूस पिल्वर इस प्रकार सिगरेट पी रहा था, मानो वह किसी ऐसी कलाका अभ्यास कर रहा हो जिसपर उसका पूर्ण अधिकार हो।

विनोद का पुट देनेके प्रयत्न से भरे हुए स्वर में वह बोला—"यह मेरा व्यावसायिक मत है कि हम लोगोंने अभी जिस व्यक्तिका सत्कार किया है, वह बड़ा घुटा हुआ आसामी है।"

स्टीगल ने गाल फुलाते हुए खीसें निकाल दीं। वह पूरा गोल-मटोल, ठिंगना आदमी था और उसका मुँह भी बड़ा सुहावना और बड़प्पनसे भरा हुआ था— "मैंने कहा न ऐवरी बुलार्ड जैसे व्यक्ति से [illegible] बढ़ाना बड़े सौभाग्यकी बात है। ऐवरी बुलार्ड से बहुत सोच-समझकर सौदा करना होगा। उससे निबटना कोई बच्चोंका खेल नहीं है।"

पिल्वर ने बड़े नाटकीय ढंगसे अभिवादन किया—"सचमुच मेरे प्रिय स्टीगल। यही बात आपके सम्बन्ध में भी कही जा सकती है।" प्रसन्नता से बूढ़ा मुस्करा दिया, किन्तु शीलके साथ। उसने पूर्वी पैंसिलवेनियाकी पीछेकी सड़कोंपर मिठाईभरे डिब्बे बेचनेवाले अनियमित फेरीवालेके रूपमें अपना जीवन प्रारंभ किया था। अब सत्तर वर्ष की अवस्था में वह करोड़पति हो गया था। पर इतना बड़ा आर्थिक पद पा लेनें पर भी उसने अपने बाहरी व्यवहार में कोई परिवर्तन आने नहीं दिया था। वह ज्यों-का-त्यों निश्छल और सीधा-सादा बना हुआ था। उसमें वह प्रारंभिक चमक अभीतक बनी हुई थीं, जो किसी समय पैंसिलवेनिया की कंजूस डच गृहिणियोंको नगरके निर्धारित मूल्य से दस सेंट अधिक पर "देवदूत खाद्यकी टिकियोंके डिब्बे" मोल लेनेके लिये बाध्य

कर दिया करती थी। पिल्चरकी आँखें धीरे-धीरे उठते हुए सिगरेट के धुएँके साथ घूम चलीं—"क्या आप निश्चय समझते हैं कि बुलार्ड सचमुच खरीदना चाहता है?"

बूढ़े ने सिर हिलाया—"नहीं, उसने यह बात तो नहीं कही। ऐवरी बुलार्ड कम चतुर नहीं है। जैसे मैंने यह नहीं कहा कि मैं बेचनेको उत्सुक हूँ, वैसे ही उसने भी मेरा माल खरीदने की बात कही नहीं। पर यह रूमाल कह रहा है। यह रूमाल देखते हो न? जिस समय हम लोग भोजन कर रहे थे उस समय वह इसे मेज पर रक्खे-रक्खे पूरी रस्सी की भाँति उमेठकर बट गया है।"

पिल्चरने पुनः सिर झुकाया—"आपकी [illegible] मैं अभिनन्दन करता हूँ।"

"मेरे बेटे! कुछ बातें फेरीवाला बनकर सीखी जाती हैं। यदि कोई महिला अपना साया (एप्रन) ऐंठती दिखाई दे तो समझ लेना चाहिए कि गाँठ खोलनेवाली है। उसी प्रकार ऐवरी बुलार्ड भी आजकलमें ही पचास हजार ठनाठन गिन देंगे—साठ भी दे सकते हैं।"

ब्रूस पिल्चरने अपनी लम्बी टाँगें पुनः ठीक कीं और अपनी [illegible] उँगलियोंसे अपनी पतलूनका तनाव सीधा कर लिया—"क्या आप नकद की बात सोच रहे हैं, जूलियस?" स्टीगलने अपना सिर घुमाया—"नकद की? हाँ, नकद की। और क्या?"

ब्रूस पिल्चर के ओठोंके पीछे उस क्षण तक शब्द रुके रहे, जब तक उसने समझ नहीं लिया कि अब अवसर ठीक है—"संभवतः आप मेरी वह बात भूल गये जो मैंने प्रारंभमें ही इस सौदेकी संभावनाके सम्बन्ध में कहीं थी। ट्रेडवे के कोषमें कॉमन स्टॉकके दस हजार शेयर भी तो बिना दिये हुए पड़े हैं।"

स्टीगलने व्यग्रताके साथ कहा—"नकद ही ठीक है।"

"बड़े आश्चर्यकी बात है।" पिल्चरके स्वरमें धूर्तताकी तान चढ़ी हुई थी—"ट्रेडवेका स्टॉक बहुत दूर तक फैला हुआ है और यह कोई बड़ी होल्डिंग भी नहीं है। दस हजार शेयरोंका पूरा थोक हथियाकर आप एक डाइरेक्टर बन जायँगे। यह समझिए कि उस कम्पनीका सारा व्यावहारिक कारबार आपकी मुट्ठी में रहेगा। ऐवरी बुलार्डको भी आप सदा अपने अँगूठे तले रख सकेंगे।"

स्टीगलने मुस्कराते हुए अपने हाथ बढ़ाये—"मुझे क्या पड़ी है कि मैं उसे अपने अँगूठे तले दबाये रखूँ। मेरा अँगूठा तो यों ही बहुत बूढ़ा हो चुका है। इस वर्ष मैं सत्तर का जो हो गया हूँ।"

पिल्चर ने सहज भाव से बात बढ़ाई–"सारा भार आपको ही तो वहन करना नहीं होगा। मैं भी आपके काम में सहायता करता रहूँगा। बोर्ड की बैठकों में जाऊँगा–आपके स्वत्वोंका प्रतिनिधित्व करूँगा।"

बूढ़ेने अपने कंधे ऐसे उचकाये कि जान पड़ा मानो उसका गला ही उसमें समा गया हो।

पिल्चर ने प्रतिरोधकी शंका करते हुए भी बात चलाये रखी–"ट्रेडवे के साथ रहनेसे बहुत कुछ हो सकता है। वहाँ उत्पादन की एक-से-एक बढ़कर सुविधाएँ हैं, किन्तु प्रबन्ध अपर्याप्त है। वास्तविक कठिनाई यह है कि बुलार्ड वहाँ स्वयं सर्वेसर्वा बना हुआ है।"

बूढ़े ने फौरन पूछा–"क्या यह बुरी बात है?"

"और नहीं तो क्या? आपको यह भी तो देखना चाहिए कि इसमें जितनी पूँजी लगायी जा रही है उसके अनुपातसे लाभ कितना हो रहा है? इसे समझनेके लिये ही......."

स्टीगल के माँसल हाथके कम्पनने बात वहीं काट दी–"तुम अच्छे वकील हो, बेटा! तुम कानून जानते हो और तुम बड़े अच्छे अर्थ-सिद्ध आदमी भी हो। तुम स्टॉक और बोन्ड भी भली-भाँति समझते हो। पर मैं भी कुछ जानता हूँ। मैं कम्पनियों की नस-नस पहचानता हूँ। जीवन भर मैंने न जाने कितनी कम्पनियाँ छान मारी हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि वे सफल क्यों हैं? सबका सदा एक ही उत्तर मिलता है। तुम्हें सदा एक ही उत्तर मिलेगा–सदा एक आदमी का खेल। यह स्मरण रखो पिल्चर, जहाँ अच्छी कम्पनी दिखाई देगी, वहाँ निश्चित रूप से एक ही आदमीका खेल होगा।"

"संभवतः प्रारंभिक अवस्थामें, जब विस्तार और विकासकी अवस्था हो, पर जब संघ....."

"योग्य आदमी हो तो कम्पनी भी अच्छी चलेगी। ठीक आदमी न हो तो सब चौपट हो जायगा।"

पिल्चर झिझका पर उसकी महत्वाकांक्षा उसे बढ़ावा देती रही–"मैं यह समझाना चाहता था जूलियस कि किसी भी कम्पनीको अपने विकासकी विभिन्न अवस्थाओंमें विभिन्न प्रकारके प्रबन्ध की आवश्यकता होती है। जब वह अपने विस्तृत विकासके युगमें हो; उसे नयी-नयी योजना बनानी हो तब उसे निस्सन्देह ऐसा अधिनायक चाहिए, जो अपनी दोनों मुट्ठियोंमें कोड़े लेकर संचालन करता चला जाय–ऐवरी बुलार्ड के समान। किन्तु जब वह

अवस्था बीत जाय, तब आगेकी सफलता तो कार्य-संचालनकी योग्यता और उस स्थितिको चलाये रखने की शक्ति पर अधिक अवलम्बित होती है। उस समय भिन्न प्रकारके प्रबन्ध की आवश्यकता होती है।"

जूलियस स्टीगलकी गीली आँखोंके चारों ओर एक चमक खेल गयी—"वाह पिल्चर, वाह! बड़ा सुन्दर व्याख्यान रहा।"

"बात बिलकुल सच है। आप किसी भी बड़े व्यापार-संघ को ले लीजिए; जिन लोगोंने उसे प्रारंभ में चलाया, वे कोई भी उसके कार्य-वहनके समयतक ठहरे नहीं रहे।"

"पर बुलार्ड तो इतने अयोग्य नहीं सिद्ध हुए। पिछले वर्ष सब टैक्स-वैक्स दे—दाकर उन्होंने नकद चालीस लाख बचा लिये थे।"

"पर उन्होंने जितना कारबार किया था, उसे देखते हुए उन्हें दुगुना बचाना चाहिए था।"

स्टीगलकी आँखकी चमक बढ़कर खीस के रूप में फैल गयी—"क्यों पिल्चर, यदि ट्रेडवे इतनी बुरी कम्पनी है, तो तुम नकद लेनेके बदले स्टॉक लेने का आग्रह क्यों कर रहे हो? कम्पनी बुरी है तो स्टॉक भी बुरा होगा।"

पिल्चरने अपना सिर हिलाया—"नहीं; कम्पनी तो बहुत अच्छी है, जहाँ तक उसकी दृढ़ता का प्रश्न है। कमी केवल इस बात की है कि उसमें आधुनिक ढंगकी व्यवस्था नहीं है—पक्का प्रबन्ध नहीं है। आप क्या नहीं जानते कि बुलार्ड ने अपने साथ कोई कार्यवाहक उपाध्यक्ष-तक नहीं चुना है। उसका कार्यवाहक उपाध्यक्ष फिट्जेराल्ड पिछले मार्च में ही चल बसा। पर बुलार्डने आजतक उसके रिक्त स्थानपर किसीको नियुक्त नहीं किया। वहाँ पाँच-पाँच उपाध्यक्ष हैं और सब समान अधिकारवाले। सोचिए तो?"

स्टीगलकी चुप्पी फिर भंग हुई—"बुलार्ड तो हैं न? कौन जाने उन्हींको वे लोग पर्याप्त समझते हों।"

ब्रूस पिल्चरने निश्चय कर लिया कि जूलियस स्टीगल इस समय जो मेरे सहारे विनोदका रस ले रहे हैं, उसे टाल दिया जाय—"मान लीजिए, ऐवरी बुलार्ड को कुछ हो जाय तो?"

"वह तो अभी पट्ठा बना हुआ है"।

"नौ सितम्बर को पूरे छप्पनका हो रहा है।" पिल्चरने टोका, इस आशा से कि उसकी इस सूचनाकी अत्यन्त बारीकी से बूढ़ा प्रभावित हो जायगा।

स्टीगलने कन्धे हिलाये—"छप्पन में तो मनुष्य पट्ठा जवान होता है। छप्पन

की अवस्था में तो मैंने ही अपना काम प्रारंभ किया था। और जानते हो मेरी क्या अवस्था है पिल्चर ? अगली वर्षगाँठ पर मैं पूरे इकहत्तरका हो जाऊँगा।"

अत्यन्त कर्तव्यशीलताके साथ ब्रूस पिल्चर ने सूत्र पकड़कर कहा—"नहीं-नहीं. स्टीगल ! कोई संदेह तक न करेगा कि आप इतने वृद्ध हो गये हैं।"

"इकहत्तर।" बूढ़े ने दुहराया। उसकी आँखें इस संतोषसे अत्यन्त संयत होकर चमक उठीं कि उसने अपने इस नये अध्यक्षको तर्कमें पुनः पछाड़ दिया। उसे पिल्चर फूटी आँखों नहीं सुहाता था। पर इस बात को उस पर प्रकट न करना अभी बहुत आवश्यक था। उससे अभी काम लेना था। पिछले कुछ वर्षों से व्यापार ऐसा जटिल हो चला था कि पिल्चर-जैसे आदमी की ही जरूरत थी। केवल स्टोर चलाना और सामान लेने-बेचनेका ढंग जानना अब पर्याप्त नहीं था। परसाल अकेले ही पिल्चरने करों में लगभग दो लाख डॉलर बचा लिये थे।

खिड़कीके नीचे सड़कपर एक भोंपू चीख कर मौन हो गया और पिल्चर घूमकर अपनी आँखें दूसरी ओर फेरनेके लिए नीचे झाँकने लगा। उसे बड़ी निराशा हुई कि ट्रेडवेका डाइरेक्टर बननेकी उसकी सारी साध मिट्टीमें मिल गयी। ओडेसा कम्पनी तो अभी ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रही थी जबकि ट्रेडवे उन्नतिकी सीढ़ीके शिखरपर पहुँच चुकी थी। यदि वह किसी प्रकार ट्रेडवे के बोर्ड में पहुँच जाता तो न जाने कहाँ तक ऊपर उठ जाता; क्योंकि ऐवरी बुलार्ड से निबटना इतना ही सरल था जितना बूढ़े स्टीगलसे।

एम्बुलेन्स आकर रुक गयी और घनी भीड़का अर्धचन्द्र मुँह सँड़सीके समान खुलकर श्वेत कपड़ेवाले झपटते हुए मनुष्यको निगल कर बन्द हो गया। पिल्चरने अपना ध्यान उधर कुछ अधिक लगा दिया, किन्तु इतना ही कि जिससे बूढ़े जूलियसके शब्दोंकी बढ़ती हुई गूँज बन्द हो जाय। श्वेत वस्त्रधारी मनुष्य संकेत कर रहा था और चालक उन भीड़को पीछे ठेलनेके लिए गाड़ीमें से रोगी-शय्याको खींचता हुआ उसे झुला रहा था, सीधा कर रहा था और उस औंधे पड़े हुए शरीरको उठानेके लिए नीचे झुक रहा था। पिल्चरने कुछ कहना प्रारंभ ही किया था कि उसका स्वर उसके गले के भीतर ही जमकर रह गया। जिस व्यक्तिको उठाकर वे रोगीके डोले पर रख रहे थे, वह निश्चय ही ऐवरी बुलार्ड था।

बूढ़ा भी उसके पास तक सरक आया था। चौखटपर उचककर झाँकते हुए वह साँस भरकर बोला—"यह तो ऐसा जान पड़ता है जैसे......।"

"यह ऐवरी बुलार्ड ही है।" पिल्चरने अत्यन्त गंभीरताके साथ कहा।
जूलियस स्टीगलके ओठोंसे आह निकल पड़ी।

डोलेपर पड़ा हुआ शरीर कम्बलसे ढँक दिया गया था; और पिल्चर घूमकर सीधे तनकर खड़ा हुआ और अपनी आँखें सिकोड़कर बोला—"वह मर गया!"

जूलियस स्टीगल यों ही बूढ़ा था। उस समय वह और भी बूढ़ा, स्तब्ध और एकाग्र होकर यह दृश्य देख रहा था—"अभी एक क्षण पहले ही तुम कह रहे थे न कि यदि उसे कुछ हो जाय तो?"

पिल्चर उसके पास से होता हुआ झपटकर निकल गया और मेजपर रखे हुए टेलीफोनको खटखटाने लगा—"मैं श्री पिल्चर। कासवेल एण्ड कम्पनीसे मिलाओ।" वह चोंगे पर बोला। पर झट उसके मनमें एक नयी बात कौंध गयी।....जॉर्ज कासेवल बहुत पूछताछ करेगा....वह तो ट्रेडवे का डाइ-रेक्टर है।

उसने आदेश दिया—"ठहरो! स्लेड एण्ड फिंचसे मिलाओ। मिस्टर विन-गेटसे।"

उसने टेलीफोन का चोंगा हाथसे ढँककर कहा—"इस घटनासे जो लाभ उठाया जा सके उसे छोड़ना नहीं चाहिए।"

वह बूढ़ेके उन झुके हुए कंधों के पीछे से बोल रहा था, जो खिड़कीका प्रकाश न पड़नेके कारण काले पड़ गये थे। भोंपू का स्वर धीरे-धीरे मन्द पड़ता हुआ अन्तमें सड़कके कोलाहलमें पूर्णतः विलीन हो गया।

फोन मिल गया—"विनगेट? मैं हूँ ब्रूस पिल्चर। यह बात ठीक से समझ लो।" उसने झटसे अपनी कलाई-घड़ी पर दृष्टि डाली। "शेयर बाजार की घंटी बजनेमें अब कुल इक्कीस मिनट रह गये हैं। ट्रेडवेके कॉमन शेयर बेचने प्रारंभ कर दो। बाजार के बंद होनेसे पहले जितने बेच सको, बेच डालो। क्या? मैंने कहा कि जितने निकाल सको-निकाल दो। और इसके लिए मेरे कार्यालयमें मुझे फौरन सूचना देना।"

कक्ष की शान्ति में चोंगा रखनेकी ठनक सुनाई दी। स्टीगल उसके सामने आ खड़ा हुआ था। उसका मुँह सफेद पड़ गया था और वह ज्यों-ज्यों अपने मोटे-मोटे ओठ गीले कर रहा था—"तुम...क्या तुम समझते हो कि...?"

"जब प्रातःकाल लोगों को ज्ञात होगा कि ऐवरी बुलार्ड संसारसे कूच कर गया है तो शेयरोंका भाव दस अंश गिर जायगा।" उसने फिर घड़ीकी ओर

देखा—"धत् तेरेकी! कुल बीस मिनट रह गये हैं। दो सौ शेयर भी निकल जाय तब भी बड़ा भाग्य समझो।"

स्टीगल ने अपने सूखे ओठों से उसे घूरते हुए देखा—"देखो, कुछ मार्ग ऐसे बुरे होते हैं कि उनके द्वारा पैसा बनाना उचित काम नहीं लगता।"

ब्रूस पिल्चर के मुखपर कुटिल मुस्कान दौड़ गयी—"जूलियस! यदि आप को स्वीकार हो तो मैं यह सौदा अपने नाम से करने को पूर्णतः तैयार हूँ।"

ब्रूस पिल्चरने द्वार बन्द होते देखा और वह अपनी लम्बी उँगलियोंवाले दाएँ हाथके सिरसे मेज पर वेगसे खटखट करने लगा।

२.४४ तीसरा पहर

ट्रेडवे कार्पोरेशनकी न्यूयॉर्क शाखाके व्यवस्थापक आज उस प्रकारका तीसरा पहर बिता रहे थे, जैसे वे सदा उस समय बिताया करते थे, जब वे जान जाते थे कि आज मिस्टर बुलार्ड नगर में आये हुए हैं। न जाने वे कब आ धमकें और कौन जाने न भी आवें.....आप कुछ निश्चय नहीं कह सकते। आप यही कर सकते हैं कि गद्दीपर बैठे सिकते रहिए, पसीना बहाते रहिए, प्रतीक्षा करते रहिए और यह देखनेके लिए कार्यालय पर ध्यान लगाये रहिए कि कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं होने लगी है। जहाँ एक मिनट की भी ढिलाई हुई....और किसी प्रकारका भी काम गड़बड़ हुआ कि ठीक उसी समय सामनेके द्वार से वृद्ध बुलार्ड निश्चय ही आते दिखाई पड़ जायेंगे। वे व्यक्ति ही कुछ ऐसे ढंग के थे...सारे प्रदर्शन-कक्ष में कहीं कोई एक भी बिना झाड़ा-पोंछा हुआ स्थान रह गया कि भगवान् की सौगन्ध! वह नाक की सीध वहीं जा पहुँचेगा।

ओल्ढम ने अपनी मेज पर रखी हुई चांदीकी सुराही से एक गिलास पानी निकाला। पानी कुछ गुनगुना था और उसका स्वाद भी कुछ ऐसा मटियल था कि उसका गला घुटने-सा लगा। उसने मुँह में भरा हुआ पानी उसी गिलास में उगल दिया और उसे ऐसा जान पड़ा जैसे उल्टी आनेवाली हो।

"मिस्टर ओल्ढम! मैं, ओह मुझे खेद है।"— यह थी उसकी वैयक्तिक-सचिव—'मेरी वोसकॅम्प', जो द्वार से घबराहट के साथ लौटी चली जा रही थी।

"नहीं, नहीं; चली आओ, कुमारी वोसकॅम्प—" उसने आदेश दिया—"क्या इतना ध्यान रखा करोगी कि मुझे प्रतिदिन सबेरे ताजा पानी मिल जाया करे?"

"पर आप तो कभी स्पर्श तक नहीं करते। मैं...हाँ, श्रीमान्। मुझे खेद है, श्री ओल्डम।"

"खैर...और क्या बात है?"

"श्री फ्लैनरी आये थे और जानना चाहते थे कि क्या श्री स्टॉक को वे चार बजे यहाँ ला सकते हैं? वे उन मेजोंकी बनावटके आरोपके सम्बन्ध में मिलना चाहते हैं। किन्तु यदि आप अत्यन्त व्यस्त हों—तो......?"

ओल्डम ने बड़ी घबराहटके साथ अपने ओठ चलाये—"मैं कुछ कह नहीं सकता। श्री बुलार्ड नगरमें ही हैं। न जाने कब आ पहुँचे।"

"श्री बुलार्ड? क्या वे तीन पाँच की गाड़ीसे मिलबर्ग नहीं लौट रहे हैं?"

"तीन-पाँच?"

"हमने रेलगाड़ीके शयन-शकुट (स्लीपिंग-कार) में उनके लिए स्थान सुरक्षित करा दिया था और उसका टिकट उनके पास होटल में भिजवा दिया था। उन्होंने ठीक भोजन से पहले ही हमें सूचना दी थी।"

"तुम्हें उसी समय मुझे बता देना चाहिए था"— वह भभक उठा।

"मैं जानती थी कि आप—मुझे खेद है, श्री ओल्डम।"

"अच्छा-अच्छा।" अपने बुझते हुए क्रोधको रोकते हुए उसने कहा—"तुम्हारा कुछ दोष नहीं, कुमारी बोसकॅम्प। हाँ, आजका दिन ही कुछ ऐसा था।"

"मैं श्री फ्लैनरी से कहे देती हूँ कि यदि वे कलतक प्रतीक्षा करें तो ठीक होगा। उन्होंने कहा भी है कि यदि आज व्यस्त हों तो कोई बात नहीं।"

ओल्डम ने कृतज्ञताके साथ सिर हिलाया—"हाँ, कल ही पर रखो।"

जबतक उसने द्वार बन्द होते नहीं सुन लिया, तबतक वह चुपचाप देखता रहा और फिर उसने परदे के समान अपनी हथेलियाँ अपने मुखपर इस प्रकार रख लीं मानो भय से मुँह ढँक रहा हो—"मुझपर कुछ-न-कुछ संकट अवश्य आनेवाला है। मेरे साथ कभी इस प्रकारकी बात ही नहीं हो पाती थी.... कौन जाने मैं ही पागल हो गया हूँ। नहीं, मुझे यहाँ डटे ही रहना चाहिए। यदि कहीं उस बूढ़े बुलार्ड को गंध भी मिल गयी कि मैं यहाँ से सरक जाया करता हूँ.....यदि कभी उसे शंका भी हो गयी.......।"

"हरामजादा!" वह ऊँचे स्वरसे फुसफुसाया और फिर उसे दुहराया। इन अक्षरोंने उसके हाथकी गीली हथेलियोंमें मानो कुछ हल्की-हल्की जलती हुई-सी झोंक उत्पन्न कर दी। इस प्रकार बैठे-बैठे प्रतीक्षा करते रहना मनुष्यके लिए नरक है.... बैठे-बैठे फोड़ा नहीं होगा तो क्या होगा... ऐसी भयंकर प्रतीक्षा.... न जाने...

२.५१ तीसरा पहर

ऐनी फिनिक ने महिलाओंवाले स्नान–कक्षका द्वार इतना ही खोला जितने से झाँक कर यह निश्चय हो सके कि भीतर और कोई तो नहीं है। तब वह द्वारके भीतर घुस गयी। उसने झपटकर कागज का रूमाल उठाया और तीन वेगपूर्ण डग भरकर शौचालयके भीतर प्रविष्ट हो गयी।

उसने अत्यन्त साहसके साथ अपना बटुआ खोला और उसमें से एक भीगा हुआ कीचड़से सना पुरुषोंवाला बटुआ निकाला। उसके भीगे हुए चमड़े को धीरेसे फैलाते हुए उसने देखा कि बीचमें हरे नोटोंकी मोटी-सी गड्डी भी है। अनिश्चयके उस क्षणमें उसके ओठ काँपे और उसने वह पूरी गड्डी मुट्ठी में लेकर उसे लपेट कर अपनी कुर्तीमें सामने की ओर ठूँस ली।

अत्यन्त वेगसे साँस लेते हुए वह यह निश्चय करनेका प्रयत्न करने लगी कि इस बटुएँका किया क्या जाय?

उस बटुएँमें बहुत-से छोटे-छोटे कार्ड भरे हुए थे। वह धीरे-धीरे उन गीले सटे हुए पत्रकों को अलग-अलग करके उनपर छपे हुए अक्षरों और पानीसे मिटे हुए हस्ताक्षरोंको पढ़ने लगी। उनमें विनोदगृहोंकी सदस्यताके पत्रक थे, भोजनालयों के साख-पत्रक थे, बीमेके परिचयपत्रक थे. . . ऐवरी बुलार्ड, मिलबर्ग, पेन्सिलवेनिया. . . ऐवरी बुलार्ड, प्रेसिडेंट, ट्रेडवे कॉर्पोरेशन।

"किसीको इनकी वैसी ही आवश्यकता नहीं है जैसी कि मुझे नहीं है।" उसने चुपचाप खड़े होकर मन-ही-मन फुसफुसाहट के साथ कहा। उसने एक-एक करके नव पत्रक फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। शौचपीठ के गमले के पानीमें उन रंगीन कागज के टुकड़ों की भँवरें पड़ गई और जब उसने उसका पानी खींचकर छोड़ दिया तब तो वे उसमें चलित-चित्रोके सर्मान नाच उठे।

उस बटुएँको फेंक देना बड़ी मूर्खता थी। कौन जाने उसपर उभरे हुए नामाक्षर सच्चे सोनेके हों। कौन जाने यह बटुआ भी सूखने पर ज्यों-का-त्यों हो जाय और किसीको भेंट भी कर दिया जा सके, पर ईडी को नहीं। अब मैं कभी कोई वस्तु ईडीको नहीं दूँगी. . . ऐसा ओछा आदमी मैंने नहीं देखा, जो किसी भी लड़कीके प्राण संकटमें डाल दे और प्रतिदिन उसे यही भुलावा देता रहे कि वह उस डाक्टरके लिए रुपया लेने जा रहा है। अब तो मेरे ही पास रुपया आ गया है। ईडी जाय जहन्नुम में।

उसकी आँखोंमें आँसू छलक आये और वह बड़े वेगसे काँपने लगी—"ऐसा कभी नहीं हुआ था। ऐसा कभी हुआ ही नहीं। यह होना भी नहीं के बराबर है। आज पूरे सप्ताह में मै पहली बार चॉकलेट लेने गयी थी। यदि मैं ठीक उसी समय न चली आती तो मुझे चिपैन्डेल भवनके सामने पटरीके पास कीचड़में सना पड़ा हुआ यह बटुआ कभी दिखाई न देता। इसीने यह विश्वास करने का अवसर दिया कि इसमें कुछ अवश्य है।"

स्नानघर की ओर कोई चला आ रहा था।

ऐनी फिनिक ने फिर उस गमलेमें पानी खोल दिया। उसकी ध्वनि वहाँ के मौन आतंक से उसकी रक्षा करने लगी।

"मैं इसे चुराती नहीं हूँ" —उसने मन ही मन कहा—"जब कभी मुझे वह मिलेगा, मैं उसकी पाई-पाई चुका दूँगी; मै उसका नाम नहीं भूल सकती—एवरी बुलार्ड।" उसने सोनेके उभरे हुए नामाक्षरोंको देखा। ये मुझे स्मरण रखने में सहायक होंगे . . . . . एवरी बुलार्ड के लिए ए. बी.।

द्वितीय अध्याय

मिलबर्ग,
पेंसिलवेनिया,
२.५४, तीसरा पहर

ऐवरी बुलार्डने न्यूयॉर्कके चिपैन्डेल भवनसे जो तार भेजा था, वह पेंसिलवेनिया में मिलबर्गके यूनियन कार्यालयमें दो बजकर चौवन मिनट पर प्राप्त हुआ। ज्योंही लम्बे पीले फीतेपर 'ट्रेडवे टॉवर' शब्द छपा, त्योंही मेरी हॅरने अपनी कुर्सी उस तालिका-पटल की ओर घुमा ली जिसके द्वारा वह उस संवाद को ट्रेडवे टॉवरके तारमुद्रक (टेलीप्रिंटर) पर पुनः प्रेषित करने वाली थी।

ज्योंही वह घूमी उसकी आँखें भी उसी खिड़की की ओर स्वभावतः घूम गई, जिसमेंसे वह ट्रेडवे टॉवरके उस आकाशभेदी स्तम्भको भली-भाँति देख सकती थी, जो गर्मीसे धुँधले पड़े हुए आकाशकी नीलिमाके आगे अत्यन्त श्वेत होकर चमक रहा था।

इतनी चपल गतिसे ट्रेडवे टॉवरकी ओर मेरी हॅर के देखनेका उस संवाद भेजनेसे कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। मिलबर्ग में रहनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके समान वह दिनमें सैकड़ों बार उसे देख लिया करती थी; क्योंकि नगरका कोई भाग ऐसा नहीं था, जहाँसे वह टॉवर दिखाई न देता हो और वहाँ कोई ऐसा पुरुष या कोई ऐसी नारी भी नहीं थी, जिसकी आँखें देरतक उसे देखती न रह जायँ। तड़के उठकर अपने काम पर जानेवाले लोग प्रायः पौ फटनेसे पहले ही ठंडकमें चलते हुए इस बातपर चकित रह जाया करते थे कि गर्म सूर्य कहाँ से आकर टॉवर के शिखरपर अपनी पहली किरण डाल रहा है। संध्याके समय जब सारे नगर के लिए सूर्य अस्त हो जाता था, तब भी वे कभी-कभी देखते कि टॉवरका शिखर अब भी रंगीन प्रकाशकी दिव्य आभासे स्नान किये हुए है।

यदि यह ट्रेडवे टॉवर कहीं मॅनहाटन द्वीपपर बनाया गया होता तो वह उसी जंगलके वृक्षके समान होता जिसका न कोई महत्त्व होता और न भव्यता। किन्तु मिलबर्ग में तो यह आश्चर्योंका आश्चर्य बना खड़ा है। उस नगरमें कोई भवन छः खण्डों से ऊँचा है ही नहीं; उन भवनोंके बीच यह टॉवर अपने अवि-

श्वसनीय चौबीस खण्डोंकी ऊँचाई तक उठा चला गया है। उसके इस विशाल आकारके ही समान उसकी चमक भी उतनी ही प्रभावशालिनी है। वह श्वेतता भी इतनी स्वच्छ है कि उसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई अलौकिक शक्ति उसपर उस कालिख की परत बैठनेसे रोकती चलती है, जो उस नगरके निचले भागोंमें बने हुए पुराने मानवोंको निरंतर रंगती रहती है।

मिलबर्गमें ऐसे बहुत ही कम लोग हैं, जो ट्रेडवे टॉवरको बहुत सुन्दर वस्तु न मानते हों। इन थोड़े-से लोगों में ही एक हैं-डब्ल्यू हॅरिंग्टन डॉड्स। यद्यपि इस टॉवरको बने दो दशाब्दियाँ बीत चुकी हैं, फिर भी उसकी रूपयोजना पर श्री डॉड्सकी कटु आलोचना अभीतक कुछ भी कम नहीं होने पायी है। वे अब भी उसके लिए कहा करते हैं कि यह भवन-शिल्पका भयंकर रूप, वैवाहिक केक की कल्पनाके सहारे, इटलीके किसी अनाड़ी, भवन-निर्माताने, जिसे पेस्ट्री पकानेवाला रसोइया होना चाहिये था, ला खड़ा किया है।

लोगोंका कहना है कि श्री डॉड्स ऐसी टिप्पणियाँ इसलिए करते हैं कि इन्हें भी वैसी ही असफलता हाथ लगी, जैसी अंगूरोंको खट्टा बनाने वाली लोमड़ी को; क्योंकि जिस समय यह टॉवर बना उस समय डॉड्स ही मिलबर्गका प्रमुख भवन–शिल्पी था और इस व्यवसाय में उसका बहुत नाम भी था। वह "भवन-शिल्पियोंके अमरीकी संस्थान" (अमेरिकन इन्स्टीटयूट ऑफ आरकिटैक्ट्स) के राज्यविभागका भूतपूर्व उपाध्यक्ष भी था। पर इतनी सब योग्यता होते हुए भी बूढ़े ओरिन ट्रेडवे ने उसकी पूर्णतः उपेक्षा करके इस भवनके निर्माणका ठेका किसी न्यूयॉर्ककी कम्पनीको दे दिया था, यहाँ तक कि उसने... डब्लू. हॅरिंग्टन डॉड्सको परामर्शदाता शिल्पीका पद देनेका भी शील नहीं दिखाया।

श्री डॉड्सकी आलोचना की सत्यताके विरुद्ध अनेक प्रमाण होते हुए भी उसके व्यंग्यपूर्ण वक्तव्यका कुछ समर्थन अवश्य किया जा सकता है। ट्रेडवे टॉवर सचमुच बड़ी-सी वैवाहिक केक से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। उसके पहले बारह खण्ड तो जमे हुए श्वेत पटल जैसे हैं, जो चारों सड़कोंके बीच ऐसे चौरस बैठा दिये गये हैं मानो वे उस कड़ाहीके किनारे हों, जिसमें वह रोटी पकायी गयी हो।

उस बारह खण्ड घनवर्गके आधारपर बीचकी ओर थोड़ा हटकर उस भवनका वह टॉवर बना है, जो बारबार बीचसे ऊपरतक सँकरा होता उठा चला गया है। पर वह जितना ही ऊपर की ओर गया है उतना ही उसपर अधिक कलात्मक अलंकरण हुआ है। सोलहवें और बीसवें खण्डों की टेकपर श्वेत, चमकीली और

अत्यन्त सूक्ष्म पक्की मिट्टीकी जो मालाएँ बनी हैं, वे कलाकी दृष्टिसे किसी कुशल शिल्पीका अत्यन्त कलापूर्ण निर्माण समझा जाता है, किन्तु उनकी कलात्मक सुन्दरताका आनन्द केवल ऊची उड़ान भरनेवाला कबूतर ही पा सकता है; क्योंकि पृथ्वी पर खड़े हुए दर्शककी दृष्टि वहाँ तक पहुँच नहीं पाती।

इस टॉवरका अंतिम भाग जो भालेके फलक-सा लगता है, बहुत-से छोटे-छोटे कलशोंके समूह से इतना अधिक अलंकृत हो गया है कि सड़क से देखने पर वह भवन के शेष भाग से पूर्णतः अलग और भिन्न प्रतीत होता है। यह बात सत्य है कि ओरिन ट्रेडवे उसे उसी ढंगसे बनाना भी चाहता था। उसने स्वयं उसकी रूपयोजना बनायी थी और वास्तु-शिल्पियोंने भी उसपर कोई आपत्ति नहीं की थी। उस तेईसवें खण्ड में तो उसने अपने उपाध्यक्षों के कार्यालय रखे थे और चौबीसवें खण्ड में उसने तीन कमरे बनवाये थे, जिनमें उसने सोलहवीं शताब्दीमें इंगलैंडमें बना हुआ एक राजसी भवन मोल लेकर उसे ज्यों-का-त्यों लाकर जमा दिया था। टॉवर का चौबीसवाँ खण्ड बनवाया ही इस ढंग से गया था कि वह इंगलैंडवाला लकड़ीका भवन ज्यों-का-त्यों उसके भीतर लाकर बैठा दिया जायँ। इस प्रकार जो भवन सात पीढ़ियों तक अंगरेज रईसोंका पुस्तकालय बना रहा, वह अब ओरिन ट्रेडवेका कार्यालय बन गया और उस पुस्तकालयसे लगे हुए जिस अध्ययन-कक्ष में कमसे कम तीन प्रधान मंत्रियोंका सम्मेलन हुआ था, वह ओरिन ट्रेडवे के आत्मसचिव का कार्यालय बन गया है। उसका पुराना मुख्य सभा-भवन ही संचालकोंका कक्ष बना दिया गया जिसमें उसी मेजके सिरेपर और उसी कुर्सीपर ओरिन ट्रेडवे बैठता था, जिसपर इंगलैंडके छः सामंत (लॉर्ड) बैठ चुके थे। इस चौबीसवें खण्डपर इसके अतिरिक्त कोई और कार्यालय नहीं थे। ओरिन ट्रेडवे चाहता ही नहीं था कि उस खण्डके पवित्र काष्ठतल पर कोई व्यक्ति उसके व्यक्तिगत निमंत्रणके बिना आकर अपने पैर रख पावे।

अपने इस कार्यालय में आनेके आठ महीने पश्चात् ओरिन ट्रेडवे सदा के लिए चल बसा। जनवरी में एक रातको अधिकारी-कक्षकी निजी लिफ्टके चालक लुइजी कासोनी ने निस्संदेह रूपसे पिस्तौल छूटने का धड़ाका सुना। जब अन्ततः उसने श्री ट्रेडवे के कार्यालय का द्वार खोलकर 'बाधा न पहुँचानेके' नियमको तोड़नेका साहस इकट्ठा किया तो देखा कि श्री ट्रेडवे बाधा पाने की अवस्था से बहुत दूर पहुँच चुके हैं। दुर्घटना-परीक्षक-अधिकारी ने प्रतिष्ठा के कारण यह व्यवस्था दे दी कि अपनी पिस्तौल साफ करते समय अचानक गोली

छूटनेसे ओरिन ट्रेडवेका प्राणांत हो गया। पर कोई भी इस धोखेमें न आया। सभीको इसमें आत्महत्या का संदेह हुआ। एक महीने पश्चात् यह बात स्पष्ट भी हो गयी और तबतक आत्महत्या का उद्देश्य भी स्पष्टतः प्रकट हो गया। ओरिन ट्रेडवे दिवालिया हो गया था। उसने यह टॉवर बनाने के लिए अपनी सारी व्यक्तिगत सम्पत्ति तो लगा ही दी, साथ ही ट्रेडवे फर्नीचर कम्पनी को भी फूँक-फाँक बराबर कर दिया था। यह बड़ी भयंकर आर्थिक भूल हो गयी थी। उस बूढ़ेने सनक में आकर अपने जीवन के अंतिम दिनों में अपने बाप-दादों का वचन पूर्ण करने के लिए अनाप-शनाप व्यय कर डाला था। उसकी पूर्व-परम्परा में बहुत बड़े-बड़े लोग हो चुके थे, जिन्होंने विलियम पेनके ही समयसे पेंसिलवेनिया पर अपनी धाक जमा रखी थी। पर वह सशक्त रक्त ओरिन ट्रेडवे की नसोंमें आने से पहले ही ठंढा पड़ चुका था। वह उस परम्पराका अंतिम अवशेष था। उसके पश्चात् कोई दूसरा बच नहीं रह गया था, जो कम्पनी के अध्यक्ष के रूपमें उसका उत्तराधिकारी हो।

मिलबर्ग में ऐसे भी लोग थे जो इतना भी नहीं जानते थे कि यह मिलबर्ग नगर सस्केहानामें एक पंक्ति बनी हुई मिलोंके कारण मिलबर्ग नहीं कहलाता है, वरन् इंगलैंडके लिवरपूलवाले उस जॉन मिल्सके नामसे बसा है, जिसने नदी तटपर पहले पहल यह बस्ती बसायी थी और जो आगे चलकर उसके नामपर मिलबर्ग कहलाने लगी।

सन् १७४७ या १७४८ में जॉन मिल्स कुछ ऐसे ब्रिटिश व्यापारियोंको लेकर जहाज से सस्केहाना तक आया था, जो नदी के पास की पहाड़ियों में सद्य-स्थापित भट्ठियोंसे लोहा मोल लेना चाहते थे। उन पहाड़ियों का खड़ा ढाल नदीके तटतक ऐसा ढल आया था कि चौरस भूमि कहीं देखनेको भी नहीं थी। किन्तु मिल्सके दलने घूम-फिरकर एक ऐसा स्थान खोज ही निकाला, जहाँ न जाने किस पूर्वेतिहासिक कालके कटावने पहाड़ियोंके पीछेका भाग ऐसा काट दिया था कि वहाँ एक अधगोला चौरस समतल निकल आया था। वह स्थान नदीकी धारके साथ-साथ लगभग तीन मील लम्बा था और उसके बीचसे कटी हुई पहाड़ियोंके खड़े करारे की प्राचीर तक लगभग एक मील चौड़ी थी। वह दल यहीं पर रुक गया और वहाँ उन लोगोंने लोहा इकट्ठा करनेके लिए गोदाम बनाना प्रारंभ किया, जहाँ से नावों में लादकर लोहा बाल्टीमोर तक पहुँचा दिया जा सके और वहाँ से जहाज पर लाद कर इंगलैंड भेज दिया जा सके।

इस स्थानका जो कुछ थोड़ा-बहुत ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है, उससे

ज्ञात होता है कि जॉन मिल्समें व्यक्तिगत प्रयासकी भावना अधिक थी; अपने अंगरेज स्वामियोंके प्रति निष्ठा कम। अतः, एक वर्ष पीछे वह स्वयं इस व्यापार में पड़ गया और भट्ठीवालोंसे उसने लोहेके उत्पादन में काम आनेवाले लकड़ी के कोयले की अत्यधिक परिमाण में पूर्ति करने का ठेका ले लिया। कोयला बनाने के लिए लकड़ी काटने से लेकर लकड़ी चीरने के लिए लकड़ी काटना, विकास की दिशा में बिलकुल सरल कदम था; यहाँ तक कि जॉन मिल्स के हाथों कॅटलास क्रीक पर जिस कारखाने का निर्माण हुआ, सन् १७५२ तक उसकी गिनती उपनिवेशों के तीन सबसे बड़े कारखानों में होने लगी।

लकड़ी के बहुत-से लट्ठे ऊपर फिलाडेलफिया तक पहुँचाये जाते थे। इस कामके लिए गाड़ियों की आवश्यकता थी, इसलिए जॉन मिल्स ने गाड़ियाँ बनानी प्रारंभ कर दीं। यह बड़ा संगत व्यवसाय था। इसके लिए लकड़ी तो उसके अपने चीरा-कारखाने से आ जाती थी और धातुके आवश्यक भाग बनाने के लिए लोहे की भट्ठियाँ भी पास ही थीं, जिनमें से एक भट्ठी तो उसने पहले ही अपनी मुट्ठी में कर ली थी और दूसरी में साझीदार बन गया था।

पश्चिमकी ओर लोगों का बढ़ाव बड़े वेगसे होने लगा था और मिल्सके कारखाने में बनी हुई छतरीदार गाड़ियोंकी प्रसिद्धि समुद्रतटपर एक छोरसे दूसरे छोरतक की उन सब सरायोंमें फैल चुकी थी—जहाँ लोग सस्केहाना से आगे की भूमिपर गाड़ी चलाने की योजना बनाने के लिए इकट्ठे हुआ करते थे। वे लोग गाड़ियाँ मोल लेने के लिए मिल्स के कारखानेमें आया करते थे, इसलिए जब मिल्सने देखा कि गाड़ियों के अतिरिक्त उनके हाथ और भी वस्तुएँ बेची जा सकती हैं, तब उसने नदीकी धाराके पास ही पत्थर के बड़े-बड़े गोदाम बनवा लिये ताकि सब प्रकारकी आवश्यक वस्तुएँ संग्रह की जा सकें। किन्तु जॉन मिल्स स्वभावसे निर्माता था; व्यवसायी नहीं। इसलिए शीघ्र ही उसने जूट से टाट बनानेका, चमड़ेका सामान बनाने का, काठी बनानेका और कॅटलास क्रीकके मिट्टीवाले तट पर मिट्टीके बर्तन बनाने का कारखाना और ऐसीही बहुत-सी छोटी-मोटी दुकानें भी खोल दीं। गाड़ी बनाने के कारखानेमें स्वाभाविक रूपसे कृषि के यंत्र भी बनने लगे और धीरे-धीरे मिल्सका हल भी उतना ही प्रसिद्ध हो चला, जितनी मिल्स की गाड़ियाँ।

सन् १७६१ में नगरका नियमित रूपसे निर्माण-संयोजन हो रहा था और उसका नाम बदलकर मिलबर्ग रख दिया गया था। उस समयसे पूर्व मिल्स कारखाने की प्रत्येक वस्तु जॉन मिल्स की व्यक्तिगत सम्पत्ति थी, जिसमें पत्थर

के बने हुए वे दो सौ घर भी सम्मिलित थे, जो उसने अपने यहाँ काम करनेवाले लोगोंके लिए बनवा दिये थे। ये सबके सब उपकृत कारीगर वे अंगरेज बढ़ई और लोहार थे, जिन्हें जॉन मिल्स इंगलैंड से ले आया था। उसने अत्यन्त सावधानीके साथ ये सब घर और वहाँ की भूमि अपने उन देशवासियों को इस ढंग से बेच दी कि वे सबके सब नगरके उत्तरी भागमें बस गये। नगरके दक्षिणी आधे भागमें जहाँ नदी के तटपर कारखाने और दुकानें थीं, वहाँ जर्मन और स्विस लोहारोंका अड्डा बन गया और वह भाग डच टाउन कहलाने लगा। उस भागकी दो मुख्य पूर्वी और पश्चिमी सड़कोंके नाम ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनीके तत्कालीन राजाओंके सम्मान में जॉर्ज और फ्रेड्रिक पड़ गये।

जॉर्ज स्ट्रीट और उत्तरकी प्रत्येक वस्तु मिलबर्गकी सर्वश्रेष्ठ बस्ती मानी जाने लगी। वहाँके लोगोंके सामाजिक पदकी तुलनात्मक महत्ता नदीकी दूरीसे मापी जाने लगी। जो लोग जॉन मिल्स की कृपासे धनी हो गये थे, उनके बड़े-बड़े भवन नॉर्थ फ्रंटस्ट्रीटपर बन गये और वे लोग नार्थ फ्रंट परिवार के नामसे प्रसिद्ध हो गये तथा मिलबर्ग के सामाजिक समुदाय में सबसे ऊँचे समझे जाने लगे।

डच टाउन में फ्रेड्रिक स्ट्रीट के दक्षिणकी ओर भूरे पत्थरके बदले लाल ईंटोंसे लोगोंने अपने मकान बनाये थे। वे मकान छोटे-छोटे भूखंडों पर एक दूसरेसे सटे हुए बने थे।

जॉन मिल्स स्वयं नगरके शोरगुलसे बहुत दूर रहता था। उसने तीन हजार एकड़से ऊपरके बाड़ेको घेरनेवाली पहाड़ीकी कोर पर, जो विशाल शिलाभवन (क्लिफ हाउस) बनवा रक्खा था, उसके बरामदेमें खड़े होकर देखने से उसका पूरा राज्य दिखाई पड़ जाता था। यह भवन सन् १७६० के वसन्त में बनना प्रारंभ हुआ था; किन्तु कहा जाता है कि उसके भीतरी भागका लकड़ीका सूक्ष्म काम पूरा होनेमें पूरे नौ वर्ष लग गये थे।

जॉन मिल्सके सबसे बड़े पुत्र जेम्स मिल्सने अपने पिताकी परिपाटीका निरंतर पालन किया और वह अपने कारखानोंका बराबर विस्तार करता रहा। अपनी योग्यतासे अथवा अपने सौभाग्यसे उसने लकड़ीके कामका सबसे अधिक विस्तार किया और इस दिशा में उसने मिलबर्ग के आर्थिक इतिहास में अत्यन्त उच्च मान की स्थापना कर दी।

सन् १८१२ के युद्ध के पश्चात् अंगरेजोंने इतनी सस्ती लोहेकी सामग्रियों और कृषि-यंत्रोंसे अमरीकी बाजार भर दिया कि मिलबर्गकी भट्ठियाँ और

वहाँके कारखाने उनसे पार नहीं पा सके। लकड़ी के व्यवसायमें ढिलाई आने लगी। स्थानीय लकड़ी तो बहुत पहिले ही लोहे की भट्ठियों के लिए कोयला बनानेके काम आ चुकी थीं। पर अब सस्केहाना के ऊपरी भागसे नदीके द्वारा श्वेत पाइन के बड़े-बड़े बेड़े बहकर आने लगे। मिलबर्गकी चीरा-मिलें तो प्रतीक्षा कर रही थीं। देखते-देखते वह नगर फिलाडेलफिया और समस्त दक्षिण-पूर्वी पेंसिल्वेनियाको लकड़ी पहुँचानेका केन्द्र बन गया। यह युग अत्यन्त उत्साहपूर्ण, आरे की गूँजसे युक्त, पैसा बनानेका युग था। यों तो मिलबर्ग अपने जन्मकालसे ही अत्यन्त गतिविधिपूर्ण नगर रहा, किन्तु वहाँ इतना अच्छा युग कभी नहीं रहा। लोग इतने वेगसे धनी होते जा रहे थे कि अब नॉर्थ फ्रंट परिवार के पुराने नामका बहुत कुछ अर्थ समाप्त हो चुका था। लकड़ी के कामका यह वैभवपूर्ण युग १८३० के लगभग आकर समाप्त हो गया। तबतक नदी के ऊपरी भागमें विलियम्स पोर्ट, लौकहेवन और रेनबो की चीरा-मिलोंने बहुत-सा काम ले लिया था और मिलबर्गका वह वेग कम हो चला था। लोहे और इस्पातका व्यवसाय पश्चिम की ओर घूम गया और कृषि-यंत्रों का व्यवसाय लोहारोंके हाथ चला गया। पुरानी मिल्स प्लाउ कंपनीका अब कोई महत्व नहीं रह गया। चमड़ेका काम भी बन्द हो गया और ईंट के भट्ठोंके आवे भी गिर-गिर कर छितरा गये। नगरकी इस अवनतिकी दशा को गृहयुद्धने फिर कुछ सहारा दिया, किन्तु पुनर्निर्माण के वर्षोंमें पतनोन्मुख अवस्था निरंतर बनी रही।

केवल तीन स्थानीय महत्वपूर्ण व्यवसाय सन् १८७३ के संकट से उबर पाये—(मिल्स कैरिज वर्क्स), मिल्सकी गाड़ियों का कारखाना, जिसके साथ जॉन मिल्सके किसी वंशजका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया था, मिल्स आयरन फाउण्ड्री (मिल्सका लोहेकी ढलाईका कारखाना), जो अब क्राउथ्स परिवारके हाथमें थी, और ऐवरेट इंगलिश कॉटन मिल, जो उसकी बुनाई परम्परा की उत्तराधिकारिणी थी, और जहाँ जॉन मिल्सने अपनी ढँकी हुई गाड़ियों के लिए टाट बुनवाये थे।

यद्यपि ट्रेडवे फर्नीचर कम्पनी को उस समय मिलबर्ग में कोई महत्वपूर्ण व्यवसाय नहीं मानता था, तथापि उसके विज्ञापनका यह मुख्य वाक्य ऐतिहासिक दृष्टिसे ठीक था—"सन् १७८८ में स्थापित।" सन् १७६६ में इंगलैंड से जोशिया ट्रेडवे नामक एक लकड़ी का कारीगर शिलाभवनकी अँगीठी के टाँड़की सजावट और नक्काशीके लिए मिलबर्ग में आया था और फिर वह मिलबर्ग में ही अपना

घर बनाकर बस गया। सन् १७८८ में उसने जॉर्ज और फ्रेड्रिक सड़कोंके बीचवाली क्रौवेल स्ट्रीट के पीछे की गलीमें उस स्थान पर इंगलैंडकी शैली की मेज, कुर्सी और भंडारी बनाने और सर्वश्रेष्ठ प्रकारकी लकड़ीकी वस्तुएँ बनानेके निमित्त एक दुकान खोली थी, जहाँ अब वर्तमान ट्रेडवे टॉवर बना हुआ है। यह दुकान उसका पुत्र जॉर्ज चलाता था। १६ वीं शताब्दीके प्रारंभिक वर्षों में वह दुकान भी मिलबर्गकी [illegible] दर्जनों छोटी-छोटी लकड़ीके सामान की दुकानोंमें से एक थी। ऐसी दुकानें स्वभावतः इसलिए खुल गयी थीं कि जान मिल्स अपने गाड़ीके कारखानेके लिए इंगलैंडसे जितने कारीगर लाया था वे सब मेज-कुर्सी बनानेवाले कारीगर ही थे। सन् १७८८ से बहुत-से ट्रेडवे नामके लोग मिलबर्ग के मकानमालिक के नामकी सूचीमें भंडारी बनानेवाले के नामसे अंकित होते रहे; किन्तु कारखाने के स्वामी नामसे सन् १८७४ से पूर्व किसी ट्रेडवे का नाम नहीं मिलता।

सन् १८७३ के संकटके कारण जो मंदी छा गयी थी, उसकी सहायतासे ओलिवर ट्रेडवे ने एक पुराना पत्थर का गोदाम घेर लिया, जो जान मिल्सने सौ वर्ष पहले बनाया था। उसमें उसने किसी पुराने चीरा-मिल से एक पुरानी मशीन ला लगायी और उसमें काम करने के लिए चतुर लकड़ी के कारीगर लाया। फिर क्या था; कम्पनी चल निकली और सन् १९१० में जब ओरिन ट्रेडवे उसका संचालक हुआ, तब वह कम्पनी मिलबर्गका सबसे बड़ा व्यवसाय-केन्द्र बन गयी थी। यह महत्ता उसे केवल अपने विस्तारके कारण नहीं प्राप्त हुई थी, वरन् अपने प्रतिद्वन्द्वियोंकी असमर्थताओंके कारण ही। सन् १९०७ के संकट ने मिल्स कैरेज वर्क्सको ऐसा धक्का पहुँचाया कि वह बन्द कर दिया गया। उसके पश्चात् रुई के कारखानेवालोंने अपनी मशीनें उखाड़-उखाड़कर उत्तरी कैरोलिनामें जा जमायी। केवल क्राउथ्स स्टील कम्पनी (पुरानी मिल्स आयरन फाउन्ड्री) अभी बची हुई थी पर उसके भी दिन पूरे हो रहे थे। पिट्सबर्गके इस्पातका सामान बनानेवालेसे प्रतिद्वन्द्विता करनेके फेर में उसने अपने यहाँ काम करनेवालोंका वेतन बहुत कम कर दिया। फलतः हड़ताल हुई और जॉर्ज क्राउथ्सने मिल जो बन्द की तो वह सचमुच फिर न खुली। उसके सब यंत्र वहाँ से हटा लिए गये और उन भवनोंके भूत-जैसे लोहेके ढाँचे भी लाल मोर्चा लगनेके कारण गल-गलकर धीरे-धीरे बाड़में उगे हुए घास-पात पर गिर-गिरकर फैल गये।

ओरिन ट्रेडवे ने अपने पिता ओलिवसे जो ट्रेडवे फर्नीचर कम्पनी पायी

वह अत्यन्त जमी हुई और वैभवपूर्ण थी। वह राष्ट्रकी फर्नीचर फैक्टरियोंमें अठारहवीं मानी जाती थी। यदि विस्तारके बदले आयके आधारपर क्रमिक सूची बनवायी जाती तो इसका स्थान और भी ऊँचा होता। ओलिवर ट्रेडवे में लकड़ी से सोना निकालनेकी कुछ अद्भुत प्रतिभा थी। संसारमें ऐसे बहुत कम लोग हैं जिन्होंने मेज-कुर्सी बनाकर बड़ी सम्पत्ति बटोर ली हो। ओलिवर ट्रेडवे उन्हीं कम लोगोंमें से था। उसकी सफलताका अधिकांश श्रेय उसकी आंतरिक व्यवस्था को ही था। कम्पनी के अस्तित्व की प्रारंभिक अवस्था के समय में तुर्की और फ्रांसीसी शैलीकी बहुत नक्काशीदार मेज-कुर्सियोंका अधिक चलन था। ओलिवर ट्रेडवे ने अत्यन्त सूक्ष्म नक्काशी, खरादी और बेलनके कामके लिए अलग-अलग मशीनें बना ली थीं। जब जनता में इस अत्यलंकरण के विरुद्ध विद्रोह होने लगा और लोग मिशन-शैलीके अत्यन्त सीधे-सादे ढंग पर उतर आये तब ओलिवर ट्रेडवे ने अपने उत्पादनको इतना यंत्रबद्ध कर दिया जितना इसके पहले कभी इस व्यवसायमें देखा नहीं गया था। उसने श्रमकी लागत इतनी अधिक कम कर दी कि बहुत-से अन्य कारखाने उसीसे माल लेने लगे; क्योंकि पर्याप्त लाभ लेनेपर भी अधिकांश व्यवसायियोंके समान ओलिवर ट्रेडवे ने अपना सारा ध्यान उस कारखाने पर ही केन्द्रित कर दिया। वह अपने कार्यालयमें बहुत कम बैठता था। अपना अधिकांश समय वह कारखानेमें घूमते हुए ही बिताता था और कभी-कभी तो कोट उतारकर, दस्ताने निकालकर, किसी नयी मशीनको ठीक बैठाने में जुट जाता था।

ओरिन ट्रेडवेने अपने पितासे धन और कम्पनीके नियंत्रणके अतिरिक्त और कुछ नहीं पाया। पिता और पुत्र दोनों स्वभावमें परस्पर विरोधी थे। मिलवर्गवाले कहा करते थे कि "ओरिन अपनी माँ पर पड़ा है।" ओरिनकी माता ऐलवुड परिवार की थी और ये ऐलवुड लोग नॉर्थ फ्रंट परिवारवालोंमें सबसे पुराने और सबसे अधिक प्रतिष्ठित थे। उसकी इच्छा थी कि ओरिन अपने मातृकुल-वालों का अनुसरण करता हुआ उच्च सरकारी नौकरी पाने की दृष्टिसे कानून पढ़े। किन्तु हारवर्डमें उसने जितने वर्ष बिताये उससे सिद्ध हो गया कि ओरिन ट्रेडवे की योग्यता, कलाके लिए तो ठीक है, वकालत के लिए नहीं। कॉलेजमें पढ़ चुकनेके पश्चात् उसने अपना अधिकांश समय बाहर विदेशोंमें बिताया। कभी-कभी प्रसिद्ध कलाकारों और लेखकोंके साथ जब उसका नाम भी जुड़ने लगा, तब उसका स्थानीय सम्मान भी बढ़ गया। वह मिलवर्गका अकेला नागरिक था, जो किसी अंगरेज सरदारका अतिथि हुआ

हो। जब वह अपने पिताकी मृत्युसे कुछ दिन पश्चात् मिलबर्ग पहुँचा तब लोगोंमे यह किवदन्ती फैल गयी कि राज्य-परिवारके किसी सदस्यने उससे पंचम जॉर्ज के राज्याभिषेक तक इंगलैंड में ठहरनेका आग्रह किया था।

कुछ लोगोंको तो इस बातमें भी बड़ा आश्चर्य हुआ कि ओरिन ट्रेडवे लौटकर मिलबर्ग आ कैसे गया; विशेषतः उन लोगोंको, जिन्होंने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि अब वह ट्रेडवे फर्नीचर कम्पनीका सक्रिय प्रबन्ध अपने हाथमें लेगा नहीं। उससे भी अधिक आश्चर्य उन लोगोंको हुआ जिन्होंने यहाँ तक कह डाला था कि यदि उसने कम्पनीका प्रबन्ध अपने हाथमें लिया तो बंटाधार कर डालेगा। प्रारंभिक कुछ ही वर्षोंकी घटनाओंने उन सभी आलोचकों को स्तब्ध कर दिया। ओरिन ट्रेडवे केवल कम्पनीका अध्यक्ष ही होकर नहीं आया, वरन् उसने वहाँ के काम में मंगलमय उन्नति भी दिखला दी। इंगलैंड में ही उसने विलियम मौरिस के कला-कौशल का पतन देख लिया था और अनुभव कर लिया था कि जनता की रुचि अब दूसरी ओर झुक चली है। उसने समझ लिया था कि लोगों की रुचि अब औपनिवेशिक अनुकरणकी ओर है। उसने अपने पिताके पुराने साथियोंकी सम्मतिके विरुद्ध मेज-कुर्सियों के नये रूप प्रस्तुत किये। देखते-देखते चारों ओर उसकी धूम मच गयी। अगले वर्ष नये प्रकारकी, विशेषतः आबनूस की लकड़ी का प्रयोग करके उसने मेज-कुर्सीके निर्माण में और भी प्रगति कर ली; क्योंकि इससे पहले सन् १८८०में मध्यकालीन और गोथिक-शैली समाप्त होनेके समय से संभवतः किसी भी अमरीकी फर्नीचर बनानेवाले ने उसका प्रयोग नहीं किया था। पर थोड़े ही दिनोंमें उसकी रुचि उधर से भी हट गयी। सन् १९१५ में वह अपने मामा के प्रभावसे, जो कहीं राजदूत थे, एक सरकारी कमीशन पर नियुक्त हो गया। दशा यह हो गयी कि उस वर्षसे लेकर प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति तक उसका मिलबर्गमें रहना ही बहुत कम होने लगा। कम्पनी की सारी व्यवस्था इस बीच बहुत बदल गयी, किन्तु सन् १९२१ तक उसमें फिर भी बहुत लाभ होता रहा। पर सन् १९२१ में यह कहा जाने लगा कि कम्पनी को इस वर्ष लगभग ढाई लाख डॉलरकी हानि हुई। आधा कारखाना बन्द कर दिया गया था और आधे आदमी हटा दिये गये थे। इस संकट के समय ओरिन ट्रेडवे फिर आ डटा और अपने राजनीतिक सम्बन्धोंका सहारा लेकर वह सरकारी भवनोंके लिए मेज-कुर्सी आदि के ठेके लेने लगा। कम्पनीके सद्भविष्यके लिए सबसे बड़ी महत्वकी बात यह हुई कि ऐवरी बुलार्ड नामका एक युवक सेल्समैन नियुक्त कर लिया

गया, जो पुरानी बॅलिगर फर्नीचर कम्पनीकी नौकरी छोड़कर कई भोजना-लयोंके लिए मेज-कुर्सीका आदेश लेकर चला आया था।

लोग फिर कारखानेमें काम करनेके लिए लौट आये और ओरिन ट्रेडवे पुनः नयी धुन के साथ इसमें लग गया। मिलबर्ग की स्थापना का एक सौ पचहत्तरवाँ वार्षिकोत्सव मनानेके लिए जो समिति बनायी गयी थी उसका वह मुख्य अध्यक्ष बना दिया गया था। इस उत्सव का प्रधान नायक जॉन मिल्स ही था। अतः, ओरिन ट्रेडवे ने विचार किया कि मिल्स के पुराने शिलाभवन क्लिफहाउसका जीर्णोद्धार करा दिया जाय। वह भवन झाड़-झंखाड़में पूरा छिप गया था, क्योंकि पिछले पचास वर्षोंमें वह किसीको रहनेके लिए नहीं दिया गया था। उसकी दशा बहुत बुरी हो चुकी थी। समितिने देखा कि उसके जीर्णोद्धारके लिए पैसा तो है नहीं, इसलिए ओरिनने ही उसे मोल लेकर, उसपर दो लाख डॉलर व्यय करके उसी शिलाभवनको घर बनाकर, उसीमें डेरा जमा लिया। उसने केवल जान मिल्स का घर ही नहीं, वरन् उसके सारे रईसी ढंग भी ग्रहण कर लिये। सन् १९२० के लगभग व्यापार धुआँधार बढ़ चला। यद्यपि ट्रेडवे फर्नीचर कम्पनीको लाभ तो बहुत हो रहा था पर उतना नहीं, जो ओरिन ट्रेडवे का व्यय सँभाल सके। अब वह बूढ़ा भी हो चला था और उसका मस्तिष्क भी रईसी आनबान की सनकसे भरा हुआ था, उसी समय उसे ट्रेडवे टॉवर बनानेकी धुन सूझी। किसीका समझाना-बुझाना उसे वैसे ही नहीं रोक सका जैसे पिस्तौल के घोड़ेको दबानेवाली उस उँगलीको कोई नहीं रोक सका, जिसने उसकी जीवन-लीला समाप्त कर दी।

ओरिन ट्रेडवेकी मृत्यु के पश्चात् अगले ही महीने में ऐवरी बुलार्ड चुपचाप उस टॉवर के तेईसवें खण्डसे चौबीसवें खण्डमें जा चढ़ा। लोगोंने भी ट्रेडवे फर्नीचर कम्पनी के अध्यक्ष पदपर उसके चुनावको कोई बड़े महत्वकी घटना नहीं समझा। मिलबर्ग टाइम्समें भी यह समाचार केवल एक स्तम्भके शीर्षक और थोड़े-से अक्षरों में दिया गया था। वहाँ के लोगोंकी व्यापक धारणा थी कि कम्पनी इतनी कमजोर हो गयी है कि उसका उद्धार नहीं हो सकता और नये अध्यक्षके पदपर किसी व्यक्तिका चुनाव इसलिए कर दिया गया है कि वह दिवालिये पदके आवेदन-पत्र पर हस्ताक्षर कर सके।

फर्नीचर कम्पनी का अन्त निश्चय मानकर मिलबर्ग के नागरिक उसके उद्धार की क्रियामें कोई रुचि नहीं दिखा रहे थे। अकस्मात् १९३५ की मंदी में यह बात उन्हें उस समय ज्ञात हुई जब मिलबर्ग-टाइम्स ने लम्बा, मोटा शीर्षक

देकर यह प्रकाशित किया कि "ऐवरी बुलार्डने सात अन्य फर्नीचरके कारखानोंका संघ बनाकर ट्रेडवे कॉर्पोरेशन बनानेकी घोषणा की है, जिसके कारण स्थानीय उत्पादन-कार्य इतना बढ़ जायगा कि उसमें चार सहस्त्र नये कार्यकर्त्ता नियुक्त करने पड़ेंगे।" अगले ही दिन मिलवर्गकी पुलिसका प्रत्येक सिपाही अपना नियमित कार्यक्रम छोड़कर उन भूखे नौकरी ढूँढ़नेवालोंका उपद्रव शान्त करनेको ट्रेडवे कम्पनी की ओर दौड़ पड़े, जो ट्रेडवेके नियुक्ति-कार्यालयपर अचानक टूट पड़े थे।

अगले महीनों में तो और भी नये-नये समाचार प्रकाशित हुए। वॉटर स्ट्रीट पर ट्रेडवे फैक्टरीकी एक नयी शाखा खोल दी गयी। पिछले पच्चीस वर्षोंसे अधिक समय में मिलबर्गमें यह प्रथम नया व्यावसायिक भवन बना था। ट्रेडवेकी साख अब न्यूयॉर्कके शेयर बाज़ारमें व्यापारके लिए स्वीकृत हो गयी थी।

इसी झोंकमें किसी अज्ञात क्षणपर ऐवरी बुलार्ड उस मिलवर्ग नगरका प्रथम नागरिक भी बन गया। सन् १७८१ में जॉन मिल्सने जो संघीय विनोद मंडल (फीडरल क्लब) स्थापित किया था, उसके पुराने राजसी नियम झट बदल दिये गये जिससे ऐवरी बुलार्डको सदस्य बनानेमें कोई झंझट न हो। यद्यपि वह उस विनोद मंडल में बहुत कम आता-जाता था, किन्तु उसके भोज-कक्ष के एक कोने में एक मेज केवल उसीके उपयोग के लिए अलग सुरक्षित लगी रहती थी। जब कभी वह भोजन के लिए वहाँ आ जाता था तब मिलबर्गका कोई भी व्यक्ति, यहाँ तक कि सस्केहाना नैशनल बैंक का अध्यक्ष भी अपनी पत्नीसे यह डींग हाँकनेमें नहीं चूकता था कि उस दिन उसने ऐवरी बुलार्डकी मेज से लगी हुई मेज पर भोजन किया था। वहाँ की अँधेरी सड़कों पर हाथमें हाथ डालकर घूमते हुए प्रेमी भी उस टॉवर के शिखर पर छाये हुए अंधेरे में जलती हुई नन्हीं-नन्हीं बत्तियोंको आतंकसे देखते थे—"प्रिये! निश्चय ही बूढ़ा बुलार्ड वहाँ अबतक डटा बैठा है। कहते हैं कि वह कभी घर जाता ही नहीं। कभी-कभी तो वह रात-रात भर काम करता रह जाता है। एक दिन तो मैंने उसे गाड़ी से उतरते देखा और भगवान् की सौगन्ध, मैं उसके इतने पास था कि चाहता तो हाथ बढ़ाकर उसे छू लेता।"

जब बुलार्डकी पत्नी फ्लोरेन्स बुलार्डने सन् १९२८ में बुलार्ड का परित्याग किया तो लोगोंने उसीको बुरा-भला कहा और उसे तनिक भी वह सहानुभूति प्राप्त नहीं हो सकी, जो उसकी समझसे किसी भी परित्यक्ता स्त्री को मिलनी ही चाहिए। उसकी अत्यन्त निकट की सहेलियों में से एकाधको छोड़कर सबने

फ्लोरेन्स बुलार्डको मूर्ख बताया। उन्होंने समझा कि ऐवरी बुलार्ड जैसे बड़े आदमीसे ब्याह होना ही किसी भी स्त्री के लिए बड़े सौभाग्य की बात है और उसे यह अनुभव करने की समझ होनी चाहिए कि उसका जीवन साधारण व्यक्ति से विवाह करनेवाली स्त्रीके समान तो हो ही नहीं सकता।

ज्यों-ज्यों महीने-पर-महीने बीतते गये, त्यों-त्यों ऐवरी बुलार्डने मिलबर्ग के उन मुट्ठीभर नागरिकों को बड़ा निराश किया, जिन्होंने चुपचाप यह भविष्यवाणी कर दी थी कि इसका पतन उतने ही वेगसे होगा जितने वेगसे इसका उत्थान हुआ है। ट्रेडवे कॉर्पोरेशन दिन-दूनी रात-चौगुनी गति से बढ़ता गया। सन् १९४५ में जब लड़ाईके पश्चात् सारा राष्ट्र नयी मेज-कुर्सियोंकी माँग करने लगा तब उसने अत्यन्त विशाल और नया पाइक कारखाना खड़ा कर दिया। अकेले सन् १९४९ में ट्रेडवे कॉर्पोरेशन में पचास लाख डॉलरों से अधिक की बिक्री हुई और अगले साल वह और भी बढ़ गयी। यद्यपि जनरल मोटर्स या यूनाइटेड स्टेट स्टील जैसे विशाल व्यवसाय-संघोंकी तुलना में ट्रेडवे अवश्य छोटा था, पर फर्नीचरके क्षेत्रमें वह किसी भी प्रकार कम नहीं था। एक प्रकारसे वह मिलबर्ग के आर्थिक जीवन की रीढ़ बन गया था, यहाँ तक कि मिलबर्ग के प्रत्येक तीन परिवारोंमेंसे एक परिवार का जीवन ट्रेडवेके वेतन पर चलता था। उसके बहुत-से कार्यकर्ता तो चौथी और पाँचवीं पीढ़ीसे ट्रेडवे में काम करते आ रहे थे। मेरी हेर जैसोंके कुछ परिवारोंकी तो तीन-तीन पीढ़ियाँ एक साथ उस कम्पनी में काम कर रही थीं। उसके दादा, पिता और दो भाई ढकने बनानेके काममें वहाँ लगे हुए थे। जब मेरी हेर वैस्टर्न यूनियन में काम करने जाने लगी तब चारों को इस बातका बड़ा धक्का लगा और उन्हें यह काम स्वामीद्रोह-जैसा प्रतीत हुआ। इसपर उसने यही उत्तर दिया था कि "घरमें किसीको तो कोई अलग काम करना चाहिए। इसमें क्या है? वैस्टर्न यूनियन भी अच्छी कम्पनी है और मुझे जितने संदेश मिलते हैं वे ट्रेडवे के लिए ही होते हैं। काम भी बड़ा अच्छा है। मैं भीतर की बहुत-सी बातें जान सकती हूँ।" सचमुच वह बहुत-सी ऐसी बातें जान जाती थी, जिन्हें उसका बाप भी नहीं जान पा सकता था।

'बुलार्ड' उसने एक झटके में इस संदेश का हस्ताक्षर टाइप कर दिया। सात अक्षरोंके उस समूहको अगणित बार दुहराते-दुहराते उसकी उँगलियाँ सध गयी थीं। जब पहले-पहल उसने वैस्टर्न यूनियन में काम प्रारंभ किया तब उसे बुलार्ड शब्द टाइप करते हुए बटन चलाने में गड़बड़ी हो जाया करती

थी.....उसके लिए यह बड़ा विचित्र शब्द था.....पर अब तो वह बड़ा सरल हो गया था। पिछले पाँच वर्षोंमें उसने कमसे कम दस लाख बार तो बुलार्ड शब्द टाइप किया ही होगा.....और यदि कैनेथ ने शीघ्र विवाह करनेका आग्रह न किया तो अगले पाँच वर्षोंमें वह और भी दस लाख बार इस नामको टाइप करेगी ही।

ट्रेडवे टॉवर, ३.०६ तीसरा पहर

लुइजी कासोनी अपने लिफ्ट से बाहर आया और प्रतिदिन के अभ्यासके अनुसार उसने बड़ी सावधानीसे अपने पतलूनके ऊपरकी छोटी-सी जेबसे अपनी घड़ी निकाल कर वहाँ संगमरमर के दालान में, छत से लटकी हुई विशाल काँसेकी घड़ीसे मिलायी। लुइजीको समय देखनेका कोई ऐसा विशेष चस्का नहीं था, वरन् उसे अपनी घड़ीपर ही बड़ा गर्व था। यह घड़ी स्वयं श्री बुलार्डने व्यक्तिगत रूपसे लुइजी को ट्रेडवे में काम करने के पच्चीसवें वर्ष के उपलक्षमें भेंट की थी।

उसे अपने जीवनमें जो अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ प्राप्त हुई थीं, उनमें इस घड़ी को वह सबसे बड़ा वरदान मानता था।

लुइजी की प्रसन्नता का दूसरा कारण यह भी था कि वह वास्तवमें जितना बुद्धिमान था, उससे सदा अपनेको कम ही समझता था। वह व्यर्थकी काल्पनिक उड़ान में अपना समय नष्ट ही नहीं करता था और इसलिए उसने बहुत शान्ति प्राप्त कर ली थी। उसे टॉवरके तेईसवें और चौबीसवें खण्डोंपर बने हुए अधिकारी-कक्ष के व्यक्तिगत लिफ्ट– चालकके रूपमें ऐसा पूर्ण मानसिक सन्तोष प्राप्त हो गया था कि वह अपनी नित्य प्रार्थना के समय उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया करता था। बात कुछ ठीक भी थी ; क्योंकि बिना दैवी कृपा के यह कैसे संभव था कि जो क्षुद्र लुइजी कासोनी जैतून की कुंजों में खेती-बारी करने के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के अधिकार की आशा लेकर न उत्पन्न हुआ हो, वह श्री ऐवरी बुलार्ड के निकटतम व्यक्तिगत मित्रोंमें से एक हो जाय। यह बात बिलकुल सत्य थी। श्री बुलार्ड ने स्वयं ग्यारह वर्ष पूर्व उस रात को कहा भी था–"लुइजी ! कभी-कभी मुझे यह संदेह होने लगता है कि इस सारी कम्पनी में तुम्हीं एक मेरे सच्चे मित्र हो !"

लुइजी जानता था कि श्री बुलार्ड के साथ उसके निकटतम सम्पर्क की बात ट्रेडवे टॉवरके नीचे से लेकर ऊपर तक के खंडोंवाले सभी लोग जानते थे ;

यहाँतक कि तेईसवें खंडमें बैठनेवाले उपाध्यक्ष-लोग भी जब अध्यक्ष के साथ बात-चीत करने के लिए चौबीसवें खंडपर आते थे तो प्रायः पूछा करते थे– "कहो लुइजी ! आज बूढ़े का मिजाज कैसा है ?"

वह बड़ी सावधानी से सदा संयत उत्तर दिया करता था ; क्योंकि वह जानता था कि यदि कहीं असंयत रूप से जीभ चला देनेपर कोई ऐसी बात मुँह से निकल जाय जिससे श्री बुलार्ड के प्रति अनिष्ठा प्रकट हो जाय तो बड़ा अनर्थ हो जायगा।

अपनी नौकरी के इस शाश्वत हर्षमें लुइजी को उस समय सदा कुछ कमी का अनुभव होने लगता था, जब श्री बुलार्ड नगरसे कहीं बाहर चले जाते थे। जब अध्यक्ष उस अधिकारी-कक्ष में नहीं होते थे तब चौबीसवें खंड के संकेत-प्रकाश की चमक दूसरे प्रकारकी होती थी। उस समय वहाँ लाल प्रकाश की एक नन्हीं-सी मंद बत्ती जला करती थी और वह सिन्दूरिया लपट नहीं होती थी जो आकाश भेदन करती हुई ऊपर उठी चली जाती थी।

श्री बुलार्ड दो दिनोंसे नगर से बाहर गये हुए थे। वह बुधवार को ही न्यूयॉर्क चले गये थे। आज पूरे दिन भर में लुइजी ने चौबीसवें खंड तक कुल सात फेरे लगाये......प्रातःकाल कुमारी मार्टिन को ऊपर ले गया......दोपहर में कुमारी मार्टिन को नीचे और ऊपर लाया तया ले गया......चार बार डाकके लिए आया-गया।

अचानक उसके लिफ्ट के नियंत्रण-फलक पर पीली बत्ती चमक उठी। यह डाकके कक्षका विशेष संकेत था।

लुइजी ने झटसे हत्था घुमाया और लिफ्ट वेगसे नीचेके खंडमें जा उतरा। द्वार खोलते ही सरकन-द्वारके सामने एमिली गेस्टीन की दुर्बल और तिकोनी मूर्ति दिखायी पड़ी। वह इतनी व्यग्र प्रतीत होती थी मानो अभी किसीपर बरस पड़ेगी। ट्रेडवे में लुइजीके आगमन के बहुत पहलेसे ही एमिली सब डाक और तार लाने-भिजवानेकी व्यवस्था किया करती थी। अविवाहित रहनेके कारण वह कुछ चिड़चिड़ी हो गयी थी।

"कुमारी मार्टिन के लिए तार है। देखो, इसे ऊपर तक पहुँचाने में सारा दिन मत लगा देना। यह श्री बुलार्ड ने भेजा है।"

लुइजी की आँखों में निरंतर झलकनेवाली मुस्कराहट न बढ़ी, न घटी। उसने बहुत दिनोंसे यह भली-भाँति सीख लिया था कि प्रसन्न बने रहनेके लिए सबसे सरल उपाय यह है कि कटु बात एक कानसे सुनकर दूसरेसे निकाल दी जाय।

उसने देखा कि एमिली जान बूझकर इतनी दूर खड़ी है कि उसे उसके हाथका लिफाफा लेनेके लिए लिफ्टसे बाहर आनेको विवश होना पड़े। पर वह बिना किसी खीझ के बाहर आ गया–"क्या श्री बुलार्ड रातको लौट रहे हैं?"

एमिली ने इतने वेगसे लम्बी साँस खींची मानो उसके शब्दोंने उसके किसी अगम्य स्थान का स्पर्श कर दिया हो–"तुमको मतलब? तार अत्यन्त गोपनीय होते हैं।"

जबतक बन्द होनेवाले द्वार से उसका मुँह ओझल नहीं हो गया तबतक लुइजी अपनी मुस्कान रोके रहा। स्त्रियाँ बड़ी विचित्र होती हैं। यदि आप उनसे ऐसी कोई बात पूछिये जिसका उत्तर न बताने योग्य हो तो वे झट उसे पूरा खोलकर कह डालेंगी......यदि उसका उत्तर बता देने योग्य हो तो वे ऐसी चुप्पी साध लेंगी कि एक शब्द भी मुँह से न निकालेंगी। श्री बुलार्ड निश्चय ही रातको घर लौट रहे हैं।

उसने झट हत्था घुमाया। लिफ्ट वेगसे चौबीसवें खंडके लिए मौन उड़ान भरती हुई उस शून्य गगनभेदी स्तंभ को उड़ी चली जा रही थी।

चौबीसवें खंड पर पहुँच कर लिफ्ट रुक गयी और द्वार ने अपना भूत जैसा मुँह खोल दिया। नियंत्रण-फलकको कीलित करके लुइजी बाहर निकल आया। यद्यपि वहाँ एक सरकन बनी हुई थी, जो कुमारी मार्टिनकी मेज तक तार पहुँचा सकती थी। पर उसने उसका प्रयोग नहीं किया जैसा कि वह नगर से बाहर श्री बुलार्ड के चले जाने पर नहीं किया करता था। कोनेसे घूमकर स्वयं कुमारी मार्टिनके हाथमें ले जाकर तार देनेमें उसे बड़ा सुख मिलता था।

वह धीरे-धीरे बढ़ा। उसकी आँखें चारों ओरके दृश्यका आनन्द लेती रहीं। इतने वर्षोंके पश्चात् भी और इतने सहस्रों बार अनुभव कर लेनेपर भी लुइजी कासोनी को चौबीसैवें खंडके कलात्मक सौन्दर्यका आनन्द लेनेमें कोई कमी नहीं प्रतीत हुई।

अपने लड़कपनमें वह इटलीकी एक ऐसी पहाड़ीकी तलहटी में बसे हुए छोटे-से गाँवमें रहता था, जिसपर एक राजप्रासाद बना हुआ था। उसकी दुर्भेद्य दीवारों की ओर देखते हुए वह प्रायः अपने लड़कपनकी कल्पनाओंमें उलझ जाता था कि इसके भीतर कैसी विचित्र-विचित्र वस्तुएँ होंगी। उसके इन लड़कपनके सपनों और अधिकारी-कक्ष के इस शिखरस्थ खंडकी वास्तविकता में अटूट सम्बन्ध प्रतीत होता था और यह असंगति होते हुए भी कि

वह राजप्रसाद तो इटली में था और वृद्ध ओरिन ट्रेडवे ने सोलहवीं शताब्दी में बना हुआ एक अंगरेजी भवन यहाँ लाकर यह चौबीसवाँ खंड बनाया था। उसके मस्तिष्क में वह काल्पनिक सम्बन्ध बना रहा।

ट्रेडवे टॉवर बन जाने के पश्चात् प्रारंभिक महीनोंमें लुइजी ने वृद्ध श्री ट्रेडवेको अपने मुँहसे इन कक्षोंका इतिहास कहते सुना था। उनकी कहानियों में राजाओं, रानियों, सरदारों और महिलाओंकी इतनी बातें भरी हुई थीं कि उन्हें स्मरण रखना संभव नहीं था और फिर उन्हें दुहरानेके पूर्व ही उनका कहनेवाला स्वयं समाप्त हो गया। लुइजी ने ही ओरिन ट्रेडवेको कार्यालय में पड़ा पाया था। इतनी भयंकर लोमहर्षक घटना का दृश्य भी लुइजीके मस्तिष्क में चौबीसवें खंडके साथ बहुत दिनों तक सम्बद्ध नहीं रह पाया। वह स्मृति वेगसे उस प्रभात की चढ़ती हुई स्मृति में लीन हो गयी, जब उस घटनाके थोड़े ही दिनों के पश्चात् वह श्री बुलार्ड को तेईसवें खंडसे ऊपर चौबीसवें खंडमें चढ़ा लाया और तब एक ऐसी यथार्थता का जन्म हुआ जिसने इटली के राज-प्रासाद तथा इस अधिकारी-कक्ष के बीच लुइजीके कल्पनायुक्त मानसिक सामंजस्य का औचित्य सिद्ध कर दिया। इटली के राजप्रासाद में एक ड्यूक रहते थे और ऐवरी बुलार्ड में भी कुछ ऐसी बात अवश्य थी जिसे देखकर ड्यूक का स्मरण हो आता था।

लुइजी को स्मरण था कि जब ड्यूक अपनी गाड़ीमें बैठकर निकलते थे, तब गाँवके सभी बच्चे अत्यन्त शान्ति और आदर के साथ खड़े हो जाया करते थे; इसलिए नहीं कि उनसे शान्ति की आशा की जाती थी, वरन् ड्यूक के मुखपर ही कुछ ऐसा विचित्र तेज था कि वह निर्भ्रान्त रूपसे अन्य लोगोंकी अपेक्षा ऊँचे प्रतीत होते थे। उनके पास वे सभी वस्तुएँ थीं जो किसी के पास होनी ही चाहिए—चमकीली गाड़ी और काले घोड़े, सड़कें, दुकानें और मकान, दूरतक फैले हुए और पृथ्वीपर इधर-उधर बिखरे पड़े हुए सब छोटे-बड़े पत्थर उन्हींके थे।

यदि लुइजीके मनमें कोई गंभीर नैतिक भाव न होता तो वह अपनी उस लड़कपन की कल्पनाके सहारे कुमारी मार्टिन को भी उसी प्रकार डचेज के रूप में बैठा देता, जैसे उसने राजप्रासाद में रहनेवाले ड्यूक को बुलार्डके रूपमें ढाल लिया था। कुमारी मार्टिन उसे कुछ-कुछ डचेज जैसी दिखायी भी देती थी। उसमें भी वही सिर उठाकर चलनेकी, वही सजग होकर देखने की और वही ड्यूक की इच्छा को पहलेसे ही समझ लेनेकी पकड़ थी। जब फियेस्टा

के पर्वपर ड्यूक ने चिलचिलाती धूपवाले चौकमें भाषण समाप्त किया था तो उसी समय डचेज ने आदेश दिया था–"मदिरा!" और जब मदिरा लायी गयी और ड्यूक ने जी भर कर पी ली, तब लुइजी खड़ा एकटक देखता हुआ यह समझने का प्रयत्न करता रहा कि डचेज ने समझ कैसे लिया। जबतक वे दोनों वहाँ थे तबतक उसकी आँखे बराबर ड्यूक के ओठोंपर जमी हुई थीं और वह भली-भाँति जानता था कि ड्यूक ने इस बीच डचेज से एक शब्द भी नहीं कहा; फिर भी वह जान कैसे गयीं! उसने मन-ही-मन सोचा कि हो न हो इन दोनोंमें मौन बातचीत करनेका कोई रहस्यमय तरीका अवश्य है। अब यहाँ आकर भी वह समझ गया कि श्री बुलार्ड और कुमारी मार्टिन में भी इस प्रकारके शब्दहीन वार्तालापका गुण विद्यमान है। कुमारी मार्टिन को भी कुछ ऐसा ढंग आता था कि वह कहनेसे पहले ही ताड़ लेती थी कि बुलार्ड को क्या चाहिए। उसने स्वयं कई बार यह बात देखी थी।

लुइजीने यह तुलना बनाये रखनेका कभी साहस नहीं किया; क्योंकि वह जानता था कि डचेज तो ड्यूककी पत्नी है और कुमारी मार्टिन केवल श्री बुलार्ड की व्यक्तिगत सचिव है। और फिर उससे होता-जाता भी क्या था। वह जितनी स्त्रियोंको जानता था उनमें कुमारी मार्टिन सबसे अधिक सुन्दर, बुद्धिमती और दयालु थी। उसे भी चौबीसवें खंडपर आने में उसी समय सबसे अधिक आनन्द मिलता था, जब वह उसके द्वार पर खड़ा होकर उसका नाम पुकारता था और वह हर्षचकित होकर ऊपर देखती हुई उसका नाम पुकारती थी–"हलो, लुइजी।"

"तार है कुमारी मार्टिन।"

जबतक वह तार खोलती रही, वह खड़ा रहा और जैसे-जैसे वह संदेश पढ़ती जा रही थी और रेलगाड़ीके टाइमटेबल पर अपनी आँखें दौड़ा रही थीं, उसके साथ-साथ लुइजी की आँखें भी चल रही थीं मानो वे इसी क्षण के लिए प्रतीक्षा कर रही थीं। फिर उसने तारपर लगे हुए समयकी मुहर देखी–"श्री बुलार्ड आज तीसरे पहर आ रहे हैं, संभवतः ५.४ की गाड़ीसे।"

"तो क्या मैं ईडी से कह दूँ कि गाड़ी लेकर पहुँच जाय।"

"तुम कह दोगे?"

"निश्चय, कुमारी मार्टिन! मै कहे देता हूँ।"

"और लुइजी, कृपया ईडी से यह भी कह देना कि गाड़ी धूपमें न खड़ी रक्खें। वह अत्यन्त गरम हो जाती है और श्री बुलार्ड न्यूयॉर्क में दो दिन व्यस्त

रहकर बहुत थक गये होंगे।"

लुइजीने सिर हिला दिया—"क्या श्री बुलार्ड गाड़ीसे आ रहे हैं?"

"हाँ, उन्होंने छः बजे कार्य समितिकी बैठक बुलायी है।"

"तब मैं मेरियासे कहे देता हूँ कि भोजनके लिए बाट न देखे।"

"पर तुम्हें प्रतीक्षा करनेकी तो कोई आवश्यकता नहीं दिखायी देती, लुइजी। रातवाला आदमी तो रहेगा ही जो बैठकके पश्चात् हमें नीचे पहुँचा देगा।"

"नहीं, मैं रुका रहूँगा।" उसने शीघ्रता से कहा—"रुकने की कोई चिंता नहीं। उनके लिए रुकनेमें कोई कष्ट नहीं है।"

अचानक उसकी आँखें चमक उठीं और वह उसकी मुखमुद्रा में यह समझनेका प्रयत्न करने लगी मानो वह किसी गूढ़ अर्थका संदेह कर रही हो और मानो उसने कोई अनुचित बात कहकर लुइजी के मन को चोट पहुँचायी हो। अचानक उसके आत्मचेतन भाव भी कुमारी मार्टिन के भाव से ऐसे मिलते-जुलते जान पड़े कि वह क्षणभरमें ही मुस्करा पड़ी—"यहाँ का जीवन बड़ा कठोर है। है न?"

किन्तु इन शब्दोंका कोई अर्थ नहीं था। क्योंकि वे अस्वीकारात्मक हास्यकी लहरपर उमड़े बहे चले गये। तब जिस वेगसे वह हँसी फूटी थी, उसी वेगसे वह घूमी और टेलीफोन पर जा पहुँची।

लिफ्ट तक पहुँचते-पहुँचते लुइजी इस प्रलोभनमें डूबता-उतराता रहा कि मैंने अभी जो दृश्य देखा वह मेरी समझ में आ जाय—कुमारी मार्टिन ने मेरी ओर उस विचित्र भावसे क्यों देखा? और फिर अचानक हँस क्यों पड़ी? —पर इसी बीच रत्नके समान चमकता हुआ प्रथम खंडका संकेत उसे नियंत्रण-फलकपर दिखायी पड़ गया और तबतक उसके मनमें अपने प्रश्नों का कोई कारण सूझा ही नहीं।

टॉवर से नीचे उतरते हुए उसके मनमें जो कुछ बचा रह गया था, वह था कुमारी मार्टिन की हँसी का मधुर-मधुर गूँजता हुआ स्वर। यह कितनी बुरी बात है कि मेरी पत्नी उसके समान नहीं हँसती; किन्तु मनुष्य सब वस्तुएँ पा जानेकी आशा तो कर नहीं सकता। मैं तो फिर भी बड़ा भाग्यवान् हूँ, क्योंकि संसारमें ऐसे बहुत-से लोग पड़े हैं.....ऐसे भी लोग, जो बहुत बुद्धिमान हैं और कॉलेज में भी पढ़ आये हैं.....जिनके पत्नी नहीं है।

३.११ तीसरा प्रहर

ऐरिका मार्टिन झिझकी। उसकी उँगलियोंके छोर टेलीफोन-यंत्रके काले चोंगे पर कुछ लड़खड़ाये। फिर व्यवस्थाक्रम की झुंझलाहट-भरी झंझट सामने आ खड़ी हुई। छः बजेवाली कार्यसमिति की बैठकके लिए पाँचों उपाध्यक्षोंमें से पहले किसे निमंत्रण दिया जाय। यद्यपि यह बात इतनी नगण्य थी कि इसका कोई महत्त्व नहीं होना चाहिए था पर वह जानती थी कि अवश्य इसका महत्त्व बना लिया जायगा। यदि श्री एल्डर्सन को ज्ञात हो जाय कि इसने मुझे बुलानेसे पहले श्री ग्रिम को बुला लिया है तो वह निश्चय ही बात का बतंगड़ बना देगा। श्री डडले या श्री शॉ या श्री वॉलिंग, से भी प्रारंभ करना ठीक न होगा। ये सभी उपाध्यक्ष है, सभी समान पद पर हैं। ऐवरी बुलार्ड को चाहिए था कि आज से सप्ताहों पहले इनमें से किसी को उपाध्यक्ष चुनकर यह बात निश्चित कर डालते।

ऐरिका मार्टिन की उँगलियोंका यह व्यग्रतापूर्ण खेल पूर्णतः उसकी झुंझलाहटका अचेतन संकेत था।

अट्ठारह वर्षकी अवस्था में ऐरिका मार्टिन कोई सुन्दर कन्या नहीं थी, किन्तु अड़तीस की अवस्था में वह सुन्दर नारी अवश्य हो गयी थी। जब वह लड़की थी तब वह कुछ लम्बी, मजबूत और मधुर नारीत्व की दृष्टिसे कुछ बहुत रूपवती नहीं थी, किन्तु इस प्रौढ़ावस्थामें उसने वह कमी पूरी कर ली थी, जो लोगोंको प्रशंसा के लिए प्रेरित करती है—यद्यपि यह सौन्दर्य अपर्याप्त और बहुत देर से आया। पुरुषों ने उसे अत्यन्त उच्च श्रेणीके व्यवसायी मनुष्य के समान प्रशंसनीय बताते हुए कहा कि उसका मस्तिष्क पुरुषों जैसा है। स्त्रियोंने, विशेषतः उसकी अपनी अवस्थाकी महिलाओंने, उसे दृढ़, स्वतंत्र और योग्य पाया।

सत्य बात यह थी, कि ऐरिका मार्टिन का जीवन अपनी विवाहिता साथिनोंके जीवनसे बहुत भिन्न नहीं था। ऐवरी बुलार्ड से उसका सम्बन्ध यद्यपि पूर्णतः आध्यात्मिक था और उसमें तनिक भी प्रेम-प्रदर्शन करनेका कोई संकेत-तक न था, तथापि वह सम्बन्ध किसी बुद्धिमती और सहायक पत्नी तथा किसी शासक, उत्तेजक और प्रतिभाशाली पतिके सम्बन्ध से बहुत भिन्न नहीं था। इस प्रकारके वैवाहिक सम्बन्ध में जैसा आदर हुआ करता है, उससे कुछ अधिक

ही उसका आदर होता था। किन्तु यह लाभ भी उसे नहीं मिल पाया, क्योंकि ऐसा कोई क्षण ही नहीं आया था कि किसी सुखमय अनादरकी भावना ही आगे चलकर प्रेम-प्रदर्शन की प्रस्तावना बन सके।

जहाँतक पतिकी सनक और दुर्बलताओंकी बात थी, कोई पत्नी उससे अधिक प्रपीड़ित नहीं हो सकती थी। ऐरिका मार्टिन के सामने भी ऐसे अनेक अवसर आते थे, जब सहन करना उसके लिए अत्यन्त कठिन हो जाता था। ऐसे भी क्षण आते थे जब ऐवरी बड़ी झुंझलाहट उत्पन्न कर देता था। बात कुछ ऐसी बेडंगी थी कि नित्यप्रति ऐवरी किन्हीं बड़ी समस्याओं पर जिस शीघ्रताके साथ निर्णय करता था, उसी शीघ्रता से वह उन समस्याओं को अपनी मेजपर पूर्ण करने ले आती थी। पर अचानक बीचमें ही कोई ऐसी छोटी-सी बात उठ खड़ी होती थी कि वह इस निश्चय के विरुद्ध हठ पकड़ लेता था, जैसे वह जानबूझकर उसे तंग करनेका प्रयत्न कर रहा हो। जब से श्री फिट्जेराल्ड की मृत्यु हुई थी तबसे वह प्रति सप्ताह ऐवरी को खोद-खोदकर कार्यवाहक-उपाध्यक्ष चुननेके लिए अपने व्यक्तिगत स्मारकपत्र-पर लिख-लिखकर दे आया करती थी। एक बार तो उसने सीधा प्रश्न ही कर दिया था; फिर भी उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। उसका वश यहीं तक तो था। यदि ऐवरी हठ पकड़कर बैठना चाहता है तो बैठे। कार्यवाहक उपाध्यक्ष चुनना कोई ऐसी बात तो थी नहीं, जिसे वह ऐवरी की कार्य-सूची के ऊपर प्रति सोम-वारके प्रातःकाल उसी प्रकार अंकित कर दे, जैसे वह "बाल कटवाना" लिख देती थी। वास्तव में झुंझलाहटकी बात यह थी कि उसकी इस अकर्मण्यताके कारण वह जिस संकट की स्थिति में पड़ गयी थी उसे समझने का प्रयत्न कभी ऐवरीने नहीं किया। उसे ही तो उपाध्यक्षोंको निमन्त्रित करना था, पर ऐवरी बुलार्डने कभी इस बातपर ध्यान ही नहीं दिया।

उसने फिर नीचे देखा। उसके हाथका तार उसे अत्यन्त आतुरताके साथ स्मरण दिला रहा था कि समय निकला चला जा रहा है। आज शुक्रवारका तीसरा पहर है। उपाध्यक्षों में से किसीको सूचना नहीं है कि श्री बुलार्ड न्यूयॉर्क से लौट रहे हैं। उनमें से सभी तो सप्ताहान्त बितानेके लिए कुछ पहले खिसक जानेका डौल बाँध रहे होंगे। उन्हें तत्काल रोकना चाहिए.....सबको। यदि उनमें से कोई कार्य-समितिकी बैठक में नहीं आ पाया, तो ऐवरी उसपर उबल पड़ेगा और यह उबल पड़ना ऐवरीके लिए ही घातक होगा....पिछली बार ही उसका रक्तचाप दो बिन्दु बढ़ गया था।

वह अपने कार्यालय के द्वार से निकलकर उस मध्यकालीन ओककी चक्करदार सीढ़ीसे उतर चली जो अधिकारी-कक्षके दोनों खंडोंको जोड़ती थी। सीढ़ीके तल ने ही क्रमकी समस्या सुलझा दी। सीधे सामने द्वार पर लिखा था—फ्रेड्रिक डब्ल्यू. एल्डर्सन, उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष। उसका द्वार पहले खोलने को कोई विशेष पक्षपात नहीं कह सकता था।

फ्रेड्रिक एल्डर्सन अपनी मेजके पीछे बैठे हुए थे। उनका शरीर उनकी कुर्सीमें चौरस जमा हुआ था। उनका सिर सीधा तना हुआ था और उनके मोमी गुलाबी मुख के ऊपर ऊँचे कँगूरेवाले सिरपर उगा हुआ एक भी श्वेत बाल अस्तव्यस्त नहीं था। वह ऐसे बैठे हुए थे मानो कार्यालयमें बड़े ढंगके साथ ठीक-ठीक सजायी हुई वस्तुओंमें ही वे भी एक हों। उनकी स्वागत-भरी मुस्कान भी उसी संयत ढंग की थी।

"भीतर आइए, कुमारी मार्टिन।"

"अभी मुझे श्री बुलार्ड ने समाचार भेजा है कि वे न्यूयॉर्क में घर लौट रहे हैं। उन्होंने छः बजे बैठक बुलायी है।"

उसके मुखपर छायी हुई मुस्कान ऐसे ढंगसे लुप्त हुई और इतने वेगसे फिर ज्यों-की-त्यों छा गयी कि कुमारी मार्टिन उसे ताड़ भी न पायी।

"मुझे आशा है कि इससे आपको अधिक असुविधा नहीं होगी, श्री एल्डर्सन।"

"नहीं।" इस एक शब्द से उसने समझा दिया कि मेरे व्यक्तिगत जीवनमें ऐसी कोई बात नहीं है, जो ऐवरी बुलार्ड के निमंत्रण के महत्त्व को दबा सके।

कुमारी मार्टिन ने कहा—"मैं समझती हूँ कि कोई बड़े महत्त्वकी बात होगी अन्यथा उन्होंने सबको रुकनेके लिए न कहलाया होता।"

"सबको?"—श्री एल्डर्सन ने सावधानीसे पूछा।

"कार्य-समिति को।"

"हाँ, हाँ, ठीक है। धन्यवाद, कुमारी मार्टिन।"

उसके स्वर ने कुमारी मार्टिन को द्वारपर ही रोक लिया—"मैं समझता हूँ कि आपको इसका तो कुछ ध्यान नहीं होगा कि यह बैठक कबतक चलेगी?"

"नहीं। मुझे खेद है।"

"ठीक है, कभी तक चले। श्रीमती एल्डर्सन और हम दोनों सात बजे भोजनके लिए जानेवाले हैं, किन्तु मुझे विश्वास है कि यदि हमें कुछ देर हो भी गयी तो हमारे आतिथेय समझ ही जायँगे।"

द्वार बन्द करते समय उसने देखा कि श्री एल्डर्सन ने एक नयी पैनी की हुई

पेंसिल उठायी और अपनी मेजपर रखी हुई पुस्तिका तक बढ़ा दी। श्री एल्डर्सन के जीवनमें कोई ऐसी घटना नहीं हुई, जिसे उन्हें अंकित न करना पड़ा हो और वह भी ऐसी जमी हुई लिखावट में मानो ताम्रपत्र पर खुदाई की गयी हो।

नीचे के खंड में पहुँचकर ऐरिका मार्टिन इस बात पर आश्चर्य करने लगी कि क्या ऐवरी बुलार्ड फ्रेड्रिक एल्डर्सन की त्यागमय स्वामीभक्तिका कभी आदर कर पाये हैं.....यदि श्री एल्डर्सन को ऐवरी अपना कार्यवाहक उपाध्यक्ष बना लें तो वह उस स्वामी भक्तिका उचित पुरस्कार होगा.....कोई कारण नहीं कि वह क्यों न बनाया जाय.....सब कारण ऐसे थे कि उसे ही बनाना चाहिए। श्री एल्डर्सन सब उपाध्यक्षोंमें सबसे वृद्ध थे। व्यवस्था-सम्बन्धी भी कोई जटिलता उत्पन्न नहीं हो सकती थी ; क्योंकि वे इकसठ के हो चुके थे, इसलिए चार वर्षोंमें योंही अवकाश ग्रहण कर लेते।

वह उस द्वार को खोलने के लिए आगे बढ़ गयी जिसपर लिखा था—जेसी ग्रिम, उत्पादन के उपाध्यक्ष।

जेसी ग्रिम अपने कार्यालय में नहीं थे, पर उनके चुरट की गंध वहाँ के वायु में गमक रही थी। ऐरिका मार्टिन द्वारमेंसे होती हुई उनके व्यक्तिगत सचिवके छोटे-से कक्ष में जा पहुँची—"हलो रथ। श्री ग्रिम हैं ?"

रथ एलकिन्स ने चोकलेट से ढँकी हुई कूकी अपने मुँहमें डालकर उसी प्रकार कठिनाई से निगली जैसे उसने वे अनेक सहस्रों खाद्य पदार्थ मुँह में ठूँसे थे, जिनके कारण आज उसे वह गोल-मटोल शरीर प्राप्त हुआ था—"ओह, कुमारी मार्टिन ! वे तो अभी कुछ क्षण पहले चले गये हैं ।"

"तुम्हें उनके पास पहुँचना होगा, रथ ! श्री बुलार्ड ने छः बजे कार्यसमिति की बैठक बुलायी है।"

"छः बजे ? ओह, कुमारी मार्टिन ! मैं कह नहीं सकती कि मैं उन्हें पा भी सकूँगी या नहीं। वे अपने मेरीलैंडवाले स्थान पर जानेवाले हैं।"

"वे यहाँ से कब गये ?"

"कोई दस मिनट हुए होंगे।"

"क्या वे पहले घर जानेवाले थे ?"

"मैं तो यही समझती हूँ।"

"तब तो उनके पास तक पहुँचनेका समय है, यदि तुम तत्काल चली जाओ।"

"निश्चय, केवल—ओह, कितने दुःखकी बात है, कुमारी मार्टिन ? श्री ग्रिम तो कारखाने में प्रायः प्रति रात को रहते थे और आज सप्ताहांत था।"

"यदि तुम उनके पास न पहुँच सको; तो मुझे तत्काल बतला दो।"—ऐरिका मॉर्टिन ने बात काटते हुए तीव्रता के साथ कहा। यदि रथको थोड़ा भी अवसर मिल जाय तो वह निरंतर बकबक करती ही चली जाय। यह सचमुच समझ से बाहर की बात है कि इतने वर्षो तक श्री ग्रिम ने रथ एलकिन्स के साथ निबाहा कैसे? इसका संभव उत्तर शुद्ध दया है। यही ग्रिम का स्वभाव था....। उनकी एकमात्र दुर्बलता यही थी कि वे यंत्रोंसे तो पूर्णता चाहते थे, किन्तु यदि उनके साथ काम करनेवालों में पूर्णता न हो तो अत्यन्त शीघ्र क्षमा कर देते थे। यह दोष था........ऐवरी जानता भी था...किन्तु, ऐवरी इस जेसी ग्रिम को बहुत चाहता था। बात स्पष्ट थी। जब वह कहा करता था—"बूढ़े जेसी को ऊपर बुला ला" तो उसके स्वर में विशेष स्नेह रहता था। अन्य उपाध्यक्षोंको तो वह केवल उपनामों से ही संबोधित किया करता था.... "श्री एल्डर्सन से कहना कि एक क्षणके लिए ऊपर चले आयें।"

दो नामों के उलटफेर ने उसके मस्तिष्क में एक प्रश्न उभाड़ दिया—क्या इसीलिए ऐवरी बुलार्ड देर कर रहे हैं? संभवतः वे श्री ग्रिम को ही कार्यवाहक-उपाध्यक्ष बनाना चाहते हैं; किन्तु वे उस क्षण की बाट जोह रहे हैं कि श्री एल्डर्सन को बिना रुष्ट किए कोई उपाय निकल जाय...नहीं, मेरी भूल है...ऐवरी बुलार्ड किसी भी परिस्थिति का सामना करने से नहीं डरते। व्यक्तिगत ध्यान ने कभी पहले उन्हें किसी काम में नहीं रोका...उनमें सब कठिनाइयोंको पार करनेकी क्षमता है...। वे उसके बहाने किसी बात को छिपाते नहीं, कोई बहाना था भी नहीं....। वे केवल कठोर थे।

विक्रय के उपाध्यक्ष श्री जे. वाल्टर डडले और रूपयोजना और विकास के उपाध्यक्ष श्री डॉन वॉलिंग दोनोंके कार्यालय एक बीचके द्वार से सम्बद्ध थे। डडले के कार्यालय में कोई नहीं था, किन्तु उसका स्वर उसने बन्द द्वार में से ही सुन लिया और खोल दिया। दोनों एक लम्बी मेज के पास बैठे थे और उनके आगे फर्नीचर की बहुत-सी रूपयोजनाओं के चित्र फैले पड़े थे।

वाल्ट डडले तत्काल उठ खड़ा हुआ और उसके मुखपर मुस्कराहट फूट पड़ी। वह बड़ा प्रभावशाली व्यक्ति था—लम्बा-चौड़ा, चौड़े कन्धोंवाला और दृढ़; गंभीर मुखपर असमय उग आनेवाले श्वेत बालोंवाला—और वह शीघ्र मित्रता करने की कला में बड़ा सिद्धहस्त था—"ऐरिका! प्रिय ऐरिका! तुम ठीक समय पर आयी—तुम निष्पक्ष निर्णायिका हो। हाथों-हाथ बिकने-वाली वस्तुओं के सम्बन्ध में तुम्हारी आँखें बड़ी सधी हुई हैं। डॉन और मैं

दोनों यही नहीं छाँट पा रहे हैं कि इन विशेष नमूनों में से हम शिकागो के बाजारके लिए आज रातको अपने साथ कौनसे ले जायँ ?"

ऐरिका मार्टिन ने बिना-चाहे मुस्करा दिया। वह जानती थी कि वाल्ट डडले ने जो कुछ कहा है वह शुद्ध रूपसे उसका व्यक्तिगत खेल है—जैसे "ऐरिका प्यारी ऐरिका !" यह बात संभवतः कोई दूसरा उपाध्यक्ष नहीं कह सकता था ? फिर भी सदाकी भाँति उसने उत्तर में ऐरिका की मुस्कान पा ही ली।

अपनी मुस्कराहट से अपने स्वरको दबाते हुए उसने कहा—"आप मुझसे यह कहलाना चाहते हैं कि इन नमूनोंमें से श्री बुलार्ड को कौन-सा अच्छा लगेगा ?"

डडले ने प्रशंसापूर्ण हास्यके साथ अपना सुन्दर सिर वॉलिंग की ओर उछाल दिया—"कहो डॉन ? मैं कहता नहीं रहता हूँ कि ये कैसी मनकी बात पहचानती हैं ?"

डॉन वॉलिंग ने इस माँगी हुई सहमति पर सिर तो हिला दिया, किन्तु यह समर्थन स्पष्ट रूपसे कुछ झिझक के दबे हुए स्वर से रँगा हुआ था—"मुझे भय है कि आप कुमारी मार्टिन को ऐसे स्थान पर बैठा रहे हैं—अर्थात् इन्हें श्री बुलार्ड की इच्छा समझ लेनेके लिए कह रहे हैं।"

उसने विनोद के साथ कहा—"यदि मैं श्री बुलार्ड की इच्छा इस प्रकार समझ लिया करती तो स्वयं उपाध्यक्ष न बन जाती।"

डडले तत्काल ठठाकर हँस पड़ा—"यह कोई गुण नहीं है। यदि यह गुण होता तो आज तक कोई भी उपाध्यक्ष न बन पाता।"

उसने देखा कि यह बातचीत श्री बुलार्ड के सम्बन्ध में व्यक्तिगत आलोचनाकी निषिद्ध भूमि तक पहुँची जा रही है, इसलिए उसने तत्काल बैठक की बात बताकर वह बात वहीं काट दी।

आज पहला बार वाल्ट डडले अचानक पकड़े गया। उसकी मुस्कान जाती रही—"पर मैं तो सात बजेके विमान से शिकागो जा रहा हूँ। फर्नीचर का बाजार सोमवार को खुल रहा है और वहाँ काम करनेवाले लड़कों की ठीक-ठीक व्यवस्था भी कल करनी है।"

उसके अंतिम शब्द इस प्रकार दुर्बल होकर निकले मानो वह जो कुछ कह रहा था उसका कोई महत्व न हो।—"अच्छा, मैं संभवतः इसके पीछेका विमान पकड़ सकूँगा।" उसके मुखपर फिर मुस्कराहट आ गयी—"मेरी कुर्सी झाड रखना ऐरिका ! मैं पहुँच जाऊँगा।"

वॉलिंग उनकी ओर कुछ क्रोध से देख रहा था—"मेरी समझ में नहीं आता

कि मैं कैसे आ सकूँगा, कुमारी मार्टिन ? ज्योंही पाँच बजे दूसरी पाली के कारीगर आ जायँगे, त्योंही हमारे साँचे में ढलाई का परीक्षण प्रारम्भ हो जायगा।"

डडले ने परामर्श दिया—"अच्छा हो कि उसे रोक दो।"

वॉलिंग ने प्रतिरोध किया—"रोक कैसे सकते हैं ? सारी तैयारी हो चुकी है। या तो वह ठीक समय पर हो ही जायगा या फिर नहीं होगा। हमने सारा महीना इस सप्ताहांत के लिए व्यवस्थित करके रक्खा है। यदि आजका अवसर हाथसे निकल गया तो फिर दूसरे परीक्षणके लिए साधन जुटाने में और एक महीना लग जायगा।"

"क्या वे आपके बिना काम नहीं चला सकते ?" ऐरिका मार्टिन ने इस रूप में प्रश्न पूछा मानो यह समझाने के लिए कहा गया हो कि बैठक में पहुँचने के लिए कोई काम बाधक नहीं होना चाहिए। डॉन वॉलिंग नया-नया उपाध्यक्ष था.....अभी दो वर्ष से ही वह ऊपर अधिकारी-कक्ष में पहुँचा है..... अभी बहुत-सी बातें उसे सीखनी हैं।

"पर मेरी समझ में नहीं आता कि यह होगा कैसे ? जैसे-जैसे परीक्षण होता चलेगा, वैसे-वैसे निर्णय भी तो करने हैं।"—वॉलिंगने कहा—"पर इस परिस्थिति में काम रोक देनेके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं दिखाई देता।"

ऐरिका ने मन-ही-मन निश्चय किया कि यह अभी सीख रहा है, पर इसे बहुत कुछ सीखना है...अभी यह अपने मनो-भाव छिपाने की कला नहीं सीख पाया है।

"घबराओ मत, बच्चू!"—डडले का कृत्रिम हास्य फूट पड़ा जैसे कोई अच्छा अभिनेता किसी साथी की भूल छिपाने के लिए बोल उठता हो—"कौन जाने बैठक शीघ्र ही समाप्त हो जाय और तब तुम समय पर कारखाने में पहुँच जाओ।"

ऐरिका मार्टिन कुछ विचार में पड़ गयी। वह जानती थी कि यह परीक्षण कितना महत्वपूर्ण है। वह जानती थी कि इसके प्रयोग के लिए कितना प्रारंभिक व्यय होनेवाला है। यदि नया ढलाई का काम ठीक उतरा तो वह आगे चलकर कितना महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। एक महीने का विलम्ब बहुत अधिक हो जायगा। यदि ऐवरी होते तो निश्चय ही वॉलिंग से कह देते कि तुम परीक्षण का काम चलाओ और बैठक की चिंता मत करो। किन्तु उसमें इतना साहस न हो सका कि ऐवरी के बदले वह यह बात कह दे। यही एक

ऐसी निराशापूर्ण स्थिति थी जो उसके सारे जीवन में रुकावट डाले हुए थी। अन्य किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा वह अधिक जानती थी कि किस विशेष परिस्थिति में ऐवरी बुलार्ड की क्या प्रतिक्रिया होगी, किन्तु उस बात को उसने कभी पहले कहने का साहस नहीं किया। वह उसके शब्द दुहरा सकती थी, उसके आदेश दूसरोंके नाम भेज सकती थी, उसकी आज्ञाएँ सुना सकती थी; बस, केवल इतना ही। इनसे अधिक करना उसकी सीमा-रेखा से परे की बात थी।

द्वार के बाहर ऐरिका मार्टिन पुनः उस संकटपूर्ण स्थिति का कारण ढूँढ़ती रही जिसमें वह प्रायः पड़ जाया करती थी। वह सदा ऐवरी बुलार्ड और उसके उपाध्यक्षोंके बीचकी कड़ी बनी हुयी थी। वह जो आज्ञाएँ भेजा करती थीं उससे उसे कुछ लेना-देना नहीं था, फिर भी लोग अपना क्रोध उसीपर उतारते थे। छः बजे कार्य-समितिकी बैठक करना केवल अनियंत्रणपूर्ण स्वेच्छा-चारी—कार्य था, जिसमें अन्य लोगों की योजनाओं और इच्छाओं का कोई ध्यान नहीं रक्खा जा रहा था। वह सहमत थी। पर यह कोई उसका तो दोष था नहीं। वे उससे क्यों घृणा करते हैं. . . . वे सचमुच उससे घृणा करते थे, सबके सब। अकेला वॉलिंग ही ऐसा व्यक्ति था जो अपनी इस घृणाको प्रकट भी कर देता था, पर इसका कारण यही था कि वह नया था और उसने अभी-तक यह नहीं सीख पाया था कि उपाध्यक्षके पदके लिए बनावटी मुखड़ा बना रखना आवश्यक है। सब उपाध्यक्षों के ये बननेके ढंग अलग-अलग थे। डडले का था-हास्य, एल्डर्मन का था—उदासीनता, ग्रिम का था—काली चुरट से उड़नेवाला पतला नीला धुएँका परदा, शॉका था. . . . .।

शॉ का नाम प्रेरक सिद्ध हुआ और वह झपटकर कोने से घूमकर उस द्वार तक पहुँची जिसपर लिखा था—लॉरेन पी. शॉ, उपाध्यक्ष और नियंत्रक। वहाँ कोई बैठक चल रही थी और वह झट इस विचारसे लौट आयी कि शॉ के आप्त-सचिव के पास संदेश छोड़ दूँगी। पर वह अभी द्वार से एक पग दूरी पर ही थी कि शॉ पुकार उठा—"कोई विशेष बात, कुमारी मार्टिन ?"

"मुझे खेद है कि मैंने बाधा दी, श्री शॉ।"

"नहीं; कोई बाधा नहीं, कुमारी मार्टिन ! कोई महत्व की बैठक नहीं है। केवल अपने विभागीय अध्यक्षों की बैठक हो रही है। अर्द्ध वर्ष समाप्ति के लिए अपनी योजनाएँ बना रहे हैं, तुम जानती ही हो।"

"श्री बुलार्ड न्यूयॉर्क से वापस लौट रहे हैं। उन्होंने छः बजे कार्य-समिति की बैठक बुलायी है।"

सब लोगों के मुखड़ों में लॅरेन शॉका छद्म-मुख सबसे बढ़िया निकला। उसकी आँखें सीधी शॉकी आँखोंपर लगी हुयी थीं, किन्तु उनमें प्रतिक्रिया की सूक्ष्मतम चमक भी नहीं दिखायी पड़ी और उसके स्वर में भी असाधारणता की कोई झलक नहीं मिल सकी। वह बोला—"स्पष्टतः आज न्यूयॉर्क में कुछ नयी बात हुई होगी।"

ऐरिका मार्टिन ने भी शीघ्रता से कहा—"स्पष्टतः?" वह सोचने लगी—क्या वह जानता है कि ऐवरी न्यूयॉर्क में क्या कर रहे हैं.... या यह स्वयं मुझे ही यह बताने की प्रेरणा देने के लिए यह छद्म प्रयास कर रहा है कि बैठक किसलिए हो रही है। किन्तु किसी भी परिस्थिति में इससे अधिक कुछ कहा ही नहीं जा सकता था—"धन्यवाद, श्री शॉ!"

"नहीं; कोई बात नहीं, कुमारी मार्टिन। मैं पहुँच जाऊँगा।"

उसने अनुभव किया कि शॉ की आँखें बराबर उसके पीछे तबतक लगीं रहीं जब तक वह नीचे भवनतक पहुँच नहीं गयी और कोने पर घूम कर सीढ़ी पर चढ़ नहीं गयी। और तभी उसने शॉ के द्वार को बन्द होते सुना।

सीढ़ी के ऊपर पहुँच कर उसने सहसा अनुभव किया कि शॉ उसकी ओर क्यों इतना ध्यान दे रहा था। वह केवल इसी बातको पक्का कर लेना चाहती थी कि बैठक की बात कुमारी मार्टिन ने उसे सब से अन्त में बतायी है। उसके मन में एक अवर्णनीय भयका कम्पन दौड़ गया, पर उसने झट वह भय दूर भी कर दिया—लॅरेन शॉ जो भी सोचे उसके लिए मैं क्यों भयभीत होऊँ? वह केवल उपाध्यक्ष भर ही तो है। तीन घंटेसे भी पहले ऐवरी यहाँ आ ही जायँगे।

वह अपने और ऐवरी बुलार्ड के कार्यालय में घूमने लगी। उसने धूप की ओरके सब परदें खींच कर द्वार बन्द कर दिया और सब ओर का प्रकाश रोककर केवल गिरजाघर की ओरसे आनेवाली वह कोमल चमक भर रहने दी, जो मोटी-मोटी ओक की शहतीरों के बीच जड़े हुए रंगीन काँच से छनकर आ रही थी। वह ऐवरी की मेज के पास जा पहुँची और जहाँ से वह उसकी कुर्सी की पीठ छू सकती थी, वहाँ पहुँच कर रुक गयी। तब चुपचाप उसके हाथ लटक गये और उसकी उँगलियों के छोर उस ओक की कठोर लकड़ी पर खिसकते हुए उसके लाल चमड़ेके स्पर्शका अनुभव करने लगे। उसकी आँखें उसके हाथ के साथ नहीं चल रही थीं। वह सीधे सामने देख रही थी। उसके मुखके रूपमें कोई अन्तर नहीं आया था।

तृतीय अध्याय

न्यूयॉर्क सिटी

४.५२ तीसरा पहर

जैसा कि प्रायः बहुत-से लोकसेवकों के साथ होता है, फ्रैंक ग्रॉस भी उन मानवीय त्रुटियोंका घोर विरोधी था, जो मनुष्य की जीविका का साधन बने। वह प्रायः कहा करता था कि यदि यह संघीय नियम बना दिया जाय कि प्रत्येक नागरिक अपने शरीरपर अपना नाम गोदवा रक्खे और सामाजिक सुरक्षा अंक साथ लेकर चले, तो मेरे जैसे लोगोंकी नौकरी करने की आवश्यकता बहुत कुछ कम हो जाय। यह उन सब लोगों पर व्यंग्य था जो इतने बड़े मूर्ख हैं कि वे किसी भी सार्वजनिक स्थानपर मर जाते हैं और अपने शरीर पर कोई उचित परिचय का चिह्न तक नहीं रखते।

फ्रैंक ग्रॉस की मेजपर जो परिचय-सम्बन्धी गुत्थियाँ उपस्थित थीं, उनके अन्तिम समाधान से उसे कोई संतोष नहीं हुआ। उसका मत था कि वह कुछ ऐसे काम में अपनी शक्ति और बुद्धिका अपव्यय कर रहा था जिनकी वास्तव में कोई आवश्यकता नहीं थी। उसने अत्यंत अरुचि के साथ अपने सामने रखी हुई फाइल खोली और उसे याद आया कि फाइल लाने के समय मैकिनटोश ने कहा था—"देखो फ्रैंकी! इस पर विशेष ध्यान देना। जान पड़ता है यह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति है।" फ्रैंक ग्रॉस को महत्वपूर्ण लोगों से कोई मोह नहीं था। यदि उन्नीस वर्ष नौकरी में बड़े होने की बात न होती. . . और यह एक बात ऐसी थी जिसे एक पत्नी और चार बच्चोंवाला कोई व्यक्ति भूल नहीं सकता था. . . तो वह मैकिनटोश को बता देता कि वह क्या करेगा। मैकिनटोश तो उसकी पीठ का फोड़ा बन गया था। कोई नत्थू-बुद्धू सड़क पर मर जाता है तो यह नित्य की बात हो जाती है और यदि कोई ऐसा व्यक्ति मर जाय जिसके पीछे दो वोट भी हों तो बस मैकिनटोश झट उसे विशिष्ट बना देगा. . . . . हुँ! . . . . . और जब पाँच बजने में बीस मिनट रहेंगे, तब वह ऐसी समस्या ला धरेगा कि गाड़ी भी छूट जाय। फ्रैंक ग्रॉस ने अपना चश्मा ठीक किया और उसमें आँखें डालकर आँखें मिचकाई और विवरण-पत्रक की रद्दी प्रतिलिपि की परीक्षा करने लगा। बटुआ. . . . नहीं। कागज-पत्र. . . कोई

नहीं। धोबी के चिह्न...कोई नहीं...धोबीके चिह्नों के लिए कोई संघीय नियम अवश्य बन जाना चाहिये.....कमीज की बाँहोंपर ए. बी. अक्षर हैं। वस्त्र...हलके भूरे, जिसपर धुँधला लाल-सा रंग चढ़ा है... डी. आन्द्रूजी, पामबीच, फ्लोरिडावाले ने इसे सिया है...गाहक की पट्टी भी नहीं है। कोट......चौवालीस इन्च लम्बा, पतलून...चालीस, कमर पैंतीस जोड़पर। हैट...डौब्स, ६ ⅞, नामाक्षर ए.बी.। जेबकी सामग्री... छोटे-छोटे सिक्के, जिनका जोड़ १.५७ डॉलर। कैंटन ओहिओ से बसका टोकन। केमल छाप सिगरेट। डनहिल कम्पनीका सिगरेट-लाइटर, जिसपर ए. बी. नामाक्षर हैं।

फ्रैंक ने उस मूर्खपर अत्यन्त असन्तुष्ट रूप से नाक-भौं सिकोड़ी, जिसने रिपोर्ट लिखी थी और ऊँचे स्वरमें चिल्ला उठा—"मैं जानता हूँ कि उसके नामाक्षर ए. बी. है। कितनी बार तुम मुझे बताते चले जाओगे?" अत्यन्त निराशा-जनक निःश्वास के साथ उसने अपने दाहिने हाथके मेजकी दराज खोली। उसमेंसे संदेश भेजनेके कोरे पत्रोंकी नोटबुक निकाली और उसने दो तार लिखे—एक तो चीफ पुलिस, पामबीच, फ्लोरिडाके नाम; और दूसरा चीफ पुलिस, कैंटन, ओहिओके नाम। नगरसे बाहर की घटनाओं पर फ्रैंक कभी भी चीफ पुलिस से कम पदवाले व्यक्ति को संदेश नहीं भेजता था। यदि वे इसे ठीक न समझें तो उससे क्या। न्यूयॉर्क नगर में गड़बड़ी करने के लिए जब वे उन्हें यहाँ भेज देते हैं तो उनको ऐसे ही ठीक करना चाहिए।

संदेश लिखकर फ्रैंक ग्रॉस अपने कक्षमें गया। उसने अपना हैट उठाया और वह घर चल दिया। मैकिनटोश ने इसपर विशेष ध्यान देनेके लिए कहा था...ठीक है। 'विशेष' हो गया। इससे अधिक और क्या हो सकता था?

५.०२ सायंकाल

सुरंग-मार्गके मुँह की ओर, वॉलस्ट्रीट से जो मनुष्यों की लहर पाँच बजे गरजती हुई चली आरही थी, उसमेंसे अपना मार्ग चीरते हुए जॉर्ज कॉसवेल निर्दिष्ट कोने पर जा पहुँचा। यातायात के अधिकारी ने खीसें निकाल कर नम्र नमस्कार किया और उस कॅडिलॉक गाड़ीकी ओर अपना संकेत किया जो वहाँसे आधी दूरपर "गाड़ी खड़ी मत करो" क्षेत्रमें पड़ी सुस्ता रही थी।

नील फिच पहलेसे ही पीछेकी गद्दी पर बैठा हुआ था। कॉसवेलके भीतर बैठते ही चालक ने भी झट... गाड़ी बढ़ा दी। ये दोनों व्यक्ति बहुत पुराने मित्र थे और यह सम्बन्ध इतना पक्का था कि प्रतिद्वन्द्विता और समीपता दोनों दशाओंमें यह सम्बन्ध बना रहा। ये दोनों दो शेयर बाजारों के दलाल-घरोंके अध्यक्ष थे–कॉसवेल एन्ड कम्पनी और स्लेड एन्ड फिंच और पिछले नौ वर्षों से पास-पास लॉन्ग आयलैंड क्षेत्रमें रहते आ रहे थे। गर्मी के दिनोंमें वे दोनों साथ-साथ बारी-बारीसे गाड़ियाँ निकालकर आते-जाते थे।

"आशा है, तुम्हें बहुत असुविधा न हुई होगी नील, इतनी देर प्रतीक्षा करने में !" कॉसवेल ने कहा।

"नहीं मित्र ! मुझे अवसर मिल गया कि कार्यालयके कुछ कागजपत्र यहाँ निबटा दूँ।"

वे चुपचाप बढ़े जा रहे थे कि अचानक यातायात की भीड़के कारण गाड़ीको रुक जाना पड़ा।

"मैंने सुना है कि आज तुम्हारा मित्र यहाँ नगर में आया था।" फिंचने कहा।

"कौन मित्र ?"

"ऐवरी बुलार्ड। विनगेट ने उसे तुम्हारे कार्यालय से आते देखा था।"

"हाँ, हाँ। आज बुलार्ड आया था। वास्तवमें उसीके कारण मैं रुक भी गया कि वह न जाने कब मुझे बुला बैठे।"

"क्या उसे कार्यवाहक-उपाध्यक्ष मिल गया ?"

"इसीलिए तो वह मुझे बुलानेवाला था। वह ब्रूस पिल्चरके साथ भोजन करने गया था।"

"ब्रूस पिल्चरके ?"

"तुम उसे जानते हो क्या ?"

"हाँ, हाँ !"

वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला–"क्या कहा ? पिल्चरके साथ ऐवरी बुलार्ड भोजन कर रहा था ?"

"हाँ, क्यों ?"

"क्यों जॉर्ज ? क्या ट्रेडवे कुछ संकटमें पड़ गया है ?"

"संकट ! क्या कहते हो ?"

"भोजन के समय कुछ ऐसी बात अवश्य हुई है, जिसने पिल्चर को ट्रेडवे

कार्पोरेशनके सम्बन्ध में बहुत सशंक कर दिया है।"

"मै तो नहीं समझता कि कोई ऐसी बात है।"

"क्या तुम्हें विश्वास है कि उधर कोई गड़बड़ी नहीं हैं।"

"निश्चय!"

फिचने कहा—"पर तुम्हें तो जानना ही चाहिए।....तुम भी ट्रेडवे बोर्ड के सदस्य हो न?"

"हाँ, हूँ तो; पर तुम्हारा इससे क्या तात्पर्य है कि पिल्चर को बहुत सशंक कर दिया?"

"पर, यह गोपनीय है?"

"स्वभावतः।"

"यह स्वभावतः संयोग की बात हो, पर बैठ ठीक रही है। अच्छा, यह बताओ कि बुलार्डका पिल्चरके साथ भोजन करना किस समय निश्चित था?"

"चिपैंडेल भवन में, जूलियस स्टीगलके कार्यालयमें १२-४५ पर।"

"तो ढाई बजे तक भोजन हो ही गया होगा।"

"हाँ, यही मै समझता हूँ। पर तुम इससे अनुमान क्या लगा रहे हो?"

फिच घूमा और उसने अपने शरीर को ऐसे आधा मोड़ लिया कि वह उस गाड़ीकी चौड़ी गद्दीमें बैठे हुए जार्ज कॉसवेल के सामने मुँह कर सके—"ढाई बजेके कुछ मिनट पीछे ब्रूस पिल्चर ने हमारे कार्यालय को खटखटाया और यह खुला आदेश दे दिया कि ट्रेडवे कम्पनीके साधारण शेयर बेच डालो।" कॉसवेल चौंककर सावधान हो गया—"ओह! तो ये सब शेयर वहीं से आये हैं?"

"हम लोगोंने बीस मिनट मे लगभग दो हजार शेयर बेच डाले है।"

"मैं जानता हूँ। मैंने स्वयं मोल लिये हैं।"

"यह क्या गड़बड़ कर डाली तुमने? हिसाबमें मोल लिये हैं?"

"हाँ।"

"तो तुम्हें उस कम्पनीमें बहुत विश्वास होगा।"

"मुझे ऐवरी बुलार्ड में बहुत विश्वास है।"—कॉसवेलने कहा और आगे कहनेसे पूर्व वह थोड़ा झिझका, मानो वह किसी महत्वपूर्ण बात को बताने के औचित्य पर विचार कर रहा हो—"मै पिछले कुछ वर्षोंसे ट्रेडवे के शेयरोंका शौक बनानेके फेरमें हूँ और जहाँसे मुझे मिल जाता है वहीं से ले लेता हूँ और यह व्यवसाय भी बहुत सक्रिय होकर नहीं करता। तुम जानते ही—

क्योंकि कभी-कभी तो बहुत दिनों तक कुछ-सौ शेयरोंसे अधिक पल्ले नहीं पड़ता; इसीलिए मुझे उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ जब मैं अपने कार्यालय मे पहुँचा और देखा कि मेरे गुरगोंने आज तीसरे पहर मेरे लिए दो हजार शेयर मोल लेकर रख छोड़े हैं। सच पूछो तो मैंने उन्हें 'जो मिलते चलें लेते चलो' का जो आदेश दिया था, उससे कहीं अधिक हाथ लग गये हैं।"

"क्यों जॉर्ज ! यह आदेश तुमने कब दिया था कि जो मिले लेते चलो ?"

कॉनवेल अपनी आँखें मिचकाता हुआ ऐसा घूमा मानो इस प्रश्नने उसे चकित कर दिया हो—"दोपहरके लगभग।"

"बुलार्डसे बातचीत करनेके पश्चात् ?"

"हाँ।"

"तब पिल्चर ने भोजनके समय बातचीतमें बुलार्डसे कुछ ऐसा रहस्य निकाल लिया होगा, जो तुम प्रातःकाल तक नहीं जान पाये।"

"पर मेरी समझमें नहीं आता कि यह सम्भव कैसे हो सकता है ?"

"पिल्चर भी मूर्ख नहीं है। यह स्पष्ट है कि उसे किसी संकटकी गंध अवश्य लग गयी है।"

"संकट की कोई बात ही नहीं है। कंपनी बहुत अच्छी चल रही है।"

फिंच ने अपना सिर हिलाया—"ब्रूस पिल्चर को कोई निश्चित समाचार न मिलता तो इतने शेयर कभी न निकालता। कमसे कम जबतक उसे यह निश्चय न हो जाता कि मूल्य में मंदी लानेवाली कोई बात हो रही है।"

"पर ऐसी बात हो क्या सकती है ?"

"मुझसे क्या पूछते हो ? तुम तो स्वयं ट्रेडवेके विशेषज्ञ हो। मैं तो तुम्हें बता भर रहा हूँ कि हुआ क्या है। सिगार लोगे ?"

"नहीं, धन्यवाद !" कॉसवेलने कुछ सोचते हुए कहा—"क्या ब्रूस पिल्चर तुम्हारे यहाँ का नियमित ग्राहक है ?" फिंच ने दियासलाई की लौ से इस प्रकार आँखें हटाई मानो वह इस प्रश्नकी प्रत्यक्ष असंगतिपर चकित हुआ हो—"नियमित नहीं, आकस्मिक—सम्भवतः वर्षमें आधे दर्जन सौदे करता होगा।"

"यही तो मैं भी सोचता था"—जॉर्जने गंभीरतासे सिर हिलाया—"उसका तो हमारे यहाँ बड़ा लम्बा-चौड़ा लेन-देन है।"

फिंचने झट बात समझ ली—"तुम समझते हो कि उसने हमें यह आदेश इसलिए दिया कि तुम यह न जान सको कि बेच कौन रहा है ?"

"स्पष्टतः।"

"या फिर"–फिंचने ताने से भरी हुई खिसियाहटके साथ कहा–"वह सहायक दलाल के यहाँ सौदा करते-करते थक गया हो।"

कॉसवेल का मुसकाना दुर्बल प्रयास था–"यदि मैं भूल न करता हूँ, तो श्री पिल्चर सीमा से बाहर चले गये हैं। दो हजार शेयर बेच देनेसे उन्हें हानि ही होगी। अभी शेयरका भाव स्थिर है और अधिकांश शेयर अत्यन्त सबल हाथोंमें हैं।"

"मेरा विचार है कि तुम ठीक कह रहे हो, जॉर्ज ! संभवतः तुम्हारे जैसे पुराने लड़ाई के घोड़े को छोड़कर ब्रूस पिल्चर जैसे उछलनेवाले किसी नये बछड़ेको हथियाने की बात होगी।"

"अपने ग्राहकोंकी चिन्ता मत करो, नील ! पिल्चर तो अभी छोकरा है, जिसने स्वयं अपनेको उसमें फॉस दिया है।"

"क्या तुम्हें तनिक भी भान नहीं है कि भोजनके समय उसने बुलार्ड से क्या रहस्य निकाला होगा। वह बडा चंटजबान लोमडा है, जॉर्ज। तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ।"

"पर इतना चंट नहीं है कि ऐवरी बुलार्डसे कुछ निकाल सके।"

"उसे निश्चय ही कुछ भेद मिल गया है।"

"मैं कहता हूँ न कि कोई भेद पानेकी बात ही नहीं है"–कॉसवेलने कहा। उसका स्वर झुंझलाहटके क्षणिक आवेग के कारण कुछ तीव्र हो चला। "–मैंने ऐवरी बुलार्डके साथ आज प्रातःकाल दो घंटे बिताये हैं। हम लोग यहाँसे वहाँ तक के पूरे व्यवसाय पर बातचीत कर गये हैं। यदि कहीं भी कोई संकट की बात होती तो वह मुझे अवश्य बता देता।"

"तुम्हें विश्वास है ? श्री ऐवरी बुलार्डके सम्बन्ध में कभी-कभी तुमने जो बातें सुनाई हैं उनसे तो मुझे यही भावना हुई है कि अवसर पड़नेपर वह स्वयं भी थोड़ा बहुत चंट लोमड़ा हो सकता है।"

कॉसवेल ने बड़े वेगसे अपना सिर हिलाया–"यदि मैंने कभी ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए तुम्हारे मनमें यह भावना डाली हो तो वह पूर्णतः अज्ञात रूपसे होगी। वह बड़ा रूखा और कठोर व्यक्ति है और सदा अपनी दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर झूलता रहता है; किन्तु मुझे अपने जीवनमें जितने सच्चे लोग मिले हैं, उनमें मैं ऐवरी बुलार्डको अत्यन्त सत्यनिष्ठ और ईमानदार समझता हूँ। मेरा विचार है, और यह सत्य भी है कि जितने आदमियों से मेरा लेन-देन और व्यवसाय है, उनमें मैं सबसे अधिक ऐवरी बुलार्ड

का आदर करता हूँ। यदि मैं उसपर अपना विश्वास खो दूँ तो मैं सबपर विश्वास खो दूँगा।"

फिंच ने चुटीली हँसीके साथ कहा—"मेरा भी बहुत दिनोंसे विश्वास है। पर यह इतना बड़ा दोष नहीं है जितना तुम समझते हो। इससे तुम्हें अपना लक्ष्य स्थिर करनेमें सहायता मिलती है।"

जॉर्ज कॉमवेल नहीं मुस्कराया। उसे फिंच की सनक में कोई विनोद नहीं जान पड़ा।

"क्या बात है, जॉर्ज ! क्या अभी तक चिंता कर रहे हो ?"—फिंच ने अन्त में मौन भंग करते हुए कहा।

"नहीं, चिन्ता कुछ नहीं"—कॉमवेल ने धीरेसे कहा—"मैं यही आश्चर्य कर रहा था कि ऐवरी बल्लार्ड ने मुझे आज तीसरे पहर बुलाया क्यों नहीं ?"

५.१२ सायंकाल

अपने जन्मके ही दिन सदस्यता के लिए प्रस्तावित जिस ग्रीन बैंक क्लब का वह तीसरी पीढ़ीका सदस्य था, उसमें अपने स्वतःप्रयुक्त विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए ब्रूस पिल्चरने उस भवनके नियमों को तोड़ते हुए वाचनालय में ही अत्यन्त सूखी मार्टिनी मदिरा लानेकी आज्ञा दी।

उस क्लबके सबसे पुराने सेवक एन्ड्रू ने मदिरा लाकर पेश भी कर दी और ब्रूस पिल्चर ने उस भीगी थाली में एक डॉलरका पुरस्कार फेंक भी दिया, पर सेवकने उस नोट को कपड़ेसे सुखा लिया और इस बातको छिपाने का कोई प्रयत्न नहीं किया कि उसे इस पुरस्कार से अधिक झुंझलाहट हो रही थी।

एन्ड्रू की इस स्पष्ट विरोधात्मक वृत्तिका पिल्चर को कोई ज्ञान नहीं हुआ; पर यदि हो भी जाता तब भी वह उससे प्रभावित न होता।

पिल्चर ने कहा—"क्यों एन्ड्रूज ! ताजे समाचारपत्र कहाँ हैं ?"

बूढ़े सेवक ने चुपचाप अलमारी की ओर संकेत कर दिया।

"मैं ताजा संस्करण चाहता हूँ। क्या बात है कि वह अभी तक यहाँ नहीं पहुँचा ?"

एन्ड्रू बाहर चला गया।

पिल्चर ने मदिरा की बोतल उठायी और उसके तलपर बने हुए नीबूके तेलकी सजावट देखने लगा। उसके हाथके हिलने से गिलास में नन्हें-नन्हें

लहरों के छल्ले बन गये और वह एक घूँट में आधा गिलास इस प्रकार निगल गया मानो उसे पी जानेसे उसकी घबराहट दूर हो जायँगी।

उसने मन-ही-मन सोचा—घबराहटकी तो कोई बात है नहीं। यह बात स्पष्ट है कि वॉल स्ट्रीट के अंतिम संस्करण में ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में कोई समाचार नहीं हो सकता... समय ही कहाँ था?...अंतिम संस्करण में भी संभवतः कुछ न हो। पर उससे क्या होता-जाता है। प्रातःकाल समाचार आ ही जायगा। नहीं, इसके लिए घबरानेकी कोई बात नहीं। दो हजार शेयरों की भी कोई बात नही। हाँ, जब विनगेट ने मुझे सूचना दी कि हमने दो हजार शेयर बेच डाले हैं... मैंने आशा भी नहीं की थी कि बाजार में जमावट होने पर भी बीस मिनट में इतने बिक जायँगे... फिर भी यह विचार ठीक ही था.... बहुत ठीक था... पूर्णतः ठीक। जब अपने हाथ में जीतके पत्ते हों तो जितना बड़ा दाँव लगाया जाय उतना ही अच्छा।

विनगेट ने अधिक शेयर बेच सकने का कारण यह बताया था कि चारों ओर कुछ ऐसी अफवाह थी कि [illegible] का विवरण असाधारण रूपसे बहुत अच्छा और लाभकर समझे हुए थे।

पिल्चर ने पूरी मदिरा पी ली। उसका हाथ अब स्थिर हो गया था। जब कल प्रातःकाल 'टाइम्स' और "हैरल्ड ट्रिब्यून" में ऐवरी बुलार्ड की मृत्युका समाचार निकलेगा, तब उन दलालों को पता चलेगा कि वे दाँव चूक गये। टाइम्स तो संभवतः उसका चित्र भी छाप दे।

ऐवरी बुलार्ड के निधन का समाचार इन दलालों को जलपान के समय ही मिल जायगा और तब खेल प्रारंभ होगा। बाजार खुलने से पहले ही बेचने के आदेश के ढेर लग जायँगे। प्रारंभ में तो यह विक्रय एक या डेढ़ बिन्दु मन्दी पर ही जायगा, पर फिर वह धीरे-धीरे गिरना प्रारंभ हो जायगा और प्रथम चार घंटेके अन्त तक......।

उसका मस्तिष्क पूर्णतः निश्चल हो गया। कल तो शनिवार है...कल तो बाजार बन्द रहेगा। वह खड़ा हो गया। वह अपने हृदयकी द्रुत गति के कम होने की बाट देखने लगा और मन में सोचने लगा कि उसे अपना शेष धन संभाल कर रखना चाहिए; मस्तिष्क को ठीक स्थिर रखना चाहिए और शान्त तथा स्वस्थ बने रहना चाहिए। क्या इससे कुछ फर्क पड़ेगा? नहीं, जो कल नहीं हो पावेगा, वह सोमवार को प्रातःकाल हो जायगा। सोमवार तो और भी अच्छा रहेगा। तबतक तो इस बात के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से

सप्ताहांत चर्चा होती रहेगी कि ऐवरी बुलार्ड की मृत्युसे ट्रेडवे पर क्या प्रभाव पड़ा है। उसने और भी बहुत-से तर्क मन-ही-मन किये पर कोई भी तर्क इतना दृढ़ नहीं था जो उसके इस कष्टदायक अनुभव का समाधान कर सके कि उससे बड़ी भारी भूल हो गयी है।

ब्रुस पिल्चर मदिरा का शेष भाग चढ़ा गया और जब उसने अपने कॉपते हुए हाथसे उस गिलास को मेज पर रखा तो गिलास में खनक हुई। उससे और क्या भूल हो गयी?—क्या मुझसे रोगी-गाड़ी में पड़े हुए मनुष्य को पहचानने में तो भूल नहीं हुई? नहीं, वह निश्चय ही ऐवरी बुलार्ड था। क्या वह मर गया था? हाँ; क्योंकि साथ के व्यक्ति ने उसका मुँह ढँक दिया था। ठहरो! क्या इससे यह पूर्ण सिद्ध हो सकता है कि वह सचमुच ही मर गया था? वह क्षण भर को रुक गया। इस प्रश्न के उत्तर का बड़ा महत्व था। इसी पर सब कुछ अवलम्बित था। यदि बुलार्ड वास्तव में मरा नहीं है, तो सारी स्थिति उलट जायगी।

उसकी आँखें घबराहट के साथ उस कक्ष में चारों ओर घूमने लगीं। टेलीफोन को देखकर उसके मन में एक विचार कौंध गया—क्यों न अस्पताल से मिलान कर पूछ लिया जाय? यह विचार मन में पहले क्यों नहीं आया? रुजवेल्ट अस्पताल। उसे रोगी—गाड़ी का नाम स्मरण था। उसके हाथ ने टेलीफोन को स्पर्श किया और फिर पीछे हट गया—यह लाइन तो स्विच बोर्ड में होकर गयी है। इसके लिए निजी टेलीफोन का प्रयोग करना ही अधिक ठीक होगा।

अन्तःप्रेरणा ने उसे दौड़ चलनेको प्रेरित किया, किन्तु उसने बलपूर्वक सावधानी के साथ नपे हुए पग रखकर चलना प्रारंभ किया। और वह बरामदे में से जाते हुए, प्रविष्ट होने वाले तीन सदस्यों से ऐसे स्वर में बातचीत करते हुए निकल गया, जिससे उन्हें कुछ विचित्र न लगे और वह टेलीफोन के डिब्बे तक जा पहुँचा।

उसकी अँगुलियोंके छोरों ने रूजवेल्ट अस्पताल का नम्बर खोजने के लिए पन्ने पलटते हुए, डायरेक्टरी के पतले पृष्ठों पर गीली छाप छोड़ दी। नम्बर मिल गया और उसने चक्कर घुमाया।

"कृपया मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से मिला दीजिए, जो मुझे एक रोगी की दशा के सम्बन्ध में सूचना दे सके।"

"आप किस रोगी के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं? उनका नाम क्या है,

श्रीमान् ?"

"ऐवरी बुलार्ड–श्री ऐवरी बुलार्ड।"

"कृपया एक क्षण ठहरिए।"

वह प्रतीक्षा करने लगा और उसके फेफड़े इस प्रकार तनाव का अनुभव करने लगे मानो भीतर की नन्हीं-सी नलियों में बचा हुआ अंतिम श्वास भी समाप्त हुआ जा रहा हो।

"मुझे खेद है श्रीमान्, इस नाम का हमारे यहाँ कोई रोगी है ही नहीं।"

"पर, होना ही चाहिए। मैंने देखा था– वह आज तीसरे पहर रोगी-गाड़ी में अस्पताल ले जाया गया था।"

"पिछले चौबीस घंटों में इस नामका कोई भी व्यक्ति अस्पताल में भर्ती नहीं हुआ है; संभवतः वह किसी दूसरे अस्पताल में होगा।"

"नहीं, रूजवेल्ट अस्पताल ही था। मुझे निश्चय है कि–" दूर पर खनक सुनायी दी और फिर सब शान्त हो गया।

५.१५ सायंकाल

"कुमारी फिनिक"–प्रतीक्षालय के डेस्क पर खड़ी हुई लड़की ने कहा। "नीचे भवन में दाहिनी ओर दूसरे द्वारमें चली जाइए!" जब उसने द्वार खोला तब डाक्टर एक कार्ड देख रहा था, जो डेस्क के पास खड़ी हुई लड़की ने दिया था।

"मैं हूँ, डा. मार्सटन । कृपया स्थान ग्रहण कीजिए।"

ऐनी फिनिक झिझकी; क्योंकि वह जानती थी, यदि कहीं बैठ गयी तो मूर्छित न हो जाऊँ और पूरी बात न कह पाऊँ। अतः उसने कहा–"मैं श्रीमती पॉल सेम्सिन की सहेली हूँ।"

"अच्छा-अच्छा!" डाक्टर ने हर्ष के साथ कहा मानो उसने इस बातपर ध्यान न दिया हो कि वह अभी खड़ी है –"क्या कष्ट है आपको कुमारी फिनिक?"

यही तो वह क्षण था–अब तो बताना ही पड़ेगा–"मैं यह जानना चाहती हूँ कि क्या मैं गर्भवती हूँ?"

वह उसके मुखकी ओर देखती हुई खड़ी रही। वायला ने इस डाक्टरके बारे में ठीक कहा था कि वह बड़ा घुटा हुआ आदमी है। वह न तो चकित हुआ था और न कोई भाव ही दिखा रहा था। उसे ही सब बातें बतानी पड़ीं–

"मैं यदि गर्भवती हुई तो मुझे किसी के पास जाकर कुछ उपाय करना पड़ेगा। किन्तु वायलाने कहा है कि यदि गर्भ हो ही नहीं तो ऐसा करना बेवकूफी है। मैं आपसे कोई ऐसी बात करने को नहीं कह रही हूँ जो अनुचित हो। मैं केवल यही जानना चाहती हूँ कि मैं गर्भवती हूँ या नहीं ?"

"नहीं"– उसने अत्यन्त कोमलता और दृढ़ताके साथ कहा–"मुझे विश्वास है कि आप गर्भवती नहीं हैं।" उसके स्वर से यह सिद्ध होता था कि वह ठीक कह रहा है। वायला सचमुच ठीक कहती थी कि यह डाक्टर मार्सटन बड़ा विचित्र आदमी है। वह जो भी पैसा लेता है सार्थक होता है; क्योंकि उससे पूछने पर रोग का पूरा पता चल जाता है। उसे जितने पैसे की आवश्यकता थी उतने तो उसके पास थे ही; क्योंकि बटुएँ में पाँच सौ चौंतीस डॉलर पड़े हुए थे।

५.२१ सायंकाल

टेलीप्रिंटर की घंटी बजी। यंत्र में भिनभिनाहट हुई और टाइप की तीलियाँ काले-काले अक्षर फैलाने लगी–"डी. आन्द्रूजी दर्जीने काम बन्द कर दिया। विवरण अप्राप्य; पता–ठिकाना अज्ञात। पुलिस, पामबीच।"

५.२७ सायंकाल

ब्रूस पिल्चर प्रबल विभीपिका की पकड़ में आ गया था। यद्यपि उसे पहले भी अनेक बार भय का अनुभव हुआ था पर आजके जैसा कभी नहीं हुआ। उसका मस्तिष्क ऐसा स्तब्ध हो गया था कि संगत रूपसे विचार करना उसके लिए असंभव हो गया था।

रूजवेल्ट अस्पताल से बात करने पर उसे विश्वास हो गया था कि उससे भयंकर भूल हो गयी है। रोगी–गाड़ी पर उसने जिस मनुष्य को लिटाये ले जाते हुए देखा था, वह ऐवरी बुलार्ड हो नहीं सकता। भयके कोहरे में वह किसी ऐसे बड़े जाल की रूपरेखा देखने लगा जो उसे फँसाने के लिए मुँह बाए बढ़ा आ रहा हो–मेरे दो हजार शेयर हाथसे निकल गये। ट्रेडवे के शेयरों की चारों ओर बड़ी माँग है। मेरे आदेश पर वे हाथों-हाथ बिक गये, यही इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। यदि वह अब सोमवार को बाजार में पहुँचे और फिर लेना भी प्रारंभ न करे तो. . . दो हजार डॉलर. . चार हजार डॉलर. . .

आठ हजार डॉलर...सोलह हजार डॉलर.. रेखागणित के अनुपात में विपत्ति बढ़ती ही चली जायगी।

बैंक में उसके कुल चार हजार डॉलर जमा थे। यद्यपि इस बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा पर बात सत्य थी। पत्नी के परित्याग में उसे पचास हजार नकद दे देने पड़े थे। वैस्टचेस्टर का मकान भी उतने पूरे डॉलर पर बन्धित रखा जा चुका था, जितना उसपर ऋण लिया जा सकता था। यदि शेयर का भाव कुछ डॉलर भी बढ़ गया तो मै दिवालिया हो जाऊँगा और फिर मैं अपना साधारण व्यय भी नहीं चला पाऊँगा—जिसका अर्थ होगा मेरी साख और मेरे व्यावसायिक जीवन का अन्त।

अपनी रक्षा करने का अब उसके पास केवल एक ही साधन था...ट्रेडवे के स्टॉक के दो हजार शेयरों को सोमवार के प्रातःकाल बाजार खुलनेसे पहले ही हथिया लेना। पर, कहाँ...कहाँ...कहाँ।

उसकी स्मृति की दृढ़ प्राचीर से इस शब्दके धक्केने मानो एक खंड ही तोड़ कर अलग कर दिया हो। शॉ...लॉरेन पी. शॉ। हाँ, यही ठीक है। आजकल शॉ ही ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का नियंत्रक है। शेयर पानेके लिए शॉ कोई-न-कोई उपाय निकाल ही देगा। शॉ मेरे अँगूठेके तले है। शॉ को अस्वीकार करने का साहस नहीं होगा। और जब मैं यह स्मरण करा दूँगा कि मुझे वह घटना स्मरण है, जब ... सन् में एलायन्स के लिए सरकारी ठेके के सम्बन्ध में कुछ बात हुई थी तब तो वह अस्वीकार कर ही नहीं सकता। नहीं, हे मेरे भगवान्, नहीं! क्या में पागल हो गया हूँ? जितना मैं शॉ के सम्बन्ध में जानता हूँ उससे अधिक शॉ मेरे सम्बन्ध में जानता है। नहीं, शॉ मेरे अँगूठे तले नहीं है। बात ठीक उलटी है।

धुँध छट रहा था। वह फिर सोचने लगा—हाँ, यह करना चाहिए...सोच लूँ। बस, इसी एक उपाय से बच सकता हूँ।...इसी उपाय से, जिसने पहले भी मेरी रक्षा की है.. अपने मस्तिष्क के सहारे। शॉ का ध्यान अब भी उसके मस्तिष्क की अँधेरी गलियों में चक्कर लगा रहा था। उसकी स्मृति से एक और परत सरककर गिर गयी।....शॉके साथ भोजन करनेके उपरांत उस संध्या को मैडिसन ऐवेन्यू में मुझे एक स्त्री मिली थी। शॉ ने बताया था कि कम्पनी में उसके सबसे अधिक शेयर हैं और वह ट्रेडवे सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी है। क्या नाम था उसका? ट्रेडवे? नहीं, उसका विवाह हो चुका है...मिलबर्ग में रहती है...जूलिया? हाँ, यही नाम तो है...जूलिया...

जूलिया... जूलिया ? अचानक नाम उसके मस्तिष्क मे कौंध उठा . जूलिया ट्रेडवे प्रिंस।

ब्रुम पिल्चर पुनः पुस्तकालय में से होकर चला और टेलीफोन के डिब्बेकी ओर बढ़ गया—शेयर प्राप्त करनेका कुछ-न-कुछ उपाय निकालना ही होगा। उसका मस्तिष्क फिर सक्रिय हो गया।

बरामदे के बीच में ही वह ऐन्ड्रू के पास से होकर निकला, जो अपने फैले हुए हाथपर समाचारपत्र के अंतिम संस्करण लिए हुए पुस्तकालय की ओर बढ़ा चला आ रहा था। उसने बड़ी प्रसन्न मुद्रामें कहा—"धन्यवाद, एन्ड्रू ! " हाँ, अब वह पूर्ण स्वस्थ था।

टेलीफोन के कक्षमे वह एक क्षण यह निश्चय करने के लिए रुका कि उसके मस्तिष्क मे धुंध की अंतिम रेखा दूर हो गयी है या नहीं। उसे अब कोई संदेह नही रह गया—मैं बहुत पहले जूलिया ट्रेडवे प्रिंस से मिला था। किन्तु अभी मैं उसके नाम को याद कर रहा था। ठीक है; मेरे मस्तिष्क में कोई विकार नहीं। वह ठीक काम कर रहा है।

उसने फोन-संचालक को निर्देश देनेके लिए चक्कर घुमाया—"मैं मिलबर्ग पेंसिलवेनिया के लिए—श्रीमती जूलिया ट्रेडवे प्रिंस से व्यक्तिगत बातचीत करने के लिए बाहर का टेलीफोन-सम्बन्ध चाहता हूँ।"

चतुर्थ अध्याय

मिलबर्ग, .

पेंसिलवेनिया

५.४४, सायंकाल

ज्योंही डॉन वॉलिंग ट्रेडवे टॉवर के काले संगमरमर के दालान में पहुँचा, त्योंही उसने झट ऊपर टँगी हुई विशाल काँसे की घड़ी में देखा कि पाईक स्ट्रीट कारखाने से हड़बड़ी में चल देनेके कारण उसने चौथाई घंटा नष्ट कर दिया। वह अभी वहाँ दस मिनट और रुक सकता था। कम-से-कम प्रथम परीक्षण का प्रारंभ होना तो देखा ही जा सकता था। किन्तु वह संकट मोल लेना नहीं चाहता था; क्योंकि साउथ फ्रंट मार्ग पर उतनी कम भीड़ प्रायः नहीं होती, जितनी उस दिन थी। एक बार इसी फेर में वह भूल कर गया था। वह अभी तक ऐवरी बुलार्ड की उस मुद्रा को नहीं भूला था, जिससे उसने उस समय उसका स्वागत किया था, जब वह कार्यसमिति की बैठक में छः मिनट देर में पहुँचा था। यह बात लगभग दो बरस पहले की है– उपाध्यक्ष बनने के कुछ ही दिनों पीछे की–जब ऐवरी बुलार्ड को प्रसन्न करना जीवन का परम लक्ष्य जान पड़ता था। किन्तु उसकी स्मृति अब भी बनी हुई है। डॉन वॉलिंग जानता था कि कार्यसमिति की बैठक में उसकी उपस्थिति उतनी आवश्यक नहीं है, जितनी नयी ढलाई की क्रिया के प्रथम परीक्षणका कारखाने में रहकर निरीक्षण करना। फिर भी उसे रुके रहने का साहस नहीं हुआ। ऐवरी बुलार्ड की आज्ञा टाली नहीं जा सकती। यदि बैठक से पहले ऐवरी बुलार्ड से बातचीत करनेका अवसर मिल जाय तो उसे उपस्थिति के लिए मुक्ति मिल भी सकती है... पर ऐसा अवसर मिलेगा नहीं। अध्यक्ष जिस क्षण संचालकों के कक्षके द्वारमें प्रविष्ट होगा, उसी क्षण अपनी कुर्सी तक पहुँचते-पहुँचते बात चलाकर बैठक प्रारंभ कर देगा। उसे रोकनेका भी उपाय नहीं और क्षमा माँगने का भी कोई अवसर नहीं। पीछे चलकर जब ऐवरी बुलार्ड को यह ज्ञात होगा तब वह कह देगा–"धत्तेरेकी ! तुमने बताया क्यों नहीं"... और तब यह समझाने का भी कोई उपाय नहीं रह जायगा कि मैंने पहले क्यों नहीं बताया। कुछ बातें एसी हैं जो आप ऐवरी बुलार्ड को बता नहीं सकते...बहुत-सी बातें...

सदा बहुत-सी बातें। पिछले दो वर्षोंमें ऐवरी बुलार्ड में बड़ा परिवर्तन हो गया था।

यदि डॉन वॉलिंग अपने मनका अन्तर्दर्शी व्यक्ति होता—जो वह नहीं था—तो वह समझ जाता कि, वह ऐवरी बुलार्ड में जो परिवर्तन समझता था, उसका कुछ अंश, वास्तव में, उसी के अपने दृष्टिकोण और समझका परिवर्तन था। पिछले दो वर्ष के सम्पर्क से वह बुलार्ड को उस निर्दोष मूर्ति से कुछ भिन्न समझने लगा था जो उसने पहले कभी बना रखी थी। मनमें तो डॉन वॉलिंग इस भावना से संघर्ष करता था और अब भी ऐवरी बुलार्ड के प्रति अपनी अड़िग निष्ठा बनाये रखना चाहता था।

समझ आनेके समय से लेकर सात वर्ष की अवस्था तक अनाथालय में उसने अपने माता-पिताका स्वप्न देखा और आशा करता रहा कि वे किसी दिन आकर अनाथालय से उसे ले जायँ। एक दिन वे आये -दोनों माता-पिता। और उन्होंने उसे जीवन के पहले शिखर पर उठाकर रख दिया—किन्तु तभी उसे ज्ञात हुआ कि वह माता उस स्नेह का उष्ण स्रोत नहीं है, जिसके लिए उसका हृदय व्याकुल रहा करता था—वरन् उसकी माँ एक विचित्र स्त्री थी, जो प्रायः चिल्लाती और कहती रहती थी कि उसका नाम, अब आगे से उसका नाम नहीं रहेगा, वरन् उसका दूसरा नाम होगा—मॅकडॉनल्ड वॉलिंग द्वितीय।

जिस मनुष्य को उसे पिता कहना पड़ रहा था, वह भी सुखद सहचर नहीं, वरन् एक जीर्ण आँखोंवाला व्यक्ति था—जिसके शरीर से सदा सिगार और मदिरा की दुर्गन्ध आती रहती थी।

चार वर्षों के पश्चात् ग्यारह वर्ष की अवस्था में वह उस रात्रिकी भयंकर दुर्घटना के पश्चात् बालकों के छात्रावास-विद्यालय रबल हिल में ले जाया गया। उस दुर्घटना के सम्बन्ध में उसे केवल इतनी बात से अधिक कोई स्मृति नहीं थी कि उसकी रक्षिका—माता ने आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था। इस विद्यालय में आनेके पश्चात् फिर कभी, अपने रक्षक माता-पितासे उसकी भेंट नहीं हुई; किन्तु अगले ही दिन प्रातः काल श्री एन्ड्रूजसे उसकी भेंट हुई।

रबल हिल केआचार्य श्री एन्ड्रूज ने उससे कहा कि अब उसे अपना बड़ा-सा मॅकडॉनल्ड वॉलिंग द्वितीय नाम रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि उसका नाम भी बार्थोलोम्यू मीड एन्ड्रूज था पर अब केवल बार्ट एन्ड्रूज है। अतः वह चाहे तो अपना नाम मॅक वॉलिंग रखे या डॉन वॉलिंग। उसने डॉन

ही ठीक समझा; क्योंकि उसकी धर्म-माता उसके धर्म-पिताको मॅक कहा करती थी।

बालक डॉन वॉलिंग को बार्ट एन्ड्रूज ने ज्ञान और कला के संसार में पहुँचा दिया। वह व्यक्ति उस बालक के लिए आदर्श बन गया। यह क्रम उस दिनतक चलता रहा, जब बार्ट एन्ड्रूज ने उसे अपने कार्यालय मे बुलाकर कह दिया कि उसके धर्मपिता ने अगले सत्रके लिए उसका अध्ययन-शुल्क नहीं दिया है, इसलिए उसे रबल हिल छोड़ना ही पड़ेगा। उस दिन डॉन वॉलिंग ने यह भी सीख लिया कि मित्रता का भी पैसा देना पड़ता है। उसी दिन के बाद उसने श्री एन्ड्रूज को फिर कभी नहीं देखा।

रबल हिल में उसे पाँच डॉलर और रेलगाड़ी का टिकट देकर उससे कहा गया कि वह पिट्सबर्ग के अनाथाश्रम में श्री मैकिलहेनी से जाकर मिले। वह नहीं गया। डायमण्ड स्ट्रीट की भीड़ में घूमते-घूमते उसने बहुत-से आदमियों का झुंड देखा, जो एक नौकरी देनेवाली एजेन्सी के सामने चक्कर काट रहा था। वह उन लोगों से मार्ग पूछ ही रहा था कि उत्तर मिलने से पहले ही कोई मनुष्य द्वार खोलकर चिल्लाया—"शेनले हिलपर निर्माण-कार्य के लिए बीस श्रमिक चाहिए। जो जाना चाहें हाथ उठायें।" डॉनने हाथ उठा दिया। वह अभी सत्रह ही वर्षका था पर अपनी अवस्था से बड़ा लगता था, इसलिए उससे कुछ पूछा नहीं गया। उसके पास जो पाँच डॉलर थे, उन्हें उसने एक कोठरी के अग्रिम भाड़ेके रूप में दे दिये। पहला वेतन पानेके दिन तक उसके पास एक पाई भी न थी जिससे वह खाना खा सके। उसने अपनी नौकरी के स्थान के पास ही एक छोटा-सा भोजनालय चुन लिया और उससे उधार खिलाने को कहा। वहीं उसकी भेंट माइक कोवालेस से हो गयी। माइक को एक व्यक्ति की जरूरत थी जो रातको थालियाँ धो दे। डॉन ने वह काम करना स्वीकार कर लिया। आठ घंटे प्रतिदिन वह एक पहियेके ठेले पर पत्थर ढोता था और लगभग आठ घंटे प्रतिरात्रि ही वह माइक की थालियाँ धोता था। माइक ने धीरे-धीरे उसे भोजनालय का मुनीम बना दिया और उसे अंतिम वर्ष की परीक्षा देनेके लिए हाईस्कूल जानेकी प्रेरणा भी दी। रात को जो ग्राहक आते थे, वे प्रायः कारनेगी टेकनिकल कॉलेज के वास्तुशिल्पकला के छात्र होते थे। उनकी इधर-उधर की बातें सुनकर डॉन वॉलिंग ने एक नया स्वप्न गढ़ा—"मैं भी कॉलेज में पढ़कर वास्तु-शिल्पी बनूँगा।"

टेकनिकल कॉलेज में उसे बड़ी निराशा हुई। उसकी गति अत्यन्त मन्द

थी। जिन पुस्तकों को वह एक रात में पढ़ डालने की सोचता था, उन्हें वह एक सप्ताह में भी समाप्त न कर सकता था। उसे ऐसा लगता था कि वह न घरका हो रहा है और न घाटका। पर उसने पढ़ाई जारी रखी; क्योंकि वह अपने को भगोड़ा सिद्ध नहीं करना चाहता था और फिर माइक भी सबसे यहीं डींग हाँकता रहता था कि उसका लड़का अब कॉलेज में पढ़कर शिल्पी बनेगा।

अगले वसन्त में जब डॉन का दूसरा वर्ष चल रहा था, माइक ने अपने भोजनालय को पुनः सजानेका निश्चय किया। डॉन ने उसका मानचित्र खींचा और भावी योजना बना डाली। माइक बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने कह दिया कि वही उस कामको देखे। दिनमें [illegible] लकड़ीकी दूकान में अलेघनी जाया करता था। उसे यह देखकर बड़ा आनन्द मिला कि उसके बनाये हुए मानचित्र किस प्रकार चमकदार शीशम के रूप में परिवर्तित हो रहे हैं। उसने निश्चय कर लिया कि अब वह आगेसे ऐसे स्थानों के भीतरी भागकी सजावट के मानचित्र बनाने में विशेषता प्राप्त करेगा। कुछ भाग्यका चमत्कार देखिए कि उसने यह निश्चय उसी सप्ताह में किया, जिस सप्ताह में कार्ल ईरिक कासिल से उसकी भेंट हुई जो भीतरी सजावट की वर्तमान क्रान्तिका अप्रतिम नेता था।

उस कासिल के द्वारा सजायी हुई पिट्सबर्गकी दूकानके पुनरुद्घाटनके अवसर पर कार्ल ईरिक कासिल भी अपनी लाल दाढ़ी हिलाता हुआ पिट्सबर्ग आया था। गेनली हॉल ने उसे बहुत बड़ी दावत दी, जिसमें उसने शिल्पकला के छात्रोंको व्याख्यान देनेके साथ यह घोषणा कर दी कि वर्तमान शैली के फर्नीचर की रूपयोजना के लिए अब वार्षिक प्रतियोगिता हुआ करेगी और उसमें प्रतिवर्ष जो व्यक्ति प्रथम पुरस्कार पायेगा, उसे कार्ल ईरिक कासिल की न्यूयॉर्क की प्रयोगशाला में प्रत्याशार्थी के रूपमें काम करने का अवसर मिलेगा।

अपने अंतिम वर्ष में डॉन वॉलिंग ने कार्ल ईरिक कासिल-प्रतियोगिताका पुरस्कार जीत लिया। माइक को उस बालक से बिछुड़ते हुए बड़ा दुःख हुआ। पर डॉन न्यूयॉर्क के लिए चल ही दिया। यह उन्नीससौ इक्कीस के वसन्त की बात है। वह कार्ल ईरिक कासिल की इस बातको मानने के लिए प्रस्तुत नहीं था कि साधारण व्यापार इतना गिर गया है कि उसे दस डॉलर प्रति सप्ताह से अधिक देने और प्रयोगशाला के पीछे गोदाम में सोनेकी सुविधा से अधिक और कुछ नहीं मिल सकेगा। वास्तव में जैसा श्री कासिल ने कहा भी

था कि कार्ल ईरिक कासिल के साथ काम करना ही स्वयं ऐसी विशेष सुविधा है जिसका कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता; विशेषतः उस समय जब कि वह पूर्णतः नवीन क्षेत्रका प्रवर्तन कर रहा था। कार्ल ईरिक कासिल अब केवल भीतरी सजावट की रूपरेखा बनानेवाला ही नहीं, वरन् वह अब "कार्यशील व्यावसायिक शैलीवाला" वन गया था और चूहेदानी से लेकर अंजनतक किसी भी वस्तुमें वह सौन्दर्य की ऐसी शक्ति भर देता था कि वह धड़ाधड़ बिकने लग जाय। कार्ल ईरिक कासिल ने कहा था—"कोई कारण नहीं है कि डॉन वॉलिंग भी थोड़े ही समय में इस नये क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान पा जाय।"

कुछ महीनों तक तो डॉन को यही ज्ञात न हो पाया कि यह स्थान वास्तव में कितना महत्त्व का होगा। कार्ल ईरिक कासिल ने इस सम्बन्ध मे कुछ बताया नहीं। वह डॉनके आगे "रुचिपूर्ण छोटी-छोटी समस्याएँ" लादकर चला जाता था और जितने वेगसे डॉन उन समस्याओं का समाधान कागज पर प्रस्तुत कर देता था, उतने ही वेगसे कार्ल ईरिक कासिल उन्हें इस एक ही टिप्पणीके साथ उठा ले जाता था कि "पहले प्रयासकी दृष्टिसे यह आशाजनक ही है।" कुछ महीने पीछे एक व्यापारी पत्रिका में डॉन ने एक नवीन बिजली की सजावट का मान-चित्र देखा—जो वास्तव में कार्ल ईरिक द्वारा प्रस्तुत "रुचिकर छोटी-छोटी समस्याओं" में से एक का उसके द्वारा किया हुआ समाधान था और जो बिना किसी परिवर्तन के ज्यों-का-त्यों उठाकर रख दिया गया था। उससे सम्बन्धित लेख में उस बिजली के व्यापारी का यह कथन भी दिया हुआ था कि "कार्ल ईरिक कासिल को इस रूप—योजना के लिए जो हमने पाँच हजार डालर शुल्क दिया है, उससे हमें बहुत लाभ हुआ है।"

क्रोध से लाल होकर डॉन अपनी गठरी बाँधने लगा। इतने में ही कार्ल ईरिक कासिल ने आकर उसे समझाना प्रारंभ किया—"मैं तो कोरा बुद्धू हूँ। अपने हाथसे एक रेखा नहीं खींच सकता। मेरे नाम से आजतक जो कुछ काम हुआ है, वह सब उन मेधावी युवकोंने किया है जो तुमसे पहले मेरे साथ रह चुके हैं। देखो; तुम बड़े चतुर लड़के हो। तुममें कल्पना है, बुद्धि है, स्फूर्ति है, साहस है, महत्त्वाकांक्षा है; पर यह सब तुम्हें कहाँ ले जायँगे? मैं तुम्हें बता दूँ कि ये तुम्हें कहीं नहीं ले जायँगे—जब तक कि तुम जीवन की वास्तविकता न जान लो। यही मैं तुम्हें सिखाने का प्रयत्न कर रहा हूँ। तुम मेरे साथ लगे रहो और देखो कि मैं सोने के खान की कुँजी तुम्हें सौंप देता हूँ या नहीं। तुम समझते हो कि सोनेकी मब खानें बड़े-बड़े पहाडों की कठोर

थी। जिन पुस्तकों को वह एक रात में पढ़ डालने की सोचता था, उन्हें वह एक सप्ताह में भी समाप्त न कर सकता था। उसे ऐसा लगता था कि वह न घरका हो रहा है और न घाटका। पर उसने पढ़ाई जारी रखी; क्योंकि वह अपने को भगोड़ा सिद्ध नहीं करना चाहता था और फिर माइक भी सबसे यहीं डींग हाँकता रहता था कि उसका लड़का अब कॉलेज में पढ़कर शिल्पी बनेगा।

अगले वसन्त में जब डॉन का दूसरा वर्ष चल रहा था, माइक ने अपने भोजनालय को पुनः सजानेका निश्चय किया। डॉन ने उसका मानचित्र खींचा और भावी योजना बना डाली। माइक बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने कह दिया कि वही उस कामको देखे। दिनमें दो बार डॉन नदी पार करके कीमर की लकड़ीकी दूकान में अलेघनी जाया करता था। उसे यह देखकर बड़ा आनन्द मिला कि उसके बनाये हुए मानचित्र किस प्रकार चमकदार शीशम के रूप में परिवर्तित हो रहे हैं। उसने निश्चय कर लिया कि अब वह आगेसे ऐसे स्थानों के भीतरी भागकी सजावट के मानचित्र बनाने में विशेषता प्राप्त करेगा। कुछ भाग्यका चमत्कार देखिए कि उसने यह निश्चय उसी सप्ताह में किया, जिस सप्ताह में कार्ल ईरिक कासिल से उसकी भेंट हुई जो भीतरी सजावट की वर्तमान क्रान्तिका अप्रतिम नेता था।

उस कासिल के द्वारा सजायी हुई पिट्सबर्गकी दूकानके पुनरुद्घाटनके अवसर पर कार्ल ईरिक कासिल भी अपनी लाल दाढ़ी हिलाता हुआ पिट्सबर्ग आया था। शेनली हॉल ने उसे बहुत बड़ी दावत दी, जिसमें उसने शिल्पकला के छात्रोंको व्याख्यान देनेके साथ यह घोषणा कर दी कि वर्तमान शैली के फर्नीचर की रूपयोजना के लिए अब वार्षिक प्रतियोगिता हुआ करेगी और उसमें प्रतिवर्ष जो व्यक्ति प्रथम पुरस्कार पायेगा, उसे कार्ल ईरिक कासिल की न्यूयॉर्क की प्रयोगशाला में प्रत्याशार्थी के रूपमें काम करने का अवसर मिलेगा।

अपने अंतिम वर्ष में डॉन वॉलिंग ने कार्ल ईरिक कासिल-प्रतियोगिताका पुरस्कार जीत लिया। माइक को उस बालक से बिछुड़ते हुए बड़ा दुःख हुआ। पर डॉन न्यूयॉर्क के लिए चल ही दिया। यह उन्नीससौ इक्कीस के वसन्त की बात है। वह कार्ल ईरिक कासिल की इस बातको मानने के लिए प्रस्तुत नहीं था कि साधारण व्यापार इतना गिर गया है कि उसे दस डॉलर प्रति सप्ताह से अधिक देने और प्रयोगशाला के पीछे गोदाम में सोनेकी सुविधा से अधिक और कुछ नहीं मिल सकेगा। वास्तव में जैसा श्री कासिल ने कहा भी

था कि कार्ल ईरिक कासिल के साथ काम करना ही स्वयं ऐसी विशेष सुविधा है जिसका कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता; विशेषतः उस समय जब कि वह पूर्णतः नवीन क्षेत्रका प्रवर्तन कर रहा था। कार्ल ईरिक कासिल अब केवल भीतरी सजावट की रूपरेखा बनानेवाला ही नहीं, वरन् वह अब "कार्यशील व्यावसायिक शैलीवाला" बन गया था और चूहेदानी से लेकर अंजनतक किसी भी वस्तुमें वह सौन्दर्य की ऐसी शक्ति भर देता था कि वह धड़ाधड़ बिकने लग जाय। कार्ल ईरिक कासिल ने कहा था—"कोई कारण नहीं है कि डॉन वॉलिंग भी थोड़े ही समय में इस नये क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान पा जाय।"

कुछ महीनों तक तो डॉन को यही ज्ञात न हो पाया कि यह स्थान वास्तव में कितना महत्त्व का होगा। कार्ल ईरिक कासिल ने इस सम्बन्ध मे कुछ बताया नहीं। वह डॉनके आगे "रुचिपूर्ण छोटी-छोटी समस्याएँ" लादकर चला जाता था और जितने वेगसे डॉन उन समस्याओं का समाधान कागज पर प्रस्तुत कर देता था, उतने ही वेगसे कार्ल ईरिक कासिल उन्हें इस एक ही टिप्पणीके साथ उठा ले जाता था कि "पहले प्रयासकी दृष्टिसे यह आशाजनक ही है।" कुछ महीने पीछे एक व्यापारी पत्रिका में डॉन ने एक नवीन बिजली की सजावट का मान-चित्र देखा—जो वास्तव में कार्ल ईरिक द्वारा प्रस्तुत "रुचिकर छोटी-छोटी समस्याओं" में से एक का उसके द्वारा किया हुआ समाधान था और जो बिना किसी परिवर्तन के ज्यों-का-त्यों उठाकर रख दिया गया था। उससे सम्बन्धित लेख में उस बिजली के व्यापारी का यह कथन भी दिया हुआ था कि "कार्ल ईरिक कासिल को इस रूप-योजना के लिए जो हमने पाँच हजार डालर शुल्क दिया है, उससे हमें बहुत लाभ हुआ है।"

क्रोध से लाल होकर डॉन अपनी गठरी बाँधने लगा। इतने में ही कार्ल ईरिक कासिल ने आकर उसे समझाना प्रारंभ किया—"मैं तो कोरा बुद्धू हूँ। अपने हाथसे एक रेखा नहीं खींच सकता। मेरे नाम से आजतक जो कुछ काम हुआ है, वह सब उन मेधावी युवकोंने किया है जो तुमसे पहले मेरे साथ रह चुके हैं। देखो; तुम बड़े चतुर लड़के हो। तुममें कल्पना है, बुद्धि है, स्फूर्ति है, साहस है, महत्त्वाकांक्षा है; पर यह सब तुम्हें कहाँ ले जायँगे? मैं तुम्हें बता दूँ कि ये तुम्हें कहीं नहीं ले जायँगे—जब तक कि तुम जीवन की वास्तविकता न जान लो। यही मैं तुम्हें सिखाने का प्रयत्न कर रहा हूँ। तुम मेरे साथ लगे रहो और देखो कि मैं सोने के खान की कुँजी तुम्हें सौंप देता हूँ या नहीं। तुम समझते हो कि सोनेकी सब खानें बड़े-बडे पहाडों की

चट्टानों में ही होती हैं ?—नहीं। सब से बड़ी सोने की खान तो संसारके बड़े-बड़े व्यापारियों की सुदृढ़ खोपड़ी के भीतर ही भरी हुई है। तुम स्वयं अपने से पूछो—आज जो कुछ इनके पास है वह इन्होंने कहाँ से प्राप्त किया?—इनका भोजन-पानी और राग-रंग चलता कैसे है ? उत्तर सीधा है। इन्होंने कोई ऐसी वस्तु निकाल दी जिसके लिए जनता लालायित थी। समझे ?—ये लोग जनता के मनको भाँपते हैं और मैं घूम-घूमकर उनके मनको भाँपता हूँ। इसमें दोष क्या है ? तूँबाफेरी बहुत अच्छी बात है। है न ? मैं उतना माल थोड़े ही देता हूँ जितने का मुझे पैसा मिलता है। बस, यह समझ लो—मैं उन्हें उतना ही देता हूँ जितना दो डॉलर की शीशी में लोग बीस सेंटका सुगंधित इत्र किसी महिला को दे डालते हैं। उसे लेकर क्या वह कुड़बुड़ाती है ? नहीं, वह सन्तुष्ट होकर चली जाती है। उसे वह अच्छा लगता है। उसके सब प्रेमी उसे चाहते है। उससे उन्हें आनन्द मिलता है। यही सारा रहस्य है, बेटा ! ये बड़े-बड़े व्यापारी भी कुछ और नहीं करते; उन्हें भी यह अच्छा लगता है। बस, एक ही बात है। वे बड़े लोग हैं। यह बात जानते हैं कि उनके चारों ओर सब वस्तुएँ बड़ी होनी चाहिए। उन्हें बड़े ढंगसे अपना काम चलाना होता है। यदि वे शोषक भी बनें तो छोटे शोषक नहीं बनना चाहते—उन्हें बड़ा शोषक बनना ही पड़ेगा।"

"सी. और डब्ल्यू. हाउसवेयर्स के अध्यक्ष श्री. ए. डब्लू. बिल्बर्सन को तुम जानते ही होगे ? बहुत बड़ा आदमी है। सब बातों में बड़ा है। एक व्यावहारिक परिस्थिति समझो—बहुत व्यावहारिक। मान लो तुम कार्ल ईरिक कासिल के सहयोगी नहीं हो—तुम केवल तुम हो। तुम श्री बिल्बर्सन से मिलने जाते हो। व्यावहारिक से मेरा तात्पर्य यही है कि यदि तुम उसके यहाँ जाओ तो वह तुमसे मिलेगा भी नहीं। तुम उसे पत्र लिखते हो, तुम उससे प्रार्थना करते हो कि यदि पैंतीस डॉलर प्रति सप्ताह या ऐसा ही अधिक वेतन वह दे, तो दो सप्ताह में तुम उसके लिए एक ढंगका निथारनेका डिब्बा बनाने की रूपयोजना तैयार कर दोगे। जानते हो क्या होगा ? वह तुम्हारी चिट्ठी फाड़ कर फेंकेगा। क्यों ? इसमें उसका अपमान हुआ है। इस प्रकारके नये डिजाइन का मूल्य केवल सत्तर डॉलर होगा। तुमने बड़े क्षुद्र ढंग से उसके साथ व्यवहार किया है। यह भूल है। तुमने इस प्रकार उसके साथ व्यवहार किया है जैसे तुम सच्चा सौदा करने में बड़े चतुर हो। यह भूल है। तुमने उसके साथ आदर का व्यवहार किया है, यह भूल है। तुमने इतनी सब भूलें कर डालीं।

अब देखो, कार्ल ईरिक कासिल क्या करता है। मैं ये भूलें नहीं करता। मैं चंतुर मनुष्यके समान उससे व्यवहार नहीं करता। मैं उसे यह भी नहीं जानने देता कि मैं उसका आदर करता हूँ। मैं शोषक के समान उससे व्यवहार करता हूँ। यही वह चाहता भी है। मैं उसे लाल दाढ़ी दिखाता हूँ। मैं उसंके साथ एक विशेष प्रकारके स्वराघात से बात करता हूँ। मैं उसे ऐसा बड़ा नाम बताता हूँ, जो स्वयं एक विचित्र स्वरसे बोला जाता है। मैं उसे बहुत बड़ा मूल्य बताता हूँ। मैं उसका अपमान नहीं करता। मैं उसे बहुत बड़ा शोषक बननेका अवसर देता हूँ। यही तो वह चाहता है। उसे यही अच्छा लगता है। वह उसका मूल्य चुकानेको भी प्रस्तुत है।"

कार्ल ईरिक कासिल के वक्तव्य का रहस्य था—बाहरी बनावट की आवश्यकता और डॉन वॉलिंग ने उसे स्वीकार भी कर लिया।

अगले दस महीनों में जब कासिल ने उसे अनेक ग्राहकों और कार्यसे—अधिक—से—अधिक—परिचित कराया, तब डॉन वॉलिंग ने बहुत कुछ सीख लिया। उसने जो कुछ सीखा उसमें से कुछ भाग तो कार्ल ईरिक कासिल की शिक्षाके अनुरूप था और कुछ उससे भिन्न था। उसने यह बात भी सीख ली कि सत् प्रयत्न ही व्यवसाय के विश्व में गुणोंका प्रमाण-पत्र है।

कार्ल ईरिक की बनावटी बातचीत पर रीझनेवालों में से एक था—ऐवरी बुलार्ड। शिकागो में प्रगति-प्रदर्शनकी शताब्दि में एक आदर्श भवन की रूप-योजना बनानेका काम कार्ल ईरिक कासिल को मिला था। दूसरा काम था उस घरको सुसज्जित करनेके लिए नये प्रकारके परिवाप (फर्नीचर) की योजना बनाना। यह काम डॉन वॉलिंग के सिरपर आ पड़ा।

डॉन वॉलिंग कई सप्ताह तक बीस-बीस घंटे प्रतिदिन काम करता रहा। उस भवन के निर्माण की पूर्णता और उसकी सजावट को होते हुए देखने के लिए वह स्वयं शिकागो गया था और उद्घाटन से एक रात पूर्व वह अत्यन्त थककर परिवाप (फर्नीचर) के गद्दोंके ढेर पर ही सोया था।

रातको किसी समय सब बत्तियाँ चमक उठीं और डॉन ने आँखें मलकर उठते हुए देखा कि कार्ल ईरिक कासिल किसी ग्राहक को अपने फँदे में फँसाने का लालच देनेके निमित्त उसे सब घूम-घूमकर दिखा रहा है। डॉन ने उस मनुष्य की ध्वनि सुनी और उस ध्वनि में कुछ ऐसी गूँज थी कि वह पूर्ण रूपसे जाग गया। उसने जो कुछ सुना उससे उसे अत्यन्त सन्तुष्टि हुई। उस मनुष्य के शब्द कार्ल ईरिक कासिल की बनावटके कवच को छेदकर कोड़े के समान

पड़ रहे थे। एक क्षण रुककर उसने हृदयको बेधते हुए कहा–"क्यों कासिल ! इस परिवाप की योजना वास्तव में बनायी किसने?" कासिल ने सीधे और स्पष्ट रूपसे कहा था–"यह घर और इसकी प्रत्येक वस्तु अत्यन्त मेधावी युवक–डॉन वॉलिंग की ही कृति है।"

उस स्वर ने आदेश दिया–"मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"–और डॉन, जीवनमें सबसे अधिक सजग होकर, अपने मैले हाथ और सिकुड़े हुए कपड़ों की चिन्ता-न करते हुए, कार्ल ईरिक कासिलकी चिन्ता न करते हुए और संसार में किसी भी बात की चिन्ता न करते हुए ऐवरी बुलार्ड से मिलनेके लिए द्वार से बाहर चला आया।

कार्ल ईरिक कासिल किसी प्रकार धीरे से वहाँसे खिसक गया और उन दोनों को एकान्त में छोड़ गया। वे दोनों टहलते हुए झील के तटतक चले गये। बुलार्ड बातें कर रहा था, प्रश्न कर रहा था और कोमलतासे परीक्षण भी कर रहा था। अब उसके स्वर में खड्ग की धार की तीक्ष्णता नहीं थी, किन्तु उसकी उत्तेजकता अभी भी कम नहीं हुई थी। उसके स्वरमें शक्ति, दृढ़ता, सत्यता, उद्देश्य और ऐसी निर्भय कल्पना विद्यमान थी, जो उसी जादू के साथ आकाश की ओर उछली पड़ती थी– जैसे उगता हुआ सूर्य मिचिगन झील के ऊपर आकाश में उठ चढ़ता है। जब डॉन ने कार्ल ईरिक से कहा कि मैं अब ऐवरी बुलार्डके लिए काम करने जा रहा हूँ, तो कार्ल ईरिक कासिल को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसने इतना ही कहा–"मैं जानता हूँ। तुम्हारा सौभाग्य बढ़े। वह बहुत बड़ा आदमी है।"

ट्रेडवे कॉर्पोरेशन बननेके दो वर्ष पूर्व से ही डॉन वॉलिंग ऐवरी बुलार्ड के अत्यन्त समीप होकर काम कर रहा था। जीवन भर वह ऐसे व्यक्तिकी खोजमें रहा जो उसे पूर्ण रूपसे चुनौती दे सके। अब वह उसे मिल गया था। वे जो कुछ भी करना चाहते थे उसमें चाहे जितनी शक्ति और विचार लड़ाने पड़ें किन्तु एवरी बुलार्ड निरंतर काममें भी और विचार में भी उसे हरा देता था। उस अपने से वृद्ध व्यक्तिकी योग्यता, उसके लिए निरंतर प्रेरणा बनी हुई थी। वह दौड़ा हुआ आता था और जिस रूप–योजना को डॉन कई दिनों से बनाता चला आ रहा था, उसकी ओर झट एक उड़ती हुई दृष्टि डालकर अपनी उँगली तत्काल किसी ऐसे स्थान पर रख देता था, जिसे देखते ही डॉन समझ लेता था कि यह दोष तो उसे स्वयं देखकर ठीक कर देना चाहिए था। इससे भी अधिक झुंझलाहट की बात तो यह थी कि ऐवरी बुलार्ड पैंसिल लेकर फिरसे

एक ऐसी रेखा खींच देता था कि डॉन उसपर चाहे जितनी माथापच्ची करे उसमें परिवर्तन करके उससे सुन्दर नहीं बना सकता था। ऐवरी बुलार्ड के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

विलय के पश्चात् एवरी बुलार्ड ने डॉन वॉलिंग को पिट्सबर्ग की कौगलन मैटल फर्नीचर कम्पनीमें काम देखने भेज दिया—"परिवापके व्यवसाय मे धातु का ऐसा प्रयोग हो सकता है, जिस पर अभीतक लोगों का ध्यान भी नहीं है। जाओ, वहाँ जाकर समझ लो। किसी बाधा से घबराना मत। वहाँ बुड्ढ़ा कौगलन यही कहता मिलेगा कि यह हो नहीं सकता और उसका वे पहले परीक्षण भी कर चुके हैं। पर उससे झिकझिक न करना। बस उसकी बात सुनी-अनसुनी कर देना। उसका कोई महत्त्व नहीं है। उसे तो मैं केवल दिखावे के लिए रक्खे हुए हूँ। एक वर्ष में तो वह स्वयं ही चला जायगा। हाँ, वहाँके अधीक्षक जेसी ग्रिम के साथ मिलकर काम करना। मैं अभीतक उसे ठीक-ठीक जान नहीं पाया हूँ। पर वह देखने मे ठीक जान पड़ता है। मै समझता हूँ कि वह हमारी प्रकृति का ही आदमी है। पर ग्रिम पर पूर्ण विश्वास मत कर बैठना। किसी पर विश्वास न करना। तुम स्वयं उस कारखाने में जाना। वहाँ जाकर सीखना कि धातुका काम कैसे किया जाता है? यह भी देखना कि उन यंत्रोंसे तुम्हारा क्या काम चल सकता है; क्या नहीं—और जब देखो कि कोई खास काम यंत्र नहीं कर सकता है तो ऐसा यंत्र भी बना लेना जो वह काम कर सके। बस, इस व्यवसाय में प्रविष्ट हो जाओ। लोगोंसे बातचीत करो। बाजारों में जाओ और यह पता लगाओ कि वे क्या चाहते हैं – वे न भी जानते हों तब भी पता चलाओ कि उन्हें क्या चाहिए—और वह वस्तु उन्हें बना कर दे दो। वॉलिंग! एक अंतिम बात और—अब मानचित्र-फलक के पास मोढ़े पर बैठकर अपनी पतलून मत घिसाओ। एक मानचित्रकार किराये पर ले लो, जो तुम्हारी बतायी हुई बातें कागज पर खींच दे। यदि तुम्हारे मनमें और भी अधिक विचार हों तो दो मानचित्रकार किराये पर ले लो—या तीन या चार या पाँच। मानचित्रकार बड़े सस्ते मिलते है। सबसे अधिक महत्त्व विचारों का है।"

डॉन वॉलिंग पिट्सबर्ग चला गया—केवल इसलिए नहीं कि उसे स्वर्ण अवसर मिला, वरन् इसलिए कि उसे ऐवरी बुलार्ड के निरंतर शासन से बचने के लिए अवकाश मिल गया। किन्तु प्रथम सप्ताह पूरा होनेसे पहले ही उसे ऐवरी बुलार्डकी आवश्यकता पड़ने लगी। और इस आवश्यकता का समाधान ढूँढ़ने के प्रयास में वह अचेतन रूपसे अपनेको ऐवरी बुलार्ड के ढंग में ढालने

लगा। कठिनाइयाँ बढ़ चलीं। एक तो विलयके कारण यों ही लोग बहुत खिंचे हुए थे, तिस पर जब डॉन वॉलिंग ने बुलार्ड के ढंग से चलना प्रारंभ किया, तब तो स्थिति और भी बिगड़ चली।

अन्त में जेसी ग्रिम के घरकी पिछली बरसातीमें जो अर्द्धरात्रिकी बैठक हुई उसमें अधीक्षक ने कह दिया—"डॉन! कोई ऐसा आदमी होना चाहिए था जो तुम्हें बता देता और मैं समझता हूँ कि इसके लिए मैं ही चुना गया हूँ। मैं ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में बहुत तो नहीं जानता, क्योंकि उसके साथ मेरी दो बार बहुत थोड़ी-थोड़ी बातचीत हुई है; किन्तु यहाँ कारखाने में काम करनेवाले आदमियों को मैं कुछ-कुछ जानता हूँ। ये लोग इस बातको कभी नहीं सहन करेंगे कि ऐवरी बुलार्ड ने तुम्हें यहाँ छब्बीस वर्षका अपना प्रतिरूप बनाकर भेज दिया है — और मैं यह भी तुम्हें बता दूँ कि यह बात मुझे भी अच्छी नहीं लगती।"

पहले तो यह बात सुनकर डॉन के मन में बड़ा क्रोध आया; किन्तु जब ग्रिम की बात पर उसने ध्यान दिया, तब क्रोध दूर हो गया और उसने बड़ी हिच-किचाहटके साथ यह स्वीकार किया कि उसे ठीक दंड दिया गया है। उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि आगेसे वह ऐसा अवसर ही नहीं देगा कि कोई ऐवरी बुलार्डका प्रतिरूप बतावे। धीरे-धीरे वह जेसी ग्रिम का बहुत अच्छा मित्र बन गया।

ऐवरी बुलार्ड के साथ उसकी बहुत कम और बहुत दिनों का अन्तर देकर भेंट होती थी। उसने एक बार मिलबर्ग की यात्रा में बुलार्डसे यह बात कही भी थी। ऐवरी बुलार्ड यह सुनकर कुछ झेंप भी गया था—"इसकी चिंता मत करो, दोस्त! क्या तुम नहीं समझते कि तुम्हें अकेले सब भार देकर मैंने तुम्हें सबसे बड़ा पुरस्कार दिया है। यदि मुझे कोई बात अच्छी नहीं लगेगी, तो मैं तत्काल तुम्हें बता दूँगा—जितना तुम सुनना चाहोगे उससे अधिक कह दूँगा; हाँ, हम तुम्हारा वेतन दस हजार कर रहे हैं।"

तब वह बोला—"मैं समझता हूँ कि पत्नीका पोषण करनेके लिए तो यह पर्याप्त होगा, श्री बुलार्ड?"

"कौन है वह?"

वह कुछ झिझका और अपने मन में ही उस अत्यन्त रहस्यमय प्रश्नको पूछने लगा, जो उसने पिछले दो सप्ताह में कितनी ही बार अपने मनमें पूछा था। तब अत्यन्त साहस और निर्भीकतासे उसने कहा—"उसका नाम है मेरी

कोवालेस। जब मैं विद्यालय में पढ़ता था तब मैं उसके पिताके छोटे-से भोज-नालय में काम किया करता था। वह तो मर चुका है। वह सामाजिक व्यवहार से भी इतनी ऊपर है कि केवल विवाह के ही अवसर पर पहली बार मदिराका आस्वादन करेगी।"

"कामकाज में कैसी है ?" ऐवरी बुलार्ड ने पूछा और यह कोई निरर्थक प्रश्न नहीं था।

"जी!" डॉन झिझका कि उसे इसका उत्तर बतानेका कोई उपाय मिल जाय—"वह पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से पी. एच्. डी. कर चुकी है और एक अर्थशास्त्री के साथ सहायक के रूप में काम कर रही है। वह. . . . ."

"ठीक है।" बुलार्ड बीच में बोल उठा—"तुम्हें कामकाज में चतुर पत्नी चाहिए। यदि ऐसी न मिली तो तुम्हें बहुत कष्ट हो जायगा। मदिरा ? इससे तो तुम्हारा व्यय बढ़ जायगा। बढ़ेगा न ? ऐसी स्थिति में हम दस के बदले तुम्हारा वेतन बारह हजार कर देते हैं। अब तुम चुपचाप यहाँ से चल दो और पिट्सबर्ग पहुँच जाओ; कहीं एल्डर्सन को यह ज्ञात न हो जाये कि मैंने उसके बहुमूल्य डॉलरोंमें से दो सहस्र और लुटा दिये।"

अगले वर्ष जेसी तो उत्पादन का उपाध्यक्ष होकर मिलबर्ग चला गया और डॉन वहाँ के कौगलन कारखाने का प्रधान व्यवस्थापक बना दिया गया। उसी समय पुनर्शस्त्रीकरण का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ और पिट्सबर्ग का कारखाना विमान और जलयान के विभिन्न भाग बनानेके कारखानेके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया।

युद्ध के अगले वर्ष उसे नयी रूपयोजना और विकास- विभाग के अध्यक्ष के रूपमें मिलबर्ग लाया गया और उस पर सभी नौ कारखानों के व्यवस्था और उत्पादन-विकास का पूरा भार दे दिया गया।

डॉन वॉलिंग का मिलबर्ग लौटना वैसा उत्थानप्रद सिद्ध नहीं हुआ जितना कि वह सोचता था। वहाँ व्यक्तिगत सामंजस्य स्थापित करना बड़ा कठिन हो गया था। पिट्सबर्ग के कारखाने में तो प्रधान व्यवस्थापक के रूपमें वह सबसे बड़ा अधिकारी था, जिसे लगभग सम्पूर्ण अधिकार था। किन्तु मिलबर्ग में आकर वह व्यवस्था—मण्डल का कनिष्ठ सदस्य हो गया, जहाँ का उत्तर-दायित्व लगभग एक दर्जन अन्य विभागीय अध्यक्षों के हाथमें था। उपाध्यक्ष-पद मिलने के पश्चात् भी उसे संचालकों की मेजके एक ओर सबसे नीचा होकर बैठना पड़ता था। उसे रूपयोजना बनानेके कामपर बुलाये जानेपर बड़ी

लगा। कठिनाइयाँ बढ़ चलीं। एक तो विलयके कारण यों ही लोग बहुत खिंचे हुए थे, तिस पर जब डॉन वॉलिंग ने बुलार्ड के ढंग से चलना प्रारंभ किया, तब तो स्थिति और भी बिगड़ चली।

अन्त मे जेसी ग्रिम के घरकी पिछली बरसातीमें जो अर्द्धरात्रिकी बैठक हुई उसमें अधीक्षक ने कह दिया—"डॉन! कोई ऐसा आदमी होना चाहिए था जो तुम्हें बता देता और मैं समझता हूँ कि इसके लिए मैं ही चुना गया हूँ। मैं ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में बहुत तो नहीं जानता, क्योंकि उसके साथ मेरी दो बार बहुत थोड़ी-थोड़ी बातचीत हुई हैं; किन्तु यहाँ कारखाने में काम करनेवाले आदमियों को मैं कुछ-कुछ जानता हूँ। ये लोग इस बातको कभी नहीं सहन करेंगे कि ऐवरी बुलार्ड ने तुम्हें यहाँ छब्बीस वर्षका अपना प्रतिरूप बनाकर भेज दिया है — और मैं यह भी तुम्हें बता दूँ कि यह बात मुझे भी अच्छी नहीं लगती।"

पहले तो यह बात सुनकर डॉन के मन में बड़ा क्रोध आया; किन्तु जब ग्रिम की बात पर उसने ध्यान दिया, तब क्रोध दूर हो गया और उसने बड़ी हिच-किचाहटके साथ यह स्वीकार किया कि उसे ठीक दंड दिया गया है। उसने मन-ही-मन निश्चय किया कि आगेसे वह ऐसा अवसर ही नहीं देगा कि कोई ऐवरी बुलार्डका प्रतिरूप बतावे। धीरे-धीरे वह जेसी ग्रिम का बहुत अच्छा मित्र बन गया।

ऐवरी बुलार्ड के साथ उसकी बहुत कम और बहुत दिनों का अन्तर देकर भेंट होती थी। उसने एक बार मिलबर्ग की यात्रा में बुलार्डसे यह बात कही भी थी। ऐवरी बुलार्ड यह सुनकर कुछ झेंप भी गया था—"इसकी चिंता मत करो, दोस्त! क्या तुम नहीं समझते कि तुम्हें अकेले सब भार देकर मैंने तुम्हें सबसे बड़ा पुरस्कार दिया है। यदि मुझे कोई बात अच्छी नहीं लगेगी, तो मैं तत्काल तुम्हें बता दूँगा—जितना तुम सुनना चाहोगे उससे अधिक कह दूँगा; हाँ, हम तुम्हारा वेतन दस हजार कर रहे हैं।"

तब वह बोला—"मैं समझता हूँ कि पत्नीका पोषण करनेके लिए तो यह पर्याप्त होगा, श्री बुलार्ड?"

"कौन है वह?"

वह कुछ झिझका और अपने मन में ही उस अत्यन्त रहस्यमय प्रश्नको पूछने लगा, जो उसने पिछले दो सप्ताह में कितनी ही बार अपने मनमें पूछा था। तब अत्यन्त साहस और निर्भीकतासे उसने कहा—"उसका नाम है मेरी

कोवालेस। जब मैं विद्यालय में पढ़ता था तब मैं उसके पिताके छोटे-से भोज-नालय में काम किया करता था। वह तो मर चुका है। वह सामाजिक व्यवहार से भी इतनी ऊपर है कि केवल विवाह के ही अवसर पर पहली बार मदिराका आस्वादन करेगी।"

"कामकाज में कैसी है?" ऐवरी बुलार्ड ने पूछा और यह कोई निरर्थक प्रश्न नहीं था।

"जी!" डॉन झिझका कि उसे इसका उत्तर बतानेका कोई उपाय मिल जाय—"वह पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से पी. एच्. डी. कर चुकी है और एक अर्थशास्त्री के साथ सहायक के रूप में काम कर रही है। वह....."

"ठीक है।" बुलार्ड बीच में बोल उठा—"तुम्हें कामकाज में चतुर पत्नी चाहिए। यदि ऐसी न मिली तो तुम्हें बहुत कष्ट हो जायगा। मदिरा? इससे तो तुम्हारा व्यय बढ़ जायगा। बढ़ेगा न? ऐसी स्थिति में हम दस के बदले तुम्हारा वेतन बारह हजार कर देते हैं। अब तुम चुपचाप यहाँ से चल दो और पिट्सबर्ग पहुँच जाओ; कहीं एल्डर्सन को यह ज्ञात न हो जाये कि मैंने उसके बहुमूल्य डॉलरोंमें से दो सहस्र और लुटा दिये।"

अगले वर्ष जेसी तो उत्पादन का उपाध्यक्ष होकर मिलबर्ग चला गया और डॉन वहाँ के कौगलन कारखाने का प्रधान व्यवस्थापक बना दिया गया। उसी समय पुनर्शस्त्रीकरण का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ और पिट्सबर्ग का कारखाना विमान और जलयान के विभिन्न भाग बनानेके कारखानेके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया।

युद्ध के अगले वर्ष उसे नयी रूपयोजना और विकास- विभाग के अध्यक्ष के रूपमें मिलबर्ग लाया गया और उस पर सभी नौ कारखानों के व्यवस्था और उत्पादन-विकास का पूरा भार दे दिया गया।

डॉन वॉलिंग का मिलबर्ग लौटना वैसा उत्थानप्रद सिद्ध नहीं हुआ जितना कि वह सोचता था। वहाँ व्यक्तिगत सामंजस्य स्थापित करना बड़ा कठिन हो गया था। पिट्सबर्ग के कारखाने में तो प्रधान व्यवस्थापक के रूपमें वह सबसे बड़ा अधिकारी था, जिसे लगभग सम्पूर्ण अधिकार था। किन्तु मिलबर्ग में आकर वह व्यवस्था—मण्डल का कनिष्ठ सदस्य हो गया, जहाँ का उत्तर-दायित्व लगभग एक दर्जन अन्य विभागीय अध्यक्षों के हाथमें था। उपाध्यक्ष-पद मिलने के पश्चात् भी उसे संचालकों की मेजके एक ओर सबसे नीचा होकर बैठना पड़ता था। उसे रूपयोजना बनानेके कामपर बुलाये जानेपर बड़ी

प्रसन्नता हुई थी; क्योंकि उसे विश्वास था कि नौ कारखानोंमें जो कुछ बनेगा उसका मुख्य रूपयोजना का कार्य संभवत: उसे ही मिलेगा; किन्तु ग्रिम और डडले ने उसके प्रयास विफल कर दिये थे। ग्रिम ने कहा था कि नयी रूपयोजना में रुपये नष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है और डडले भी इस बात से सहमत था कि उसका विक्रयविभाग भी उस कार्यका विस्तार नहीं चाहता। नयी प्रक्रियाओं के लिए केवल एक उपाय बच रहा था कि कारखाने के स्तर पर उत्पादन रोक दिया जाय और जैसा कि शॉ ने बताया था तथा अन्य लोगों ने सहमति प्रकट की थी कि लागत में कटौती कर दी जाय।

पिछले कुछ महीनों तक डॉन वॉलिंग ने अन्य उपाध्यक्षोंकी प्रवृत्ति के सम्बन्ध में कोई विशेष चिन्ता नहीं की थी। वह जानता था कि यदि किसी व्यक्ति की प्रवृत्ति का महत्त्व है तो वह ऐवरी बुलार्डका है, जो सदा उसे प्रोत्साहन देता रहा है और प्रति सत्रमें कुछ-न-कुछ नये रूपमान ढलाई के विकास, नयी सज्जा की रीति और नये सूखे भट्ठेके रूपमान के लिए-निरंतर आदेश देता रहा है। पर इधर कुछ दिनोंसे वॉलिंग को कुछ ऐसी गंध लग रही थी कि बुलार्ड भी बहुत हिचकिचाहट और संकुचित मन से प्रोत्साहन दे रहा है। उसे ऐसा जान पड़ने लगा कि निरंतर विकास के लिए अध्यक्ष के मनमें जो प्रेरणा थी, वह धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

पिछले महीने डॉन वॉलिंग को ऐवरी बुलार्ड ने अपने कार्यालय में केवल दो बार बुलाया था और दोनों बार उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे पहले जो प्रोत्साहन मिला करता था, वह इस बारके सम्पर्क में नहीं मिल रहा है। अंतिम मिलाप तो और भी असन्तोषजनक हुआ। वह अध्यक्ष के पास अनेक मानचित्रोंके और ढेरों प्रयोगात्मक नमूनों के साथ गया था पर ऐवरी बुलार्ड ने उनकी ओर नजर तक नहीं डाली। वह पूरे समय शॉ-द्वारा भेजे हुए उस स्मृतिपत्र पर विचार करता रहा जिसमें उसने कहा था कि आगे के पूरे वर्षमें सम्पूर्ण विकासका प्रयास उन कार्यों पर केन्द्रित किया जाय जिनसे तात्कालिक लाभ हो। अन्त में डॉन वॉलिंग को कुछ विजय अवश्य मिली। बुलार्ड इस बात से सहमत हो गया कि ढलाई की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए। किन्तु डॉन वॉलिंग जब अध्यक्षके कार्यालय से उठा तो उसके मनमें इस बात पर बड़ा असन्तोष रहा कि ऐवरी बुलार्ड की योग्यताएँ शॉ के इस प्रयास से नष्ट होती जा रही हैं कि वह वर्तमान प्रक्रियाओंके नकद लाभसे एक-एक पाई निकाल लेना चाहता है। ऐवरी बुलार्डकी व्यवस्था-प्रणाली ऐसी कभी नहीं रही। उसने ट्रडवे

कंपनी का निर्माण इस रीतिसे किया ही नहीं था।

लिफ्ट पर चढ़ते हुए डॉन वॉलिंग शॉ के सम्बन्ध में अधिक सोच रहा था और ऐवरी बुलार्डके सम्बन्ध में कम। और वह निराशा, वह क्रोध जिसके साथ वह कारखाना छोड़नेके लिये बाध्य हुआ था, ऐवरी बुलार्ड से हटकर उस व्यक्तिके प्रति हो आया, जो उस बन्द द्वारके भीतर बैठा था, जिसके सामने तेईसवें खंड पर वह लिफ्ट से बाहर निकलकर पहुँचा था।

"छः बजेकी बैठक है, श्री वॉलिंग।"—लुइजी ने अत्यन्त रौब के साथ कहा।

"मैं जानता हूँ, लुइजी। धन्यवाद!"

५.५३ सायंकाल

जो क्षण अभी बीते उनमें लॉरिन शॉने अपनी बहुमुखी घड़ीकी ओर इतनी बार देखा कि यदि वहाँ कोई उसकी ओर ध्यानसे देखनेवाला उपस्थित होता तो वह सरलतासे यही समझता कि इसे कोई स्नायविक रोग हो गया है। पर वहाँ कोई देखनेवाला था नहीं। शॉ अकेला अपने कार्यालयमें बैठा था। दीवारमें से जो अस्फुट ध्वनियाँ आ रही थीं, उनसे उसे ज्ञात हो गया कि अन्य उपाध्यक्ष ऐल्डर्सन के कार्यालय में एकत्र हो रहे हैं; क्योंकि पहले भी जब कार्य-समिति की बैठक हुआ करती थी तब भी यही हुआ करता था। वे पहले से बैठकर यह विचार कर लिया करते थे कि ऐवरी बुलार्डका अग्रिम कार्य क्या होगा।

शॉ जानता था कि श्री बुलार्डके मनको पहलेसे समझनेका प्रयत्न करना व्यर्थ समय नष्ट करना है, फिर भी अपने साथी उपाध्यक्षों के कल्पनामंडल में सम्मिलित होनेसे अपनेको रोकना भी वह अपने लिए असंभव समझता था। फिट्जेराल्ड की मृत्यु के पश्चात् एक बार वह सम्मिलित नहीं हुआ था और इसे वह भावावेग पर विवेक की विजय समझता था। किसी का भी अधिकारी-पद इस बातसे नापा जाता था कि वह कितने कार्यालयों में प्रविष्ट होता है। यदि आप किसी दूसरे व्यक्तिको अपने यहाँ बुलानेको बाध्य करनेके बदले स्वयं उसके कार्यालय में चले गये, तो आपने स्पष्ट रूपसे उसका महत्त्व स्वीकार कर लिया।

पिछले डेढ़ घंटे में वह निरंतर अपने मनमें उठती हुई इस मानसिक द्वन्द्वकी यातना को सहन करता रहा कि ऐवरी बुलार्ड ने कार्य-समितिकी विशेष बैठक क्यों बुलायी है। घबराहटके कारण उसे ऐसा पसीना छूटा कि उसके हाथकी

इसकी उपेक्षा नहीं होगी....और आज वॉलिंग भी वहाँ नहीं होगा, जो मक्खन लगाकर इस संकट से उबर जाय। यही उसकी आलोचना का उचित समय है। वह बहुत दिनोंसे ऐवरी बुलार्ड को फँसाये हुए है। यों तो सभी उसे फँसाए हुए हैं...ऐल्डर्सन और ग्रिम और डडले भी....दिनभर. अपनी छोटी-छोटी गुप्त बात के लिए अध्यक्षके कार्यालयमें घुसे रहते हैं....किन्तु वॉलिंग तो इनमें सबसे बुरा है—सबसे बुरा!

कुर्सी हटाने-बढ़ानेकी ध्वनि दीवार से सुनायी पड़ी और शॉ ने झट अपनी घड़ी की ओर देखा—पाँच छप्पन....चार मिनट शेष ... अन्य सब लोग. ऊपर जा रहे हैं। मैं अभी एक मिनट और रुक सकता हूँ। मेरे पहुँचने तक सभी संचालक के कक्षमें विराजमान होंगे। फिट्जेराल्ड की मृत्युके पश्चात् लॉरेन शॉने नियम बना लिया था। वह ठीक ऐसे समय पहुँचता था कि जिससे अन्य लोगोंको उसके पहुँचते ही उसकी ओर देखना पड़े और उनकी दृष्टिसे यह स्वीकृति मिलती दिखायी दे कि आप ही स्थानापन्न कार्यवाहक-उपाध्यक्ष हैं।

उसकी घड़ीने बता दिया कि अब एक सेकेंड़ भी रुकना ठीक नहीं है। वेगसे एक नया रूमाल निकालते हुए और हाथमें विशेष आय-व्ययका विवरण लेकर वह द्वारसे निकलकर सीढ़ीपर चढ़ चला।

ज्योंही उसकी आँखें ऊपर के खंडकी ओर घूमीं, त्योंही लॉरेन शॉकी सारी योजना दुगुनी गतिसे समाप्त हो गयी। अन्य उपाध्यक्ष अभीतक अध्यक्ष-कक्षके द्वार पर कुमारी मार्टिन को केन्द्र बनाये हुए अर्द्ध-वृत्त में खड़े थे....और वॉलिंग भी वहीं था। उनकी आँखें उसकी ओर नहीं थीं, इसलिए उसने बड़ी सावधानी से वह आयव्यय-विवरण मोड़कर अपने भीतरकी जेबमें रख लिया। अवसर पर किया हुआ काम लाभदायक होता है...यह अवसर ठीक नहीं है।

ऐरिका मार्टिनका स्वर तभी समाप्त हुआ था, जब वह सीढ़ी से चढ़कर उस मंडलीके पास पहुँच गया—"पर मुझे विश्वास है कि वे छः-तेरह की गाड़ीसे आ जायँगे। इतनी पास-पास चलनेवाली दो गाड़ियों में से एक गाड़ी निकल गयी होगी और उन्होंने दूसरी पकड़ ली होगी। वास्तव में उन्होंने निश्चित रूपसे यह कहा भी नहीं था कि वे पाँच-चौवन वाली गाड़ी पकड़ रहे हैं। मैंने इसी आधार पर यह कल्पना की थी कि उन्होंने छः बजे बैठक बुलायी है।"

ऐरिका मार्टिन की ओर आँखें किये तथा और लोगोंकी उपेक्षा करते

हुए शॉ आगे बढ़ गया—"तो श्री बुलार्ड अभी यहाँ नहीं आये ?"

"जी, नहीं ! ईडी ने स्टेशन से सूचना दी है। अब वह छः-तेरह की गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहा है।" शॉने चारों उपाध्यक्षोंकी ओर आँखें घुमाईं और उसके पश्चात् एक पग आगे बढ़कर द्वारके कुंडे पर अपना हाथ रख दिया। जैसे कोई आतिथय अपने अतिथियोंके लिए द्वार खोलता हो, इस मुद्रासे उसने द्वार पीछे ढकेलते हुए कहा—"सज्जनों, कोई कारण नहीं है कि आप लोग आराम से वठ न जायँ।" उसे उस क्षण बड़ा आनन्द मिला, जब उसने देखा कि वह मंडल छिन्न होकर उस द्वारमें से उसके पास से होकर भीतर चला आ रहा है। कोई रुका नहीं.... किसीने उसके पद पर तर्क नहीं किया। ......किसीने उसकी ओर देखा तक नहीं। अपनी गतिको सावधानी से समय-बद्ध करते हुए लॉरेन शॉ ठीक उसी समय घूमा, जब ऐरिका मार्टिन अपने कार्यालय में प्रविष्ट होनेको तैयार थी।

"कुमारी मार्टिन !"

"जी हाँ, कहिए ?"

वह विना हिले-डुले इस प्रकार खड़ा रहा कि कुमारी मार्टिनको उसकी ओर आना पड़े—"कुमारी मार्टिन ! अभी मुझे इस बात का खयाल आया कि संभवतः श्री बुलार्ड को आज की बैठक के लिए किसी प्रकारके विवरणोंकी आवश्यकता हो। क्या कोई ऐसा विवरण है जो तुम्हारी समझसे मैं तैयार कर रखूँ।"

"मुझे खेद है श्री शॉ, मैं कह नहीं सकती कि बैठक बुलाई क्यों गयी है। मैं तो जानती ही नहीं हूँ।"

उसे घूमकर अपने कार्यालय में घुसते हुए देखकर शॉके मनमें बड़ा क्रोध आया। इस समय उसे अपनी वह मुस्कराहट पुनः लानेके लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ा, जो संचालक के कक्षके भीतर जाते समय आवश्यक थी।

भीतर जाकर उसने देखा कि ग्रिम और वॉलिंग कमरे में दूरपर उसकी ओर पीठ किये खड़े हैं। उसने मेजका चक्कर लगाया और उन लोगोंकी बातचीत की फुसफुसाहट सुननेके लिए वह और पास चला गया। बातचीत बिरोजे के सम्बन्ध में हो रही थी। वे भी नहीं जानते थे कि बैठक क्यों बुलायी गयी है।

वहाँसे वह एल्डर्सनकी ओर बढ़ गया जो डडले से बातचीत करते हुए अपनी जेबसे एक पुस्तिका निकालकर कुछ लिख रहा था। उसके पास पहुँचनेसे पहले ही एल्डर्सन ने पुस्तिका बन्द करके अपनी भीतरी जेबमें रख ली। डडले ने

भी बातचीत बन्द कर दी। इस विचित्र शान्तिको भंग करना आवश्यक था।

शॉने एल्डर्सनकी ओर अपनी आँखें घुमायीं—"जान पड़ता है न्यूयॉर्क में कुछ बड़े वेगसे बातें बढ़ गयीं ? हम लोगोंकी आशासे अधिक वेगसे।"

एल्डर्सन ने शून्य दृष्टिसे उसकी ओर देखा—"मैं... मैं तो जानता ही नहीं कि यह बैठक हो क्यों रही है ?"

"आप नहीं जानते ?"

शॉने ऐसे स्वरमें यह प्रश्न किया कि जिससे निर्भ्रम रूपसे आश्चर्य हो। किन्तु उसने तत्काल ही उसे अत्यन्त खेदजनक क्षमा-प्रार्थनाके रूपमें बदलकर कहा—"खेद है फ्रेन्ड! मैं तो समझता था कि उस बुड्ढेने आपको इस सम्बन्ध में बता दिया होगा।"

उसने एल्डर्सन पर उतनी ही देर अपनी दृष्टि जमाये रखी जितनी देरमें उसे यह निश्चय हुआ कि गोली ठीक जाकर लगी है। उस कक्षकी शान्ति से यह ज्ञात हो गया कि वहाँ रहनेवाले अन्य लोग भी उसे सुन पाये हैं। ज्योंही उसने मेज के पास से अपने बैठनेके लिए कुर्सी खींची, त्योंही लोगोंके मुखपर देखने से उसे यह विश्वास हो गया कि उसकी बात का प्रभाव पड़ा है। उसने सबको चोट दी है, एक-एक को—और वे समझ भी गये। उन्हें यह बात अच्छी तो नहीं लगी होगी पर उससे क्या..... वे कर ही क्या सकते थे।

उसकी हथेलियाँ फिर भीग गयीं और उसने रूमाल की तहें इस प्रकार झटके के साथ खोलीं जैसे झंडेका उत्तोलन होता है।

५.५९ सायंकाल

ऐरिका मार्टिन के कार्यालय में टेलीफोन की घंटी बज रही थी। उसने उत्तर दे दिया। बोलनेवाले के स्वर के प्रथम शब्दने उसके मुखपर झुँझलाहट उपस्थित कर दी। किन्तु उसका उत्तर देनेसे पूर्व उसने सावधानीसे अपनी वाणीसे वह झुँझलाहट दूर कर दी—"मुझे खेद है, श्रीमती प्रिंस! श्री बुलार्ड अभीतक आये ही नहीं।" वह रुकी रही और सुस्त मक्खीकी भिनभिनाहटके समान कानमें भिनभिनानेवाले शब्दोंको कुछ आधा-सा सुनती रही—"हाँ, श्रीमती प्रिंस! मैं उनसे कह दूँगी कि ज्योंही उन्हें समय मिले वे आपसे बात-चीत कर लें।"

ऐरिका मार्टिन ने लम्बी साँस ली और जैसे कि वह आत्मनियंत्रण का

अभ्यास कर रही हो। धीरे-धीरे उसने अपने भीतर की बन्द साँस निकल जाने दी।

टेलीफोन का चोंगा रख देनेपर भी ऐरिका मार्टिन के कानोंमें वह भिन-भिनाहट बनी ही रही और उसके मस्तिष्क में अनेक पुरानी स्मृतियाँ जाग उठीं। जब जूलिया ट्रेडवे पहले ऐवरी बुलार्डके लिए फोन किया करती थी और अत्यन्त व्यस्त रहनेपर भी ऐवरी अपना सब कामकाज छोड़कर उससे मिलनेके लिए चल देते थे। ये निमंत्रण प्रायः सायंकाल को मिला करते थे और वहाँ जाकर फिर ऐवरी अपने कार्यालय में लौटकर नहीं आते थे। किन्तु यह बात पिछले कई वर्षोंसे नहीं हो रही थी; तबसे तो नहीं ही, जबसे जूलिया ट्रेडवे ने ड्वाइट प्रिंस से विवाह कर लिया था। यह मिलन तो बन्द हो ही जाना चाहिए था.... पर जान पड़ता है बन्द हुआ नहीं... वह फिर प्रारंभ हो रहा है। ऐरिका मार्टिन की उँगलियों के दबाव से पेंसिलकी नोक टूट गयी। इस बातको लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। मुझे स्मरण रहेगा.... इसे भूलना असंभव है ......किन्तु लिखनेसे यह लाभ होगा कि मुझे उसका नाम अपने ओठोंसे कहनेकी आवश्यकता से मुक्ति मिल जायगी।

६ सायंकाल

ट्रेडवे टॉवर के कलश में लगी हुई घड़ी ने पहले तो टनटनानेवाली घण्टियाँ बजायी.... और फिर घनघनाहटके साथ ऐसे छः घंटे बजाये कि संचालक के कक्षकी दीवारें भी गूँज उठीं। टॉवर बनानेवाले शिल्पीको यह ध्यान ही नहीं था कि इस भवनके सबसे ऊपर का खंड इस घंटेकी ध्वनिसे इतना गूँज उठेगा और ऐसा असह्य हो जायगा कि अधिकारी-कक्षवाले कानमें उँगली डालने लगेंगे। ओरिन ट्रेडवेने तो इसलिए सहन किया था कि वह घड़ी उसीके मस्तिष्क की उपज थी। किन्तु जब ऐवरी बुलार्ड अध्यक्ष होकर आया था, उसकी पहली आज्ञा यही थी कि जब वह चौबीसवें खंड में रहा करे तब यह घड़ी न बजा करे। जब मिलबर्ग में उसके घंटे सुनायी पड़ने लगते थे, तब लोग समझ जाते थे कि अध्यक्ष आज टॉवर में नहीं है।

फ्रेड्रिक एल्डर्सन के शरीर में तो उसकी गूँज इतनी समा गयी कि उसका सारा शरीर इस प्रकार काँपने लगा मानो उसे बेहोशी आ गयी हो। उसने झट कुर्सीके हत्थे पकड़ लिये और ज्योंही वह कुर्सी के पीछे पीठ करके टिका,

त्योंही उसे यह संवेदन और भी तीव्र प्रतीत हुआ ।

छठे घंटे की गूँजके समाप्त होनेके पश्चात् जो नीरवता व्याप्त हुई, वह साधारण शान्तिसे कहीं अधिक गंभीर थी। एल्डर्सन अपनी कुर्सी में इस प्रकार व्याकुलताके साथ इधर-उधर हिल-डुल रहा था कि चमड़ेकी गद्दीकी चरमराहट की मुखर ध्वनिसे अन्य चार उपाध्यक्षोंका ध्यान भी उधर आकृष्ट हो गया। इससे पहले कि वे कुछ कहें, उसने स्वयं बाध्य होकर कुछ ऐसी बात कही जो वह कहनेका विचार नहीं रखता था—"मैं समझता हूँ कि यह बैठक बहुत देर नहीं चलेगी। मुझे श्रीमती एल्डर्सन के साथ एक भोज पर जाना है।"

"मुझे भी जाना है, फ्रेड।" वाल्ट डडले ने निरर्थक हँसीके साथ कहा—"विमान के साथ मैंने साठ-गाँठ की है। सात बजे विमानके अड्डे पर पहुँच ही जाना है।"

"शिकागो?"

"हाँ; वहाँ काम करनेवाले सब लड़कों को ठीक-ठीक देख लेना है। सोमवार को तो हम पुराने बाजार में ही दिनभर पिसते हुए, पसीने से लथपथ रहेंगे।"

डडले के स्वर से ऐसा जान पड़ता था कि वह सहानुभूति चाहता है; किन्तु एल्डर्सनके उत्तर देनेसे पूर्व ही उसने देखा कि लॉरेन शॉ मेजकी दूसरी ओर, सामने कोने पर, अपनी कुर्सी से आगे झुक गया है। "यदि सुविधा न हो फ्रेड" —शॉ ने चलते से ढंग से कहा— "तो मुझे कोई विशेष कारण नहीं दिखाई देता कि तुम आजकी बैठक के लिए रुको।"

इस जाल को समझकर एल्डर्सन मन-ही-मन बहुत कुढ़ा। वह जानता था कि उसे अपने मार्ग से हटा देने से बढ़कर शॉ के लिए और क्या अच्छा होगा और तब बुलार्डके आनेपर शॉ को उसकी पीठमें छुरा भोंकने का एक और अवसर मिल जायगा। हाँ, यही तो शॉ की तिकड़म है.... वह तिकड़म, जो फिट्जेराल्ड की मृत्युके पश्चात् से यह निरंतर खेलता रहा है।

"रुके रहो फ्रेड।" जेसी ग्रिमने मेजके किनारे से धीरेसे अपनी ध्वनिको अपने उस हाथ से रोकते हुए कहा, जिससे वह अपनी चुरट को थामे हुए था।

वह फुसफुसाहट सम्मतिसे कुछ अधिक थी। वह नैतिक समर्थन था और एल्डर्सन ने भी उसकी प्रशंसा में सिर हिला दिया। शॉ कम-से-कम जेसी को मूर्ख नहीं बना सकता, एक क्षणके लिए भी नहीं। क्या शॉ अन्य सदस्योंको मूर्ख बना रहा था? नहीं ...... वह अत्यन्त स्पष्ट था... वे सभी जानते

थे.... वे सब शॉ की चाल समझते थे... ऐवरी बुलार्ड के अतिरिक्त सभी।

एल्डर्सन ने मेजकी चारों ओर दृष्टि दौड़ाई तो उसे वह घटना स्मरण हो आयी, जो शॉकी अत्यन्त नीचता का प्रमुख उदाहरण थी। उस मेजके साथ आठ कुर्सियाँ लगी थी। एक-एक तो दोनों सिरों पर और तीन-तीन दोनों ओर। ऐवरी बुलार्ड तो सदा पश्चिम के सिरेपर बैठता था और अपनी मृत्युसे पहले फिट्जेराल्ड पूर्वी छोरपर बैठा करता था। अवस्था में सबसे बड़ा होनेके कारण उपाध्यक्ष एल्डर्सन अधिकारतः श्री बुलार्ड की कुर्सीके दायीं ओर बैठा करता था और जेसी ग्रिम उसकी बायीं ओर। किन्तु फिट्जेराल्ड की मृत्युके अगले सप्ताह से ही शॉने अपनी तिकड़म प्रारंभ कर दी। उसने ऐसा मन्त्र चलाया कि नियमित कार्य-समिति की बैठक ग्यारह बजेके बदले साढ़े नौ बजे होने लगी। इस परिवर्तन से प्रातःकाल की धूप सीधे बुलार्ड की आँखों पर पड़ने लगी और तब शॉ की कुटिल योजना के अनुसार बुलार्ड ने मेजके दूसरे सिरे पर बैठना प्रारंभ कर दिया। इससे शॉ अध्यक्षके ठीक दाएँ हाथ पर आ गया और वह– अवस्थामें सबसे बड़ा उपाध्यक्ष फ्रेड्रिक एल्डर्सन–अचानक मेजके दूसरे कोने पर बैठनेके लिए बाध्य हो गया। उस समय उसे इतना क्रोध आया था कि वह किसी प्रकार भी क्षमा नहीं कर सकता था। शॉ ने उसके जीवन की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थिति ही लूट ली– ऐवरी बुलार्ड के दाहिने हाथकी कुर्सी।

इकसठ की अवस्था में फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने समझ लिया था कि वह अपनी उन्नतिकी चरम सीमा पर पहुँच गया है। उसे यह भी स्पष्ट हो गया था कि मैं ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का कभी अध्यक्ष नहीं हो सकता। मैं ऐवरी बुलार्ड से पाँच वर्ष बड़ा हूँ और उससे पहले ही अवकाश ग्रहण कर लूँगा। यह जानकर भी उसे कोई बहुत गंभीर दुःख नहीं था। अध्यक्ष का दाहिना हाथ होनेका गौरव प्राप्त था। उसीसे उसे सन्तोष था। वह पर्याप्त था। वह- जो वह था– उसीसे सन्तुष्ट था; किन्तु उसकी प्रसन्नताके लिए यह बात और भी अधिक महत्त्वकी थी कि उसे उससे नीचे न उतरना पड़े।

फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने अपने मनमें कहा कि लॉरेन शॉ यह नहीं समझता कि सन् १९२१ में ऐवरी बुलार्डके लिए मैंने जो काम किया था, वह यदि मैंने उस समय न किया होता तो ट्रेडवे कॉर्पोरेशन ही न बन पाता। किन्तु बहुत लोग इस बात को भूल गये थे। पिछले वर्षोंमें कभी-कभी ऐसा जान पड़ा कि ऐवरी बुलार्ड भी भूल गया है.... पर वास्तव में वह भूला नहीं था। ऐवरी बुलार्ड

महापुरुष था। महापुरुष कोई बात नहीं भूलते। कभी—कभी बहुत व्यस्त होनेके कारण या किसी अन्य कार्य के फेर में पड़े रहने के कारण उन्हें स्मरण नहीं रहता, किन्तु अन्त में वे स्मरण रखते ही हैं। वह आज भी जवान ऐवरी बुलार्ड के मुखकी उस सटीक मुद्राको स्पष्ट देख रहा था, जिस दिन वह वृद्ध श्री बैलिंगर के कार्यालय में आया था।

एल्डर्सन ने अपना सिर पीछे किया और उसके मनकी आंतरिक ध्वनि फिर बज उठी—"तुमने संभवतः पुरानी बैलिंगर फर्नीचर कंपनी का नाम नहीं सुना होगा। पर अपने दिनोंमें वह पूरी कंपनी थी। ऐवरी बुलार्ड और हम दोनों साथ काम करते थे। मैं उन दिनों वहाँ का हिसाब-किताब रखता था—और ऐवरी बुलार्ड नया-नया विक्रय-कर्त्ता था, जो हमारे साथ सन् १८ की लड़ाईके पश्चात् आया करता था। ठीक प्रारंभसे ही युवक ऐवरी बुलार्ड साधारण चतुर नहीं था। इसलिए मैं और वह दोनों बहुत निकट हो गये।

"अनेक बातों में वह जैसा उस समय था वैसा आज भी है। वह हिसाब-किताब के फेरमें कभी नहीं पड़ा—इसलिए जब कभी गुणा-भाग लगानेकी बात होती, तो मैं उसकी सहायता कर दिया करता। आजके छोकरे तो बस जो मूल्यसूचीमें देखा झट उसपर बेच दिया। किन्तु बैलिंगर के समय में तो प्रत्येक वस्तुका पहलेसे अनुमान कर लिया जाता था। वह अनुमान भी पाई-पाई तक लगा लिया जाता था। बस, उसे देखकर ही वह बड़ी-बड़ी संस्थाओंके ठेके स्वीकार या अस्वीकार कर देता था। बैलिंगर प्रायः ऐसे ही स्थानों के ठेके लिया करता था—होटल, विद्यालय, अस्पताल अथवा ऐसे ही अन्य स्थानोंके आदेश।

"कभी-कभी तो मैं रात-रातभर ऐवरी बुलार्डके लिए गुणा-भाग करता रह जाता था। पर ज्योंही मैं एक प्रकारसे जोड़-जाड़कर ठीक बैठाता, त्योंही वह झट उससे कहीं अच्छा एक दूसरा विचार ला रखता और मुझे फिर नये सिरेसे हिसाब बैठाना पड़ जाता। पर उसकी कोई बात नहीं, कम-से-कम ऐवरी बुलार्डके साथ तो नहीं—क्योंकि वह सदा सबको उत्साहित किये रखता था।

"यह सन् १९२० की बात है। इस वर्ष हम लोगोंके पौ बारह थे। मूल्य आकाश तक चढ़ चुके थे और प्रत्येक व्यक्ति फर्नीचर मोल लेनेके लिए व्याकुल था—ठीक वही स्थिति जैसी पिछले थोड़े वर्षोंमें रही है। बूढ़ा बैलिंगर पेटीका सामान फर्नीचर बनानेवालों को धुआँधार बेचता रहा और संस्थाओंके ठेके छोड़ता रहा। आप जानते ही हैं कि फर्नीचर तो कम था, इसलिए इसी प्रकार

अधिक लाभ हो सकता था। इसीके साथ एक बड़ा काम मिल गया—सात नये होटलों के लिए सारा फर्नीचर सजानेका काम। ऐवरी बुलार्ड जी-जानसे जुट गया। रात-दिन, अठारह-अठारह, बीस-बीस घंटे लगातार और सप्ताह में प्रतिदिन। उसने स्वयं विशेष प्रकारके फर्नीचरका नमूना बनाया।

"हमने सब विवरण अंतिम रूपसे तैयार कर दिया। बुलार्ड उन होटल-वालोंसे मिलने मंगलवार को न्यूयॉर्क गया और शुक्रवारको लौट आया। जैसे ही वह द्वारमें घुसा मैं समझ गया कि वह ठेका ले आया है। पाँच लाख डालर के फर्नीचर का ठेका। आजकी दृष्टिसे तो यह बहुत बड़ा ठेका हो सकता है। बैलिंगरका उन दिनों बहुत छोटा-सा कारखाना था।

"ज्योंही प्रातःकाल श्री बैलिंगर आया कि ऐवरी बुलार्ड सीधा उसके कार्यालय में चला गया। किन्तु दस मिनटमें ही वह बाहर निकल आया। जीवन में पहली बार मैंने ऐवरी बुलार्ड को पागल के रूप में देखा। कुछ देर तक तो वह बात भी नहीं कर सका।

"अन्त में उसने बताया कि "बुड्ढे बैलिंगरने कंधा डाल दिया है और वह यह ठेका स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। फ्रेड, मेरा सम्बन्ध यहाँसे समाप्त हो गया। जिस कंपनीका अध्यक्ष इतना कायर हो उसका कोई भविष्य नहीं। वृद्ध बैलिंगर ने आजतक जीवनमें जितने ठेके पाये हैं उनमें यह सबसे बड़ा है और, उसने कंधा डाल दिया।"

"स्वभावतः मैंने ऐवरी बुलार्डसे पूछा—"अब तुम क्या करने जा रहे हो?" उसने मुझसे कहा— "फ्रेड! बैलिंगर ने मुझसे कह दिया है कि मुझे ऐसा ठेका नहीं चाहिए। तुम जो चाहो वह करो। बस, मैं भी किसी ऐसे कारखानेकी खोज में निकला हूँ, जिसमें इतने बड़े ठेकेका अर्थ समझने की शक्ति हो। आजकल व्यवसाय तेजी पर है। दूकानें बनानेवाले लोग धड़ाधड़ दूकानें बना रहे हैं। शीघ्र ही बहुत बड़ी मन्दी आनेवाली है और आजके मूल्य पर पाँच लाख डालरका फर्नीचर देनेका आगे कुछ महत्त्व होगा।" उसने मेरी सम्मति मान ली। उसने पूछा—"फ्रेड! यह बताओ कि यह ठेका लेकर मुझे कहाँ जाना चाहिए?"

"तभी और तत्काल मैंने उससे कह दिया कि तुम मिलवर्गकी पुरानी ट्रेडवे फैक्टरी में ओरिन ट्रेडवे के पास चले जाओ। यहीं से यह नया युग प्रारंभ हुआ।

"इसके दो महीने पश्चात् मुझे ऐवरी बुलार्डका पत्र मिला कि श्री ट्रेडवेने उसे विक्रय-प्रबंधक बना दिया है और यदि मुझे भी काम चाहिए तो मैं उससे

मिलूँ। ईडिथ और मैंने—दोनोंने —लिफाफे में चिट्ठी डालने से पहले ही डेरा-डंगर बाँध लिया। ऐवरी बुलार्ड और मेरे बीच ऐसा ही सम्बन्ध था। यदि उसे मुझसे कोई काम कराना होता था तो बस कह भर देता था।

"ऐवरी बुलार्ड ठीक कहता था। १९२१ की मंदी ने सबको बड़ा धक्का पहुँचाया और उस बड़े ठेकेका ही परिणाम था कि ट्रेडवे कंपनी चलती रही। यदि वह न मिलता...."

फ्रेड्रिक एल्डर्सन का दिवा स्वप्न टूट गया। वाल्ट डडले उसका हाथ थपथपा रहा था और द्वारकी ओर संकेत कर रहा था कि ऐरिका मार्टिन द्वारमें खड़ी हुई है। जब उसने सिर उठाया तो कुमारी मार्टिन ने उसे बाहर आनेका संकेत किया। आँखों के चार जोड़ोंने द्वार तक उसका पीछा किया और उन आँखोंमें सबसे तीव्र आँखें थीं—लॉरेन पी. शॉ की।

"श्रीमती प्रिंस फोन पर हैं, श्री एल्डर्सन! पिछले पन्द्रह मिनटोंमें उन्होंने दो बार फोन किया है और श्री बुलार्डसे मिलना चाहा है। अब वे आपसे बात करना चाहती हैं।"

"मुझसे?" उसे इस बातकी बड़ी प्रसन्नता हुई कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने श्री बुलार्डके पश्चात् अकेले मुझे ही बात करनेके लिए छाँटा है। वह ओरिन ट्रेडवे की कन्या थी और उस परिवारकी अंतिम जीवित सदस्या थी। उसके सम्बन्ध में जितने अपवाद प्रचलित थे, उन सबके होते हुए भी वह अभीतक ट्रेडवे बनी हुई थी और नॉर्थ फ्रंटस्ट्रीट की ऊँची पत्थरकी दीवारके पीछे बने हुए विशाल प्रासाद में रहती थी।

एल्डर्सन जानता था कि वह प्रायः व्यापारके विषयमें ऐवरी बुलार्ड से सहायता लिया करती थी और श्री बुलार्ड उसके लिए कुछ उठा नहीं रखते थे। अभी पिछले महीने श्री बुलार्डकी प्रार्थना पर मैंने पूरे तीसरे पहर एक समझौते के सम्बन्ध में लेखा-जोखा लगाया था जिसमें उसकी किसी सम्पत्तिकी भूमि के पट्टेकी बात थी।

"हाँ, श्रीमती प्रिंस। मैं फ्रेड्रिक एल्डर्सन बोल रहा हूँ।"

"कष्टके लिए क्षमा चाहती हूँ, श्री एल्डर्सन। मैं श्री बुलार्ड से बातचीत करने का बहुत प्रयत्न करती रही हूँ, किन्तु जान पड़ता है वे अभी न्यूयॉर्कसे नहीं लौटे?"

"जी, नहीं। हम आशा करते हैं कि वे आ ही रहे होंगे। किन्तु....."

"एक बड़ी विचित्र बात हो गयी है। कम-से-कम ऐसी बात मेरे साथ कभी

"और क्या ?"

"उसने बताया कि उसने–"

"हाँ; मै सुन रहा हूँ, श्रीमती प्रिंस ! किन्तु यह सूचना किस प्रकारके संकट की थी ? मैं सोच भी नहीं सकता –"

"मैंने उससे यह प्रश्न पूछा भी, पर उसने बताया कि उसे अत्यन्त गोपनीय सूत्रसे यह समाचार मिला है और इससे अधिक कुछ बताने के लिए वह स्वतंत्र नहीं है।"

वह रुक गया और मनमें सोचने लगा कि आगे आनेवाले अर्द्धवार्षिक विवरण में जो लगभग नकद आय होगी उसे बता देना ठीक होगा या नहीं। किन्तु ऐवरी बुलार्डकी विशेष सहमति के बिना श्रीमती प्रिंस को भी यह बताना ठीक नहीं होगा –"यदि मैं आपके स्थान पर होता श्रीमती प्रिंस ! तो मैं ऐसी बातोंपर विचार-तक न करता। यदि आप अर्द्धवार्षिक विवरण पढ़ें तो मुझे विश्वास है कि पहले आधेमें जो हम लोगोंने प्रगति की है उससे आपको प्रसन्नता ही होगी। हमने अगले छः महीनोंका भावी विवरण भी तैयार कर दिया है और यदि मैं आपके स्थानपर होता तो तनिक भी चिन्ता न करता।"

"मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई, श्री एल्डर्सन। जब उस व्यक्तिने मुझसे शेयर बेचने के लिए इतना आग्रह किया तो मैं बहुत चिंतित हो चली थी।"

"शेयर बेचनेके लिए ?"

"हाँ, हाँ ; यही तो उसका सारा ध्येय था। उसने कहा था कि अगले कुछ सप्ताहों में ट्रेडवे के शेयरका भाव गिर जायगा और यदि आपने कुछ शेयर हाथमें रखें भी हों तो अब बेच दें और आगे चलकर फिर मोल ले लें और पर्याप्त लाभ उठा लें।"

"हाँ ; मैं–मैं तो इसका कोई सिर-पैर ही नहीं समझता, श्रीमती प्रिंस।"

"मैं जानती हूँ। मुझे भी यह बात कुछ बड़ी विचित्र-सी लगी। मैंने उससे पूछा भी कि आपने मुझे कैसे फोन किया ? किन्तु उसकी बातों से मैं इतना ही भाँप सकी कि उसका कुछ ऐसा सम्बन्ध है कि वह दो हजार शेयर थोक-के-थोक बेच सकता है किन्तु तभी, जब मैं उसे तात्कालिक निर्णय दे दूँ–साढ़े छः बजेसे पहले। हाँ, एक और बात भी थी। उसने यह भी कहा था कि यह सौदा गोपनीय होना चाहिए–शेयर बाजार के द्वारा नहीं–क्योंकि वहाँके द्वारा इतना मूल्य नहीं मिल सकता। इसके अतिरिक्त बहुत-सी आर्थिक और कानूनी बातें भी उसने की। पर वे मेरी समझ में कुछ नहीं आयी। बस यही उसका

मार था।"

फ्रेड्रिक एल्डर्सन की कल्पना बड़े वेगसे उड़ चली—"श्रीमती प्रिस! मुझे ऐसा लगता है कि कोई व्यक्ति ट्रेडवेके शेयरोंको थोक-के-थोक हथियाने के लिए दाँव खेल रहा है।"

"आप समझते हैं कि कोई शेयर लेना चाहता है?"

"नहीं तो वह आपको फोन करके बेचनेकी सम्मति क्यों देता?"

"हाँ, मैं समझी। मैं....आप समझते हैं कि यह कोई चाल थी।"

"स्पष्टतः।"

"और आप समझते हैं कि मुझे बेचना नहीं चाहिए?"

"नहीं—ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के भविष्य की चिंता के आधार पर तो कभी नहीं।"

"धन्यवाद, श्री एल्डर्सन! मैं आपसे आगे सम्मति लूँगी ही। पर यह बड़ी विचित्र बात है, हैन कि यह आदमी इस प्रकार मुझसे बातचीत करे?"

"हाँ, बहुत विचित्र।"

"यदि बहुत कष्ट न हो तो आप श्री बुलार्ड से यह बात कह देनेका बुरा नहीं मानेंगे। संभवतः उनके लिए इसका बहुत महत्त्व हो—इस बातका, कि कोई व्यक्ति शेयरों को थोक मोल लेनेका प्रयत्न कर रहा है।"

"मैं मिलते ही उनसे कह दूँगा। मैं जानता हूँ कि इस समाचार से उन्हें प्रसन्नता होगी और इस बातसे और भी अधिक प्रसन्नता होगी श्रीमती प्रिंस, कि आपने इस सम्बन्ध में हम लोगोंको सूचित कर दिया।"

उसने फोनका चोंगा टाँग दिया और जिस ढंग से उसने परिस्थिति संभाली थी, उससे बहुत प्रसन्न था। फिर भी उसके मनमें यह घबराहट अवश्य थी कि ऐसी बात पहले कभी नहीं हुई। कॉर्पोरेशन के आर्थिक व्यवहार से पिछले वर्षों इतना निकट सम्पर्क रखते हुए भी उसे कभी इस प्रकारकी घटना सुननेको नहीं मिली थी।

अचानक उसके मनमें सारी घटना इस प्रकार कौंध गयी जैसे चमकनेवाली बिजली की अलग-अलग चमक की धाराएँ आगे चलकर एक ही चकाचौंध कर देनेवाली चमक में जाकर मिल जाती हैं। पर यह सब लॉरेन शॉ का हथकंडा होगा। उसने कहा भी था कि पिल्चर ने शॉ का नाम लिया है.....उसका सम्बन्ध जोड़ा जाय.....पिल्चर भी शॉ का मित्र है.....वे दोनों ट्रेडवे में आनेसे पूर्व उस कंपनी में काम कर चुके हैं, जिसमें शॉ ट्रेडवे में आनेसे पूर्व था। शॉने स्वयं उस समय यह बात कही थी, जब कार्य-समिति ने ओडसा के ठेके पर विचार

किया था। किन्तु शॉ क्यों.....? दूसरा उत्तर कौंध उठा। शॉके पास कुल छः सौ बारह शेयर हैं। ये अंक उसके मस्तिष्क पर उसी प्रकार खुदे हुए थे जैसे कंपनीके अन्य अधिकारियों के शेयरोंकी संख्या खुदी हुई थी। उसके अपने भी १२५६ शेयर थे, जो ऐवरी बुलार्डके पश्चात् सबसे अधिक थे। यदि शॉ दो हजार शेयर अपनी मुट्ठीमें कर ले तो उसके पास २६१२ शेयर हो जायँगे। इसके साथ और भी वे शेयर जो खुले बाजारसे उसने लिये हों और जो अभीतक उसके नामपर लिखे नहीं गये। आज बाजार बड़ा गर्म था.....महीनोंमें ट्रेडवेके शेयरोंका सबसे बड़ा लेन-देन हुआ है।.....यदि शॉ मोल लेता रहा है.....।

एल्डर्सन ने अपना संदेह वहीं समाप्त कर दिया। वह अनावश्यक रूपसे उत्तेजित हो रहा था। चिंता करनेकी कोई बात ही नहीं थी। शॉ ने श्रीमती प्रिंसके दो हजार शेयर लिये ही नहीं.....और अब तो वह ले भी नहीं सकता। वह रँगे हाथ पकड़ा गया है और निकाल बाहर कर दिया गया है। अच्छा बच्चू! ऐवरी बुलार्डको आने तो दो।

अध्यक्ष-कार्यालय के लगभग बन्द द्वारकी दरार से झाँकते हुए उसने देखा कि ऐरिका मार्टिन किसीसे टेलीफोन पर बात कर रही है। बात समाप्त करने तक वह रुका और तब नाम लेकर उसे पुकारा।

वह द्वार तक चली आयी—"कहिए श्री एल्डर्सन?"

"श्री बुलार्डके बैठक में आनेसे एक मिनट पहले मैं उनसे मिल लेना चाहता हूँ। मुझे अभी कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण सूचना मिली है और मैं जानता हूँ कि यह सूचना उन्हें तत्काल मिलनी चाहिए। क्या आप मुझे उनके आते ही बुलवा लेंगी?"

"हाँ, श्री एल्डर्सन! किन्तु मुझे भय है—" उसका स्वर अवर्णनीय ढंगसे रुक गया।

"क्या कोई दुर्घटना हो गयी है, कुमारी मार्टिन?"

"मैं नहीं जानती। मैं।" वह रुक गयी और क्षणभर के लिए उसका मुँह देखने लगी मानो वह भयकी स्वीकृति पर विचार कर रही हो। "जब आप बात कर रहे थे उसी समय मुझे स्टेशन से ईडी का सन्देश मिला कि श्री बुलार्ड छः-तेरहवाली गाड़ीसे भी नहीं आये।"

"नहीं आये?"

"नहीं। और अब तो सात चालीस तक कोई दूसरी गाड़ी भी नहीं।" वह फिर रुक गयी जैसे कोई दूसरी रहस्यकी बात तोल रही हो—"मैं समझती

हूँ कि आप लोग यह जानना चाहेंगे कि फिर भोजनके लिए समय रहेगा या नहीं। इसलिए मैंने न्यूयॉर्क में वाल्डोर्फ एस्टोरिया से फोन मिलाया कि श्री बुलार्ड वहाँसे कितने बजे चले। मैंने सोचा कि इससे कम-से-कम इतना तो ज्ञात होगा कि वे सात-चालीसकी गाड़ी पकड़ सकेंगे या नहीं।"

"तो?"

"वे वहाँ पहुँचे ही नहीं।"

"तो, ऐसी दशा में कुमारी मार्टिन—तब वे सात-चालीसवाली गाड़ी भी नहीं पकड़ सकते। क्यों, पकड़ सकते हैं?"

"श्री एल्डर्सन! क्या आप समझते हैं कि उनके साथ कोई दुर्घटना हो गयी है?"

जिस आकस्मिक ढंग से उसके स्वर ने उसकी बात काट दी, उसके कारण उसने कुमारी मार्टिन की ओर बड़ी पैनी दृष्टिसे देखा। ऐरिका मार्टिनके स्वरमें वैसी बात उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। किन्तु इस स्वरसे वह पूर्णतः परिचित अवश्य था। उसकी पत्नी उसके लिए चिंता व्यक्त करते समय निरंतर इसी स्वरका प्रयोग करती थी और कभी चूकती नहीं थी। उस स्वर-सम्पर्क के कारण उसके स्वरपर भी प्रभाव पड़ा और उसने भी अचानक कह दिया—"मुझे निश्चय है कि चिंता करनेकी कोई बात नहीं। कुछ भी नहीं।"

"किन्तु यदि उन्होंने अपने विचार [illegible] नहीं [illegible]?"

अब एल्डर्सन को भलीभाँति प्रतीत हो रहा था कि वह वास्तव में शंकित हो रही है और जितना पहले उसने समझा नहीं था उससे कहीं अधिक। "कुमारी मार्टिन। आप श्री बुलार्डको बहुत समीप से जानती हैं।" उसने अत्यन्त अभ्यस्त सान्त्वनाके स्वर में कहा—"जब उन्हें कोई बात अपनी रुचिकी मिल जाती है, तो वे संसार में अन्य सब बातें भूल जाते हैं।"

कुमारी मार्टिन ने हिचकिचाहट के साथ यह स्वीकार किया—"मैं समझती हूँ, कुछ बात अवश्य हुई है। कम-से-कम हम लोग यह तो जानते ही हैं कि वे अब भी न्यूयॉर्क में हैं।"

"यह तो ठीक है।" उसने एक नये विषयके लिए अपना स्वर परिवर्तन करते हुए कहा—"मैं और सदस्योंसे भी कह देता हूँ। ठीक है न? ऐसी स्थिति में हममें से किसीका भी यहाँ रुकना व्यर्थ है और श्री डडले को तो विमान पकड़ना है।" उसने सिर हिलाया और चिन्तामग्न होकर उसकी ओर देखा।

"ज्योंही श्री बुलार्ड प्रातःकाल आयें, त्योंही आप मुझे फोनसे सूचना दे

दीजिएगा, कुमारी मार्टिन! यह बात तो मैं–ओ हो! कल तो शनिवार है, है न? तो, अच्छा मैं देखता हूँ–यदि आपको उनका कोई समाचार मिले कुमारी मार्टिन, और यदि आपको कष्ट न हो, तो मुझे घर पर फोन कर दीजिएगा?"

"हाँ, हाँ, अवश्य।" उसने अचानक अत्यन्त उदासीन होकर कहा—"मैं उनसे क्या कहूँ कि आप किस विषयमें उनसे मिलनेवाले थे?"

वह झिझका, किन्तु इतनेमें ही उसने इस प्रकार कहनेका ढंग निकाल लिया कि रहस्य भी बना रह जाय और ऐरिका मार्टिन को भी यह न लगे कि मैं उसका विश्वास नहीं करता–"श्री बुलार्ड से कहना कि मैंने अभी कुछ सूचनाएँ प्राप्त की हैं कि कंपनीके शेयरोंके सम्बन्ध में कुछ चक्र चल रहा है।"

"अच्छी बात है, श्री एल्डर्सन।"

उसने उसकी आँखें मेजसे टेलीफोन की ओर घूमते हुए देखीं और उस भवन में चलते हुए उसके मनमें यह भावना बैठ गयी कि कुमारी मार्टिन की बात से जितना ज्ञात हुआ, संभवतः उससे वह बहुत अधिक जानती है। यह संभव है कि श्रीमती प्रिंसने उसे पहले ही सब बातें बता दी हों। पर इससे होता-जाता क्या है.....श्री ऐवरी बुलार्ड के हाथ में सब बातें सौंपनेके अतिरिक्त और दूसरा हो ही क्या सकता है.....बस इतना ही तो है, केवल सूचना पहुँचा देना। इतने से ही तो श्री लॉरेन पी. शॉ के व्यक्तित्व की इति श्री हो जाती .....वैसे ही जैसे सन् चौंतीस में क्रय-विभाग के उस व्यक्तिका सारा जीवन चौपट हो गया, जो लकड़ी के दलालों से घूस ले रहा था।.....श्री बुलार्ड ने उसे लात मारकर निकाल दिया।

फ्रेड्रिक एल्डर्सन को एक बात स्मरण हो आयी जो स्वयं ऐवरी बुलार्ड ने एक बार कहीं थी–"फ्रेड! व्यवसाय में वास्तविक हरामजादे बहुत नहीं हैं। जितना लोग सोचते हैं उससे बहुत कम हैं और जो थोड़े बहुत हैं उनके सम्बन्ध में चिंता करना व्यर्थ है। आपका काम यही है कि पीछे बैठकर चुपचाप प्रतीक्षा करो। उन्हें लम्बी रस्सी दे दो और वे स्वयं फन्दा बनाकर उसे अपने गलेमें डालकर झूल जायेंगे।"

उसने संचालक के कक्षका द्वार खोला और जान-बूझकर उसने शॉ की ओर सीधे देखकर कहा–"मुझे अभी समाचार मिला है कि श्री बुलार्ड न्यूयॉर्क में किसी विशेष कामसे रुक गये हैं। इसलिए यह बैठक तो स्थगित होगी ही। अब हम लोगोंके यहाँ बैठनेमें कोई तुक नहीं है।"

शॉ की आँखें संकुचित हो गयीं–"क्या उन्होंने ही आपको बुलाया था?

क्या श्री बुलार्ड ही फोनपर बोल रहे थे?" उस क्षणका आनन्द लेते हुए एल्डर्सन चुप रहा और शॉ का उत्तर दिये बिना ही उसने अन्य सदस्योंकी ओर घूमकर कहा—"कोई सज्जन मेरे साथ चलना चाहते हैं? मेरी गाड़ी नीचे खड़ी है।"

सब लोग अपनी-अपनी घड़ियाँ देखने लगे। डडले ने कहा—"मुझे तो विमान के अड्डे पर जाना है, पर वह तो आपके मार्गसे बहुत दूर पड़ जायगा।"

इससे पहले कि एल्डर्सन कुछ उत्तर देनेका समय पाये, शॉने बीच में ही रोककर कहा—"चलो वाल्ट! मैं तुम्हें पहुँचा आता हूँ। राह में मैं तुमसे कुछ बातें भी कर लूँगा।"

वे दोनों साथ-साथ निकल गये।

वॉलिंग ने ग्रिम से कहा—"क्या आप पाइक स्ट्रीट तक चलकर यह देखनेके लिए रुकेंगे कि परीक्षण कैसा चल रहा है?"

ग्रिम ने कहा—"यदि मैं अंधेरा होनेसे पहले मैं रीलैंड पहुँचूँगा तो मुझे गाड़ी ढकेलनी पड़ जायगी।"

फ्रेड्रिक एल्डर्सन उनके पीछे-पीछे चला। उसने देखा कि ऐरिका मार्टिन अपनी टोपी लगा रही है—"क्या मैं आपके फोन का प्रयोग कर सकता हूँ?"

एल्डर्सन ने अपने घरका नंबर घुमाया और तत्काल उसकी पत्नी ने उत्तर दिया। उसने कहा—"बस, मैं अभी चल ही रहा हूँ।"

ईथिक एल्डर्सन ने अत्यन्त चिंताके साथ पूछा—"क्यों फ्रेड! तुम्हारा चित्त तो ठीक है न? अभी तुम्हारे स्वरसे ऐसा जान पड़ा कि तुम बहुत श्रान्त और थक-से गये हो। मैं तबसे यहाँ पर चिंता करती हुई बैठी हूँ।"

"नहीं, चिंताकी कोई बात ही नहीं है" उसने कहा। उसके शब्द अब अत्यन्त स्फूर्तिमय तथा उल्लासयुक्त थे और वैसे विस्वर नहीं थे जैसे प्रायः हुआ करते थे।

६.१८ सायंकाल

श्वेत ऊन के गालीचे में अपने साटन के स्लीपर की पैनी एड़ी डालकर जूलिया ट्रेडवे प्रिंस अपने उस पुराने विक्टोरियन पियानो की ओर घूम गयी, जिसका प्रयोग वह शृंगार की मेज के लिए भी कर लेती थी। दूसरी एड़ी का घुमाव सहसा बीचमें ऐसे रुक गया कि उसे अपनी उस चौड़ी खिड़कीके सामने रुक

जाना पड़ा, जिसमें से उसे दूर पर ट्रेडवे टॉवर का स्तम्भ दिखाई पड़ता था।

सहसा उसके मनमें यह बात आयी कि कुमारी मार्टिन ने न्यूयॉर्क से ऐवरीके न लौटनेकी बात सत्य नहीं कही होगी ; किन्तु तत्काल यह संदेह दूर हो गया।

वह है तो बड़ी चुड़ैल ; पर इतना साहस नहीं कर सकती ....जबतक स्वयं ऐवरी ही उसे ऐसा कहनेके लिए आदेश न दे। उसके कहनेसे वह चाहे जो कह सकती है.....और संभवतः यही किया भी हो उसने।

"ठहरो !" यह अपने ही लिए आज्ञा थी और ऊँचे स्वर में कही गयी थी। निषिद्ध क्षेत्रोंमें अपने विचारोंको प्रविष्ट होनेसे बचाये रखनेके लिए उसने यह रीति सीखली थी। ऐवरी बुलार्ड और ऐरिका मार्टिन के बीच किसी प्रकारके सम्बन्ध की कल्पना ही विचार की सीमा के बाहर की बात थी। केवल ऐवरी बुलार्डके सम्बन्ध में ही विचार करना चिंतन की सीमा की बात थी; किन्तु आज पिल्चर ने जो संदेश दिया था—उसने तो इस प्रकार के विचार करने को अत्यन्त वैध कर दिया।

जब उसे ज्ञात हो गया कि ऐवरी से बातचीत नहीं हो सकती, तब उसके अनुभव ने उसे यह प्रेरणा दी कि सब बातें एल्डर्सन को बता दी जायँ। फिर भी उसके मनमें आशा की यह पतली डोर बनी ही रही कि संभवतः ऐवरी मुझे बुला ले। इससे पहले बहुत-से ऐसे अवसर आ चुके थे जिनपर वह बुला सकता था; पर उसने बुलाया नहीं। वह कम—से—कम इतना तो कह ही सकता था—"धन्यवाद, जूलिया !"

....यही बहुत था। पहले जो था उसकी कुछ हल्की-सी गूँज....।

"ठहरो !"

"क्या बात है, प्रिंस ?"

अपने पतिके इस अचानक स्वरसे वह चौंक उठी ; क्योंकि उसने यह नहीं देखा कि वह पासवाले शयनकक्ष में आ गया था।

"अपने मनसे बात कर रही थी"—उसने झट हँसते हुए कहा और उन शब्दोंको अपने कंधों पर हिलाया और फिर श्रृंगार-मेजके सामने मोढ़ा घुमाकर बैठ गयी।

"क्या श्री बुलार्डसे बातचीत हुई ?"

वह दर्पण से उसे देख रही थी। वह अनादिष्ट अतिथिके समान द्वार पर स्वाभाविक विनम्र भावसे खड़ा है।

"नहीं ; मैंने श्री एल्डर्सन से बात कर ली।"

"अच्छा?"

"उसने मुझे सम्मति दी कि बेचो मत।"

"मैं समझता हूँ तब तो ठीक ही है?"

"और फिर मैं बेचूँ क्यों? क्या आवश्यकता है।"

"नहीं, मैं समझता हूँ कोई आवश्यकता नहीं है।" वह झिझका और फिर जैसे वह बातचीत चलाना चाहता हो; पूछने लगा—"क्या तुमने न्यूयॉर्कवाले आदमीको उत्तर दे दिया है?"

अपने बाल झाड़ते हुए उसने कहा—"नहीं।" प्रतिबिंबित द्वार बन्द होने लगा।

उसे प्रसन्न करते हुए घूमकर उसने कहा—"ओह ड्वाइट! आज हम लोग भोजनमें रसभरी खायेंगे और मैंने नीनासे कहा है कि मैं तुम्हें चाट बनानेके लिए तैयार कर लूँगी।"

उसका स्वर चमक उठा—"हाँ, हाँ, प्रिये।"

"मुझे चाहिए था कि मैं और पहले कहती।"

"अभी तो बहुत समय है। मैं अभी बनाये देता हूँ।"

जब वह घूमी तो देखा कि दर्पण में उसकी छाया नहीं थी; किन्तु उसके मन में उसकी मुस्कराहटका बिम्ब अभीतक बना हुआ था। वह कृतज्ञता की मुसकान थी और उसने वही मुसकान लौटायी भी। वह भी अत्यन्त कृतज्ञ थी—अत्यन्त कृतज्ञ इसलिए कि उसे प्रसन्न करना कितना सरल था।

अड़तीस वर्षकी अवस्था में भी जूलिया ट्रेडवे प्रिंस अपने अतीत के कोरे पन्नों को भर रही थी। सत्रह वर्षकी अवस्था में, जिस महीने में उसके पिताने आत्महत्या की, उस समय अपनी इस हानि के भयसे प्रभावित और अपनी माता की इस प्रवृत्तिसे कि ओरिन ट्रेडवेकी मृत्युकी अपेक्षा सम्पत्तिका विनाश और भी अधिक भयावह है, जूलिया की स्मृति पूर्णतः लुप्त हो गयी।

अगले सात वर्ष उसने मानसिक चिकित्सालय में बिताये। वे सात वर्ष उसके मनमें इतने खो गये थे कि उसे उन अनन्त महीनोंकी बातोंका कोई स्मरण ही नहीं था। वह निश्चयपूर्वक कह ही नहीं सकती थी कि कोई बात वास्तव में हुई थी। उसे यह भी स्मरण नहीं था कि ऐवरी बुलार्ड उससे मिलनेके लिए चिकित्सालय में कबसे आने लगा था।

उसकी विश्वसनीय स्मृति केवल उसदिन के सम्बन्ध में ही थी, जब उसने निश्चित रूपसे यह अनुभव किया कि ऐवरी बुलार्ड मेरा पिता नहीं है।

अंतिम दिनों में किसी समय—उसने चिकित्सालय का बिल चुकाने के सम्बन्ध में ऐवरी बुलार्ड से कहा था। वास्तव में जो कुछ उसने कहा था वह तो दूसरे किसी रोगी की सुनी हुई बात को सुग्गेकी भाँति दुहरानेभरके रूपमें प्रारंभ हुआ था। किन्तु इस बुद्धियुक्त चिंतन पर वह बहुत प्रसन्न हुआ था और उसने उसकी आर्थिक स्थिति भी बतलायी थी कि 'पुरानी ट्रेडवे फर्नीचर कंपनी अब बढ़कर ट्रेडवे कार्पोरेशन हो गयी है। उसके पिताके सब शेयर बचा लिए गये हैं और अब उनका बहुत मूल्य हो गया है।' उसने कहा था कि किसी दिन वह बहुत धनी हो जायेगी और नार्थ स्ट्रीटवाला उसका पुराना भवन तैयार है और तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। वह जिस समय चाहे उसी समय अपने घरमें चली जा सकती है।एक महीने पीछे वह अकेली और बिना सहायता के ही चिकित्सालयसे निकलकर चल दी थी। उसका शरीर अत्यन्त विचित्र ढंगसे यातनामुक्त हो चुका था और उसका मस्तिष्क भी वर्षा से धुले हुए आकाशके समान स्वच्छ हो गया था।

साधारण मानसिक स्थिति में पहुँचने तक जूलिया ट्रेडवे चौबीस बरस की हो चुकी थी। पर बहुत-सी बातोंमें वह अभीतक सत्रह की ही थी। उसके सात वर्ष तो कोरे ही निकल गये थे। प्रकृति ने अपनी उस विशाल क्रूरता के बदले में उसे यह थोड़ा-सा पुरस्कार दे दिया था कि उसके मस्तिष्क को उसने सत्रह वर्षसे कुछ अधिक बना दिया था—किन्तु अब भी वह अपनी अवस्था के साधारण विकसित मनुष्यसे कहीं भिन्न थी। वह अभी तक वे बहुरंगी प्रभाव इकट्ठे नहीं कर पायी थी,जो कौमार्य से यौवनमें जाते समयकी अवस्थामें स्वयं आ जाते हैं। अतः, उसका मस्तिष्क चिंतन की अत्यन्त कच्ची सामग्रियों से भरा हुआ था।

उसकी प्रथम प्रसन्नताके लिए उसका घर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। उसकी नयी भावनाओंमें सबसे अधिक दृढ़ उस दिनकी भावना थी, जब वह चिकित्सालय से घर आयी थी। उस प्राचीन घरका स्नेह स्मरण करने के अतिरिक्त उसे यह भी भय बना रहता था कि उसे देखने पर कहीं वे भयानक स्मृतियाँ न उठ खड़ी हों; किन्तु किसी प्रकारका भी भय उसके मनमें नहीं आया। क्योंकि कोई स्मृति ही नहीं रह गयी थी। उसे ऐवरी से यह पूछने में बड़ा डर लगता था कि यह मकान कितना परिवर्तित हो गया है और वह इस डर से नहीं पूछती थी कि कहीं वह अपना रहस्य खोलकर उसे निराश न कर दें। इसीलिए महीनों पश्चात् उसे यह ज्ञात हुआ कि ऐवरी ने यह मकान फिरसे

सजाया है और इसमें फिर से नया सामान लगवाया है। जब वह अन्त में बोलने-चालने योग्य हुई तब बुलार्ड ने जूलियाके धन्यवाद की भी उपेक्षा कर दी। "जूलिया! धन्यवाद देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। इसकी सब सामग्री तुम्हारे ही पैसेसे मोल ले ली गयी है।"

पहले ही दिन नीना वहाँ प्रतीक्षा कर रही थी। वह एक विचित्र ठिंगनी-सी, नुकीली नाकवाली, कड़ी माड़ीवाला स्वच्छ उपरना पहने, किन्तु बड़ी-बड़ी काली समझभरी आँखोंवाली स्त्री थी। सच पूछिए तो नीना ने ही उसे शान्ति और संरक्षण प्रदान किया और उसे उस अप्रतिम स्नेहका प्रवाह दिया, जिसकी उसे बड़ी आवश्यकता थी। और जिसने उसे नीना दी थी, वह था ऐवरी बुलार्ड। दूसरा कोई उसे खोज नहीं सकता था; दूसरा कोई जान भी नहीं सकता था कि उसे नीना की ही आवश्यकता है?

अपने सुधार के प्रारंभिक दिनों में जब वह यह भी नहीं सोच पायी थी कि मैं अब बच्ची नहीं रही, उस समय ऐवरी बुलार्ड उसे बहुत बूढ़ा लगता था। इसी कारण उसके पिताकी मूर्ति और उसकी मूर्ति उसे एक-सी लगती थी। किन्तु अब भी उसके मनमें वह पितृतुल्य भाव ही उत्पन्न करता था। अन्त में जब उसे निश्चय हो गया कि वह पूरी स्त्री है तब उसकी अवस्था में सहसा जो वर्ष जुड़ गये थे, उन्होंने उन दोनों की आयु के बीच के अन्तर को दूर कर दिया। उस समय तक उसके प्रति जूलिया का स्नेह निश्चित रूपसे किसी पुरुषके प्रति किसी स्त्रीके प्रेम के रूपमें बढ़ गया था और बढ़ते-बढ़ते इतनी तीव्र वासना के रूपमें बदल गया कि उसे पुनः यह भय होने लगा कि कहीं फिर उसका मानसिक संतुलन न बिगड़ जाय।

अपने पिछले दिनोंका स्मरण करते हुए उसे कभी-कभी ऐसा लगता कि वह फिर पागल हो गयी है। वह कुछ ऐसे काम कर देती जो केवल पागलपनमें ही किये जा सकते थे। जिस वर्ष बुलार्डकी पत्नीने उसका परित्याग किया था, उस वर्ष जूलिया ने अत्यन्त पागलपन के साथ उसे प्राप्त करनेका प्रयत्न किया था। कभी-कभी तो ऐसे भी क्षण आ गये थे जब उसे यह विश्वास हो गया था कि वह ऐवरी को सदाके लिये बाँध रखेगी। किन्तु वर्षों पीछे उसे ज्ञात हुआ कि उसे प्राप्त करनेके लिए उसने जो प्रयत्न किया था उसके कारण वह और भी दूर हो गया है।

जब उसने केवल काम-काज के अतिरिक्त उसके यहाँ आना-जाना छोड़ दिया तब भी जब उससे भेंट हो जाती तो उसे आशा दिखाई पड़ जाती। जब उसने

उसे ट्रेडवे कंपनी का संचालक बना दिया तब उसे यह आशंका हुई, कि यह केवल इसलिए किया गया है कि उसे ही कार्यालय में जाना पड़े और उसे घर बुलानेका भी बहाना न रह जाय। परिणाम यह हुआ कि उसने एक दिन भी संचालकों की बैठक में भाग नहीं लिया।

एक बार संयोग से बातचीत करते हुए उसने ऐवरी बुलार्ड के मुँहसे सुना कि यदि उसने अपने शेयर किसी दूसरेको बेच दिये तो कंपनी पर उसका शासन समाप्त हो जायगा। इसलिए अपने शेयर बेचने की तर्जना में उसको अपने पास बुलानेका एक नया उपाय मिल गया और अपनी निराशा के अंतिम झोंकोंमें उसने बार-बार इसका प्रयोग भी किया। यद्यपि उसे अपनी इस निर्लज्जता पर घृणा होती थी, तथापि वह अपनी निर्लज्जताको रोक नहीं पाती थी। जब-जब वह ऐवरी बुलार्डके लिए फोन उठाती थी, तब-तब एरिका मार्टिन ही उत्तर देती थी और उसे निरंतर यह स्मरण करके कष्ट होने लगता था कि यही वह स्त्री है, जो प्रातःकाल से लेकर शाम तक उसके साथ रहती है। वह इसके सहारे यहाँ तक संदेह करने लगती थी कि ऐरिका मार्टिन उसके साथ रातको भी रहती होगी।

अन्त में जूलिया ट्रेडवे पराजित हो गयी। ऐवरी बुलार्ड ने ही उसे स्तब्ध कर दिया। एक रात जब उसने ऐवरी को अपने यहाँ बुलानेका छल किया और कह भी दिया कि हाँ उसने छल से बुलाया है, तब ऐवरीने कहा था—"जूलिया! यह स्मरण रखो कि तुमने अपने जीवनके सात वर्ष नष्ट कर दिये हैं। यदि तुम इसी प्रकार करती रहोगी तो मुझे डर है कि कहीं तुम अपना सारा जीवन नष्ट न कर डालो।"

उसने नया जीवन प्रारंभ कर दिया था। ड्वाइट प्रिंस से उसका विवाह इसकी भूमिका थी। न तो वही उससे प्रेम करती थी और न यही समझती थी कि वह उससे प्रेम करता है। ड्वाइट को सबसे वड़ा लाभ यही था कि उसमें कोई ऐसा गुण नहीं था जो जूलिया को ऐवरी बुलार्डका स्मरण दिलावे। न उसमें शक्ति थी, न किसीको अपने शासन में रखनेकी योग्यता। और फिर उसे जूलियाकी आवश्यकता थी—उसके रुपयेकी आवश्यकता थी, जिससे वह अत्यन्त आनन्दके साथ किन्तु निरर्थक रूपसे जीवन चला सके। क्योंकि उसने बपौती और शिक्षा में इसी प्रकारकी शिक्षा पायी थी। जूलिया के इस धनके बदले वह उसे थोड़ी समझ और नम्र दयालुता भर दे देता था जिससे जूलियाको अपनी आकांक्षा से अधिक प्रसन्नता प्राप्त हो जाती थी।

उन दोनों में परस्पर कुछ ऐसा भाव उत्पन्न हो गया था जो सच्चा प्रेम तो नहीं कहा जा सकता था ; किन्तु कम-से-कम ऐसा सम्बन्ध तो अवश्य था जो जूलिया की समझ में बहुत-से विवाहोंमें प्रेमके नामसे जो कुछ होता था—उससे अधिक वांछनीय था।

अपने ऊपर कठोर नियंत्रण का अभ्यास करके उसने ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में सोचना ही बन्द कर दिया और ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गये, त्यों-त्यों यह उसके लिए और भी सरल हो गया। यहाँतक कि आज जब शेयर बेचनेके लिए ब्रूस पिल्चर की माँग और अधिक तीव्र हो गयी तब उसे उन दिनोंकी स्मृति हो आयी, जब उसी तर्ज़नाके साथ वह ऐवरी बुलार्ड को बुलाया करती थी।

वह फिर अपने मोढ़े पर घूम गयी और उसकी आँखें टॉवरके शिखर पर जा टँगीं। हॉ, एल्डर्सन को संदेश देकर मैंने ठीक किया है। संभवतः ऐवरी स्मरण करे....संभवतः न भी करे....पर कर भी सकता है।

पंचम अध्याय

न्यूयॉर्क सिटी
६.२२ सायंकाल

मदिरा के तीसरे दौरका चिंतन करते हुए ब्रूस पिल्चर ने निश्चय किया कि अब वह नहीं पियेगा। मदिराने उसे वह झूठा साहस दे दिया था जिसकी उसे आवश्यकता नहीं थी। उसे सोचना था। श्रीमती प्रिंस ने उसे घंटे भरके भीतर उत्तर देनेका वचन दिया था। लगभग एक घंटा बीत रहा था पर उसने उत्तर नहीं दिया।

जब उसने अस्पताल को टेलीफोन किया और उसे सूचना मिल गयी कि ऐवरी बुलार्ड वहाँ नहीं है, तब ब्रूस पिल्चर ने उन समाचार-पत्रोंके अंतिम संस्करण को उलटनेमें कुछ देर नहीं लगायी, जो उसके कहनेपर पुस्तकालयसे लाये गये थे।

अब वह अन्यमनस्क होकर उस मेजके आगे बढ़ गया, जिसपर एन्ड्रूज ने समाचार-पत्र लाकर रखे थे। उसके विचार अभी इसी निश्चय में उलझे हुए थे कि श्रीमती प्रिंस के उत्तरके लिए अभी पन्द्रह मिनट और प्रतीक्षा की जाय: किन्तु समाचार-पत्रमें छपे हुए नाम ने उसकी आँखें उस भवन की ओर आकृष्ट कर दी जिसमें उसका कार्यालय था।

चिपैन्डेल भवन के सामने अज्ञात मनुष्य की मृत्यु

आज तीसरे पहर ढाई बजे के लगभग चिपैण्डेल भवन के सामने टैक्सी में बैठते समय एक अज्ञात मनुष्य मृतक होकर गिर पड़ा। वह रूजवेल्ट हॉस्पिटल पहुँचने पर मृतक घोषित किया गया। पुलिस ने उसका वर्णन करते हुए लिखा है कि वह अच्छे वस्त्र पहने हुए था; छः फीट-तीन इंच लम्बा था। उसका वजन लगभग दो सौ बीस पाउण्ड था। उसके बाल काले, आँखें भूरी और उसकी अवस्था लगभग छप्पन और साठके बीच थी। उस मनुष्य की पहचान के सम्बन्ध में पुलिस को केवल यही सूत्र प्राप्त हुआ है कि उसके नामाक्षर ए. बी. हैं, जो उसके व्यक्तिगत कपड़ों पर लिखे हुए हैं।

इस समाचार से ब्रूस पिल्चरको मानो काठ मार गया। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानो वह भय की गंभीर काल-कोठरी से निकाल कर अचानक पूर्ण

आत्मविश्वास के सुप्रकाशित शिखर पर लाकर बैठा दिया गया हो। वह बराबर ठीक सोच रहा था। वह ऐवरी बुलार्ड ही था और ऐवरी बुलार्ड मर गया था। उसके शरीर का पहचाना न जाना केवल संयोग था।... दुःसंयोग .... उसका कोई दोष नहीं... ऐसी घटना, जिसकी उसने पूरी कल्पना भी नहीं की थी।

ब्रूस पिल्चर के मन में आत्मविश्वास भरता गया। मुझे आत्मविश्वास कभी नहीं खोना चाहिए था। ..यह मैंने एकमात्र भूल की थी.... अपनेमें विश्वास खोना.....।

एन्ड्रूज चुपचाप पुस्तकालय में चला आया था और मेजकेसामनेआकर खड़ा होकर उसके देखने की प्रतीक्षा कर रहा था।

"हाँ, एन्ड्रूज ! क्या बात है ?"

"टेलीफोन है, महाशय।"

ब्रूस पिल्चर जरा भी नहीं झिझका—"मुझे उत्तर देनेका समय नहीं है। कह दो कि मैं क्लब से चला गया हूँ।"

"वह कोई स्त्री नहीं है, साहब। कोई श्री स्टीगल हैं।"

"अच्छा !"

तो उस बुड्ढे ने उसपर विचार कर लिया है और अब वह दो हजार शेयरों-पर आधा लाभ चाहता है ? भाड़में जाय वह ! जूलियस स्टीगल को अवसर दिया गया था और उसने साहस खो दिया था ..... जब आप साहस खो बैठें तो कैसा पैसा—"एन्ड्रूज ! उसके लिए भी यही उत्तर है। मैं क्लब से जा चुका हूँ।"

वह एन्ड्रूज को झूठ बोलनेके लिए नहीं कह रहा था। क्योंकि जब तक वह बूढ़ा टेलीफोन पर पहुँचे–न–पहुँचे तब तक तो ब्रूस पिल्चर द्वार से निकलकर सड़क पर पहुँच चुका था।

टहलना तो चिंतन के लिए सहायक होता है। उसके पग उसके मस्तिष्क के विचारों के साथ ताल देते चल रहे थे। केवल एक बात नयी थी... ऐवरी बुलार्डका शरीर पहचाना नहीं गया।

पहचाना नहीं गया ! यह बात अच्छी हुई या बुरी ? उसके विचार अत्यन्त सटीक तराजू के पलड़ेके समान हिले और सन्तुलन का केन्द्र ढूँढ़ने लगे। उसने निश्चय किया कि पलड़ेका बोझ भलेकी ही ओर है। अन्त में पुलिसको ज्ञात तो हो ही जायगा पर उसमें समय लगेगा.... कुछ घंटे... संभव है और

भी अधिक समय लगे। इतने में उसे कुछ कर डालने के लिए समय मिल जायगा। यह सूचना ही बड़ी महत्त्वपूर्ण है। उसमे भी लाभ उठाया जा सकता है। बहुत-से लोग उसे कुछ रकम ही दे दें—कम-से-कम कृतज्ञता के रूप में... अग्रिम सूचना के उपलक्ष्य में....वे लोग जो ट्रेडवे के शेयरों में विशेष रुचि रखते हैं। कासवेल ?

नहीं, कासवेल नहीं... उससे बात करना बहुत संकटपूर्ण है या ठीक ही है ? कासवेल की जान-पहचान बहुत है... और कासवेल सज्जन भी है। कोई भी सज्जन उस व्यक्तिको नहीं भूल सकता, जिसने उसके साथ कभी भलाई की हो। तराजूका पलड़ा फिर से नीचे-ऊपर होने लगा—हाँ या नहीं ? हाँ।

पास ही कोनेपर एक औषधियों की दूकान थी। वह भीतर चला गया और वहाँ उसे टेलीफोन का कक्ष मिल गया। ज्योंही उसने सिक्का डाला, त्योंही उसका मस्तिष्क भी सटीक यंत्र के समान काम करने लगा—शब्दों को छाँटता हुआ, क्रमसे लगता हुआ, फिर क्रम ठीक करता हुआ और विराम देता हुआ।—मैं टेलीफोन पर बहुत अधिक नहीं कहूँगा। केवल उतनी ही बात कहूँगा जिससे कासवेल की उत्कंठा जाग खड़ी हो। संभवतः कासवेल मुझे अपने घर बुलाये... ऐसा पहले कभी हुआ नहीं... संभवतः कासवेल यह भी...।

टेलीफोन में व्यस्तता की ध्वनि सुनायी पड़ी। उसने चोंगा टाँग दिया और सिक्का खनखनाता हुआ नीचे निकल आया। उसने सिक्का उठाया तो यह जानकर उसे आश्चर्य हुआ कि उसका हाथ काँप रहा है। मैं अब तब तक प्रतीक्षा करूँगा जबतक घर पर जाकर फोन से बात न कर लूँ... हाँ, यही ठीक भी है.....तब तक सोचनेके लिए और भी समय मिल जायगा।

६.३७ सायंकाल

ऐनी फिनिक ने अंतिम संस्करण में जिस ढंग से यह समाचार पढ़ा, वह ब्रूस पिल्चरके ढंगसे मिलता-जुलता था। वह भी चिपैण्डेल भवन में काम करती थी और शीर्षक में उस भवन का नाम देखकर ही उसकी दृष्टि भी समाचार पर गयी थी। किन्तु अंतिम पंक्ति पढ़ने और यह समझने तक कि उस मृत व्यक्तिके नामाक्षर ए. बी. थे, उस समाचार का उसके लिए कोई व्यक्तिगत महत्व नहीं था। उस समय तक उसने इस बातपर विचार ही नहीं

किया था कि जहाँ नाली में उसने बटुआ पड़ा पाया था, वहाँ वह पहुँचा कैसे ? अब उसकी समझमें आया कि यह बटुआ उस मृतक का ही था और क्योंकि बटुआ उसे मिला था और वह उसे ले गयी थी। इसलिए पुलिस उसे पहचान पानेमें सफल नहीं हो सकी।

उसके मन में पहले से ही जो नैतिक समस्या समायी हुई थी, वह इस नये परिज्ञान से और भी अधिक जटिल हो गयी। डाक्टर मार्सटन के पास पहुँचने तक तो उसके कष्ट की गंभीरता और निराशा ऐसी थी कि वह रुपया अपने पास रखनेका समर्थन करती जा रही थी, किन्तु उसके पश्चात् तो स्थिति बदल गयी। इस पिछले घंटे में यह जानकर कि वह अब गर्भवती नहीं है, उसे कोई ऐसा कारण नहीं मिल रहा था जिससे वह रुपया अपने पास रखनेके लिए या यह सिद्ध करनेके लिए समाधान ढूँढ़ सके कि यह गंभीर अपराध नहीं है। उसे स्मरण था कि उसके पिताके गोदाम के पासवाले घर में, थर्ड एवेन्यू पर रहनेवाला एक लड़का केवल इस बात पर जेल भेज दिया गया था कि उसने एक दस डॉलरका नोट चुरा लिया था। ऐनी ने तो पाँचसौ चौंतीस डॉलर चुराये थे। इस अपराध की महत्ता उसकी समझ की संकुचित सीमा से परे थी और वह यह भी नहीं समझ पा रही थी कि इसका उसे कितना भारी दंड मिलेगा। उसके मनमें इतना भारी डर बैठ गया कि अपने गर्भवती न होनेकी उसे जो प्रसन्नता हुई थी वह पूर्णतः समाप्त हो गयी।

अन्त में उसने निश्चय किया कि जिस आदमीका बटुआ खो गया है वह तो मर चुका है। इसलिए उसका रुपया अपने पास रखनेमें कोई दोष नहीं है। इस परिणाम पर पहुँचने में उसे अपने चाचा रूबी की बात स्मरण हो आयी, जो मरने पर उसके पिताके लिए पाँच सौ डॉलर छोड़ गया था। यदि मेरे पिताने चाचा रूबी के जीवनकाल में ही यह रुपया ले लिया होता तब तो यह चोरी होती; किन्तु उनकी मृत्युके पश्चात् इसमें कोई दोष नहीं था। मेरे पिताके लिए मेरे चाचाने उसी प्रकार रुपया छोड़ा था, जैसे इस 'ए. बी.' नामाक्षरवाले व्यक्तिने नालीमें अपना बटुआ छोड़कर मेरे लिए।

उस समस्या के समाधान ने एक दूसरी समस्या खड़ी कर दी। चाचा रूबीके लिए जो उसका भावात्मक स्नेह था और साटन की गोट लगे हुए डिब्बे जैसे दिखाई देनेवाले गुलाबी मोम-से मुखकी स्मृतिने जो स्नेह उत्पन्न कर दिया था, उसके कारण उस दयालु किन्तु, अज्ञात सज्जनके प्रति भी उसके मनमें वैसा ही भावात्मक स्नेह जाग उठा—जिसने उसे इतना रुपया दिया था।

उसकी इच्छा हुई कि वह उसके अंतिम संस्कार के समय जाये। उसके अंतिम संस्कार पर कोई फूल चढ़ायेगा ही नहीं। लोग जानेंगे ही नहीं कि फूलके डिब्बों पर क्या नाम लिखा जाय। अंतिम संस्कार के लिए लोग आयेंगे भी नहीं; क्योंकि जिसका नाम लोग नहीं जानते उसके अंतिम संस्कारके लिए भी नहीं जाते। चाचा रूबी के अंतिम संस्कार के समय जितने लोग गये थे, वे सब जानते थे कि मृत-पेटिका में रुडोल्फ फिनिक है।

कुछ देर तक और सोचनेके पश्चात् यह समाधान और भी सरल जान पड़ा। मैं समाचारपत्रवालोंको खटखटाकर कहे देती हूँ कि मृतक का नाम श्री ऐवरी बुलार्ड है और वह ट्रेडवे कार्पोरेशनका अध्यक्ष था। वही परिचय तो उन सब छोटे-छोटे पत्रकों पर लिखा हुआ था, जो मैंने शौचालय के गमलों में धो बहाये थे। तब वे लोग उसका नाम समाचार-पत्र में छाप देंगे। सब लोग उसे पढ़ेंगे और बड़ा अच्छा अंतिम संस्कार हो जायगा।

अपना विचार पूर्ण करना उतना सरल नहीं था जितना वह प्रारंभ में प्रतीत होता था। टेलीफोन रखा था अंधेरे भवन में। बिजली की बत्तीका बल्ब जल चुका था। इसलिए उसे समाचारपत्रका टेलीफोन नंबर जाननेके लिए सलाई जलानी पड़ी। नंबर पा चुकने पर उसे यही बताना बड़ा कठिन हुआ कि वह किस विषय में बातचीत कर रही है। किन्तु अन्त में जिस व्यक्ति ने बातचीत की वह बड़ा सज्जन था। उसने नामके अक्षरों को उसी प्रकारसे अलग-अलग कह दिया, जैसे वे छोटे-छोटे पत्रकों पर बने हुए थे और फिर चोंगा रख दिया।

सब कर चुकनेपर उसके मन को कुछ शान्ति मिली। अब तो वह यहाँ तक सोचने लगी—यह कितना अच्छा हुआ कि मैं गर्भवती नहीं हूँ।

६.४४ सायंकाल

ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के न्यूयॉर्क कार्यालयके व्यवस्थापक की पत्नी के रूप में मेरियन ओल्डम जानती थी कि उसका भी कुछ उत्तरदायित्व है। उसने सच्चे मनसे उन्हें स्वीकार तो कर लिया था, पर उनका पालन करना उतना सरल नहीं था। बहुत बार तो उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि क्या एलेक्स सचमुच उसकी कठिनाइयोंको समझता है। वह ठीक कहा करता था कि अपने पदकी मर्यादाके अनुसार उन्हें अपने अतिथियों का सत्कार करने के लिए एक रसोइया रखना ही चाहिए। किन्तु मेरियन को इसमें संदेह था कि एलेक्स यह भी

समझता हूँ कि यदि आप ठीक समय पर भोजन करनेका वचन न निबाहें तो आजकल के दिनों में रसोइया रखना कितना कठिन है।

एलेक्स ने अपने गिलास में बरफ का एक टुकड़ा डाला और मदिराकी बोतलकी ओर हाथ बढ़ाया।

"प्रिय एलेक्स!" मेरियन ने कोमलतासे कहा—"क्या तुम शीघ्र ही भोजन के लिए तैयार हो जाओगे?"

एलेक्स ने जब अपना मुख घुमाया तब वह अत्यन्त थकावट से पीला पड़ चुका था और उसने यही इच्छा प्रकट की कि उसे अपना प्रश्न फिर दुहराना न पड़े।

"मुझे खेद है, प्रिय! मैंने हिल्डाको वचन दिया है कि वह शीघ्र जा सकती है। आज शुक्रवार है और उसके संघ की बैठक है।"

"ठीक है।" एलेक्स ने कहा और अपना हाथ बोतल से हटाकर नीचे डाल दिया।

"अच्छा, पी लो!" उसने अचानक पश्चात्ताप के स्वर में कहा—"कोई बात नहीं है। मैं हिल्डा से कह दूँगी कि वह चली जाय और मैं ही सब कामकाज देख लूँगी।"

"नहीं, मैं बहुत ले चुका हूँ। मैं समझता हूँ कि जैसी मदिरा है उस दृष्टि से मैं अधिक पीता हूँ।"

"नहीं, इतना तो नहीं पीते हो।" वह उसके पासतक बढ़ आयी और हाथ में हाथ लेते हुए बोली—"तुम्हें उसकी आवश्यकता है—उस समय—जब बुरे दिन आनेवाले होते है।"

"इधर तो बुरे ही दिन आ रहे हैं। सब बुरे ही दिन हैं।"

"प्रिय! कम-से-कम तुम सोमवार तक के लिए तो यह बात भूल जाओ।"

"अच्छा।"

यह केवल शाब्दिक समझौता था—"मेज पर भोजन लगाओ; मैं अभी एक मिनट में आता हूँ।" उसने एलेक्स को शौचालय की ओर जाते हुए देखा और मन-ही-मन कहने लगी कि वह बड़ा अच्छा पति है और मनमें इच्छा करने लगी कि वह किसी प्रकार इसकी विपत्तियों में भागी होकर उन्हें कम कर पाती। प्रारंभ में जब उनका विवाह हुआ ही था, तब एलेक्स सेंट लुईके कार्यालय में विक्रेता का काम करता था। उस समय यह भागीदारी पूरी हुई। जब वह घूमकर आया करता था, तब उसे रातको बैठकर विस्तार के साथ बताया

करता था कि क्या-क्या हुआ और वह कहाँ-कहाँ गया। उसके उत्साह से उसकी रुचि भी इतनी बढ़ी कि उसने सब ग्राहकोंके और ट्रेडवे के सूचीपत्र के सभी प्रकार के सामानों के अंक कंठस्थ कर लिये। धीरे-धीरे कुछ वर्ष बीतने पर जब एलेक्स का पद कंपनी में बढ़ गया तो उसके व्यापारी जीवन में मेरियन की साझेदारी कम हो गयी। वह जानती थी कि यह जान-बूझकर इसलिए नहीं किया गया कि उसे कष्टमें माझा लेनेसे वंचित किया जाय, वरन् इसलिए कि उसके लिए व्यवसाय से बचाकर और भी अधिक समय निकालना आवश्यक था।

कभी-कभी तो मेरियन ओल्डम अनुभव करती कि उससे बातचीत करने में उसके पतिको, ध्यानमग्न होकर मौन बैठनेकी अपेक्षा, अधिक शान्ति मिल सकती है। किन्तु वह ऐसा समय खोजें ही नहीं पाती थी।

एलेक्स ठीक कहता है... बड़े बुरे दिन आ रहे हैं.. और ऐसी रातमें भी जब वह आजकी रातके समान ही घर लौटता था... नहीं, उतनी बुरी नहीं, जितनी आजकी रात... वे दिन जब श्री बुलार्ड न्यूयॉर्क में आते हैं मेरे लिए सबसे बुरे दिन होते हैं।

वह भोजन-कक्ष में इस प्रकार आँखें झपकाता हुआ पहुँचा मानो वे चमक रहीं हों।

"मेरा खयाल है कि आज मुरब्बा बहुत अच्छा बना है, प्रिय ?" मेरियन ने पूछा। उसने बैठकर भोजन करना प्रारंभ करते हुए अपना सिर हिलाया। वह मौन भंग करना चाहती थी और अन्त में कोई ऐसी बात कहना चाहती थी, जिसका कोई व्यावसायिक सम्बन्ध न हो।

"आज मुझे मार्गी का पत्र मिला है।"

"अच्छा ?"

"मार्गी और जैसी-दोनों अगस्तके प्रथम सप्ताह में मेन जाते हुए यहाँसे होकर जायेंगे। वे अपनी छुट्टियाँ वहाँ—कैनेबंक पोर्ट में बिता रहे हैं।"

"ओहो !"

"मैंने उन्हें लिख दिया है कि हम उनसे मिलना तो बहुत चाहते हैं, पर संभवतः उसी समय हम भी छुट्टी पर निकल जायँगे।" उसने मौन होकर सिर हिलाया।

"क्यों एलेक्स ! तुमने कहीं चलने की बात सोची है।"

"नहीं, बहुत तो नहीं सोची।"

उसका प्याला अभी आधा ही रीता हुआ था कि मेरियन ने देखा कि उसने खाना बन्द कर दिया—"क्या कोन्सोम (शराब) अच्छी नहीं लगी प्रिय ?"

"नहीं, बहुत अच्छी ! भूख नहीं है, बस यहीं बात है। मै समझता हूँ यह बहुत तेज है।"

हिल्डा भीतर आयी और वे दोनों तबतक चुप बैठे रहे, जबतक उसने चॉप और तरकारी नहीं परोस दी। जब भी श्री बुलार्ड न्यूयॉर्क में आते थे तब रात में सदा चॉप बना लिये जाते थे। किन्तु बहुत-सी बातों में से यह भी एक बात थी जिसकी ओर वह एलेक्स का ध्यान आकृष्ट नहीं करती थी।

अचानक मानो वह कोई ऐसी बात चलाना चाहता हो जो मेरियन ने न सुनी हो, एलेक्स ने कहा—"मै कंपनी के अन्य लोगों के साथ छुट्टी मनानेकी बात ही नहीं सोचता। केवल शॉ परिवारके साथ यदि मनानी पड़े तो संभवतः ठीक होगा। उसकी पत्नीके घरवाले लोग केप कॉर्डपर रहते हैं।"

"लॉरेन शॉ का परिवार ?"

उसने इस प्रकार मुँह उठाकर देखा मानो वह पहले कही हुई बातको ध्यानसे न सुननेका दोष लगा रहा हो।

"उन्होंने हमें वहॉंके लिए निमंत्रण दिया है ?"

"क्या मैंने तुम्हें बताया नहीं ?"

"मैं तो नहीं समझती कि तुमने मुझसे कहा था प्रिय।"—अब मेरियन के पास इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं था।

"मैंने सोचा शायद मैं कह चुका हूँ। उसने इस सम्बन्ध में उसी समय कुछ कहा था, जब वह पिछले सप्ताह यहाँ आया था। कोई निश्चित बात नहीं थी। ठीक-ठीक निमंत्रण तो नहीं था। पर मैं सोचता हूँ, वे जा रहे हैं।"

"क्यों एलेक्स ! क्या तुम्हें उनके साथ आनन्द आयगा ?"

"क्यों नहीं ?"

"तुम इसलिए नहीं जा रहे हो कि तुम्हें वहाँ जाना है, क्यों? इसलिए जा रहे हो कि वह नया कार्यवाहक-अध्यक्ष बननेवाला है ?" उसने एक क्षण सोचा कि उसने ऐसी बेढंगी बात कह दी है जिसे सुनकर या तो वह क्रोध से जल उठेगा या मौन हो जायगा। पर सौभाग्यवश उसने दोनों काम नहीं किये।

"नहीं, इस कारण मैं कुछ भी नहीं करूँगा। जीवन बहुत छोटा है और फिर उसके कार्यवाहक-अध्यक्ष होनेका कोई निश्चय भी नहीं है। यह तो मेरी कल्पना है, बस।"

वह सन्तोष के साथ मुस्करायी—"तुम उसे चाहते हो! चाहते हो न?"

"यह तो मैं नहीं जानता। कम-से-कम उसे दूसरे लोगोंके चिंतन के ढंग का कुछ ध्यान रहता है। तुम्हारे विचारोंका उसके लिए कुछ अर्थ है—ऐसा नहीं जैसा वह बूढ़ा करता है।"

मेरियन ने ऐवरी बुलार्डके वहाँ आनेके सम्बन्ध में एक प्रश्न पूछा ही था कि वह तत्काल संभल गयी—"तुम कहते हो कि शॉ परिवारका कोई स्थान वहाँ ऊपर...।"

टेलीफोन की घंटी ने बीचमें बात काट दी। मेरियन ने अपनी कुर्सी घुमायी और उत्तर देने चली गयी।

एक गंभीर पुरुष-स्वरने पूछा—"क्या यह श्री एलेक्स ओल्डमका घर है?"

"हाँ।"

"क्या उनका ट्रेडवे कार्पोरेशन से कोई सम्बन्ध है?"

"हॉ! वे उसके व्यवस्थापक हैं।"

"यह पुलिस विभाग है। मैं उनसे बात करना चाहता हूँ। क्या वे हैं?" एलेक्स उसे देख रहा था और उसके पासतक पहुँचने में उसके मस्तिष्क में सहस्रों जँगली विचार घूम गये। "पुलिस है"—यह फुसफुसाते हुए उसने चोंगा थमा दिया।

वह अपने पतिका मुख-भाव देखती हुई एक पग पीछे हट गयी और अपने पतिके छोटे-छोटे सूत्र-रूपी उत्तरों को सुन-सुनकर उनमें कुछ अर्थ ढूँढ़ने लगी।

"हाँ—हाँ, ठीक है—हॉ, हॉ, मैं समझता हूँ—हॉ—क्या?"

अंतिम शब्द अत्यन्त चौंकने के साथ कहा गया था और उसने देखा कि एलेक्स के मुखका सारा रंग उड़ गया।

"किन्तु, यह है—हाँ, चिपैण्डेल भवन —हॉ, अच्छा—हाँ—नहीं—हॉ, मैं आता हूँ—क्या?—ठीक है—पाँच मिनट? हाँ, मैं तैयार हो जाऊँगा।"

उसने चोंगा रख दिया और अपना हाथ यंत्र पर इस प्रकार रखे रहा मानो हाथका सहारा उसके शरीर के सहारे के लिए आवश्यक हो।

"क्या बात है एलेक्स?" उसका सिर धीरे-धीरे घूमा और बोलने से पहले कुछ हिचकिचाहटके साथ उसने कहा—"ऐवरी बुलार्डकी मृत्यु हो गयी।"

"अजी नहीं!"

"आज तीसरे पहर चिपैन्डेल भवनके सामने सड़क पर गिरकर वह मर गया। तभीसे पुलिस उसे पहचाननेका प्रयत्न कर रही है।"

"क्या तुम्हें जाना पड़ेगा ?"

"पुलिस की गाड़ी पाँच मिनट में मुझे लेती जायगी।"

"कौन जाने श्री बुलार्ड न हो, कोई और ही हो ?"

"नहीं, सब बातें मिलती हैं। चिपैण्डेल भवन—वह स्टीगल और पिल्चरके साथ भोजन करने गया था। मैं जानता हूँ। सारा विवरण सटीक बैठता है। दूसरा कोई हो ही नहीं सकता।"

"अपना भोजन तो कर लो, प्रिय!" उसने कोमलताके साथ कहा—"जबतक गाड़ी नहीं आ जाती तबतक तो तुम कुछ कर नहीं सकते।"

ऐसा जान पड़ा कि वह कुछ सुन नहीं रहा है—"मुझे सीधे मिलबर्ग सूचना देनी होगी।" उसने चोंगा उठाया और फिर रख दिया—"पर किस पापी को मैं सूचना दूँ ?"

यह ऐसा प्रश्न था कि इसके उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु उसके भावों के तनाव के कारण जो उत्सुकता उत्पन्न हो गयी थी, उसने मेरियन को यह कहनेके लिए विवश किया—"मैं समझती हूँ कि तुम श्री शॉ को सूचना दो, यदि वह होनेवाला हो—"

वह यह कहने ही जा रही थी—"नया कार्यवाहक-उपाध्यक्ष" पर उसने अपनेको यह समझकर रोक लिया कि अब तो सब बात बदल गयी है। एलेक्स ने मन-ही-मन कहा—"मैं समझता हूँ वाल्ट डडले को सूचना दूँ। वही उपाध्यक्ष है जिसे मैं विवरण दिया करता हूँ। नहीं—भूला—वाल्ट तो कभी का शिकागो चला गया होगा। आज मैंने सबेरे फोनपर उससे बातें की थी और उसने कहा था कि मैं तो सबसे पहला विमान लेकर उड़ जाऊँगा। एल्डर्सन या जेसी ग्रिम ? मैं समझता हूँ— पर इनमें से किसे ?"

मेरियन की समझमें नहीं आया कि उसने क्या निश्चय किया है, जबतक कि उसने एलेक्स को यह कहते नहीं सुना—"आपरेटर! मैं पेंसिलवेनियाके मिलबर्ग नगर में डॉन वॉलिंग से बात करना चाहता हूँ। हाँ, हाँ—व्यक्तिगत-श्री डॉन वॉलिंग।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया पर वह समझ गयी कि उसने क्या किया है। उसने स्वयं एक बार यही किया था, जब एक भोजके कारण बड़ी जटिल समस्या खड़ी हो गयी थी।

छठा अध्याय

मिलवर्ग, पेंसिलवेनिया
६.५६ सायंकोल

मैरिलेंड को जो मार्ग जाता था, वह सीधे साउथ वाटर स्ट्रीटसे होकर जाता था। किन्तु जेसी ग्रिम ने बायाँ मार्ग ग्रहण किया और पाइक स्ट्रीट की ओर बढ़ गया। उसने मन में सोचा था कि उधर यातायात इतना घना नहीं होगा। यह वास्तव में एक मील अधिक चलनेके कष्ट को बचानेका बहाना मात्र था; क्योंकि वह एक बार रिज रोडके कोनेसे, ऊँची पहाड़ीकी कोरसे, पाइक स्ट्रीटके कारखानेको देख लेना चाहता था।

सुन्दरता तो देखनेवाले की आँख से आँकी जाती है और जेसी ग्रिम की दृष्टिसे पाइक स्ट्रीटका कारखाना संसार की सबसे सुंदर वस्तु थी। जिस दिन यह समाचार आया था कि हिरोशिमा पर अणुबम बरसा दिया गया है, उसी दिन ऐवरी बुलार्ड ने कहा था–"अब अन्त ही समझो जेसी, इसलिए चलाते रहो। पाइक स्ट्रीट पर जो भूमि पड़ी है, वह लेकर स्वयं इन डिब्बोंसे बननेवाले सामान का बढ़िया कारखाना खोल दो।"

जेसी ग्रिम ने यही किया था। वह जानता था कि इसमें उसे सफलता मिली है। दूर-दूरसे वास्तुशिल्पी और यंत्रशिल्पी वहाँ आये। उन्होंने प्रशंसा की और वहाँके भाव चुरा ले गये। जितना वह मन-ही-मन इस प्रशंसा का आदर करता था, उससे अधिक जेसी ग्रिम को इस बातसे अधिक सन्तोष था कि किस प्रकार मैंने इस योजना में डॉन वॉलिंग को दूर ही रखा है। जिस क्षण से ऐवरी बुलार्ड ने कार्य प्रारंभ करने का आदेश दिया था, उसी समय से जेसी ग्रिम को निरंतर यह भय रहा कि कहीं वॉलिंग इसमें बाधा देने न आ कूदे; क्योंकि वह तो वास्तु-शिल्पीकी उपाधि लिये बैठा था। वॉलिंग तबतक पिट्सबर्ग में रोक रक्खा गया, जबतक यह कारखाना किसी प्रकारके परिवर्तनके लिए बहुत आगे बढ़ चुका था–यह बात ऐसी थी जिसके कारण ऐवरी बुलार्ड के प्रति जेसी ग्रिम के मनमें सबसे अधिक आदर था।

अब कोनेसे आगे खुले स्थान में, अपनी गाड़ीको धीरे-धीरे रोकते हुए जेसी ग्रिम गद्दीके एक ओर सरक कर कारखानेकी ओर देखने लगा। ठीक उसके नीचे वह काला-काला विस्तृत स्थान था, जहाँ गाड़ियोंके खड़े होनेके लिए

श्वेत रेखाएं बनी हुई थीं और जहाँ दूर किनारे पर, एक-दो गाड़ियाँ इधर-उधर खड़ी इस बातका स्मरण दिला रही थीं कि आज वॉलिंग अपने ढलाईके यंत्र का परीक्षण कर रहा है।

उस झुटपुटे में आँखें गड़ाते हुए उसने वॉलिंग की बालुका रंगवाली ब्यूक गाड़ी देख ली और उसे पहचानते ही उसने देखा कि गाड़ी चल दी है। उसके पीछे-पीछे दो और गाड़ियाँ भी चली आ रही हैं। एक और गाड़ी पाइक स्ट्रीट पर घूम रही है। यह स्पष्ट था कि परीक्षण असफल हो गया। यदि यह बात न होती तो वॉलिंग इतने शीघ्र न जाता। जेसी ग्रिम ने धीरे-धीरे साँस ली। उसने अपनी स्मृतिके कोने में सब से अधिक छिपाकर जो वस्तु रक्खी थी, वह थी डॉन वॉलिंग के विरुद्ध बहुत दिनोंसे संचित विरोध।

वह जानता था कि मैं जिस प्रकारका विरोध ठाने हुए हूँ उसका कोई अर्थ नहीं। डॉन वॉलिंग से विरोधकी पहली स्मृति उसे उस समय की थी, जब पिट्सबर्ग में प्रारंभिक महीनों में वॉलिंग ने आकर बुलार्ड का प्रतिरूप बननेका प्रयत्न किया था। उसने उसे उस ढंग से चलने नहीं दिया... उसने उसे ऐसा मरोड़ा जैसा उसने कभी और किसी को मरोड़ा नहीं था... और वॉलिंग ने भी समझ लिया था...यहाँ तक कि धन्यवाद भी दिया था। वॉलिंग ऐसा पहला ही कच्चा बकरा नहीं था, जिसने उसे उस प्रकारके व्यवहारके लिए धन्यवाद दिया हो। पर वॉलिंग ने उसे बहुत शीघ्र ही धन्यवाद दे दिया। यही तो था वॉलिंग... सदा अत्यन्त वेगशील, अत्यन्त शीघ्रतायुक्त, अत्यन्त निश्चयपूर्ण, अत्यन्त चतुर।

जब-जब वॉलिंग पास रहता, तब-तब वह शक्तिको ऐंठनेवाला तनाव उठ खड़ा होता..... और जब बुलार्ड जान जाता था कि आप किसी बातका वह उत्तर नहीं दे रहे हैं, जो वह चाहता है तो वह झट वॉलिंगसे कहता—"अच्छा डॉन? जो काम जेसीने छोड़ दिया है वह यदि तुम्हें सौंप दिया जाता तो।" .....और तब दुष्ट वॉलिंग का भाग्य काम करने लगता था। हाँ, उसे भाग्य ही कहना चाहिए। बुलार्ड जितना उसे मानता था उसका यदि आधा भी वॉलिंग था तो उसका कुछ अंश निश्चित ही भाग्य था। यदि कोई अच्छा यंत्र-शिल्पी भी न हो, उसे उत्पादनका अभ्यास भी न हो और फिर भी उससे काम चले तो उसका भाग्य ही समझना चाहिए; और हो ही क्या सकता है?

किन्तु कारखाना चलानेके लिए भाग्य से अधिक की आवश्यकता होती

है...बहुत अधिक बातोंकी। ऐवरी बुलार्ड वह जान ही लेगा। अब बहुत दिन नहीं लगेंगे....केवल चार महीनोंकी तो बात है।

जेसी ग्रिम ने अपनी आँखें ऐसी सिकोड़ीं कि पाइक स्ट्रीटका कारखाना ओझल हो गया और उसने अपने इस निश्चय को और भी अधिक दृढ़ कर दिया कि अब मैं इस निर्णय का ही समर्थन करूँगा कि पैंसठ पर अवकाश प्राप्त करनेके बदले साठ पर ही अवकाश ग्रहण कर लूँ।

इसे छोड़नेका सबसे बुरा परिणाम तो यह होगा कि अब मैं फिर कभी इस पाइक स्ट्रीटके कारखाने को नहीं देख पाऊँगा। यह मेरा है...नीचें नींवसे लेकर ऊपर छत तक बने हुए धुआँरे के सिर तक...प्रत्येक ईट, प्रत्येक यंत्र, प्रत्येक उत्पादन-पद्धतिका प्रत्येक इंच—संसार में सबसे अधिक सुन्दर फर्नीचरका कारखाना है। क्या मैं इसे छोड़ सकता हूँ।

उसकी चुरट की चिलम उसके ओठ कोमल होते ही गिर पड़ी। निश्चय ही मैं छोड़ सकता हूँ। क्यों नहीं ? किसीको मेरे जानेका पता भी न चलेगा। अब किसीको वास्तविक उत्पादक व्यक्तिकी आवश्यकता भी तो नहीं।... आवश्यकता है केवल उन थोड़े-से कॉलेज के छोकरों की, जो स्टॉप—घड़ियों को टिकटिकाते फिरें.....आवश्यकता है समय और गतिके अध्ययन की.. ....औद्योगिक यंत्रकला की....अनुसन्धान और विकास की...... वॉलिंग की....वॉलिंग जैसे अनेकों छुटभैयों की, जो अपनी स्टॉप—घड़ियाँ, फलक और पैमाने लेकर आसपास चक्कर लगाते रहें। पाइक स्ट्रीट को अब ये ही बदलेंगे...उसे अपने फूहड़पन से तोड़-मरोड़ कर रख देंगे...घुमा-फिरा देंगे.....चीरफाड़ डालेंगे....उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे...उसकी धज्जियाँ उड़ा देंगे....और तब...तब...यह संसार की सर्वोत्तम फर्नीचर फैक्टरी नहीं रह जायेंगी....क्या मै यह सब देख सकूँगा...सहन कर सकूँगा ? हाँ...मुझे पता भी न चलेगा...और जिस बातका पता ही नहीं चलेगा उसका कष्ट क्यों होगा ? मैं छोड़कर जाऊँगा तो कभी आऊँगा भी नहीं....यों ही बहुत दिन रह गया हूँ...अब समय नहीं खोना चाहिए ....। चार महीने प्रतीक्षा करना भी बहुत है..पर यह तो करना ही होगा ...साठ तक रुकना पड़ेगा...,.नहीं रुकूँगा, तो अच्छा नहीं दिखाई देगा। हाँ, इन अंतिम चार महीनों तक तो रहना ही होगा, पर इसके पश्चात् नहीं। तब मुझे कोई रोक नहीं सकता...कोई भी नहीं। ऐवरी बुलार्ड बहुत नीला-पीला होकर मुझसे शास्त्रार्थ करेगा पर मै अपना निश्चय

नहीं बदलूँगा। नहीं, मै पैंसठ तक नहीं रूकूँगा......पाँच वर्ष और रुकना बहुत लम्बा हो जायगा....मैरिलेंड में सब-कुछ हो ही गया है...... घर फिर से ठीक करा ही लिया गया है....दूकान भी लगभग बन चली है। यदि बढ़ई इस सप्ताह में मछली मारने न चले गये हों तो खिड़कियाँ भी लग गयी होंगी और पल्ले भी। अगले सप्ताह वे काम करनेकी चौकी और यंत्र रखनेकी आलमारी बनाने लगेंगे। उसके हाथोंने मोटरका चक्का थाम लिया और उसी कल्पना ने उसे तेल लगे हुए इस्पातका अनुभव करा दिया। फिरसे हाथों में यंत्र उठा लेना बहुत अच्छा है। यह बड़ी विचित्र बात है कि मनुष्य जो स्वयं चाहे उसकी ओरसे इतने दिनों तक आँखें मूँदे रहे...जीवन भर कहीं तक पहुँचनेका प्रयत्न करता रहे...कुछ बन जाय...और तब अन्त में उसे यह ज्ञात हो कि जिस बातकी सबसे अधिक महत्त्व है यह वही है, जिसे तुम्हें स्वयं प्रारंभ करना चाहिए था...सधे हुए यांत्रिक के दो हाथ और काम करने के लिए प्रयोगशाला। ऐवरी बुलार्ड तो यह बात समझ नहीं सकता; आजका ऐवरी बुलार्ड तो समझ ही नहीं सकता। पुराना ऐवरी बुलार्ड समझ सकता था, दस वर्ष पहलेवाला ऐवरी बुलार्ड...वह ऐवरी बुलार्ड– जो मेरे साथ उस दिन पिट्सबर्गकी वर्षा में मेरे पास खड़ा गाड़ीकी प्रतीक्षा कर रहा था और जिसने कहा था–"तुम मेरे दाहिने हाथ हो, जेसी! और मैं इस बातको कभी नहीं भूलूँगा।" तब हम दोनों घर गये थे, जहाँ सारा ने भोजन बनाकर रखा था और हम दोनों आधी राततक बैठे बातें करते रहे थे।

जेसी ग्रिम इस बात पर प्रसन्न होकर मुस्कराया कि मैं मुस्करा भी सकता हूँ। वह फिरसे रहना सीख रहा था और कभी केवल हँसीमें ही..जब सब कुछ हो जायगा....मैं कहूँगा–"कहो ऐवरी? आज रातको घर चलना कैसा होगा कि सारा फिर हम लोगोंके लिए भोजन बनाकर तैयार रखे।" जब उसकी कल्पना ने उसके सामने ऐवरी बुलार्ड के मुखपर आनेवाली मुद्राका दृश्य उपस्थित किया तो उसकी मुस्कान और भी चौड़ी होकर फैल गयी। सारा तो सुनकर स्तब्ध रह जायगी–"जेसी, क्या तुम पागल हो गये हो? अब तो वे सब भोजन की सामग्रियाँ हमें अपने ही लिए नहीं मिलती।"

"किन्तु शीघ्र ही जब हम मैरिलेण्ड में स्थिर हो जायेंगे–" उसने साराके साथ अपनी कल्पित बातचीत समाप्त करते हुए मन-ही-मन कहा–"तब जिस प्रकार प्रारंभ में विवाह होनेके पश्चात् हम प्रति सोमवार को बढ़िया भोजन बनाते थे, वैसे ही भोजन का आनन्द लिया करेंगे।"

सड़क के किनारे मदिरालय पर एक प्रकाशित चौखटे में घड़ी लगी हुई थी...सात बजनेमें दो मिनट...ऐवरी बुलार्ड अपने भोजनके लिए उस सुन्दर भोजनालय में बैठा होगा, जहाँ वह न्यूयॉर्क में सदा भोजन किया करता था। वाल्डोर एस्टोरिया से पार्क एवेन्यू की ओर एक भवन आगे, जहाँ भोजन की सूची फ्रान्सीसी भाषा में ही होती है।

इस कल्पना पर ही जेसी ग्रिम हँस पड़ा और उसने हँसी की ध्वनि बिना बाधा के निकल जाने दी। जीवन में और भी बहुत-सी विचित्र वस्तुएँ हैं..बस, मनुष्य को इतना ही करना चाहिए कि वह अपने को इतना उदार बना ले कि उसका आनन्द लूट सके।

६.५९ सायंकाल

"क्या आपको विश्वास है कि स्टुअर्ट स्ट्रीट की ओर जाने में आप अपने मार्ग से दूर नहीं निकल जायँगे, श्री वॉलिंग ?" लॅन्डीन ने उत्सुकता के साथ पूछा और अपनी पतली-पतली उँगलियों मे पैमाने का पीला खोल बार-बार अपने हाथमें घुमाने लगा।

वॉलिंग जानता था कि बिल लॅन्डीन की घबराहट इसलिए नहीं है कि गाड़ीके मार्ग की उसे चिन्ता है, वरन् इस बातकी उसे अधिक चिंता है कि ढलाई के परीक्षण में गड़बड़ी हो गयी है; और उसने निश्चय कर लिया था कि इस नये रासायनिक को घबराने न दिया जाय।

"आज जो कांड हुआ है उसके लिए बहुत चिन्ता करनेकी बात नहीं है, बिल ? उसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है। मैं तुम्हें दोष नहीं दे रहा हूँ।"

लॅन्डीन ने कृतज्ञताके साथ कहा—"धन्यवाद श्रीमान् ! मैं अब समझता हूँ कि मुझे ढालने का दबाव और तीव्र कर देना चाहिए था। मैंने उस सम्बन्ध में सोचा भी, पर मुझे भय था कि कहीं इस फेरमें सारी लाइन को पीछे दबाकर नियंत्रण यंत्रोको ही नष्ट न कर डालूँ।"

वॉलिंग ने धैर्यके साथ कहा—"मैं जानता हूँ।" वह उस युवक लॅन्डीन को यह नहीं बताना चाहता था कि तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए था। यह कोई बिल का उत्तरदायित्व तो था नहीं...वह तो अभी छोकरा था। विद्यालय से निकले उसे तीन वर्ष हुए थे; वह चतुर और कुशल अवश्य था, किन्तु वह व्यवस्था–सम्बन्धी निर्णय तो नहीं कर सकता था—"बड़ी बुरी बात हुई कि

मैं स्वयं वहाँ नहीं रह सका।"

अपनी आँख की कोर से उसने लॅन्डीन की स्वीकृति-सूचक सिर की मुद्रा देखी। बिल ने संभवतः सोचा था कि वॉलिंग किसी बड़ी महत्त्वपूर्ण बैठक में भाग ले रहा था—जो ट्रेडवे के नौ कारखानोंमेंसे एकके, एक कोने में छोटे-से परीक्षण की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वकी होगी। वॉलिंग के मनमें यह प्रलोभन हुआ भी कि उसे बता दे कि वहाँ क्या हुआ और इस छोकरेको भी उस जीवनका थोड़ा-सा स्वाद चखा दे, जो टॉवरके चौबीसवें खंड पर हुआ था। पर यह ऐसी बात थी जो आप बता नहीं सकते थे— विशेषतः जबकि आप स्वयं उपाध्यक्ष हैं। आपको अपना मुँह बन्द करना पड़ेगा। जब आप ऊँचे पदपर हों तो बहुत अधिक आदमियों से आप बातें नहीं कर सकते। जितने ऊँचे हों उतनी ही कम बातें कीजिए। और वहाँ जो थोड़े-से हों, उनसे भी बातचीत न कीजिए। यह ऐसी बात थी जो आपने तब सीखी, जब आप उपाध्यक्ष बने।. . . . कुछ भी हो पर आपने अपना मुँह बन्द रक्खा। ऐवरी बुलार्ड ने बैठक बुलायी. . . वहाँ जानेके लिए आपने सब काम गुड़गोबर कर दिया. . .वह आया नहीं. . . इसलिए आपने अपने खिलौने संभाले और अच्छे-से छोटे बच्चे के समान घर चले आये! उन पाँचों मेंसे क्या किसी एक ने भी टिप्पणी के रूप में एक शब्द कहा; एक अभागा शब्द भी नहीं। यहाँ तक कि किसीने ऐवरी बुलार्ड का नाम तक नहीं लिया।

अब वे साउथ फ्रंट स्ट्रीट पर पहुँच चुके थे। टॉवर में लगी हुई बड़ी घड़ी घंटा बजा रही थी जिसकी ध्वनि दक्षिणी वायुके साथ लड़ती हुई नदी तक चली आ रही थी। बिना चाहे हुए ही डॉन वॉलिंग ने उस श्वेत स्तम्भके शिखर को देखा और यह भी देखा कि लॅन्डीन भी उसे उसी प्रकार देख रहा है।

"मैं नहीं समझता कि जब श्री ऐवरी बुलार्ड यहाँ होते है तब वे लोग घंटा बजाते हैं।" —लॅन्डीन ने कहा।

वॉलिंग ने कोई उत्तर नहीं दिया। एक मोटा-सा बेढंगा कुत्ता उनके सामने धीरे-धीरे सड़क पार कर रहा था। उसने दोनों ओरके यातायात को रोक दिया और डॉन वॉलिंग उस कुत्ते की हास्योत्पादक मस्ती पर हँस पड़ा।

बिल भी इस तनाव को तोड़नेकी बाट जोह रहा था। उसने तत्काल उसका लाभ भी उठा लिया—"यदि आप बुरा न मानें तो जिम और मैं दोनों आपसे एक बात कहना चाहते हैं।"

"हाँ, हाँ; कहते चलो।"

"बात यह है कि जिस प्रकारसे हम लोग कारखाने में ये परीक्षण कर रहे हैं, उससे बहुत समय नष्ट होता है। अब दो-तीन सप्ताह से पहले उत्पादन-विभाग हमें अपने कार्यक्रम में समय नहीं देगा।"

"मैं जानता हूँ।"

किसी प्रकार की स्वीकृति भी प्रोत्साहन ही थी। अतः लॅन्डीन कहता गया— "तो जिम और मैं एक दिन वॉटर स्ट्रीट पर घूम रहे थे। आप जानते हैं सूखे भट्ठेके पीछे के छप्पर में – वहाँ हमने एक पुराना भापसे गरम होनेवाला डिब्बे का प्रेस देखा जो काम में नहीं आ रहा है। यदि हम उसका ढाँचा ठीक कर दें और उसमें नये नियंत्रण-यंत्र लगा दें तो एक नया छोटा-सा अपना कामचलाऊ अग्रयंत्र स्थापित कर सकते हैं। तब हम जितने वेग से चाहें एक-पर-एक परीक्षण करते चले जा सकते हैं।"

"लगता तो है कि यह योजना कार्यान्वित हो जाय।" डॉन ने टालने की मुद्रा में कहा; क्योंकि वह उस बालक को यह कहकर निरुत्साहित नहीं करना चाहता था कि एक महीने पूर्व मैंने अध्यक्ष को एक विशेष व्यय-पत्रक बनाकर भेजा था कि उसी प्रेसको बनाने में जो व्यय लगे वह मिल जाय और उसे पाइक स्ट्रीट पर खड़ा कर दिया जाय। पर तीन सप्ताह तक कोई उत्तर ही नहीं मिला। पिछले सप्ताह जब बुलार्ड से मैंने इस विषय में पूछा तो उन्होंने कहा कि अब हिसाब-किताबकी एक नयी प्रणाली चलायी गयी है, जिसके अनुसार पुराने यंत्रों को काममें लाने के सम्बन्ध की सब प्रार्थनाएँ स्वीकृत होनेसे पहले शॉ से स्पष्ट कर ली जायँ। ऐवरी बुलार्ड कह रहा था—"यह बहुत बड़ी कंपनी हुई जा रही है। मैं अब अकेला सब काम नहीं कर सकता – उत्तरदायित्व बाँटना ही पड़ता है।" इस तर्कका कोई संभव उत्तर ही नहीं था। ट्रेडवे सच-मुच बहुत बड़ा व्यवसाय-संघ था और उसके अध्यक्ष को अधिकार-वितरण करना ही था. . .पर क्या ऐवरी बुलार्ड यह नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। अधिकार उन लोगों को नहीं दिया जा रहा था, जो उनका प्रयोग कर सकते थे। वह केवल शॉको दिया जा रहा था जो उस लाल फीतेका फन्दा बुनता चला जा रहा था, जो कंपनी की उन्नति को सोखे डाल रहा था। यह बात बुरी थी। अन्य मनुष्यों की अपेक्षा ऐवरी बुलार्ड को तो यह बात अधिक जाननी चाहिए। उसने जब ट्रेडवे कॉर्पोरेशन बनाया था तो अपने हाथ लाल फीते में नहीं बाँध रखे थे और कोई भी नियंत्रक पग-पग पर उसे टोकता नहीं था। . . अब वही, कार्यकी स्वतंत्रता, उन लोगोंको क्यों नहीं दे रहा है, जिन्होंने

उसे सफलता दिलायी। वह क्यों अपने को शॉके द्वारा इतना प्रभावित होने दे रहा है? पहली बात तो यह है कि शॉको उसने रखा ही क्यों?

"—और यह बहुत महँगा भी नहीं है।" उसने लॅन्डीन को यह कहते सुना और जो कुछ उसने बीच में कहा था, वह सब सुना-अनसुना हो गया था—"जिम और मैंने जो उसका ब्यौरा बनाया था, उससे ऐसा लगता है कि इस सब में पाँच या छ: हजारसे अधिक लागत नहीं लगेगी। किन्तु यह अवश्य है कि पाइक स्ट्रीट पर हमें इतना स्थान अवश्य मिल जाय कि हम उसमें निरंतर सामग्री भेजते रहें और तत्सम्बन्धी अन्य यंत्रों आदिसे मुक्त रहें।"

"ये सब बातें तुम एक स्मृति-पत्र में लिख डालो, बिल।" उसने बड़ी साव-धानी से कहा—"यह तो मैं नहीं जानता कि उसका परिणाम क्या होगा। किन्तु मैं उसे अवश्य देख लूँगा।"

"यह ठीक है। जिम और मैं दोनों यही चाहते हैं कि आप हमारी बात समझ भर लें। हो सकता है कि यह यों ही हो, किन्तु आप हमसे अधिक समझ सकते हैं।"

"क्या यही तुम्हारी गली है?"

"जी, हाँ! मैं बातों में इतना लग गया कि मैंने देखा भी नहीं।"

लॅन्डीन गाड़ी से बाहर निकल आया और सचमुच अपनी लम्बी-लम्बी टाँगोंके कारण वह बड़ा भद्दा भी लगता था। वह बोला—"नमस्कार महाशय, मुझे खेद है कि आज सब परीक्षण असफल रहा।"

"सब ठीक है, बिल। तुम्हारा कोई दोष नहीं है। नमस्कार।"

नहीं, यह बिलका ही दोष नहीं था... और यह उसका भी दोष नहीं था। यह सारा दोष एक व्यक्ति का था... और वह था लॉरेन शॉ।

वह अगले मोड़ पर घूम गया और उसने सड़कका पता भी नहीं देखा। पर थोड़ी ही देर बाद उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह उसी घरके आगेसे चला जा रहा है, जहाँ मिलबर्ग के आने से पहले वह मेरी के साथ रहा करता था।

मेरीका ध्यान—ऐसी कुंजी बना हुआ था, जो एक द्वार बन्द करके दूसरा द्वार खोल देती थी। खुला हुआ द्वार उसके मनमें यह चेतना भर देता था कि वह उसके लिए बैठी बाट देखती होगी और बन्द द्वार उन सब बातों को बन्द कर देता था, जो एक क्षण पूर्व इतनी अविस्मरणीय बनी हुई थी।

डॉन वॉलिंग का मन इसमें समर्थ था। उसमें कुछ परस्पर असंबद्ध कक्ष बने हुए थे और इन मानसिक द्वारोंके खोलने और बन्द करने पर वह एक विषय

की अत्यन्त एकाग्रता से हटकर तत्काल दूसरी बातकी उतनी ही तीव्र एकाग्रता में डूब जाता था। उसने उस प्रकारका मस्तिष्क बना ही लिया था और उसे प्रयोग करनेका कौशल भी प्राप्त कर लिया था।

वही पाठ उसने पुनः टेक-विद्यालय में जाकर सीखा और उसके पश्चात् कार्ल ईरिक कासिल के यहाँ भी सीखा। उस समयतक उसमें अपने मस्तिष्क की बातें अलग-अलग करके रखनेकी और विचारों में एकाग्रता लानेकी ऐसी प्रभावशाली शक्ति आ गयी थी कि उसीके कारण उसने कासिल के लिए सबसे बढ़िया नमूने प्रस्तुत किये थे। यदि कामके समय उसकी व्यक्तिगत भावनाएँ आ खड़ी होतीं, तो वह अपनी पेंसिलें उठाकर फेंक देता और कागज फाड़ डालता।

जब वह रिज रोड की ओर घूमा और उधर चढ़ने लगा तब उसके ध्यानमें केवल मेरी ही मेरी थी।

युद्ध के समय से इन पिछले वर्षों में मिलबर्ग अपने प्राचीन नगरकी सीमाओं से बहुत बढ़ गया था। नये भवनोंका विस्तार नगरके ऊपर लॉरेन ह्वाइट्स के पठारों पर ही हुआ था। लॉरेन शॉ ने जो मकान मोल लिया था, वह क्लब के बहुत निकट था। वहाँ से कुछ मकान आगे कुछ दूरी पर वाल्टर डडले का घर था; जहाँ के वृक्षों की झुरमुट से क्लब हाउस दिखाई पड़ जाता था।

लॉरेन ह्वाइट्स की दक्षिणी सीमा, ग्रेरॉक रोड थी। सड़क के उत्तरी ओर से लोग आते थे और दक्षिणी ओरसे जाते थे। यदि आपका घर ग्रे रॉक रोड पर दक्षिणकी ओरसे हुआ तो आप यह कहनेका सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते कि आप लॉरेन ह्वाइट्स में रहते हैं। मेरी ने अत्यन्त दृढ़ता से कहा था, कि यह सम्मान उन दो सहस्रों डालरों के मूल्य का नहीं है, जो हमने इधर भूमि लेकर बचा लिये हैं। डॉन ने भी उतनी ही दृढ़ता के साथ अपना समर्थन प्रदान किया था। इसके साथ-साथ जो स्थान उन्हें दक्षिणकी ओर मिल गया था, वह निर्विवाद रूपसे ठीक वैसा ही था जैसा वे चाहते थे। वह स्थान दो एकड़ से कुछ अधिक था और डॉन ने जो मानचित्र बनाया था उसमें ठीक बैठता था। एक लम्बा-सा घासका मैदान जो पत्थरकी चट्टान के सुंदर करारे तक फैला हुआ था और जिसके पीछे पुराने बलूत के वृक्षों की झुरमुट थी।

वह स्थान डॉन वॉलिंग-शिल्पीके मन में ऐसा बैठ गया था कि घर बनानेकी उसकी जीवन भरकी आकांक्षा तृप्त हो गयी। क्लब के द्वारकी ओर बढ़ते हुए डॉन वॉलिंग उस पहाड़ीकी चोटी पर क्षण भर ठहर गया, जहाँसे उसे अपने

घरकी पहली झलक मिल जाय। वहाँसे उसने देखा कि दूरपर स्थित बिन्दुके समान मेरी मार्गके एक ओर खड़ी है। उसे निश्चय तो नहीं था; क्योंकि पापुलर वृक्षोंकी एक यवनिका बीचमें पड़ी हुई थी। पर आगे बढ़ते ही उसने देख लिया कि वह मेरी ही है, जो डाक के डिब्बेके पास बैठी उसकी बाट देख रही है। इस बातकी भावना ने ही उसके सारे शरीर में उष्णता भर दी।

अचानक सहजवृत्ति द्वारा ही उसने उसकी गहरी चिंता ताड़ ली। रुकती हुई गाड़ी की ओर जिस प्रकार वह दौड़ी, उससे उसके मनमें यह आशंका उठ खड़ी हुई कि नन्हें स्टीव को तो कुछ नहीं हो गया है।

मेरी को साँस नहीं आ रही थी और बोलने से पहले उसके गद्‌गद कंठ ने मानो युग बिता दिया। तब उसने शब्द इकट्ठे करके कहा—"श्री ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी!"

अपने बच्चे की कुशलता के सम्बन्ध में उसकी चिंता तो समाप्त हो गयी; किन्तु उसके शब्दों की करारी चोट खानेके लिए मस्तिष्क खुल गया। तब भयंकर चोट लगने और उसकी पीड़ा होनेके बीच जैसा एक क्षण होता है—उसी स्तब्ध मौन के साथ वह अपनी पत्नीकी ओर आँखें फाड़कर देखने लगा।

"मैंने पाइक स्ट्रीट पर फोन किया था।" उसने साँस रोककर कहा—"पर उन्होंने बताया कि तुम अभी निकल गये हो। मैंने औरों को सूचना देनेका प्रयत्न किया। श्री ओल्डम ने मुझे यही करनेको कहा था। पर मैं किसीको नहीं पा सकी। मैने शॉ की सेविका को यह संदेश दे दिया है, किन्तु फोनपर और कहीं कोई नहीं बोला।"

शून्य दृष्टिसे वह बोला—"ओल्डम?"

"हाँ। उसने न्यूयॉर्क से सूचना दी है कि श्री बुलार्ड आज तीसरे पहर सड़क पर ही हृद्‌गति-शून्य होकर गिर पड़े और अभी कुछ मिनट पूर्व ही वे पहचाने जा सके हैं। श्री ओल्डम ने कहा था कि अन्य लोगों को भी इसकी सूचना दे दी जाय। इसलिए मैंने सोचा कि सबसे अच्छी बात यह होगी कि—"

तत्काल उसके मन में असम्बद्ध और असंगत बात पूछनेकी प्रेरणा हुई—"क्या ओल्डम ने पहले हमें सूचना दी थी?"

"संभवतः उसने औरों से भी सम्पर्क स्थापित करनेका प्रयत्न किया हो पर किसीको पा नहीं सका हो।"

उसके मन में भावनाका जो तीव्र वेग भरने लगा था उसने प्रश्न और उत्तर दोनों को धो बहाया। सहस्त्रों लड़खड़ाते हुए विचारोंके गर्जन में उसे यह बात

स्मरण हो आयी कि उसने रोष में आकर ऐवरी बुलार्डके प्रति अपनी निष्ठा नष्ट कर दी थी और अब उसकी मृत्यु और उसके दोष में भयंकर सम्बन्ध दिखाई पड़ने लगा है। यह ऐसा अपराध था जिसे विवेक सहन नहीं कर सकता था।

वह गाड़ीसे बाहर निकल आया और मेरी ने गाड़ी का द्वार बन्द कर दिया।

"डॉन, क्या तुम जानते हो कि अन्य लोग कहाँ हैं? हमें शीघ्र-से-शीघ्र उन सबको सूचना दे देनी चाहिए।"

"वाल्ट डडले शिकागो के मार्ग में है। उसने सात बजेवाला विमान पकड़ा है। शॉ उसे पहुँचाने गया है। उसे अब आ ही जाना चाहिए।"

"तब उसकी दासी बता ही देगी। मैंने उसे संदेश दे दिया है। अब श्री एल्डर्सन और श्री ग्रिमका क्या होगा?"

"जेसी तो मैरीलेंड की ओर चला गया है। और एल्डर्सन?" वह रुका और उसके मन में जो बहुत गहरी स्मृतियाँ गड़ी हुई थीं, उन्हें टटोलने लगा "मैं समझता हूँ कि फ्रेड ने कहीं भोजमें जानेको कहा था। हाँ, मैं समझता हूँ कहा था।"

"या तो जॉर्ज स्मिथवालोंके यहाँ होंगे या बिलोवियोंके यहाँ। पता लगाऊँ?"

"हाँ, मैं समझता हूँ—" उसने उदासीके साथ कहा।

वे झाड़ियोंवाले मार्गसे ऊपर चढ़े चले जा रहे थे। मेरी आधा पग पीछे थी और डॉन समझ रहा था कि मेरी उसकी मुखमुद्रा को भाँप रही है। वह बरसाती में घूम कर खम्भेके आगे खड़ा हो गया—"यह असंभव बात जान पड़ती है। नहीं, मैं—मैं यह बात मान नहीं सकता।"

"मैं तुम्हारी भावना समझती हूँ।" मेरीने बड़ी कोमलता और सहानुभूति के साथ कहा। उसने मेरी की ओर देखा नहीं। उसे सहानुभूति पानेका कोई अधिकार नहीं था... उसने आज तीसरे पहर....।

"कब बताती हो, उनकी कब मृत्यु हुई?" उसने पूछा।

"तीसरे पहर किसी समय।"

उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसने धीरे से इस प्रकार कहा मानो क्षमाके लिए प्रार्थना कर रहा हो—"वह महापुरुष था। मैं जितने लोगोंको जानता हूँ। उनमें सबसे बड़ा था।"

टेलीफोन की घंटी बज रही थी इसलिए मेरी उसके आगेही घरमें बढ़कर चली गयी। वह बड़े वेगसे लौट आयी और उसे भीतर प्रविष्ट होने देनेके लिए

द्वार खोलकर खड़ी हो गयी—"समाचारपत्रवाले हैं, डॉन। न्यूयॉर्क से उन्हें अभी समाचार मिला है।"

"तुम्हीं उनसे बात कर लो, मेरी। जो जानना चाहिए, उसे तुम मुझसे अधिक जानती हो।"

वह मेरी के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही घूम गया और चुपचाप धीरे-धीरे उन काले ओक के वृक्षोंकी ओर चला गया, जहाँ चट्टान धरतीसे इस प्रकार उठी हुई थी- जैसे गिरजाघर की दीवारें होती हैं।

७.१२ सायंकाल

पिछले चौदह वर्षोंसे प्रतिमास एक बार एल्डर्सन परिवार, विलोबी परिवार और जॉर्ज स्मिथ परिवार साथ-साथ भोजन किया करते थे। यह केवल अभ्यास मात्र था; कोई विशेष कारण नहीं था कि यह रीति इतने दिनों तक चलायी जाती रहे। प्रारंभ में भी उनका सम्बन्ध इतना ही था कि वे एक ही मकान में रहते थे और एक ही गिरजाघर में जाते थे।

अब उनके घर अलग-अलग थे और केवल एल्डर्सन परिवार ही सेंट मार्टिन के गिरजाघर में जाया करता था। अतः, ये शुक्रवार के भोज केवल इसलिए चले जा रहे थे कि तीनों दंपतियों में से कोई भी इस प्रथाको पहले तोड़ने में हिचकिचाता था। यह हिचकिचाहट वृद्धावस्था की तन्द्राके कारण और भी धीरे -धीरे और इस कारण बढ़ती जा रही रही थी कि मृत्यु उनके प्राचीन परिचितों को धीरे-धीरे चक्र में समेटती चली जा रही थी।

"सच पूछिए तो आजकल सब वस्तुओं का मूल्य इतना अधिक बढ़ गया है कि एक बार सबको सोचना पड़ता है।" मिल्ड्रेड विलोबी ने लम्बी-लम्बी तीव्र साँस खींचकर बोलते हुए कहा—"अभी उस दिन ज़िम और मैं बिलों का परीक्षण कर रहे थे, तो देखा कि अकेले पिछले महीने में केवल फूलों का बिल लगभग पचास डॉलर हो गया है।"

एगनीज स्मिथ ने कहा—"इस महीने तो और भी बढ़ जायगा; क्योंकि जून में विवाह जो होने वाले हैं।"

"हमारे लिए विवाह इतने संकटकारी नहीं हैं, जितने अंत्येष्टि-कर्म।"

"हाँ; मैं समझती हूँ, यह ठीक है।"

विषय यहीं समाप्त हो गया था और वे तीनों स्त्रियाँ मौन होकर बैठी थीं

कि उनके मौन को छाया में रखे हुए उस रेडियो के संगीत ने तोड़ दिया—जो तीनों पुरुषों के पास रखा था।

"प्रिय जिम।" मिल्ड्रेड विलोबीने कहा—"क्या रेडियो को थोड़ा कम नहीं कर देंगे ?"

"प्रिये ! बॉलका परिणाम जाननेकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"—जिम विलोबी ने उत्तर दिया। "बस एक मिनट देखती रहो। अभी मैंने फ्रेड से दॉव बदा है और मैं इस मक्खीचूस से रुपया जटे बिना छोड़ूँगा नहीं !"

उसने अपना मुख कोनेकी ओर इस प्रकार से घुमाया कि सब महिलाओं ने उसे ऑख मारते देख लिया— "आज फ्रेड ने बहुत रुपया दाँव पर लगा दिया है—पूरा डाइम।" सभी हँस पड़े। खुले द्वार से अपने पति को देखते हुए ईडिथ एल्डर्सन को यह प्रसन्नता हुई कि वह भी मुस्करा रहा है। आज जब फ्रेड घर लौटा था, तब वह बहुत उदास और थका हुआ था और ऐसा जान पड़ता था कि उसे पुराना रोग फिर हो गया है।

"ओह, ईडिथ !" एगनीज ने धीरेसे पुकारा।

"कहो ?"

"मैं तुमसे यह पूछनेवाली थी कि—"वह जो कुछ पूछना चाहती थी वह पूछा नहीं गया; क्योंकि रेडियो के संगीत की धारा के बीचमें होनेवाली तात्कालिक घोषणा ने बात वहीं काट दी।

रेडियो निर्घोषक ने नाटकीय ढंगसे कहा—"हम यह कार्यक्रम इसलिए रोक रहे हैं कि आपको एक महत्वपूर्ण समाचार सुना दें। हमने ऐसोशिएटेड प्रेस से अभी - अभी यह समाचार प्राप्त किया है कि आज तीसरे पहर न्यूयॉर्कमें ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी। फिर दुहरा रहा हूँ। हमने अभी समाचार प्राप्त किया है कि आज तीसरे पहर न्यूयॉर्क में ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी। हम अभी इतना ही जान सके हैं। ज्योंही हमें और समाचार मिलेगा, त्योंही हम आपको सूचित करेंगे। नवीनतम समाचार के लिए इस स्टेशन से सम्पर्क बनाये रहिये।"

फिर संगीत होने लगा। किन्तु किसीने स्विच बन्द कर दिया और दोनों कक्षों में स्तब्ध शान्ति व्याप्त हो गयी।

सब आँखें फ्रेडरिक एल्डर्सन पर जाकर स्थिर हो गयीं। वह बीचमें खड़ा हो गया। उसका शरीर इस प्रकार धीरे-धीरे काँपने लगा मानो मूच्छित

होनेकी सूचना दे रहा हो। ईडिथ झपट कर उसके पास आ गयी।

मिल्ड्रेड विलोबी धीरे से फुसफुसाया—"तुम्हें स्मरण होगा कि मैं इस विषय में बात ही कर रही थी कि इतने में यह हो भी गया—अन्त्येष्टि ?"

एगनीज ने सिर हिलाया; मुँह बा दिया—"जो कुछ तुमने सोचा वह पूर्व-भावना थी।"

"उसकी क्या अवस्था थी फ्रेड ?" जिम विलोबी ने पूछा और वही पूछा जो सदा ऐसे अवसर पर प्रायः पूछा जाता है।

फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने अपने ओठ चलाये। किन्तु प्रारंभ में उनसे कोई ध्वनि नहीं निकली। तब मन्द शब्द सुनायी दिये—"वह मुझसे पाँच वर्ष छोटा था—केवल छप्पन।"

"हमें जाना ही होगा।" ईडिथ एल्डर्सन ने अत्यन्त शीघ्र निश्चय करके कहा—"मुझे खेद है मिल्ड्रेड। पर मुझे विश्वास है, तुम सब समझती हो।"

"हॉ, हॉ; मैं समझती हूँ।"

"हॉ—हॉ; हमें जाना ही होगा।"—फ्रेडरिक एल्डर्सन ने कहा।

जिम उसका टोप ले आया और ईडिथ अपना बटुआ लानेके लिए निवास-कक्षमें चली गयी।

"यदि हमारे योग्य कोई सेवा हो तो"—जॉर्ज स्मिथ ने कहा और अन्य लोगों ने भी द्वार पर छोटा-सा अर्द्धवृत्त बनाकर खड़े होते हुए, इसी वाक्यांश को दुहरा दिया।

ईडिथ एल्डर्सन ने कहा—"मै अवश्य बता दूँगी।" और तब वह एल्डर्सन के हाथ—पर—हाथ रखकर अपने पतिको द्वारके बाहर लिए चली गयी।

टेलीफोन की घंटी बजी और मिल्ड्रेड विलोबी ने उसका उत्तर दिया—"कौन ?—ओह! हॉ, श्रीमती वॉलिंग—हॉ, वे यहॉ थे, पर अभी चले गये हैं। हाँ, हमने रेडियो पर सुना—हाँ, वे जानते हैं।—नहीं, तनिक भी नहीं, श्रीमती वॉलिंग। सूचना के लिए धन्यवाद।"

"फ्रेड और ईडिथ को सूचना देनेके लिए श्रीमती वॉलिंग बोल रही थी" —मिल्ड्रेड ने बताया।

जार्ज स्मिथ ने गंभीरता के साथ कहा"—ऐसा जान पड़ता है कि फ्रेड को उस समाचार से बड़ा धक्का लगा।"

"हाँ, हाँ; ऐसी बात से आपको भी धक्का लग सकता है"—विलोबीने कहा।

मिल्ड्रेड ने साँस लेकर कहा—"यदि आप लोग सहमत हों तो चलकर बैठा

जाय। मुझे फ्रेड और ईडिथ की कुर्सियाँ हटा देनी पड़ेंगी।"

जॉर्ज ने अपनी पत्नीकी कुर्सी पकड़ रक्खी थी। खड़े-ही-खड़े उसने मेजकी ओर देखा"—मैं यही सोच रहा था जिम कि फ्रेड्रिक के लिए उस घटना का क्या अर्थ होगा?"

"फ्रेडके लिए?"

"वह कंपनीका अध्यक्ष हो जायगा। क्यों? हो जायगा न?"

"हाँ, बात तो ऐसी ही है। मैं समझता हूँ हो ही जायगा।"

"क्यों जार्ज? क्या तुम वास्तव में यही समझते हो?" एगनीज ने पूछा।

"मैं समझती हूँ कि वह डडले अध्यक्ष होगा।"

"क्यों? क्या वह सुन्दर नहीं है—"मिल्ड्रेड ने कहा।

जॉर्ज ने त्योरियाँ बदलीं— "यदि तुम मेरी सम्मति लो, तो मैं यही कहूँगा कि फ्रेड ही होगा।"

"ईडिथ के लिए तो बड़ा आनन्द रहेगा।" एगनीज ने कहा—"भगवान् जानता है वह उसके योग्य है। उस डडले की स्त्री के रंग-ढंग तो मुझे कभी अच्छे नहीं लगे।"

"ये बातें फिर हो सकती हैं"— मिल्ड्रेड ने कहा और अपना चम्मच उठा लिया। वह चम्मच फलों के प्याले में जा डूबा और भोजन प्रारंभ हो गया।

अल्टूना पर नौ हजार फीट ऊँचे

पेंसिलवेनिया

७.२२ सायंकाल

यदि ट्रान्स [illegible] लाइन्स का विज्ञापन—व्यवस्थापक उस विमान पर होता, तो वह [illegible] गद्दी में बैठे हुए सज्जनका रंगीन चित्र ही ले लेता; क्योंकि वह विज्ञापनके लिए अत्यन्त अनुकूल था और पाठक को यह विश्वास दिला देता कि टी. एन. ए. विमान राष्ट्र के अत्यन्त प्रमुख पुरुषोंका प्रिय विमान है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना ही सूक्ष्म दृष्टिवाला क्यों न हो, तत्काल नौ नम्बरवाली गद्दीमें बैठे हुए सज्जन को निश्चय समझ लेगा कि वह उच्चकुलीन व्यक्ति है।

नौ नम्बरवाली गद्दीमें जो सज्जन बैठे थे, वे थे जे. वाल्टर डडले। वास्तविक सत्य यह था कि डडले आयोवा के गाँवके पास की सड़क में उत्पन्न हुआ था और एक ऐसे निराश पशु-चिकित्सक का पुत्र था, जिसे अपने जीवन से घृणा थी। 'डॉक डडले' ने स्वप्न देखा था—प्रसिद्ध चिकित्सक होने का; किन्तु जब वह चिकित्सा-विद्यालय में सफल न हो पाया, तब उसने हार खाकर दूसरा चुनाव किया—पशु-चिकित्सक होनेका। दुर्भाग्यवश उसके असन्तोष ने उसे ऐसा चिड़चिड़ा बना दिया कि जिन किसानों और ढोर पालनेवालों पर उसे अपनी जीविका चलानी पड़ रही थी, वे सब-के-सब उससे बिगड़ खड़े हुए।

बालक वाल्टर की माता ने भरसक प्रयत्न किया कि उसका पति इस प्रकार व्यवहार करे कि किसान लोग उससे प्रसन्न रहें; किन्तु उसके प्रयत्नों का डॉक डडले पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा। हाँ; उसने ऐसा वातावरण अवश्य बना दिया कि उसके पुत्र ने यह भलीभाँति सीख लिया, कि जीवन के लिए लोगोंके साथ हिलमिलकर चलना अत्यन्त आवश्यक है। पीछे चलकर जब वाल्टर अपने पिताकी असफलता को समझ सकने योग्य हो गया, तब उसने यही निष्कर्ष निकाला कि उस वृद्ध ने लोकप्रियता प्राप्त करनेकी ओर बड़ी उदासीनता दिखायी।

युवक वाल्टर के मनकी प्रवृत्ति अध्ययन के लिए भली-भाँति सध गयी और उसने विद्यालय में बड़ी अच्छी उन्नति भी की। जो कुछ वह पढ़ता या सुनता उसे ग्रहण कर लेना उसके लिए बड़ा सरल था। उसके अध्यापक भी समझते थे कि "यह सर्वश्रेष्ठ छात्र है।" हाईस्कूल के बाईस छात्रों की कक्षा में वह द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ। प्रथम न आने की असफलतासे उसे जो थोड़ी-बहुत निराशा हुई उससे अधिक सन्तोष उसे तब हुआ, जब वह कक्षाका अध्यक्ष चुन लिया गया और हाईस्कूल की वार्षिक-पत्रिका में उसे अत्यन्त लोकप्रिय छात्र की उपाधि दी गयी।

खेल से उसे कोई आनन्द नहीं मिलता था। उसके शरीर में कुछ ऐसी कोमलता थी जो किसी प्रकारकी शिक्षासे भी दूर नहीं हो पायी। शारीरिक कष्ट सहन करना उसके लिए बड़ा कठिन था।

कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता था कि वाल्टर डरता है। वह कभी घबराता नहीं था। वह उसी प्रकार काम करता था—जैसे भीरु लोग करते हैं—जो निराश होकर गंभीर प्रयास कर बैठते हैं। अपने प्रथम वर्ष में वह अपने

दलका नायक चुना गया और द्वितीय वर्ष में उसका नाम समाचारपत्र मे राज्यके सम्पूर्ण हाईस्कूल दलोंके खेल में 'अत्यन्त सम्माननीय' घोषित किया गया। विद्यालय में किसी व्यक्ति ने ऐसा सम्मान नहीं पाया था। उसे सोने का फुटबाल प्रदान करनेके लिए विद्यालय की एक विशेष सभा बुलायी गयी थी। बहुत दिनों पश्चात् जब वह सोनेका फुटबाल केवल सुनहला पानी चढ़ा हुआ पीतलका फुटबाल सिद्ध हुआ, तब वाल्ट को यही स्मरण रहा कि उस समय सब विद्यार्थी यह गानेके लिए खड़े हो गये थे–"वह है प्रसन्न, अच्छा साथी।"

वाल्ट डडले उस छात्रवृत्ति के आधार पर कॉलेज में पढ़नेके लिए चला गया, जो उस विद्यालय के पुराने छात्रों के समूह ने उसे दी थी। पहले ही कुछ सप्ताहों में स्पष्ट हो गया कि वाल्ट विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए उपयुक्त नहीं है; किन्तु उसने अपने ऊपर अत्याचार करते हुए यह प्रयास किया कि —मैं अपने को योग्य सिद्ध करूँ जिससे मुझे सहायता देनेवाले लोग मेरे विषय में कुछ बुरी धारणा न बना बैठे। उस दिन उसे बहुत सान्त्वना मिली, जब खेल में उसने अपनी हँसली तोड़ ली और सक्रिय अभ्यास के लिए वह रोक दिया गया। अब उसका काम यह हो गया कि वह बैठा-बैठा सेंक्टम की देखरेख करे, जो पढ़ने-लिखनेवालों के लिए गोष्ठी-कक्षके रूप में सुरक्षित था।

जो लोग उसमें नहीं जा पाते थे, वे इस सेंक्टम को दूरके ढोल सुहावने समझते थे। वास्तव में वह कुछ भूरा-भूरा-सा अंधेरा कमरा था, जिसमें कुछ टूटी मेजें और कुर्सियाँ इधर-उधर पड़ी रहती थीं। हँसली टूटने की घटना से पहले ही विद्वानोंने वाल्ट से आग्रह किया था कि वह वहाँ कुछ नया फर्नीचर ले आये। यह माँग वाल्ट ने अत्यन्त नम्रता के साथ अस्वीकार कर दी थी। पीछे चलकर इस बात की कृतज्ञता के लिए कि विद्वानों ने उसे भीतर आनेकी आज्ञा दे दी है, वह अत्यन्त निष्ठा के साथ उसे ठीक करने लगा। यहीं बर्नी सुल्जमान से उसकी भेंट हुई। बर्नी बड़ा कल्पनाशील व्यक्ति था। वह कॉलेज एवेन्यू पर नये और पुराने फर्नीचर की दुकान चलाता था। जब वाल्ट ने उसके पास पहुँचकर फर्नीचर दान देनेके लिए कहा तो बर्नीने तत्काल एक उलटा प्रस्ताव रख दिया। उसने सुझाया कि तुम पुराने छात्रों में जो विद्वान् हैं, उन्हीं से क्यों नहीं आग्रह करते कि वे लोग फर्नीचर मोल लेकर दान कर दें। अपनी ओरसे मैं इतना कर दूँगा कि बिना अधिक मूल्य लिये प्रत्येक दाताका

नाम पीतल की पट्टी पर खुदवा कर लगवा दूँगा। वाल्ट ने सूची बनायी, चिट्ठियाँ लिखीं और महीने भरके भीतर सेंक्टम में छब्बीस नयी कुर्सियाँ आ गयीं; दो चमड़ेके दराजदार डेस्क आ गये; चार मेजें आ गयीं और एक बर्फ का डिब्बा आ गया। विद्वानों ने वाल्ट डडले को सेंक्टम की चाबी पुरस्कार में दी। अपने कालेज में पढ़नेके समय तक वही अकेला ऐसा बाहरी व्यक्ति था, जो उस गोष्ठी-कक्ष की पूर्ण सुविधाएँ भोग सका हो।

वाल्ट डडले की यह द्रव्य एकत्र करनेकी प्रतिभा की कहानी चारों ओर फैल गयी और वह समाचारपत्र तथा वार्षिक-पत्रके विज्ञापन-विभाग में नियुक्त कर लिया गया। अपने पहले ही वर्ष में वह केवल कक्षाका अध्यक्ष ही नहीं, वरन् वार्षिक-पत्रिका का आर्थिक प्रबंधक भी नियुक्त कर दिया गया। यह दुहरा सम्मान भी पहले किसीको नहीं मिला था। उसका नाम सबके लिए जादू हो गया। प्रत्येक व्यक्ति वाल्ट डडले से स्नेह करने लगा।

उसके पिछले जीवनकी दृष्टिसे देखा जाय तो उसके कॉलेज के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण घटना थी—'बर्नी सुल्जमान के साथ निरंतर सम्पर्क।' सैंक्टम-योजनाकी सफलताके पश्चात् बर्नी ने उससे कहा कि तुम उन विद्यार्थियों को फर्नीचर बेचने लगो, जो बन्धुगृहों और छात्रावासों के टूटे-फूटे फर्नीचर से असन्तुष्ट थे। इससे वाल्ट को जो दलाली मिलती थी उससे उसकी कॉलेज—शिक्षाका बहुत व्यय चल जाता था। सबसे बड़ी बात यह हुई कि वह फर्नीचर के व्यवसाय की बात सोचने लगा।

ग्रेजुएट होनेके पश्चात् बर्नी ने ही उसे यह सुझाव दिया—"वाल्ट! तुम कहींके थोक फर्नीचर-विक्रेता हो जाओ।" और कॉलेज की उपाधि या कॉलेजके अच्छे कार्यों की अपेक्षा वह बर्नी के प्रयास से ही ट्रेडवे फर्नीचर कंपनीके मिनियापोलिस क्षेत्रके विक्रेता ए. बी. प्वाइनडेक्स्टर का सहायक विक्रेता बन गया।

छः वर्ष पश्चात् वाल्टर डडले ने इतनी उन्नति कर ली कि ऐवरी बुलार्ड ने, जो कि उस समय ट्रेडवे फर्नीचर का विक्रेता था, उसे चुन लिया और उसे यह प्रोत्साहन दिया कि तुम केंसास में अपनी विक्रय एजेन्सी स्थापित कर लो। सन् १९३६ में जब ट्रेडवे कॉर्पोरेशन बन गया, तब उसने अपनी विक्रय-एजेन्सी तो बन्द कर दी और कॉर्पोरेशन का विक्रय प्रबन्धक बन गया। इस प्रकार धीरे-धीरे सन् १९४५ में वह मिलबर्ग में विक्रय का उपाध्यक्ष बना दिया गया।

तिरपन की अवस्था में जे. वाल्टर डडले सारे फर्नीचर-व्यवसाय में सबसे

अधिक विख्यात व्यक्ति था। नाम और आकृति की उसकी स्मृति इतनी अद्भुत थी कि एक बार शिकागो के बाजार में जब वह मर्केन्डाइज मार्ट में ट्रेडवे के प्रदर्शन-द्वार पर खड़ा था, तो पास खड़े हुए दो विक्रेताओं ने वास्तव में गणना की थी कि उसने दो सौ अट्ठारह फर्नीचर विक्रेताओं और ग्राहकों के नाम लेकर उनका स्वागत किया और केवल एक व्यक्ति ऐसा निकला, जिसका नाम उसे ज्ञात नहीं था।" वहाँ फर्नीचर के अधिकांश व्यापारी ऐसे थे जो समझते थे कि हमारा बाजार मे घूमना तबतक बेकार है. जबतक हम वृद्ध वाल्ट डडले से हाथ मिलानेका अवसर प्राप्त न कर लें।

वह युवक-विक्रेताओं को यही सम्मति देता था-"काम करते जाओ-बस काम करते जाओ और चिंता मत करो। गोल के खम्भे मत देखो-गेंद पर अपनी दृष्टि रक्खो। बस, तुम निश्चय ही आज या कल गोल कर ही लोगे।"

वह जो कहता था उसका स्वयं अभ्यास भी करता था। मित्र बनाने की प्रतिभा और स्मृति के साथ-साथ उसमें अदम्य साहस का भंडार भी था। जब वह विक्रेताओं के साथ निकलता था, तो ऐसी योजना बनाता था कि सबसे पहले खुलनेवाली दुकानसे काम प्रारंभ हो और पासकी ऐसी दुकान में जाकर समाप्त हो, जो संध्याको खुली रहती हो। फिर आधी राततक किसी होटल के कक्ष में उनकी बैठक होती रहती थी।

यदि जे. वाल्टर डडले की शक्ति उसके विक्रेतागण की समझ से परे थी, तो वह उसकी अपनी समझसे भी परे थी। वह जानता ही नहीं था कि यह शक्ति आयी कहाँसे और यह जाननेके लिए वह समय भी नष्ट नहीं करता था। उसमें प्रेरणा-शक्ति नहीं थी। वह ऐसा दौड़नेवाला था जो बिना ध्येय के दौड़ता था। दौड़ते रहना ही उसके जीवन का ढंग था। यदि आप वेगसे दौड़े और आपने पर्याप्त मित्र बना लिये तो सब काम ठीक चलता रहेगा।

जे. वाल्टर डडले के जीवन में केवल दो व्यक्ति ऐसे आये जिन्होंने कभी-कभी ऐसा भाव प्रकट किया कि वे अपना पूरा सहयोग नहीं दे रहे हैं। एक था ऐवरी बुलार्ड-दूसरी थी उसकी पत्नी कैथरीन।

वाल्टर डडले के जीवन के सीधे चढ़ान में विवाह ने कोई बाधा नहीं डाली। कैथरीन उसे कॉलेज के पश्चात् पहले ही वर्ष में मिली थी। वह श्री प्वाइन्डेक्स्टर के एक मित्रकी कन्या थी और वह "द्वीप झील" के सामनेवाले भवन में रहती थी। इसी भवन में वाल्टर अपनी शिक्षाकी अंतिम श्रेणी में प्रविष्ट हुआ था। वहीं उसने पहली मदिरा पी, पहला वेश धारण किया और उच्च

नरके सामाजिक जीवन के उपचार सीखे। वह अच्छा विद्यार्थी था। उसने बड़ी सरलता से अपनेको ऐसा साध लिया कि कैथरीन के मनमें उसके प्रति यह आदर जम गया कि जितने लोग पहले आये थे उन सबमें यही एक ऐसा व्यक्ति है, जिसने अभी तक मेरी दो त्रुटियाँ देख पायी है—प्रथम यह कि मेरे पिता जितने धनी दिखायी पड़ने हैं उतने हैं नहीं और दूसरी यह कि यदि मैं कामेच्छा से पूर्णतः विरक्त नहीं हूँ, तो कमसे कम अनेक विवाहेच्छुकों की आशासे बहुत नीचे अवश्य हूँ। सौभाग्यवश वाल्ट पूर्णतः अनुभवहीन व्यक्ति था। वे अगले ही जून मास में विवाह-सूत्रमें बँध गये, पर उनके बच्चे नहीं हुए।

ऐवरी बुलार्ड के साथ उसके व्यावसायिक सम्बन्ध ने उसके मन में अधिक चिंता उत्पन्न कर दी थी। वहाँ भी उसे बहुत कम जाना पड़ता था। मिलबर्ग जानेसे पहले वह बुलार्ड से वर्ष में दो या तीन वार से अधिक नहीं मिल पाता था और क्योंकि उनके मिलने का विषय प्रायः वेतन-वृद्धि या पद-वृद्धि होता था, इसलिए वह सदा स्वभावतः यह समझा करता था कि श्री बुलार्ड बड़ा अच्छा व्यक्ति है और मेरे सबसे अधिक निकट मित्रों में से है।

मिलवर्ग पहुँच जाने पर ऐवरी बुलार्ड से प्रायः प्रतिदिन के सम्पर्क से उसके मनमें एक नयी भयपूर्ण भावना बैठ गयी। इससे पहले तो वाल्ट डडले सदा अपनी सब समस्याएँ मित्र-भावनासे सुलझा लेता था। किन्तु ऐवरी बुलार्ड तो अत्यन्त कठोर सिद्ध हुआ। वह भला तो था, पर प्रश्न करते चले जानेकी उसकी शैली ऐसी थी कि वह उनके उत्तर में कोई साधारण बात स्वीकार ही नहीं करता था। कठिनाई की बात यह थी कि बुलार्ड अधिकांशतः यह चाहता था कि भविष्यके लिए कोई वास्तविक तथ्य उपस्थित करे, परन्तु जे. वाल्टर डडले के कल्पनाहीन मनमें भविष्यका कोई रूप ही नहीं था।

ऐवरी बुलार्ड की इस आग्रहपूर्ण प्रश्न-प्रणाली से न तो डडले को कभी खीझ हुई और न उसने प्रतिरोध किया; उलटे अध्यक्ष के प्रति उसका आदर निरंतर बढ़ता गया और उसने सदा अधिक-से-अधिक यह प्रयत्न किया कि मैं बुलार्ड के साँचेमें ढल जाऊँ।

कभी-कभी कुछ ऐसे भी अवसर आ जाते थे जब उसे अपनी कमी का भी अनुभव करना पड़ता था। ऐसे ही एक अवसर पर लॉरेन पी. शॉ ने उसकी रक्षा कर दी थी। ऐवरी बुलार्ड को अभी थोड़े दिनोंसे कुछ 'दूरतक की योजना' बनाने की सनक चढ़ गयी थी और उसने अगले पाँच वर्षोंके लिए एक-एक कारखाने की प्रतिवर्ष की वार्षिक बिक्री का अनुमान-पत्र बनानेके लिए कहा

था। डडले एक सप्ताह तक इस कार्य में उलझा रहा। बार-बार मिथ्या प्रारंभ भी करता रहा कि एक दिन सहायताके लिए उसके कार्यालय में शॉ आ पहुँचा। अभी इस नियंत्रक को आये कंपनी में थोड़े ही दिन हुए थे और डडले को शॉ की उस प्रतिभा के प्रति कोई सम्मान नहीं था। इससे पहले वह कभी किसी पर अवलम्बित नहीं रहा था, किन्तु अब वह लॉरेन शॉ पर अवलम्बित हो गया। नियंत्रक ने जो आँकड़े बनाकर दिये उनमें श्री बुलार्ड के अत्यन्त आवश्यक प्रश्नोंके उत्तर मिल जाते थे। इससे अधिक उसे चाहिए ही क्या था?

पिछले चार वर्षों में यह अवलंब बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूपमें परिणत हो गया और यह मित्रता कार्यालय में और कार्यालय के बाहर दोनों स्थानों पर परिपक्व होती गयी। यद्यपि डडले अपने सभी उपाध्यक्षोंको अपना मित्र समझता था, किन्तु शॉ निश्चय ही उनमें सर्वश्रेष्ठ था। प्रतिदिन इसका समर्थन होता जाता था। आज भी शॉ ही उसे विमान के अड्डे पर पहुँचा गया और शॉ ने ही आज सायंकाल उसे अपने कार्यालय में बुलाया था और आगे आनेवाले संकट से सावधान होनेके लिए शॉ ने ही यह सारणियों का बस्ता दे दिया था जिनका इस समय वह परीक्षण कर रहा था। केवल दो रेखाओं के कटाव को देखकर ही तत्काल यह जाना जा सकता था कि विभिन्न मूल्यों में कितना तुलनात्मक नकद लाभ हो सकता था। उन सारणियों को उलटते हुए वाल्टर डडले को यह निश्चय हो गया कि मैं यदि हड़बड़ी में भी कोई काम करूँ तो श्री बुलार्ड मुझसे जटिल प्रश्न नहीं करेंगे। लॉरेन शॉ उसका सबसे अच्छा मित्र था। अत्यन्त दृढ़ताके साथ उसने वे सब सारणियाँ चमड़ेके झोले में लपेटकर रख लीं और अपने मनमें सोचने लगा—ईवा हार्डिंग का विषय अब अंतिम रूपसे सदाके लिए निश्चित कर देना होगा। यदि आज मैंने दुर्बलता दिखायी जैसी मैं पहले दिखाता रहा हूँ और फिर उससे मिलने गया तो ....नहीं, यह निर्णय करनेकी आवश्यकता ही नहीं। यह निर्णय हो चुका है......पिछली बार उसके यहाँसे चलते समय ही यह अंतिम निर्णय मैंने कर लिया था। हो गया...समाप्त..सदाके लिए समाप्त।. अब मैं कभी ईवा हार्डिंग से मिलूँगा ही नहीं। यह बात अन्य अवसरों की भाँति नहीं है। इस बार मैंने निश्चय कर लिया है।

ईवा हार्डिंग ने जे. वाल्टर डडले के जीवन को सीधे मार्गसे हटाकर उसे दूसरी ओर मोड़ दिया था। अब इसपर तर्क करना व्यर्थ था कि वह क्यों उधर गया। वाल्टर डडले के मन पर ईवा हार्डिंग का रूप और नाम एक बार ग्रीष्म

की हाट के समय आकर बैठ गया। शिकागो कार्यालय के एक विक्रेता—मार्ट फिने ने प्रदर्शन—स्थान पर उसका परिचय करा दिया था और मार्ट के कहे हुए उन शब्दोंके साथ ही वह उसकी स्मृति में आकर बैठ गयी थी, जब उसने कहा था—"यह बड़ी चतुर लड़की है। इसने उत्तर मिचिगन पर एक सज्जा की दुकान खोल ली है और ध्यानमें रखने योग्य है।"

जाड़े की हाटके समय जे. वाल्टर डडले की स्मृतिने प्रेरणा दी और वह बिना किसीके कहे-सुने कुमारी हार्डिग का नाम स्मरण करके 'नॉर्थ मिचिगन बुलवर्ड' पर उसकी दुकान की खोज करने लगा। ट्रेडवे के अत्यन्त सुंदर काम करनेवाले ग्राहकों की सूचीमें उसका नाम स्मरण करते हुए, उसने उसकी सफलतापर बधाई देते समय यह भी कहा था—'तुम्हारी दुकानका एक चित्र ट्रेडवे की व्यापार-पत्रिकाके विज्ञापनों में प्रयोग किया जा सकता है।' इस कारण उसने डडले को निमंत्रण दिया कि आप हमारे यहाँ आकर ठहरिए और दुकान देखिए। किन्तु उस समय जे. वाल्टर डडले ने इस बातको कोई विशेष महत्व नहीं दिया; क्योंकि यह निमंत्रण कुछ वैसा ही था जैसे साधारणतः दुकानदार कह दिया करते हैं। किन्तु इसके पश्चात् मार्ट फिने ने उसके पास आकर कहा था—"सरदार, यह बड़ा अच्छा होगा कि आप शिकागो आने पर कभी-कभी उसके यहाँ एक-दो मिनट ठहर जाया करें। वह बड़ी चतुर है और बहुत-से गोरखधंधे जानती है। उससे बात करने में आपको नया उत्साह मिलेगा।"

मार्ट फिने का यह अंतिम वाक्य अत्यन्त सटीक भविष्यवाणी सिद्ध हुआ। अगले शुक्रवार को ड्रेक होटल में सायंकाल देरतक बैठक कर चुकने पर नॉर्थ मिचिगन बुलवर्ड की ओर आते हुए जे. वाल्टर डडले ने ईवा हार्डिंग का नाम उसकी दुकानके आगे पढ़ा और उसने निश्चय किया कि उसके यहाँ कुछ देर रुक जाना अधिक अच्छा होगा।

उस दिन थोड़ी-थोड़ी बरफ भी गिर रही थी और झील की ओरसे आनेवाला ठंडा पवन भी कोड़े लगाये जा रहा था। ऐवरी बुलार्ड के सुझावके अनुसार जो बैठक की गयी थी, वह पूर्ण असफल हुई और उसे यह भय हुआ कि मिलबर्ग लौटकर मुझे बड़ा निराशजनक विवरण देना होगा। सामने ईवा हार्डिंग के यहाँ का काम सोचकर भी उसके मनमें कोई विशेष आनन्द नहीं आया। वह केवल वचन का पालन कर रहा था और सोच रहा था कि वचन न दिया होता तो अच्छा था।

साधारण रूपसे व्यवसायी-स्त्रियाँ उसे अच्छी नहीं लगती थीं, विशेषतः उस प्रकारकी जिस प्रकारकी ईवा हार्डिंग थी। ऐसी बहुत-सी स्त्रियोंको वह जानता था और वे सभी अत्यन्त चतुर, कड़क और स्त्रियोंकी कुटिलता तथा पुरुषों के अनुकरणके अनमिल सम्मिश्रण से बनी हुई थीं।

ईवा हार्डिंग की दुकानमें पहुँचनेके प्रारंभिक कुछ मिनटों में कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे उसकी प्रारंभिक धारणा में कोई अन्तर पड़े। यद्यपि आज उसने अपनी आशासे विपरीत उसे अधिक कोमलताके साथ बात करते सुना था। आज वह ऐसी नहीं लग रही थी जैसी उस प्रकारकी स्त्रियाँ लगा करती हैं और जो अपने व्यक्तित्व का प्रदर्शन किया करती हैं। जब वह उसे अपनी दुकान में घुमाने ले गयी, तब भी उसने असाधारण विवेकका प्रदर्शन किया और साधारण वस्तुओंको छोड़कर पूर्णतः मौलिक वस्तुओं पर टिप्पणी करती हुई आगे बढ़ गयी।

जब वे दूसरे खंड पर पहुँचे, जहाँ फर्नीचर का सामान रखा था, तब वाल्टर डडले की रुचि जाग्रत हो उठी। ट्रेडवे फर्नीचर का कोई ऐसा सामान नहीं था जिसे उसने कुछ आकर्षक न बना दिया हो।

उसने समझाया कि अन्य दुकानों पर रखी हुई इन्हीं वस्तुओं से सीधी प्रतिद्वन्द्विता बचानेके लिए इस प्रकारका परिवर्तन करना आवश्यक है। उसने उसके लिए थोड़ी क्षमायाचना भी की; क्योंकि वह डरती थी कि कहीं डडले रुष्ट न हो जाय। पर जब डडले ने यह सिद्ध कर दिया कि मैं तुम्हारी इस रूप-योजना के विचार को मोल लेना चाहता हूँ, तब वह कुछ प्रसन्न भी हुई। वे दोनों एक घंटे से अधिक बातचीत करते रहे। उसे समय का भान ही न रहा और जब उसने देखा कि सात बज गये हैं, तब उसने ईवा को भोजनके लिए निमंत्रण दिया। ईवा ने बिना झिझक के निमंत्रण स्वीकार कर लिया और लगभग उसी प्रकारका व्यवहार किया, जैसे उन्हीं स्थितियों में कोई भी पुरुष व्यापारी कर सकता था। इससे ईवाके प्रति उसका सम्मान और भी बढ़ गया। वे जेक्स भोजनालय में चले गये। पर जब वहाँ देखा कि प्रतीक्षा करनेवालों की पंक्ति अत्यन्त लंबी हो गयी है, तब ईवा ने उसी व्यवहारशीलता के साथ कहा—"चलिए, घर चला जाय। जितनी देर आपको यहाँ प्रतीक्षा करनी पड़ेगी उससे अधिक वहाँ नहीं करनी पड़ेगी और मुझे विश्वास है कि वहाँ प्रतीक्षा करनेमें आपको अधिक सुविधा होगी।" उसे नहीं करनेका कोई अवसर न था और न ऐसा कोई कारण था कि नहीं किया जा सके।

इस सम्बन्ध में उसने बहुत अधिक सोचा कि ईवा हार्डिंग के साथ उस प्रथम भेंट में क्या बात थी, जिससे उसको इतनी प्रसन्नता हुई। इसका कुछ-कुछ समझ में आनेवाला उत्तर यही हो सकता था कि वह व्यापार में जैसी कुछ थी, वैसी वह घरमें नहीं थी। पर उसे यह उत्तर भी अपूर्ण प्रतीत हुआ।

उसके आनन्द का कारण था उसका कमरा। ज्योंही वह भीतर गया, त्योंही उसे बड़े सुख और शान्तिका अनुभव हुआ। उसकी इच्छा हुई कि ईवा हार्डिंग उसके लॉरेन ह्वाइट्सवाले नये घरमें आकर उस प्रसिद्ध किन्तु विचित्र झगड़ालू व्यक्ति के बदले सजावट कर देती, जिसे कैथरीन ने घरकी सजावट के लिए न्यूयॉर्क से बुला लिया था।

"श्री डडले, क्या आप कृपया मदिरा बनावेंगे?"

ईवा हार्डिंग ने यह बात पूछी थी और तब उसीके कहने से उसने एक कोनेमें से बोतलें, दूसरे कोनेमें से गिलास और रसोईघर में से बरफ लेकर मदिरा बनायी और जब किसी प्रकार मदिरा समाप्त हो गयी, तब वह उस मदिरा से बहुत अच्छी प्रतीत हुई जो अत्यन्त कारीगरी के साथ सजायी हुई चाँदी की थाली में कैथरीन अपनी दासी वायलेट से तैयार कराकर, घर पहुँचते ही पासके पट्टे पर, प्रति संध्या को उसके लिए भिजवा दिया करती थी।

जब डडले मदिरा तैयार कर रहा था उस समय ईवा भीतर जाकर कपड़े बदल आयी। उसने आकर कहा—"क्या यहाँ रसोईघर में बैठकर मदिरा तैयार करने और मुझे खाना बनाते देखने में आपको असुविधा होगी?"

डडले पहली ही बार उसे व्यक्ति के रूप में बैठा देख रहा था और उस समय उसकी यह सम्मति थी कि न तो वह सुन्दर ही है और न सादी ही। वह किसी प्रकार भी कैथरीन के समान सुन्दर नहीं थी। किन्तु उसकी प्रत्येक गति में जो चपल तीव्रता थी, उसमें एक प्रकारकी सजीवता विद्यमान थी; वेगसे ठीक वस्तुपर हाथ पहुँचना, आँखोंकी सजगता और उसकी मुस्कराहट की चमक जो बिना किसी हिचकिचाहट के सदा प्रस्तुत रहती थी!

ईवा ने डडले को अँगीठी में जो आग जलानेके लिए कहा था, उसी आग के सामने बैठकर दोनों ने भोजन किया। भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट था।

उस पूरी संध्या को केवल एक बात ऐसी हुई थी, जिसे वह पीछे अपनी स्मृति में रख सका और जो—आगे क्या होने वाला था—उसका सूक्ष्मतम संकेत था और वह भी उस समय का जब वह वहाँसे जानेको था। उस समय झटपट थोड़ी-सी बातचीत हुई थी। उन्होंने हाथ मिलाया था... और यह पहली

बार था, जब उनके हाथोंने परस्पर स्पर्श किया था. और ईवा ने उसके धन्य-वादका अत्यन्त कोमल मीठी भरे हुए वाक्य के द्वारा उत्तर दिया था, जो एक प्रचलित गीत का अंग था और उसने सौभाग्यवश उन शब्दोंको स्मरण भी किये रखा तथा उत्तर में उनका वाक्य-विन्यास भी कर दिया था—"घर में उस मनुष्य का होना कितना अच्छा था!" .. और वह हँस पडी थी और वह भी हँस पड़ा था और उसने कहा था. – "नमस्ते, कुमारी हार्डिग!" और ईवाने भी कहा था—"नमस्ते, श्री डडले!"

वाल्टर डडले के जीवन में अगले कुछ सप्ताह अत्यन्त रहस्यमय रहे। किसी पूर्णतः अज्ञात कारण से वह अपने मस्तिष्क से ईवाका ध्यान दूर नहीं कर सका और उससे भी अधिक कष्ट की बात यह थी कि वह रातको जाग-जाग उठता। उस कल्पनापूर्ण अंधकार में ईवा उसके पास लेटी रहती और उसके ओठ उसके अधरोंको स्पर्श करते रहते और तब भयभीत होकर वह बिस्तर से निकलकर पुस्तकालय में पहुँचकर सिगरेट पीने लगता। यदि उससे भी उस पागलपन से भरी कामुकता का भाव दूर नहीं होता था, तो वह रसोई-घर में होता हुआ घरमें ही टहलने लगता था और उसमें सदा ही वह भाव दूर हो जाता था। केवल उन्हीं रातों में वह रसोईघर में जाता था, क्योंकि कैथरीन ने उसे सावधान कर रखा था कि रसोईघर तो वायलेट का निजी कक्ष है और अच्छे रसोइयोंका आदर करना भी आवश्यक है; क्योंकि यदि एक रसोइया हाथसे निकल गया तो उसके बदले दूसरा लाना इन दिनों पूर्णतः असंभव है।

मार्चमें वेस्टकोस्ट जाते समय जब वह शिकागो में रुका था, तब उसने अपने मनमें निश्चय कर लिया था कि ईवा हार्डिग से मिलनेका मेरा कोई विचार नहीं है। फिर भी उन्हीं कल्पनापूर्ण रात्रियों के समान ही किसी रहस्य-मय आवेग के कारण जब वह उसके भवनके पास पहुँचा तो एक क्षणकी हिच-किचाहट के विना ही वे एक-दूसरे के भुजपाश में आबद्ध थे—और अब कल्पना केवल कल्पना नहीं रह गयी थी, वरन् कुछ ऐसी बात थी मानो वे दोनों अपने वियोग के इन महीनों में एक साथ रहे हैं।

उस रात्रि तक वह समझे हुए था कि उसका पौरुष कम हो रहा है। किन्तु ईवा हार्डिग ने यह सिद्ध कर दिया कि उसमें ऐसा पौरुष आ गया है, जो उसकी युवावस्था में भी अज्ञात था। उसके मुखकी ओर देखते हुए उसकी आँखें चमक रही थीं और उसके हाथ डडले के कपोलों पर उल्लास के साथ काँपते हुए

घूम रहे थे और ईवाने कहा था—"मेरे प्यारे! तुम कितने अधिक युवा हो!"

इस अवसर को न तो वह भूल सकता है, न उसे दुःख है— किन्तु इसको समाप्त करना ही होगा। क्योंकि पीछे उसने मन में निश्चय कर लिया था कि मैं इसे समाप्त कर दूँगा! पर वह समाप्त न कर पाया। यदि ईवा ने यह निश्चय किया होता तो यह समाप्त हो जाता। डडले अप्रत्याशित समय पर भी उसके यहाँ पहुँच जाता और वह सदा वहीं मिलती। इस बीच कोई ऐसी बात नहीं थी, जो डडले ने ईवा से करने को कही हो और उसे असुविधा-जनक प्रतीत हुई हो। ईवाने भी उससे कुछ नहीं कहा—यहाँ तक कि उसने पुनः आगमन की प्रार्थना किये बिना ही उसे चले भी जाने दिया था।

नहीं, कैथरीन इस बातका कारण नहीं कि वह ईवा हार्डिंग से कभी न मिल सके। वास्तविक कारण यह था कि ईवा उसके लिए शान्तिका एक उपचार मिल गयी थी, जो उसके लिए बहुत अधिक वांछनीय थी। वह उसके भयके पलायन का कारण बन गयी थी और यह 'पलायन' ही ऐसी वस्तु थी, जो वह कभी स्वीकार करनेके लिए तैयार नहीं था। मनुष्य को निरंतर काम करते रहना चाहिए। पुरानी रीतिको निरंतर ठोकते हुए, जब भय हो तब भी हाँ; क्योंकि वह भयभीत था। भय पर विजय प्राप्त करनी ही होगी। तुम उससे भागने का साहस नहीं कर सकते। तुम्हें रुकना पड़ेगा और उससे युद्ध करना ही पड़ेगा"

"श्री डडले?"

उसने ऊपर मुँह उठाकर देखा। विमान-सेविका उसकी ओर मुस्करा रही थी।

"क्या आप कृपया भोजन करेंगे?" उसने भोजन नहीं किया था; पर वह बोल उठा—"नहीं, धन्यवाद!" यदि उस सेविका के मुखसे तनिक भी ईवा हार्डिंग की स्मृति पुष्ट होती तो वह झट कह उठता—"हाँ।"

पर कोई बात नहीं है। पामर हाउस में पहुँचकर मैं कुछ-न-कुछ खा ही लूँगा। सोनेसे पहले बहुत समय मिलेगा।

उसने अपना बस्ता खोला और लॉरेन शॉ ने जो सारणियाँ बनायी थीं, उन्हें बाहर निकाल लिया।

मिलबर्ग, पेंसिलवेनिया ७.२८ सायंकाल

डॉन वॉलिंग उस चट्टान के ऊबड़-खाबड़ सिरकी काली छायामें खड़ा हुआ था, जो घरके पीछे खड़े हुए बलूत वृक्षों के पीछे छिपी हुई थी। वह कितनी

देर वहाँ खड़ा रहा उसे ज्ञात नहीं। किन्तु जब उसने अपने हाथका सहारा देकर अपने शिथिल शरीर के बोझ को उठाया, तो उसने देखा कि उसके हाथ की हथेलियोंपर चट्टानों के तल के खुरदरे भागकी लाल छाप उभर आयी है।

ऐवरी बुलार्ड की मृत्युके समाचार का हृदय-वेधक प्रभाव तो धीरे-धीरे कम हो रहा था; किन्तु व्यक्तिगत हानि की तीव्रतर अनुभूति का मार्ग खुलता जा रहा था। उसकी आँखे अपने घर की ओर घूम गयीं और उसमें की प्रत्येक वस्तु उसे ऐवरी बुलार्ड की उदारता का स्मरण दिलाने लगी। उसके पास जो कुछ था. . . सब कुछ ऐवरी बुलार्ड के हाथोंसे मिला हुआ था; यहाँ तक कि मेरी भी उसकी न हो पाती, यदि ऐवरी बुलार्ड ने सहायता न की होती। यदि वह उस रात शिकागो में ऐवरी बुलार्डसे न मिला होता, यदि ऐवरी बुलार्ड ने सिद्ध होने का अवसर न दिया होता तो. . . . ?

अपनी पत्नी के ध्यानने अचेतन रूपसे उसके दुःख का बोझ कम कर दिया। प्रेम और मृत्युमें बड़ा मानसिक सम्बन्ध था। उसने उसी दिन मेरी से प्रेम प्रारंभ किया था, जिस दिन उसके पिताकी मृत्यु हुई।

जब ऐवरी बुलार्ड ने उसे पिट्सबर्ग की कौलगन फैक्टरी में भेजा था, तब उसके प्रारंभिक कुछ सप्ताहोंमें ही डॉन वॉलिंग ने माइक कोवालस को ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न किया था। उसके नामका कोई टेलीफोन नहीं था। शेनले हिल पर पुराने भोजनालय का एक नया स्वामी था जो उसके पुराने स्वामीके सम्बन्ध में पूर्णतः अनजान था। अन्त में एक व्यक्तिके साथ वह ग्रीक-अमेरिकन सामाजिक संघ में पहुँचा, जहाँ माइक किसी समय सदस्य रह चुका था। वहाँ डॉन वॉलिंग को ज्ञात हुआ कि माइक कोवालस अत्यन्त अस्वस्थ है। वह तत्काल अस्पताल पहुँचा और उसे यह जानकर बादमे प्रसन्नता ही हुई कि वह ठीक समय पर पहुँच गया था। वह अंतिम रात थी जब मिलनेवालोंको मिलनेकी आज्ञा दी गयी थी। वह उस दिन संध्याको मेरीसे अस्पताल में मिला था। किन्तु उसका मन तो उसके पिता पर लगा हुआ था। उसने मेरी पर बहुत थोड़ा ध्यान भी दिया-दिया था जब उसने आश्चर्यके साथ देखा कि वह वही डगमग चलती हुई बच्ची है, जो भोजनालय के पिछले द्वार से आकर एक कोने में बैठ जाती और भोजन करते समय भी निरंतर पढ़ती ही रहती थी।

उसके पिता की मृत्यु के एक सप्ताह पश्चात् रात्रि को मेरी कोवालस ने अपने वचनानुसार उसे बुलाया और वह उसके साथ रहनेके लिए चला भी गया। उसी क्षण वह उसके प्रेम में भी पड़ गया। वह सुंदर थी और उसकी

आकृति में कलात्मक यूनानी पूर्णता ऐसी विराजमान थी कि उसे देखकर यूनानी-मूर्ति स्मरण हो आती थी। किन्तु वास्तव में वह सुन्दरता के ही कारण आकृष्ट नहीं हुआ था। आकर्षण का कारण उसका आंतरिक चरित्र था, जो बाहर प्रकाशित हो रहा था—वह अनिवार्य शील, वह स्त्रीत्व; जो सब कुछ दान करनेको प्रस्तुत हो।

डॉन को उस शक्ति की आवश्यकता थी और वह धीरे-धीरे यह जानते हुए उस घरकी ओर बढ़ा कि वह छतके किनारे पर उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी; किन्तु फिर भी, सामने देखकर भी उसकी उपस्थिति मानने में वह हिचक रहा था। जब वह मेरी के पास पहुँचा और उसने उसके हाथ अपने हाथोंनें लिये, उस क्षण उसकी वाणीकी अपेक्षा उसका मौन ही अधिक निखर उठा।

"फ्रेड एल्डर्सन मिले?" डॉन ने गंभीरतासे पूछा।

"वे लोग भोजन के लिए विलोवियो के यहाँ गये थे; किन्तु जब मैंने फोन किया तब तो वे चल चुके थे। उन्होंने रेडियो पर समाचार सुन लिया है।"

"अच्छा हो कि मैं फ्रेड से बात कर लूँ और पूछूँ यदि मेरे योग्य कोई काम हो तो।"

"वे कुछ देर तक घर नहीं पहुँच पायेंगे।" मेरी ने सावधानीसे शान्त स्वरमें कहा।

"विलोवियो के घरसे उसका घर पर्याप्त दूरी पर है। आओ; भोजन कर लो, डॉन! तैयार है।"

वह उसके पीछे-पीछे चल दिया और ज्योंही मेरी ने उसके सामने भोजन लाकर रखा, उसने खाना प्रारंभ कर दिया। उसे ऐसा लगा कि मेरी कुछ बातचीत करना चाहती है और उसने मेरी की समझ की बड़ी प्रशंसा की कि वह तबतक रुकी रही, जब तक कि डॉन के मुख से स्पष्ट शब्द निकल न पाये।

उनका नौ वर्षीय पुत्र जिस कुर्सी पर बैठता था, उसे खाली देखकर उस मौनको तोड़नेके लिए डॉनने योंही पूछ लिया—"आज स्टीव कहाँ है?"

"बूस्टरों के यहाँ। केनी के जन्म-दिवसका भोज है।"

डॉन ने धुँधली स्मृति से स्वीकृति की हुँकार भरी, जिसके सम्बन्ध में उन्होंने प्रातःकाल बात की थी; किन्तु अब वह प्रातःकाल की बात भी ऐसी लग रही थी जैसे एक महीने पहले की हो। पर उसने कहा—"यह तो ऐसा हो गया जैसे संसार उलट दिया गया हो।"

"हाँ"—यह ध्वनि ऐसा कोमल निमंत्रण था कि कुछ और कहा जाय—"हो सकनेवाली बहुत बातोंपर मैंने विचार किया है। पर यह उन बातोंमें से है, जो कभी हो नहीं सकती।"

"पर अब तो हो गयी है।" मेरीने दृढ़ता से कहा मानो वह उसकी स्वीकृति चाह रही हो।

"हाँ, उनकी मृत्यु हो गयी है।" उसने धीरेसे कहा और उसके स्वर में निश्चय की ध्वनि थी।

उसने बात को और खोलनेके लिए आग्रह किया—"डॉन! मैं समझती हूँ कि अभी तुम्हें इसके सम्बन्ध में बहुत अवसर नहीं मिला, फिर भी तुम उसके विषय में सोचोगे ही। पर जब सोचो तो कृपया बहुत चिंता मत करना। क्योंकि अब तो ऐवरी बुलार्ड के अतिरिक्त कोई दूसरा ही ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष बनेगा। कंपनी तो चलती ही रहेगी और तुम भी चलते रहोगे।"

मेरी के स्वर की निष्ठापूर्ण तीव्रता ने उसे यह अनुभव करने को विवश किया कि वह किसी गुप्त भयसे आतंकित है—"तुम क्यों चिंतित हो?"

"तुम्हारे लिए।"

"मेरे लिए?"

"हाँ।"

"क्यों?"

वह झिझकी, मानो वह और अधिक कहनेके औचित्य को ठीक नहीं समझ रही थी—"डॉन! मैं जानती हूँ कि ऐवरी बुलार्ड तुम्हारे लिए कितने महत्व के थे। तुम्हारे लिए ऐवरी बुलार्ड ही कंपनी थे—सब कुछ थे।"

उसने अपनी थालीमें से भोजन का एक ग्रास तोड़ लिया—"मैं ठीक हो जाऊँगा।" उसने कहा। उसका स्वर अत्यन्त भावहीन, किन्तु संयत था।

मेरी की उँगलियाँ मेजपर चलने लगीं और डॉनके हाथ की पीठ को कोमलता से सहलाने लगीं—"मैं जानती हूँ कि तुम ठीक हो जाओगे, डॉन? यदि मेरे मुँहसे ऐसी कोई बात निकल गयी हो जो मुझे नहीं कहनी चाहिए थी, तो मुझे क्षमा कर देना।"

"अच्छा, अब तो फ्रेड को फोन किया जाय।" उसने अपनी कुर्सी पीछे को ढकेली और वेगसे उठ खड़ा हुआ। मेरी दूसरी ओर देखने लगी और वह भी समझ गया कि मैंने इसके हृदय को कष्ट पहुँचाया है। वह घूमकर मेरी की कुर्सीके पीछे घूम गया और उसने अपने हाथ उसके कंधोंपर धीरेसे डाल दिये

—"मुझे दुःख है। मेरा यह तात्पर्य नहीं था। केवल व्यग्रता थी वह।"

उसने देखा कि मेरी का दाहिना हाथ उसके बाएँ हाथ पर पहुँच गया है और मेरी का सिर इस प्रकार पीछे झुक गया है कि अब डॉन उसकी आँखों में आये हुए जल-प्रवाह को सीधे देख रहा है। —"मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ, डॉन! मैं नहीं चाहती कि तुम्हारे हृदय को आघात पहुँचाऊँ।"

उसके हाथों ने मेरी के कंधे पकड़ लिये—"निश्चित, मैं जानता हूँ।"

"एल्डर्सन के नंबर पुस्ती पर लिखे हुए हैं।" उसने झट स्वस्थ होते हुए कहा।

डॉन ने नंबर घुमाया। व्यस्त-सी ध्वनि आने लगी—"अच्छा हो, मैं वहीं दौड़ जाऊँ और पूछूँ कि मैं किस काम आ सकता हूँ।"

"डॉन ?"

वह घूमा, मौन।

"क्या वह नया अध्यक्ष होगा ?"

"कौन ?"

"श्री एल्डर्सन।"

"यह बात तुमने कैसे सोची ?"

"मैंने सोची नहीं। मैंने केवल इसलिए पूछा कि तुमने उसे सहायता देनेकी बात कही थी, मानो वह अधिकार लेने वाला हो।"

यह ऐसा प्रश्न था जिसे वह स्वयं अपने मनमें सोचने की बात भी टालता जा रहा था। पर अब प्रत्यक्ष पूछे जाने पर यह प्रश्न उसके मनमें आकाश-स्पर्शी रॉकेट के समान ऊपर उड़ने लगा और फिर फूटकर सैकड़ों अन्य प्रश्नों के रूप में बढ़ चला।

"हाँ, फ्रेड सबसे वृद्ध हैं।" उसने उदासीनता के साथ कहा—"जेसी नगरके बाहर गया हुआ है। वाल्ट, भी नहीं। मैं कह नहीं सकता कि अध्यक्ष कौन होगा।"

"यदि श्री फिट्जेराल्ड जीवित होते तो यह प्रश्न ही न खड़ा होता। क्यों ?"

"मैं नहीं समझता कि कोई बखेड़ा खड़ा होता।"

"या यदि कोई दूसरा व्यक्ति ही उसके स्थान पर चुन लिया गया होता ?"

"पर कोई चुना जो नहीं गया है।" उसने अनुमान लगाते हुए कहा—"मुझे आश्चर्य है कि क्यों नहीं चुना गया ?"

डॉन के स्वर ने मेरी के कल्पनात्मक स्वर को पकड़ लिया—"मैं समझता

था कि अगले मंगलवार की बोर्ड की बैठक में यह चुनाव हो जायगा। कोई विशेष कारण तो नहीं, बस–अब।" उसका स्वर मंद पड़ गया मानो वह उच्च स्वरसे कहनेकी आवश्यकता को टाल रहा हो कि वह संचालकों के बोर्ड की अगले मंगलवारवाली बैठक में ऐवरी बुलार्ड का उत्तराधिकारी चुन लिया जायगा।

जैसा कि सदा होता था, उसे जान पड़ा कि उसने उसके अनकहे शब्द ही ग्रहण कर लिये–"मैं समझती हूँ कि मुझे यह बात जाननी चाहिए, किन्तु मैं जानती नहीं हूँ। यह नया अध्यक्ष कैसे चुना जाना है–'शेयर-होल्डरों' द्वारा या बोर्ड द्वारा?"

"बोर्ड द्वारा। भागीदार तो बोर्ड को चुनते हैं और तब बोर्ड ही अधिकारियोंको चुनता है।"

वह पुनः बैठ गया और उसने प्याले में कॉफी उड़ेल ली।

"बोर्ड के कितने सदस्य हैं?"

"बोर्ड के? नौ। फिट्जेराल्ड की मृत्युके पहले नौ थे, अब आठ रह गये हैं।"

"तो श्री बुलार्ड के बिना सात हैं?" उसने कहा।

डॉन के शब्दों ने उत्तर दिया–"ओ, हाँ; सात।"

मेरीका सिर गिनते–गिनते पीछे झूल गया–"तुम, श्री एल्डर्सन, जेसी ग्रिम, वाल्ट डडले, लॉरेन शॉ और वह न्यूयॉर्क वाला आदमी।"

"हाँ, जार्ज कासवेल।"

"हाँ; ये तो छः हुए और एक कौन है?"

"जूलिया ट्रेडवे प्रिंस।"

"हाँ; यह तो मैं भूल ही गयी थी कि वह भी संचालिका है।"

"कम-से-कम नाम को तो है ही। वह कभी बैठक में नहीं आती, फिर भी वह संचालिका है–अधिकृत रूपसे।"

"तो आप लोग अध्यक्ष चुनेंगे? आप सातों?"

यह दूसरा मुख्य प्रश्न था–दूसरा ऊपर उड़नेवाला रॉकेट। "हाँ–हाँ; मैं समझता हूँ, हमीं लोग चुनेंगे।"

उसकी दृष्टि में जिज्ञासा भरी हुई थी–"वह कौन होगा डॉन? तुम लोग किसे चुनोगे?"

"हे मेरे भगवान्! देखो मेरी? अभी इस बात के लिए बहुत शीघ्र कुछ

कहना—"

जब उसने देखा कि मेरे बार-बार पूछनेसे झुंझलाहट उत्पन्न हो गयी है तो उसने अपना स्वर काट दिया। मेरी ने वेगसे कहा—"मुझे दुःख है, क्षमा कीजिए।"

डॉनका चम्मच कॉफी को चलाता हुआ प्याले में घूम रहा था और उसकी आँखें उस प्याले में बने हुए, धीरे-धीरे चक्कर खानेवाले भँवर के केन्द्र पर केन्द्रित थी—"तुम ठीक कहती हो।" उसने अन्त में कहा—"इस सम्बन्ध में विचार करना अब टालने की बात नहीं रह गयी है। राजा मर चुका है, राजा चिरजीवी हो!" चम्मच ने चलना बन्द कर दिया और प्यालेकी भँवर स्वयं नाचती रही—"नहीं, मैं नहीं समझता कि एल्डर्सन अध्यक्ष होगा। यह काम उसके लिए बड़ा भारी हो जायगा। कंपनी बहुत बड़ी है। यदि तुम वास्तविकता जाननेका प्रयत्न करो, तो प्रतीत होगा कि फ्रेड कभी भी ऐवरी बुलार्ड के बड़े आत्मसचिव से बढ़कर और कुछ नहीं रहा। हाँ, यह कहना बहुत अनुचित न होगा कि हिसाब—किताब में वह अच्छा है, बहुत ही अच्छा है। किन्तु ऐवरी बुलार्ड का स्थान लेनेके लिए इसमे और भी कई गुने गुण होने चाहिए। फ्रेड में वे बातें नहीं हैं।"

'श्री ग्रिम?" मेरीने पूछा।

"जेसी? हाँ, जेसी है तो बड़ा विचित्र व्यक्ति। फैक्टरी में बहुत बड़ा है, सबसे अच्छा है— किन्तु —"

एक सहस्त्र स्मृतियाँ एक साथ उसके मस्तिष्क में तैर गयीं—एक दूसरे पर फैलती हुई, जेसी ग्रिम के प्रभावशाली मुखपर एक संघटित रूप का निर्माण करती हुई.... धीरे-धीरे चुरुट का धुआँ फेंकती हुई—वह निष्ठा जिसने उसे बिना एक शब्द कहे घंटों काम करने की शक्ति दी थी।

"नहीं; जेसी वह काम कभी नहीं कर सकता जो ऐवरी बुलार्ड ने कर दिखाया — मनुष्य के हृदय में ज्वाला जला देना—असंभव कार्य करने की भी उत्तेजना पैदा कर देना। नहीं, मैं यह कहना बुरा समझता हूँ। क्योंकि मैं जेसी को बहुत मानता हूँ। पर वह कर नहीं सकता—वह नहीं कर सकता!"

"वाल्ट डडले के विषय में क्या कहते हो?" उसने कुछ कहनेसे पहले ही अपना सिर हिला दिया और फिर अपनेको संभाल लिया। वह सोचने लगा। हाँ, वाल्ट डडले में अवश्य कुछ तेज है—कमसे कम जो जेसी में नहीं है। जब वाल्ट बातें करने लगता है, तो लोग ध्यान से सुनते हैं। उसे बेचना आता है

और वह दूसरे लोगोंको भी बेचना सिखा सकता है। लोगों को वह अच्छा भी लगता है। हाँ, यही वाल्ट की विशेषता है; लोगोंको प्रिय लगना, विवश करना। किन्तु यह उसकी दुर्बलता भी है। सभी लोग ऐवरी बुलार्ड को नहीं चाहते थे। कभी-कभी अध्यक्ष को कठोर भी बनना पड़ता है; कोड़ा फटकारना पड़ता है—मनुष्य की आत्मा को झुलसाना पड़ता है। वह मनुष्य आपसे घृणा कर सकता है; किन्तु आप उसके सम्बन्ध में ध्यान ही मत दीजिए। इसी प्रकार आप मनुष्य बना सकते हैं... इसी प्रकार यह कंपनी बनी है.. चलायी गयी है। वाल्ट डडले में वह आंतरिक शक्ति नहीं है. वह कठोरता! संसार के विचारों की चिंता किए बिना ही संसार से युद्ध करनेका साहस! उसकी ध्वनि उसकी विचार-धारामें डूब गयी और उसने उच्च स्वरसे कहा—"नहीं, वाल्ट डडले भी नहीं!"

"तो एक लॉरेन शॉ बच जाता है।"

उसकी अस्वीकृति तात्कालिक थी—"नहीं, शॉ नहीं।"

"मैं नहीं समझती थी कि तुम यह बात इतनी दृढ़ताके साथ मानते होगे। मैं समझती थी कि तुम उसे व्यक्तिगत रूपसे तो बहुत अच्छा नहीं समझते होंगे, पर मैंने सोचा कि तुम—"

उसने बीच में ही टोक दिया—"एक बात मैं कभी नहीं समझ सका कि ऐवरी बुलार्ड इस शॉ को कंपनी में लाये ही क्यों?"

मेरी की काली-काली आँखोंके पीछे एक अदृश्य मुस्कराहट खेल गयी—"क्योंकि वह आप सब लोगों से इतना भिन्न है, संभवतः इसी लिए। रोटीके लिये खमीर।"

"वह अध्यक्ष कभी नहीं होगा। मैं तुम्हें बताये देता हूँ।" उसने कुढ़कर कहा।

"क्योंकि, तुमने और सबको अस्वीकार कर दिया है, इसलिए जान पड़ता है कि तुमने अपने को ही मत देनेका निश्चय कर लिया है।"

उसके विनोद पर उसने खीसें निकाल दीं। मेरी के स्वर में तत्काल एक परिवर्तन हुआ—'डॉन? नया अध्यक्ष चाहे जो हो, किन्तु अब दूसरा ऐवरी बुलार्ड नहीं मिल सकता। यदि तुम प्रत्येक व्यक्तिको ऐवरी बुलार्ड के साथ रखकर तौलो तो संभवतः कोई भी पूरा नहीं उतरेगा।"

वह भीतर-ही-भीतर कुढ़कर रह गया और उसका प्रभाव दूर करनेके लिए उसने अपने मुख की मुद्रा ठीक कर ली—इसलिए नहीं कि मेरी ने वास्त-

विक सत्य उभार दिया था, वरन् इसलिए कि उसने उस सत्यके उद्घाटन के लिए आग्रह किया था। मेरी की बात अच्छी नहीं लगती थी कि वह कभीं-कभीं उसे ऐसा अनुभव करनेके लिए बाध्य कर देती थी मानो वह असाधारण व्यवहारके अध्ययन का विषय हो और मेरी कोई अध्यापक हो, जो उसके परिणाम को कक्षा के सम्मुख घोषित करने वाली हो।

फिर भी मेरी ठीक कहती थी। दूसरा ऐवरी बुलार्ड मिल ही नहीं सकता था। अब तो केवल यही हो सकता था कि जो उससे अधिक मिलता-जुलता हो, उसे पकड़ा जाय। केवल चार ही व्यक्ति सामने थे. . . . नहीं, केवल तीन. . . . शॉ निकल गया था। एल्डर्सन. . . ग्रिम . . . डडले? एल्डर्सन . . . . ग्रिम? एल्डर्सन। हाँ, संभवतः फ्रेड चला ले जा सके। वह ऐवरी बुलार्ड के अत्यन्त सन्निकट रहा है और सारी कंपनी में क्या होता रहा है, उसके सम्बन्ध में भी सबसे अधिक जानता है. . . ऐसी बातें जो कोई नहीं जानता। किन्तु फ्रेड दुर्बल है। नहीं; संभवतः यह उसकी दुर्बलता न हो. . संभवतः हो। हाँ. यह संभव हो सकता है। संभवतः यही कारण था कि फ्रेड कभी कार्य-समितिकी बैठकों में ऐवरी बुलार्ड के विरुद्ध कुछ नहीं बोलता था। क्योंकि वह उसी प्रकार सोचता था जैसे श्री बुलार्ड सोचा करते थे. . . जैसे कि एक दूसरे के समीप रहने वाले लोग धीरे-धीरे एक ही प्रकारसे सोचने लगते हैं. . . . मानो वे दोनों एक ही बुद्धि से काम ले रहे हों. . . . जैसे मेरी भी प्रायः बिना कहे मेरे मनकी बात जान जाती है।

मेरी के शब्द उसके चेतन मन में गूँज उठे—"क्या आपको निश्चय है कि श्री एल्डर्सन यह पद नहीं चाहेंगे?"

उसने आँखें मिचकायीं और क्षण भर यह आश्चर्य करता रहा कि यह बात मेरी ने वास्तव में कही थी या अभी उसके मस्तिष्क की कोर पर जो प्रश्न आया था, उसकी कल्पित स्वीकृति मात्र थी।

मेरी कहती गयी—"वे बहुत दिनोंसे स्वस्थ नहीं रहते हैं। यह बात उनकी पत्नी से बातचीत करते समय ज्ञात हुई. . . . और वे युवक भी नहीं हैं, डॉन? वे तो अब इकसठ या बासठ के हो गये होंगे।"

वह अचानक घूमा। अपनी कुर्सी में से घूमकर उठा; क्योंकि उसने गतिकी आवश्यकता का अनुभव कर लिया था। "मैं दौड़ जाता हूँ और देखता हूँ कि जेमी को कैसे सूचना दी जा सकती है।"—उसने टालते हुए कहा और द्वारकी ओर चल दिया।

मेरी ने बीचमें टोका—"डॉन! क्या श्री बुलार्ड के परिवार में भी किसीको सूचना देनी चाहिए?"

"कोई परिवार ही नहीं है उनका?"—उसने कहा और इन शब्दोंके साथ उसे ऐवरी बुलार्ड के जीवनकी एकांतता स्मरण हो आयी और उसके साथ-साथ अपने दुःखकी स्मृति भी।

"क्यों, पत्नी तो है।"

"पत्नी! वह तो वर्षों से अलग हो गयी है।"

"संभवतः वह अब भी यह जानना चाहती हो। मैं समझती हूँ कि ईडिथ एल्डर्सन के पास उसका पता लिखा होगा।"

"ठीक है।" उसने अमान्य ढंग से कह दिया और वह कटु स्मृति उसके मनमें कौंध गयी, जब कई वर्ष पूर्व जेसी ने आकर कहा था कि किस प्रकार ऐवरी बुलार्ड की पत्नी ने उस समय उसका परित्याग कर दिया था, जब उसे उसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी।

जब वह अपनी गाड़ी की ओर बढ़ा, तब उसे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरी को यह बात स्मरण रही कि ऐवरी बुलार्ड की भी कोई पत्नी थी।

७.३८ सायंकाल

टेलीफोन का चोंगा टेक के छोर पर धीमे लंगर की भाँति झूल रहा था और घूँ-घूँ करते हुए स्वरके साथ-साथ ताल दे रहा था।

ऐरिका मार्टिन अपने बिस्तर पर औंधी पड़ी हुई केवल श्री शॉ के इन शब्दों की अनंत आवृत्ति सुनती जा रही थी—"ओह! क्या तुमने सुना नहीं कुमारी मार्टिन? श्री बुलार्ड की मृत्यु हो गयी।"

यह बात कुमारी मार्टिन को केवल मुक्के के समान नहीं, वरन् तलवार की धार के आघात के समान लगी, जो गहराई के साथ नसोंके एक केन्द्र के पश्चात् दूसरे केन्द्र को काटती हुई मन्द लकवे की भाँति चारों ओर फैल रही थी।

बहुत समय बीत चुका था, पर कितना बीता था यह उसे ज्ञात नहीं; और तब उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसके शरीर में चेतना लौट आयी है। किन्तु उसके मस्तिष्क में नहीं, दूर और बहुत दूर।

चलते हुए बादल के समान धीरे-धीरे इस बढ़ती हुई प्रलय की अवस्था

ने उसके मस्तिष्क को मुक्त कर दिया। उसने अपनी आँखें खोलीं और देखा कि टेलीफोन का चोंगा वहाँ लटक रहा है, जहाँ उसे रख देना चाहिए था। उसने अपना शरीर घुमाना चाहा पर वह हिल नहीं पा रही थी। खड़े होकर, उसने टेलीफोन के चोंगे को टेक पर रख दिया। तब उसने श्री शॉ का स्वर पुनः सुना, जो बहुत धुंधला, दूरसे आता सुनायी पड़ रहा था, जो मानो मूर्छा की दशामें सुनी हुई बातकी स्मृति हो और वह कार्यालय में आनेके लिए कह रहा हो—"मेरा विचार है कि आज तुम्हारी सहायता की मुझे आवश्यकता पड़ेगी, कुमारी मार्टिन !"

बीच के बड़े कक्षका द्वार वैसा ही खुला पड़ा था, जैसा उस समय खुला था, जब टेलीफोन की घंटी बजी थी और वह द्वारसे बाहर होकर गयी थी।

७.४१ सायंकाल

ईडिथ एल्डर्सन सीधी तनकर खड़ी हुई थी और लगभग बन्द द्वार की ओर घूरकर देख रही थी। उस अंधेरे भवन के धुँधले अंधियारे में उसके मुख की श्वेतता ही—अकेली श्वेतता विराजमान थी।

विलोवियो के यहाँसे घर लौटते हुए कुछ क्षण पूर्व उसने भली-भाँति समझ लिया था कि उसने श्री बुलार्ड की मृत्यु की घोषणा के समय भय के साथ यह शंका व्यक्त की थी कि कहीं फ्रेड ही ट्रेडवे का अगला अध्यक्ष न बना दिया जाय।

अब वह उसका स्वर सुन पा रही थी कि वह न्यूयॉर्क में श्री ओल्डम से श्री बुलार्ड के शवको मिलबर्ग लानेकी व्यवस्था के सम्बन्ध में बात कर रहा है। प्रत्येक शब्द के साथ वह यह भी सुनती जा रही थी कि फ्रेड का स्वर धीरे-धीरे प्रबल होता जा रहा है और अधिक-से-अधिक शासनपूर्ण हो रहा है।

ईडिथ एल्डर्सन की प्रथम पराजय इसी मकानके सम्बन्ध में हुई थी और अपनी पराजय की दीवारों के भीतर बन्दी किये हुए योद्धाके समान उसे भी इस भवन में बीस वर्ष रहने के लिए बाध्य होना पड़ा था। वह भवन सन् १८६९ में गुस्टाव क्राउत्स ने बनवाया था।

ईडिथ एल्डर्सन जानती थी कि फ्रेड ने क्यों यह मकान मोल लिया था; क्योंकि जिस समय ये लोग मकान मोल लेनेकी स्थिति में आये, उस समय गली से पार वाला मकान एवरी बुलार्ड का था। उसने कितना भी कहा पर

कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसकी सम्मति का कोई आदर नहीं किया गया। उसकी समझ मे सबने अधिक अकाट्य तर्क यही था —"श्री बुलार्ड समझते हैं कि हमें यहीं रहना चाहिए।"

किन्तु इस बुरेसे भी बुरा काम ऐवरी बुलार्ड ने यह किया कि उससे उसका पति ही छीन लिया था। उसने उसका जीवन ऐसा अर्थहीन बना दिया था कि वह यह सोचने पर बाध्य हो गयी थी कि उसे ऐसे व्यक्ति से ब्याह दिया गया है, जो उसकी ओर पहला ध्यान न दे सके।

ऐवरी बुलार्ड जो कुछ चाहता था, वह पहले होता था। वह जो कुछ चाहती थी उसका कोई महत्व नहीं था। यह बात प्रारंभ से ही होती चली आ रही थी, उनके विवाहित जीवन के द्वितीय वर्ष मे ही। फ्रेड उस मनुष्य के समान था, जिसे किसी प्रेत ने वश में कर रखा हो। तभी से ईडिथ ने युद्ध करना बन्द कर दिया था और अब केवल एक बात रह गयी थी और वह थी फ्रेड के अवकाश प्राप्त करने की प्रतीक्षा करना।

आज रातको संयोग से अत्यन्त शीघ्र बच निकलने की आशा उसके मनमे जाग उठी। ऐवरी बुलार्ड मर गया। पर अवकाश प्राप्त करने की आशा के फ्रेड के अध्यक्ष बननेकी संभावना ने टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

......यदि फ्रेड को ऐवरी बुलार्ड की कुर्सी पर बैठना पड़े तो वह बुलार्ड के प्रेत का शाश्वत दास हो जायगा... बुलार्ड के स्वर में बोलेगा.... बुलार्ड के मस्तिष्क से सोचेगा, बुलार्डका हृदय ही उसका हृदय होगा और मेरे लिए उस में कोई स्थान न होगा। जीवन भर ऐवरी बुलार्ड मुझे हराता रहा है और समाधि में पहुँचकर भी मेरी पराजय को बनाये रखनेके लिए गर्जन कर रहा है.....।

"ईडिथ ?"

वह घूमी, चौंकी। उसका पति निवास-कक्षके बाहर खड़ा था। वह कुछ भयभीत-सा लग रहा था।

श्री बुलार्ड का चचेरा भाई, उसने सटीक रूपसे कहा—"यदि मैं भूल नहीं करता हूँ तो उसका ठिकाना हमारे क्रिसमस कार्ड की सूचीपर है। बता सकती हो, वह कहाँ रखा है ?"

वह उसकी ओर होती हुई उसके पास से निकलकर, पुस्तकालय में चली गयी। वह सूची दराज के तले रखी हुई थी। सूची मिल गयी और पहले ही पृष्ठ पर नाम था।

"धन्यवाद !" वह अपनी मेज पर झुका हुआ अत्यन्त पैनी पेंसिल से ताम्र-पत्र की लिखावट में लिखने लगा।

उसने सूची में एक और नाम देखा था।

"फ्रेड ?"

"कहो ?"

"तुम तार भेज रहे हो ?"

"हाँ।"

"एक और व्यक्ति को भी तार देना चाहिए।"

"किसे ?"

"फ्लोरेन्स को।"

वह सीधा तन गया। ईडिथ ने देखा कि वह मेरी ओर देख रहा है और उसका मुख ऐसा कोमल गुलाबी हो गया मानो इस पिछले घंटे में बहुत जवान हो गया हो—"मुझे संदेह है कि ऐसा करना उसे अच्छा भी लगेगा या नहीं।"

"वह मर गया है।" ये शब्द इतने कम थे कि वह जितनी बातें कहना चाहती थी उन्हें पूरा नहीं कह पा रही थी, इसलिए उसने कहा—"मैं स्वयं भेज दूँगी।" और वह उस डिब्बेके पास जा पहुँची जिसमें उसने थोड़े दिन पहले आये हुए व्यक्तिगत पत्र रख छोड़े थे। अभी पिछले मास फ्लोरेन्स का एक पत्र आया था। वह मिल गया और उसे लेकर वह मेज की बत्तीके पास पहुँची, जिससे कोने पर लिखा हुआ ठिकाना पढ़नेके लिए प्रकाश मिल जाय।

"मुझे ठिकाना बताओ।" उसने अपने पति को कहते हुए सुना और उसका हृदय इस प्रथम छोटी सी विजय के उत्साह से उछल पड़ा—"श्रीमती फ्लोरेन्स बुलार्ड, दि पाइन्स होटल, पैकरबीच, मेन।"

वह उसके लिखने की गतिके साथ अपने स्वरकी गति मिलाती रही और जब उसने मेन के पश्चात् पूर्ण विराम दे दिया तब उसने उसका नाम बोल दिया।

"हाँ।" यह शब्द केवल औपचारिक ध्वनिका शब्द था, प्रश्न का नहीं। वह संदेश लिखना प्रारम्भ कर रहा था।

"फ्रेड ! तुम नहीं कर सकोगे।"

ये शब्द उसके ओठों से फूट पड़े-से जान पड़े। उसका सिर धीरे-धीरे आश्चर्यके रूप में उठ गया और पेंसिल रुक गयी—"क्या नहीं कर सकूँगा, प्रिये ?"

"कंपनी की अध्यक्षता।"

"क्यों?"

निराशा उसके स्वर को चलाती रही—"तुम स्वस्थ नहीं हो, फ्रेड ? और तुम भी जानते हो कि तुम स्वस्थ नहीं हो। यह—यह तुम्हारे प्राण ले लेगा। जानते हो उस दिन डाक्टरों ने क्या कहा था— सब डाक्टरों ने क्या कहा था ?"

उसका स्वर सुनायी पड़ा, जो अत्यन्त शान्त था—"यह ऑपरेशन से पहलेकी बात है ईडिथ ? पिछले दो वर्षोंसे तो मैं बहुत स्वस्थ हूँ।"

"पर तुम वह पद चाहते क्यों हो—क्यों ?"

"अब ईडिथ, तुम—"

"नहीं, कोई कारण नहीं—पृथ्वी पर कोई कारण नहीं। हमे अब रुपये की कोई आवश्यकता नहीं है। जो कुछ हमें चाहिए, सब हमारे पास है। फ्रेड ! तुम अब इकसठ के हो गये हो। अब तुम्हें अवकाश ग्रहण करने में कुल चार वर्ष शेष हैं, फ्रेड। क्या तुम यह नहीं —क्या तुम यह नहीं कर सकते ?"

उसके शब्द इस प्रकार गिर पड़े जैसे कि कोई बर्छा उसके कठोर मुखड़े की ढाल पर टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ा हो।

"ईडिथ ? तुम समझती तो हो नहीं।"

"मैं सब समझती हूँ। अभी तक ऐवरी बुलार्ड सिरपर चढ़ा हुआ है, अभीतक—"

"नहीं।" उसने अत्यन्त तीव्रताके साथ उसे रोकते हुए कहा। किन्तु तत्कालही उसका स्वर भी मन्द पड़ गया—कोमलतामें नहीं, वरन् घृणा की शान्त तीव्रता में—"यह लॉरेन शॉ है न ? यदि मैं अध्यक्ष नहीं हुआ, तो शॉ हो जायगा।"

"हो जाने दो। तुम्हें क्या पड़ी है ?"

"तुम यह समझकर नहीं कह रही हो, ईडिथ।"

"मैं भली-भाँति समझ-बूझकर कह रही हूँ। तुमने अपना सारा जीवन ऐवरी बुलार्ड को दे डाला है। इतना पर्याप्त है।"

क्षणभर के लिए जब उसने देखा कि उसके प्रश्न ने उसके मुख के आवरण को तोड़ दिया है, तो उसे यह आशा हुई कि संभवतः मैं अब भी जीत जाऊँ।

एल्डर्सन नीचे देखने लगा था और अपनी पेंसिल की पैनी नोक से पैडपर एक चक्करदार रेखा खींच रहा था। ईडिथ ने अपनी साँस रोकी और उसके स्वर की ध्वनि सुनने के लिए रुक गयी। पहले ही शब्द के साथ उसकी आशा समाप्त हो गयी।

"नहीं, ईडिथ। मैंने अपना जीवन ऐवरी बुलार्ड को नहीं दिया है। मैंने अपना जीवन कंपनी को दिया है, और मैं उसे शॉ जैसे हरामजादे के हाथों नष्ट होते नहीं देख सकता।"

"हरामजादा !" यह शब्द उसे बन्दूक की गोली के समान लगा। ईडिथ ने उसे कभी पहले इस प्रकार का शब्द प्रयोग करते नहीं सुना था। यह फ्रेड नहीं बोल रहा था.....नहीं...नहीं... .नहीं...यह बुलार्ड बोल रहा था.....यह ऐवरी बुलार्ड बोल रहा था.....।

मौन निराशा के साथ वह पीछे दीवार से जा टिकी। ईडिथ की ओर बिना देखे एल्डर्सन ने संदेश पूर्ण कर लिया। तब उसने टेलीफोन उठाया और उसपर वह नंबर घुमाने लगा, जो उसने पहले से ही अपनी पैडके किनारे पर लिख रखा था।

७.४४ सायंकाल

ज्योंही डॉन वॉलिंग रिज् रोड की ओर घूमा, त्योंही उसने देखा कि पेट्रोल चुक चला था। वह तत्काल पेट्रोल-टंकी की ओर घूम गया, जो क्लब के द्वारकी ओर दूर से ही चमक रही थी। उस टंकी का स्वामी रेड बारी अपने मोढ़े से उठ खड़ा हुआ और उसकी ओर बढ़ गया। उसकी टोपी उसकी खीसें निकाले हुए मुखपर विचित्र प्रकार का सिर बनाती हुई दिखायी दे रही थी।

"इधर आइए, श्री वॉलिंग। कहिए, श्री बुलार्ड के सम्बन्ध में तो बडा बुरा समाचार मिला है !"

डॉन वॉलिंग ने केवल सिर झुकाकर अपना उत्तर रोक लिया। क्योंकि रेड का शोक-रहित स्वर उसे अच्छा नहीं लगा, विशेष रूपसे उसकी मूर्खता-पूर्ण खीसें।

"मैं जैसा सुनता हूँ वह बहुत वृद्ध भी नहीं था, श्री वॉलिंग ?" रेड ने ऐसा मुँह बनाकर कहा, जो इस समय अत्यन्त भयंकर रूपसे घृणित दिखायी पड़ रहा था—"लोग कहते हैं कि वे कुल छप्पन वर्ष के थे। थे तो युवक, पर उनका जीवन बड़ा कठोर था। क्यों श्री वॉलिंग ?"

डॉन ने उसे चार डॉलर दिये और बड़े वेगसे गाड़ी निकाल ले गया।

यातायात की धारा चलनी प्रारंभ ही हुई थी और वह भी थोड़ा-सा सरका ही था कि एक पुलिस के सिपाही ने हाथ खड़ा करके उसे रोक दिया, जिससे पैदल चलने वालोंकी भीड़ सड़क पार करके उद्यान के द्वार में धक्का देती आगे बढ़ती पहुँच जाय। वह भीड़ भी चिल्लाती-हँसती, कोलाहल करती, मनुष्यके उत्पन्न किये हुए उल्लास की प्रेरणा से पागल हुई चली जा रही थी। उसने

उन मनुष्योंमें से एक को पहिचाना—जो वाॅटर स्ट्रीट फैक्टरी में काम करता था। उसके मनमें विचार आया कि इनमें ट्रेडवे से सम्बद्ध भी बहुत-से लोग होंगे। ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी थी – पर क्या उन्हें इस बात की चिंता थी? तो क्या हुआ ? वे कह देंगे—कौन था ऐवरी बुलार्ड? एक मनुष्य ही न। ....लोग तो प्रतिदिन मरते रहते हैं...पत्रोंके शोक-स्तम्भ में एक और नाम जुड़ गया...और वह नाम भी नहीं, जो उनके वेतन के चेक के नीचे आता है। वास्तव में उसी नामका महत्व है...वेतन के चेक पर हस्ताक्षर किया हुआ नाम ....फ्रेड्रिक डब्ल्यू. एल्डर्सन, उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष।

पुलिसमैन का हाथ नीचे हुआ और डॉन वॉलिंग का मस्तिष्क भी आगे बढ़नेवाली गाड़ी के साथ आगे उछल गया—संभव है, मेरी ही ठीक कहती हो कि फ्रेड अध्यक्षता न स्वीकार करे। कम-से-कम उसके मनमें हिचक तो होगी ही और किसी बात से नहीं, तो संकोचवश ही सही। उसके मस्तिष्क ने इस बातका पारायण किया कि मैं क्या कहूँगा....।....फ्रेड, मैं जानता हूँ तुम्हारी क्या भावना है। हम सबकी वही भावना है....। ऐवरी बुलार्डका स्थान कोई नहीं ले सकता, किन्तु हम सब लोगोंकी अपेक्षा आप ही उनके साथ सबसे अधिक रहे हैं.... उनके अत्यन्त समीप। उनके विचार करनेका ढंग जानते हैं। वे सब आधी छोड़ी हुई बातें जो हमें चलाये रखनी हैं—चलाये रखनी हैं...हाँ, यही तो हम लोगों को करना है फ्रेड ? चलाते रहो।

सहसा ब्रेक की चीं-चीं हुई। उसने वह गाड़ी नहीं देखी थी, जो नॉर्थ फ्रन्ट स्ट्रीट के अंधे मोड़ से उसकी ओर झपटी चली आ रही थी। चक्के के थोड़े-से घुमाव से भिडन्त तो रुक गयी; किन्तु जब वह एल्डर्सन की ओर घूमा, उसका हृदय बड़े वेग से धड़कनें भर रहा था।

जब वह उसके घर के पास से निकला, तो उसने खिड़की में श्रीमती एल्डर्सन के मुखकी चलती हुई–सी झाँकी पा ली। वह अत्यन्त शीघ्र द्वार तक चली आयी होगी; क्योंकि जब वह सीढ़ी तक पहुँचा, तब श्रीमती एल्डर्सन किवाड़ खोल रही थी। उसने उसके भीतर आने के लिए द्वार नहीं खोला, वरन् अपने पीछे उसे तत्काल बन्द करके उसे बरसाती के एक ओर आनेका संकेत किया।

जब वह बहुत पास आ गया, तो उसकी आँखोंसे प्रतीत हुआ कि वह रो रही थी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ; क्योंकि वह सदा यही समझता रहा था कि श्रीमती एल्डर्सन अत्यन्त शान्त और स्थितप्रज्ञ स्त्री है। उसे यह आशा भी नहीं थी कि वह श्री ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु से इतनी अधिक प्रभावित हो जायगी।

उसने अत्यन्त सहानुभूतिके साथ कहा—"मैं जानता हूँ, आपको कितना दुःख हुआ है। हम सब लोगोंको भी वैसा ही—"

वह बोल पड़ी—"मुझे फ्रेड के आनेसे पूर्व शीघ्र बतलाइए कि अब क्या होनेवाला है? इतने दिन हो गये—इतने वर्ष हो गये—इन्होंने अपने जीवन का इतना सब दे डाला—।"

उसका मस्तिष्क झट एक परिणाम पर कूदकर पहुँच गया कि वह इस बातकी अभ्यर्थना कर रही थी कि उसके पतिको अध्यक्ष बना दिया जाय।

"चिन्ता न कीजिए, श्रीमती एल्डर्सन? मुझे विश्वास है कि सब कुछ ठीक हो जायगा। मैं तो केवल एक संचालक हूँ, किन्तु. . . .।"

द्वार खुला। फ्रेड एल्डर्सन बरसाती में निकल आया। वह वहीं प्रतीक्षा करते हुए खड़ा रहा और जब डॉन वॉलिंग दो पग आगे बढ़ा, तब उसने शान्ति के साथ कहा—"मुझे प्रसन्नता है कि तुम आ गये।" उसने यह किसी कृतज्ञता के भावसे नहीं, वरन् इस प्रकार कहा मानो वह कोई ऐसी बात स्वीकार कर रहा हो जिसकी उसने आशा की हो।

उनके पीछे ईडिथ एल्डर्सन चुपचाप घरमें चली गयी।

अन्य परिस्थितियों में उनका हाथ मिलाना बड़ा असंगत संकेत होता था, किन्तु इस समय उसका अर्थ था और एल्डर्सन की पकड़ अत्यन्त विश्वास-पूर्ण, कठोर और दृढ़ थी। उसने गंभीरता से कहा—"मुझे तुम्हारी आवश्यकता पड़ेगी, डॉन।" उसकी आँखें दूर पर ट्रेडवे टॉवर के श्वेत स्तम्भ की ओर उठ गयीं।

उनके हाथ अभीतक मिले हुए थे। एल्डर्सन की उँगलियों में अचानक व्याकुलता का भाव आ गया। दोनों ने उसी वस्तुको एक साथ देखा था। तेईसवें खंड के उत्तर-पूर्वी कोनेवाले कार्यालय में एक प्रकाश चमक उठा था। यह शॉ का कार्यालय था।

एक क्षण को झिझक तो हुई-किन्तु एकही क्षणको, और तब एल्डर्सन ने दृढ़ता से कहा—"आओ, चला जाय।" ये दोनों शब्द, एक शब्दके रूपमें कहे हुए, डॉन वॉलिंगके मस्तिष्क में गूँज उठे। यही बुलार्ड की पुकार थी। ये शब्द उसने एक सहस्र बार सुने थे। ये इस समय बहुत कोमलता के साथ कहे गये थे। किन्तु शब्द वे ही थे और उसी स्वर की स्पष्ट यद्यपि धीमी प्रतिध्वनि प्रतीत हो रही थी।

वेग से एक पग बढ़कर उसने फ्रेड्रिक डब्ल्यू. एल्डर्सन के लिए द्वार खोल दिया।

७.५९ सायंकाल

अधिकारी-कक्ष के विशेष लिफ्ट के चालक लुइजी कासोनी के पास दो बहुमूल्य वस्तुएँ थीं—एक थी सोने की घड़ी, जो उसे ऐवरी बुलार्ड ने दी थी; और दूसरा था चौखटे में मढ़ा हुआ प्रमाणपत्र—जो इस बातका प्रमाण था कि वह संयुक्त-राज्य अमरीका का नागरिक है। उसे अमरीकी नागरिक होनेका बड़ा गर्व था। किन्तु कभी-कभी उसे यह निश्चय ही नहीं हो पाता था कि वह इस सम्मान के योग्य है भी या नहीं। अट्ठाईस वर्ष वहाँ रहनेके पश्चात् भी वह सब प्रकार से वैसा आचरण नहीं कर पाता था जैसा अमरीकी नागरिक को करना चाहिए। उसकी अभागी प्रवृत्तियों में से एक थी—बातचीत करते समय अपने हाथ अत्यन्त स्वतंत्रता से चलानेका अभ्यास। लिफ्ट के डिब्बे के नियंत्रक पर दृढ़तासे हाथ रखना सीखकर उसने अपनी इस आदत पर विजय प्राप्त कर ली थी; किन्तु दुर्भाग्यवश आँसुओं पर संयम रखनेका उसे कोई उपाय नहीं मिला। वह जानता था कि यह काम अमरीकी शिष्टता के अनुसार ठीक नहीं है।

जिस छोटे-से इतालवी गाँव में लुइजी का पालन-पोषण हुआ था, वहाँ पुरुष का रोना कोई अस्वाभाविक बात नहीं समझी जाती थी। उसका पिता अनेक बार रोया था। ड्यूक की मृत्युके दिन गाँवका प्रत्येक व्यक्ति रोया था और स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुष अधिक रोये थे। केवल एक व्यक्ति वहाँ था, जिसने आँसू नहीं गिराये और वह था वहाँ का पादरी। वह तो निश्चय ही अन्य लोगोंसे कुछ भिन्न था।

अमरीकी लोग पादरी की भाँति हैं। आज वे लिफ्ट में आये और श्री बुलार्ड के सम्बन्ध में इस प्रकार कहने लगे जैसे सामूहिक प्रवचन होता है। उनके मुख भी पादरी जैसे ही थे और उनकी आँखों में आँसू भी नहीं थे। लुइजी को विश्वास था कि यह इसलिए नहीं थे कि उन्हें ऐवरी बुलार्ड की मृत्युका शोक नहीं था, वरन् इसलिए कि वे सब अमरीकी थे।

जिस रात्रिको ड्यूक की मृत्यु हुई थी — पहाड़ी के ऊपर देवदारू की होली जलायी गयी थी और प्रत्येक व्यक्ति उसे देखकर चौक में अपना शोक प्रकट करने गया था। गिरजाघर का बड़ा भारी घंटा उस दिन बहत्तर बार बजाया गया था; क्योंकि ड्यूक बहत्तर वर्षका था।

लुइजी ने अपना सिर उठाया। कहीं दूरसे घंटे की ध्वनि सुनायी पड़ी।

किन्तु वह तो बड़ी घड़ी की ध्वनि थी जिसके घंटे केवल आठ बार बजे। उस समय आठ बजे थे।

घों-घों का शब्द सुनायी दिया और उसने द्वार खोल दिया। वह ऐरिका मार्टिन थी। आज पहली बार उसकी आँखों में उसने आँसू देखे। किन्तु वह तो स्त्री थी। अमरीका में स्त्रीके लिए तो रोना ठीक समझा जाता था, किन्तु यह बड़ी विचित्र बात थी कि वह वहाँ दिखायी दे रही थी।

जिस रात्रि को ड्यूक की मृत्यु हुई थी, उस दिन चौक में किसी को भी ड्चेज नहीं दिखलायी दी थी।

सप्तम अध्याय

वेस्टकोव

लांग आयलैंड

८.०२ सायंकाल

जॉर्ज कासवेल उस अवस्था को पहुँच चुका था जब किसीको अपने समवयस्क व्यक्ति की मृत्यु कोई असाधारण बात नहीं लग सकती। उसने यह नियम बना लिया था कि व्यवसाय की कोई भी बात पत्नी से नहीं करेगा। उसने उसके साथ विवाह इसलिए किया था कि वह उसके मस्तिष्क को शेयर की दलाली मे दूर रखे। किन्तु अब जब वह टेलीफोन पर बातचीत करके भोजनकी मेज पर पहुँचा, तब उसके मुख मे यह चिन्ता प्रकट हुई कि उसकी पत्नी ने उसकी सब बातें सुन ली हैं।

"कुछ मिठाई भी लोगे प्रिय या केवल कॉफी ?" उसने कासवेल को सावधानी से देखते हुए पूछा।

"केवल कॉफी।"

"बुरा समाचार है प्रिय ?"

"समझता तो ऐसा ही हूँ। ऐवरी बुलार्डकी मृत्यु हो गयी।"

"बुलार्ड ? ओ ! वही पेंसिलवेनिया वाला आदमी न, वही—फर्नीचरवाला?"

"हाँ, ट्रेडवे कॉर्पोरेशनवाला।" उसने कहा और इस बात पर चकित हुआ कि बुलार्ड के नाम से उसने उस व्यक्ति को पहचान लिया।

"क्यों जॉर्ज ? यह भी तुम्हारी कंपनियोंमें से है न ? तुम उसके संचालक या कुछ हो न ?"

"हाँ।"

"हम लोगोंने एक बार श्री बुलार्ड को अपने यहाँ भोज पर बुलाया था।"

"हमने ? मुझे तो स्मरण नहीं है।"

"जब हम न्यू रोशेल में थे। हमने वह भोज तुम्हारे सभी बड़े-बड़े ग्राहकों को दिया था।"

"ओह ! बहुत समय बीत गया—हाँ, संभवतः था तो।" उसे भोज की बातका स्मरण तो था, किन्तु वह बातको टाल जाना चाहता था।

"हाँ, हाँ; वह श्री बुलार्ड ही थे।" उसने विजय के भाव से कहा।

"वह बेक्ड एलास्का से बहुत प्रभावित हुआ था और उसे वह बहुत अच्छी भी लगी थी...और उस दिन हमने चिकेन सुप्रीम भी बनवायी थी।"

उसने अपनी थाली से ऊपर मुँह उठाकर देखा और उसे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि किटी में अपने अतिथियों और भोजन की सामग्रियों को स्मरण रखनेकी कितनी आश्चर्यजनक शक्ति है और वह भी जितने भोज आजतक हुए उन सबको।

वह कहती गयी—"वह एक झुलझुल भालू के समान था जो गुर्राता तो था, पर अच्छा लगता था—बड़े मजे का। उसकी मृत्यु हो गयी। यह कितना दुःखदायक है। क्या इस घटना का तुम्हारे व्यवसाय पर कुछ बुरा प्रभाव पड़ेगा, जॉर्ज ?"

"नहीं, मैं नहीं सोचता—" उसने अनिश्चय के साथ कहा— "वह बड़ा अच्छा व्यक्ति था। बस, यही कहा जा सकता है—जितने मनुष्यों को मैं जानता हूँ, उनमें सबसे अच्छा।"

"किन्तु प्रिय ! मैंने कभी नहीं समझा था कि वह तुम्हारा मित्र था। हमने कभी उसे बुलाया क्यों नहीं ? मुझे बड़ी प्रसन्नता होती यदि—"

"वे श्री लिंडमैन थे जो आये थे।" उसने जानबूझकर विषय बदलनेके लिए यह बात इतनी तेजी से कही कि वह यह नहीं समझ पाया कि वह और भी उस बातको बढ़ाये चला जा रहा है।

"ओह ! तो क्या वे भी श्री बुलार्डके मित्र हैं। हे भगवान् ! कोई कारण नहीं था कि हमने उनके साथ लिंडमैन दम्पति को भी नहीं बुलवा लिया होता। वे भोजमें बहुत ही अच्छे सिद्ध होते हैं, वे दोनों।"

"नहीं, श्री लिंडमैन ऐवरी बुलार्ड के मित्र नहीं थे।" उसने धैर्यपूर्वक समझाया—"वे तो एक न्यास-कोष के प्रमुख हैं, जिनके पास ट्रेडवे के थोक शेयर बहुत अधिक संग्रहित हैं और उन्हें तो केवल इस बातकी बड़ी चिन्ता थी कि उन शेयरों के मूल्यपर बुलार्ड की मृत्यु का क्या प्रभाव पड़ेगा।"

"कितनी भयंकर बात है—"उसने अत्यन्त अरुचिपूर्वक कहा।

"क्या ?"

"उसे कम-से-कम तब तक तो धैर्य रखना चाहिए था, जब तक वह भली प्रकार मर नहीं जाता ! हे भगवन् ! क्या तुम पुरुष इस बात के अतिरिक्त कुछ सोचते ही नहीं कि बाजार पर उस बातका

क्या प्रभाव पड़ेगा ?"

"प्रायः।"

"मैं विश्वास नहीं कर सकती।"

"प्रिये ! मैं तो सदा ही तुम्हारे पास, घर आ जाता हूँ।" उसने कहनेके लिए एक बड़ी अच्छी बात निकाली और बड़े अच्छे ढंग से कह भी दी।

वह हँसी, प्रसन्न हुई और कासवेल को आशा हुई कि अब विषय बदल गया। पर वह बदला नहीं—"तुम बड़े अच्छे हो प्रिय ! पर तुमने उससे कहा क्या ?"

"किससे ?"

"श्री लिंडमैन से।"

"किस विषय में ?"

वह इस प्रकार चक्कर में आनेवाली नहीं थी—"इसी विषयमें प्रिय कि अब श्री बुलार्ड के मर जाने पर कंपनी का क्या होगा।"

"यह श्री बुलार्ड की कंपनी नहीं है, प्रिये ! यह तो भागीदारों की कंपनी है। श्री बुलार्ड तो कर्मचारी थे। भागीदारों ने उन्हें अध्यक्ष बननेके लिए किराये पर ले रखा था जैसे और लोगोंको लोग किराये पर ले लेते हैं—गाड़ी चलानेवालों को या बहीखाता रखनेवालों को।"

"तो तुम मुझसे बात नहीं करना चाहते, क्यों ?" उसने भोलेपन के साथ पूछा।

"मैं निश्चय ही बात करना चाहता हूँ। मैं केवल—"

"तब आपने श्री लिंडमैन से क्या कहा ?"

"प्रिये ! मेरे व्यवसाय के काम में यह अचानक रुचि क्यों दिखाने लगी हो ?"

"मैं केवल यही जानना चाहती हूँ कि आपने कहा क्या ?"

उसकी छिपी हुई मुस्कान अब फूट निकली और इतनी देरसे वह जो विनोद कर रही थी, वह स्पष्ट हो गया – "तो मैंने श्री लिंडमैन से कहा कि तुम्हें चिन्ता करनेकी कोई बात नहीं है—कि आजका कोई भी व्यावसायिक संघटन, जो ट्रेडवे कॉर्पोरेशनके समान सफल हो, वह केवल एक आदमी का खेल नहीं हो सकता—कि वहाँ अत्यन्त योग्य उपाध्यक्षों का मंडल है जिनमें से कोई भी श्री बुलार्ड का उत्तराधिकारी हो सकता है—कि मैं स्वयं अगले मंगलवार को बोर्ड की बैठक में जाऊँगा और व्यक्तिगत रूपसे यह देखने का प्रयत्न करूँगा कि सबसे अच्छा व्यक्ति ही चुना जाय—और ट्रेडवे कॉर्पोरेशन में अपने विश्वास

के अंतिम प्रमाणस्वरूप मैंने आज ही तीसरे पहर उसके साधारण शेयरों में से दो हजार शेयर ले लिये हैं।"

प्रसन्न बच्चेकी भाँति उसने दोनों हाथों से तालियाँ बजायीं—"जॉर्ज ! तुम बड़े विचित्र हो ! तुम्हें वे बातें मुझे बताते चलना चाहिए जो तुम बहुत बार कहते हो। उससे तुम कितने निराले प्रतीत होते हो। मंगलवार ? क्या कह रहे थे कि मंगलवार को जाऊँगा ?"

"यह तो तुम्हारे कैलेन्डर पर ही है। मैंने स्वयं अपने हाथसे लिख दिया था कि जब—"वह रुका। "ओह !—अन्त्येष्टि ? उसका तो ध्यान ही नहीं था।"

"क्या जाओगे ही ? अन्त्येष्टि कितनी भयानक होती है।"

"हाँ, मैं समझता हूँ। सोमवार को होगी।"

"कहाँ ?—वे कहाँ रहते थे ?"

"मिलबर्ग में।"

"ओह प्रिय ! तब तो तुम संभवतः नहीं जा सकोगे।"

"क्यों ?"

"सोमवार को तो नौका संघका कुछ हो रहा है और तुम्हीं उसके उपाध्यक्ष हो।"

यह उसे विशेष रूप से बड़ा मूर्खतापूर्ण वक्तव्य लगा और उसका मस्तिष्क इससे धक्का खाकर दूसरे छोरपर झूल गया। "मैं ऐवरी बुलार्ड केअन्त्येष्टि-संस्कार में जाऊँगा।" उसने गंभीरता से कहा—"चाहे वह संसार की आधी परिक्रमा में ही क्यों न हो और वहाँतक पहुँचने में चाहे एक महीना ही क्यों न लग जाय।"

"हाँ, हाँ; तुम जाओगे प्रिय।" उसने चाटुकारी के स्वर में कहा—"क्या इसके पश्चात् छतपर चलकर भोजन करोगे ?"

"क्या ?"

"छतपर ! अब लगभग जुलाई ही है। तुम्हें स्मरण नहीं कि गतवर्ष गर्मी के दिनों में छतपर भोजन करनेमें कितना आनंद मिला था।"

"हाँ, बहुत अधिक।" उसने आधे कानसे सुना और उसने देखा कि कोई अचेतन हाथ मेजके कपड़े पर दो हजार लिख रहा है और वह भी कॉफी के चम्मच की नोकसे। उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उसका मस्तिष्क सदा अंकों से भरा रहता था।

"ठीक है, प्रिय ?" यह उसका इस बातके बतानेका ढंग था कि अब भोजन हो चुका है।

वह खड़ा हो गया—"मैं समझता हूँ कि मैं चलकर गुलाबों को देख लूँ, किटी।"

"आज रातके लिए तुमने कोई योजना तो नहीं बना रक्खी है ?"

"उन लोगों के सम्बन्ध में ? वे आदमी फिर आये थे। यह तो मैं नहीं जानती कि उन्होंने किया क्या, पर वे थे यहीं।"

"ठीक है।" उसने बिना अर्थके ही यह कह दिया और पीछे घूमकर छतपर होता हुआ फुलवारी की ओर निकल गया। गुलाबों पर जितना पैसा लगा था, उसके योग्य वे नहीं थे . . . इससे सस्ते गुलाब तो मालियों से ही मोल लिये जा सकते थे।

नील फिंच नीचे, उनके उद्यानों के बीच की झाड़ी के पास खड़ा हुआ था और परस्पर अभिवादन अनिवार्य था। कोई ऐसा भी उपाय नहीं था कि ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु के विषय में उसे बताया न जाय।

"मैं भली-भाँति जानता था। पिल्चर को कुछ समाचार मिल गया था।" फिंच ने विजय भावसे कहा "—वह बात स्मरण है न, जो मैंने घर आते हुए गाड़ी में कही थी।"

"किन्तु पिल्चर जान कैसे सकता था ! यह समाचार तो अभी लिंडमैन का बेटा जो वाल स्ट्रीट, जर्नल में काम करता है, कुछ मिनट पहले वही यह समाचार पाया था।"

"तुमने कहा था न कि बुलार्ड आज तीसरे पहर ही ढाई बजेके लगभग गिरकर मर गया ?" फिंच ने पूछा—"और पिल्चर ने बेचने का आदेश लगभग २.४० पर दिया। मुझे स्मरण है, विनगेट ने कहा था कि छुट्टी होने में कुल बीस मिनट हैं। समझ में नहीं आता कि इसका क्या अर्थ है ? उस समय पिल्चर को यह अवश्य ज्ञात हो गया होगा कि बुलार्ड मर गया है। तुम कहाँ बताते हो, वह कहाँ गिरकर मरा ?"

"चिपैन्डेल भवनके सामने, सड़कपर।"

"वहीं तो पिल्चर का कार्यालय है। है न ?"..

"हाँ।"

"..और बुलार्ड ने पिल्चर के साथ भोजन किया था ?"

जॉर्ज कासवेल को ऐसा लगा कि वह सहसा अस्वस्थ हो गया है जैसे कि

उसके मुँहसे निकले हुए शब्द उलटी कराने की औषधि बन गये हों।

"किन्तु उनका शरीर आज रात तक पहचाना क्यों नहीं जा सका?" उसने पूछने का प्रयत्न किया—यह जानते हुए भी कि इस प्रश्न में कोई तुक नहीं है और उसका उत्तर भी स्पष्ट है।

"क्योंकि पिल्चर चाहता नहीं था कि उनका शरीर पहचाना जाय। ब्रूस पिल्चर के सम्बन्ध में मेरी कभी बहुत अच्छी धारणा नहीं रही; किन्तु मैं यह नहीं समझता था कि वह इतना नीच होगा।" उसने अचानक एक तानेसे भरी हुई मुस्कराहट बिखेर दी—"बडे अच्छे मित्र हैं, तुम्हारे कासवेल!"

"नहीं, वह मेरा मित्र नहीं है।"

"मेरा खयाल था कि तुमने बुलार्ड को उसे कार्यवाहक उपाध्यक्ष बनानेका भी सुझाव दिया था।"

"मैंने ऐसा कोई सुझाव नहीं दिया।" कासवेल ने टोका—"उसकी सूची में उसका भी एक नाम था—संभावनाओंमें—बस।"

फिच हँसा—"इसका बुरा न मानना, जॉर्ज! तुम्हीं पहले व्यक्ति नहीं हो जिसे पिल्चर ने मूर्ख बनाया हो।"

"उसने मुझे मूर्ख नहीं बनाया है और वह बना भी नहीं सकता।"

"वह इस थोड़ी-सी बिक्री पर बड़ा लाभ कमा लेगा। बुलार्ड की मृत्यु से निश्चय ही बाजार भाव गिर जायगा।"

"उसका भाव नहीं गिर सकता।" कासवेल ने अत्यन्त निश्चय के साथ कहा।

फिच का मुँह लटक गया—"तो मैं मारा गया, जॉर्ज! तुम तो चालाक लोमड़े हो – और मै समझ नहीं पाया। जो तुम्हारे हाथ में शेयर हैं – जो दो हजार शेयर तुमने आज ले लिये हैं—जो सोमवार को और इधर-उधरसे तुम्हारे हाथ लग जायँगे। बस, तुम्हारी चाँदी-ही-चाँदी है। मैं तो समझता था कि तुम बुरे फँसे। पर अब तो तुम सारी कंपनी को अपनी मुट्ठी में कर लोगे। क्यों ठीक है न?"

जॉर्ज कासवेल के अँगूठे के नाखून ने झाड़ी की शाखा कुतर ली। इस परिस्थिति की संभावनाएँ उसके मनमें पहले कभी नहीं आयी थीं। उसके मन में केवल यही विचार था कि 'पिल्चर के पक्ष में ऐवरी बुलार्ड से मैंने जो कुछ कहा था, उस सम्बन्ध में अपना मानस शुद्ध कर लूँ।' किन्तु अब जैसे मदिरा में बुलबुले उठते हैं, वैसे ही अज्ञात स्रोत से उत्पन्न एक विचित्र कल्पना का

द्वार उसके मस्तिष्क में नयी आकांक्षा लेकर खुल गया।

वह जानता था कि फिंच ने कोई ऐसी बात नहीं कही जो उसने सुनी न हो। "हाँ, क्या कह रहे थे, नील ! मैं—"

"मैं पूछ रहा था कि क्या तुम स्वयं अध्यक्ष-पद लेने की सोच रहे हो? भगवान् करे, तुम उसे न चाहो—क्यों?"

"मैं—मै कह नहीं सकता। उसके सम्बन्ध में सोचना पड़ेगा।" उसने कहा। उसने एक विचित्र मुद्रा के साथ प्रारंभ तो किया, किन्तु उसे मुस्कराहट के आसपास की मुद्रा में लाकर समाप्त कर दिया और इस बात पर प्रसन्न हुआ कि फिंच के मुख से वह तानेवाली मुद्रा समाप्त हो गयी है।

"अच्छा, जॉर्ज ! यदि मैं कुछ काम आ सकूँ? तुम मुझे जानते हो, मित्र! मुझे कहला देना, धन्यवाद!"

"अच्छा, आज तो बहुत काम निबटाने हैं। फिर तुमसे मिलूँगा, नील।" वह पासके मैदान से होता हुआ चला गया।

"सब गुलाब ठीक हैं, प्रिय?"

"गुलाब... ओह ! हाँ, बहुत ठीक हैं, प्रिये ! मैं अभी यही सोच रहा था—लिंडमैन इस ट्रेडवे के विषय में बड़ा चिंतित है। उसका अध्यक्ष कौन होगा, तुम जानती हो? मुझे भय है कि कहीं मुझे कल मिलबर्ग न जाना पड़े, वहाँ की भूमि का नाप लेने।"

"कल? किन्तु प्रिय, यह असंभव है। कल तो मैन्सी ब्राइटन का विवाह है।"

"ओह!"

वह चकित रह गया। "अच्छा—तो मैं रविवार को ही चला जाऊँगा। पर किसी प्रकार भी सोमवार को तो वहाँ रहना ही है।"

उसके उत्तर देने से पहले ही वह आगे बढ़ गया और उसने पुस्तकालय में पहुँचकर द्वार बन्द कर लिया। वह पीछे की खिड़की के बैठक की पीठ पर जा बैठा और सीधा तनकर बैठ गया मानो वह कोई पहलवान हो, जो मल्लयुद्ध प्रारंभ करने के संकेत की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसे कुछ ऐसा ही अनुभव हुआ। संभवतः यही प्रारंभ हो; उस बातका प्रारंभ—जिसके लिए वह प्रतीक्षा कर रहा था। पर संभवतः न भी हो। इससे पहले भी उसे ऐसा अनुभव हुआ था.. वह समझता था कि मुझे मिल गया है.... और फिर वह आशा उसकी उँगलियों-मेंसे निकल गयी... इसलिए नहीं कि वह उन स्वप्नोंको कभी सत्य कर नहीं

सकता था, केवल इसलिए कि उसने ऐसा करना ठीक नहीं समझा... वह कोई ऐसी बात नहीं थी जो उसे करनी ही थी... वाल स्ट्रीट के नब्बे प्रतिशत लोग यही सोचते थे कि यदि वह उसके लिए प्रयत्न करे... कासवेल एण्ड कंपनी छोड़कर तिरपन वर्षकी अवस्था में कोई दूसरा काम करने लगे, तो वह पागल है। किन्तु यह केवल धनके लोभ से नहीं। वह कभी धनके लोभ से कोई काम नहीं करता था। उसके पिताकी सम्पत्ति ही पर्याप्त थी। वह जीवन में बिना एक दिन काम किये हुए भी धनी का पुत्र बना रह सकता था। उसने यह किया नहीं। वह कासवेल एण्ड कंपनी में गया और कोई भी यह नहीं कह सकता था कि उसने सफलता प्राप्त नहीं की। उसने अपने पितासे अधिक सफलता प्राप्त की। नहीं, पैसेकी बात नहीं थी। उसमें कुछ और बात थी। क्या? हाँ, यही प्रश्न था। यहीं आकर वह पहले भी अटक जाया करता था। द्वार पर अत्यन्त कोमल किन्तु चौंका देनेवाली खटखट हुई।

"कौन है ?"

"तुम घबरा तो नहीं रहे हो ? क्यों प्रिय ?" किटी ने अपने स्वर में कौंध भरते हुए पूछा।

वह मुस्कराया और यह मुस्कराहट उसने अपने शब्दों में भी भर दी। "कुछ चाहती हो ?"

"उँहुँ, तुम्हें।"

"एक मिनट रुकी रहो। मैं एक बात सोच रहा हूँ।"

"जानते हो, तुमने मेरी भावनाओं को बड़ी ठेस पहुँचायी है ?"

"मैंने ?"

"तुमने द्वार बन्द कर दिया।"

"प्रिये ! तुम जानती हो कि मैं सोचते रहने का और तुम्हें देखते रहनेका, ये दोनों काम एक साथ नहीं कर सकता।" उसने किटी की नन्हीं-सी बच्ची वाली हँसी सुनी और फिर उसकी लौटती हुई पगध्वनि भी सुनी। उसने मन-ही-मन कहा कि किटी बड़ी विचित्र है और यह कहकर अपने प्राचीन अभ्यास के अनुरूप वह अपनी विचारधारा के साथ सम्बद्ध होकर चलने लगा। और यह भी सोचने लगा कि किटी के साथ विवाह करके सचमुच बड़ा अच्छा हुआ।

बस, यहीं विचार का अन्त था। इससे आगे वह कभी नहीं बढ़ पाया।

उसका मस्तिष्क इस बाधा को पार करके पुनः पहली बात की ओर घूम गया। क्या मैं वही बनना चाहता हूँ... जो ऐवरी बुलार्ड था ? क्या ऐवरी

बुलार्ड ने इस बातका उत्तर पा लिया था कि मनुष्य का जीवन किस प्रकार सार्थक हो सकता है ?

ये प्रश्न एक बाँध पर जाकर टक्कर खाने लगे। उसका मस्तिष्क वेगशील प्रवाह से भर गया और स्मृति के तल से ऐवरी बुलार्ड के शब्द सुनने लगा—"मनुष्य केवल धन के लिए ही काम नहीं कर सकता। रुपया तो केवल खेल चलाते रहनेके लिए है।"

जॉर्ज कासवेल बहुत देर के पश्चात् समझ सका और अपना सिर हिलाने लगा। जो उसे पहले ही समझ जाना चाहिए था, वह अब उसकी समझ में आया था। हॉ, जीवन भर यही तो वह बना रहा...पैसा गिननेवाला.. अपना पैसा भी गिनता रहा...अपना पैसा और दूसरे लोगों का पैसा। मनुष्यको कुछ और होना चाहिए....अपने जीवन में कुछ कर दिखाने के लिए...कुछ स्थायी काम करने चाहिए। हाँ, ऐवरी बुलार्ड ने यही किया था। वह निर्माता था...और उसने जो कुछ बनाया वह वास्तविक था—वे वस्तुएँ जो आप अपनी ऑखोंसे देख सकते हैं, अपने हाथोंसे छू सकते हैं।

अब उसकी समझ में आया...अब उसने जाना कि मैं क्या चाहता रहा हूँ। मैं पिछले बारह वर्षों सेट्रेडवे का संचालक हूँ। मैं कोई बाहरी नहीं हूँ.. अन्य संचालक भी मेरे मित्र हैं...उनका भी सहयोग मुझे मिल जायगा.. एल्डर्सन और ग्रिम.....डडले, शॉ और वॉलिंग।

द्वार की खटखट इस बार कुछ कम चौंकाने वाली हुई।

"अब तक सोच रहे हो, प्रिय ?" किसीने पुकारा।

उसने चलकर द्वार खोला—"हाँ, बराबर सोचता रहा।"

"बताओ, तुम क्या सोच रहे थे ?"

उसने सिर हिला दिया—"अभी नहीं, किटी।"

"बताओ न, प्रिय"—उसने अनुरोध किया। —"मैं जानना चाहती हूँ कि तुम क्या सोच रहे थे और तब मैं तुम पर गर्व कर सकती हूँ।"

"मैं सोचता हूँ कि तुम मुझपर गर्व कर सकोगी ?" उसने धीरेसे कहा।

"तो फिर बताओ।"

"अभी नहीं प्रिये ! मैं चाहता हूँ कि वह आश्चर्य बनकर प्रकट हो ?"

"मेरे लिए ?"

मन्द मुस्कान से उसका मुख गर्म हो गया—"हाँ, हॉ; मैं सोचता हूँ कि तुम उसे सुनकर चकित रह जाओगी।"

उसे इच्छा भी हुई कि बस, कह ही डालूँ. . . किन्तु, वास्तव में यह बताने की बात नहीं थी। उसने इसके बदले उसका चुंबन ले लिया और जान पड़ा कि वह उतने-से ही सन्तुष्ट हो गयी।

न्यूयॉर्क सिटी, ८.१३ सायंकाल

ब्रूस पिल्बर ने जब अपने गले की नेकटाई अंतिम बार ठीक की, तो उसे ऐसा लगा कि दर्पण में उसका मुख स्वयं अपने पर रीझ रहा है। वह मुस्कराया और तत्काल उसके प्रतिबिंव ने भी वैसा ही किया। बहुत बातों में पत्नी के साथ रहने के बदले दर्पण के साथ रहना उसके लिए अधिक आनन्ददायक होता है। वह इस प्रकार से अधिक सुख पाता था। इस विचार ने उसको गद्‌गद कर दिया।

दस मिनट पूर्व उसने यह बात भली-भाँति समझ ली थी कि पुलिस ने ऐवरी बुलार्ड का शरीर पहचान लिया है। अब उसके मन में कोई चिन्ता नहीं रही। उसका सप्ताहांत भी स्वतंत्र था। सोमवार को दस बजे बाजार खुलने तक कोई चिन्ता की बात नहीं थी। . . . और उसके पश्चात् भी कोई चिन्ता की बात नहीं थी। स्काडिलमैन के साथ उसने टेलीफोन पर जो बातचीत की थी, उससे भी उसके इस अनुमान का समर्थन हो गया था कि ट्रेडवे के शेयरों में निश्चय ही कुछ मन्दी आ जायगी। कानत्रेल से बात करनेकी अपेक्षा लिंडमैन से बातचीत करना अच्छा रहा।

ज्योंही वह अपने प्लेटिनम के डिब्बेमें सिगरेटें भर रहा था, त्योंही उसमें उसे एक पत्रक मिला—जो होटल में आते समय उसके डिब्बे में आ गया था। यह स्टीगल के घर के नंबर से बात कर लेने की प्रार्थना थी। बेचारा बूढ़ा जूलियस अपनी पतलून में तर हुआ जा रहा था।

दर्पण में दिखायी देनेवाले मुख ने उसकी ओर आँख मारी और देरतक मुस्कराता रहा। दर्पण के अपने प्रतिबिंब से उसने तब मुँह मोड़ा, जब वह कक्ष छोड़नेके लिए घूमा।

८.१७ सायंकाल

एलेक्स ओल्डम उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में सावधान था। न्यूयॉर्क में ट्रेडवे का सबसे बड़ा शाखा-कार्यालय था और उसने नौ वर्ष उसकी व्यवस्था

की थी। आज जैसी बात पहले कभी नहीं हुई। आज वह सारे साम्राज्य की धुरी बना हुआ था। ऐवरी बुलार्ड का शरीर पहचान जाने के पश्चात् जब पुलिस उसका शव लायी तो शॉ टेलीफोन पर बातचीत करने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था—"सब कुछ तुम्हारे हाथ में है, एलेक्स; न्यूयॉर्क का सारा काम।" शॉने कहा था—"मैं यह सब प्रबन्ध तुम्हारे हाथमें छोड़ दे रहा हूँ।"

वास्तव में शॉ ने जिसका नाम दिया था, उस शव-रक्षक को बुला लेनेके पश्चात् शेष कोई काम ही नहीं रह गया था—"आप निश्चिंत रहिए। किसी बातकी कमी नहीं रह जायगी।" उसने अत्यन्त बेढंगे स्वर में कहा—"ऐसी परिस्थितियों का हमें बहुत अनुभव है। आपको कोई चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं है। बिलकुल नहीं।"

जब एलेक्स ओल्डम ने वे सब बातें ठीक-ठीक समझ लीं, जो शॉने कही थीं, तब उसकी पत्नीने पूछा—"क्यों एलेक्स? क्या तुम समझते हो कि इसका हम लोगोंके लिए भी कुछ अर्थ होगा?"

वह मिलबर्ग की लड़की थी और वह उस समय मिली थी, जब वह विक्रय की बैठक के लिए उधर गया था और वह सदा यह आशा भी करती रही कि हम लोग कभी-न-कभी तो वहाँ रहनेके लिए चले ही जायेंगे।

"यह हो सकता है।" उसने सहानुभूतिके साथ कहा और यह सोचकर कि इस सम्बन्ध में वह सदा से सचेष्ट रही है और अन्य अनेक पत्नियों के समान सदा इस बातके लिए सिर नहीं खाती रही है—"यह तो इस बात पर अवलंबित है कि वाल्ट डडले का क्या होता है। उसकी यदि उन्नति हो, तो हम लोगोंको भी अवसर मिल जाय।"

"श्री शॉ अध्यक्ष होंगे न?"

"मैं नहीं जानता।"

"क्या तुम नहीं कह रहे थे कि वह कार्यवाहक उपाध्यक्ष होने जा रहा है—इस घटना से पहले।"

"संभवतः इसका अर्थ होगा कि वह हमें जो मेन में बुला रहा था, वह संभावना नहीं रही।" उसने घुमाफिराकर समझौते के रूप में कहा।

"तो क्या श्री डडले कार्यवाहक उपाध्यक्ष के पद पर नहीं चले जायेंगे?"

"अच्छा, यह मुर्गियाँ गिनना प्रारंभ मत करो"—उसने कहा।

"किन्तु यह बात तर्कसंगत तो होगी न?"

"बहुत-सी तर्कसंगत बातें कभी नहीं होती। यह बात तुम तब सीख सकती

हो, जब तुम किसी असंगत स्थान में उतने दिन रह लो, जितने दिन मैं रह चुका हूँ।"

"हो सकता है कि श्री बुलार्ड के मर जानेपर और भी लोग उसके लिए प्रयत्नशील हों। यदि सबके सब–" वह रुक गयी और तीव्र दृष्टि से जो एलेक्स ने उसकी ओर देखा तो वह चकित रह गयी। "किन्तु एलेक्स! तुम तो सदा कहते थे कि श्री बुलार्ड—।"

उसके हाथ के झटके ने उसे रोक दिया–"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ।" क्षमा की किसी प्रेरणा से प्रभावित होकर उसने शीघ्रतासे कहा–"बुलार्ड कभी-कभी मनुष्य को पागल बना डालता था। किन्तु उसका कोई अर्थ नहीं होता था–कुछ भी नहीं। हे ईश्वर! काश! वह इस समय जीवित होता। मैं चाहता हूँ कि वह जीवित होता। फिर हमारे लिए चाहे उसका कोई भी अर्थ क्यों न होता। हे भगवन्! यदि ऐसा न हुआ होता, यदि बुलार्ड की मृत्यु न हुई होती तो.....।"

उसने अपने नेत्र मूँद लिये। तभी सिपाही के द्वारा चादर हटाये जानेपर जिस मुखने उसकी ओर देखा था, उसकी उसे अपराधी घोषित करने वाली मृत्युमय निश्चलता उसके सामने आ खड़ी हुई। वह जान गया कि शेष जीवन भर बुलार्ड का वह मुखड़ा उसके सामने नाचता रहेगा–भुलाये न भुलाया जा सकेगा।

अष्टम अध्याय

मिलबर्ग,

पेंसिलवेनिया

८.२८ सायंकाल

ट्रेडवे टॉवर के दो जीवन थे–एक दिन का और दूसरा रात का। उसके दिन के जीवन में बहुत बड़ा जनसमुदाय था। अत्यन्त तीव्र प्रकाश था और सहस्त्रों प्रकार की ध्वनियों से उज्जीवित था–मनुष्यों की, यंत्रों की, आहों और पुकारों की; खटखट और धड़धड़ की, हुँकारों और कराहों की, द्वार बन्द होने और दराज भिड़ाने की, गूं-गूं और फुसफुसाहट की, दौड़ते हुए पदों और सरकाते हुए पगों की, व्यापार की जीवन–ध्वनियाँ !

घड़ी पर पाँच बजे की पहली चोट पड़ते ही बाहर निकलनेवाले लोगों के भयानक धक्के के अतिरिक्त दिनका जीवन समाप्त हो जाता और यदि श्री बुलार्ड नगर में रहते और घड़ी न बजती, तो प्रधान घड़ी की सेकेंड की सुई के चलते ही तत्क्षण चौवीसवें खंडपर लगी हुई घड़ियों द्वारा समय की सूचना दे दी जाती।

ज्योंही दिनका जीवन वेगसे बाहर निकलता, त्योंही रातका जीवन भीतर प्रविष्ट हो जाता। भूरे मुखवाली स्त्रियाँ धीरे-धीरे दालान में घुसती। उनकी आँखें नीची और इस प्रकार विचित्र होतीं मानो इस चित्रित काँसे और चमकते हुए संगमूसा के विशाल भवन में अपनी उपस्थिति की असंगति को वे भाँप गयी हों। पीछे की दालान में पहुँचकर वे सब भार उठानेवाले लिफ्ट में जा घुसतीं। अन्त में बहुत देर और बिना किसी विलंब के ही वे सब इस भवन के विभिन्न खंडों में बँट जातीं, जहाँ वे झाड़ू और टोकरियाँ लेकर दिन भर की छोड़ी हुई मिट्टी को नियमित रूपसे खुरच डालनेका काम प्रारंभ कर देतीं।

इन मेहतरानियों के पश्चात् पुरुष द्वारपाल आते। टॉवर के रात्रि–जीवन के सामाजिक संसार के उच्चतर स्तर के अनुसार वे कुछ देरसे पहुँचना अपना अधिकार समझते। इन द्वारपालों के पश्चात् वहाँ के निरीक्षक लोग आते, जो कुछ ऐसे कौशलपूर्ण कार्य करते जैसे बिजली की बत्ती लगा देना, प्रक्षालन-कक्षों में जलके कुंडे लगा देना, आदि। ये लोग टॉवर के रात्रि-जीवन के एकछत्र पद तक पहुँच चुके थे।

साधारणतः ट्रेडवे टॉवर के दिन के और रात्रि के जीवन में कोई सम्बन्ध नहीं रहता था। कभी-कभी कोई दिनका काम करनेवाला कुछ देर रुक जाता — ऐसा व्यक्ति ठहरुआ कहलाता था। आठ बजे तक तो वह ठहरुआ कहलाता था और यदि और देर तक रुक गया तो वह टिकाऊ कहलाता था। रातका संसार अपने में निराला संसार था। वह इतना नीरस नहीं था, जितना कभी-कभी वहाँ झाँक लेनेवाले व्यक्ति को लगता था। वहाँ कक्षों में कॉफी उबलती दिखायी पड़ती; सिगरेटों का धुआँ उड़ता दिखायी देता और कभी-कभी खुली हुई मेजों में अच्छी सिगारें भी दीख पड़तीं। वहाँ कोमलता के साथ भरे हुए बड़े-बड़े मोमजामे के झोले होते, जो कभी-कभी प्रेमालाप के लिए अत्यन्त सुन्दर, आनन्ददायक, चरचराती हुई रजाई का भी काम दे देते।

आज रातको न तो कहीं कॉफी के बुलबुले सुनायी पड़े, न सरसराहट ही; और न ही एक सिगार तक पिया गया। भवन के प्रत्येक खंड में कम-से-कम एक-एक टिकाऊ अवश्य था। लोग आठ बजे से कुछ पहले ही अपने कार्यालयों में आने लगे थे और अब तो पर्याप्त कोलाहल हो गया था। मुख्य द्वारपाल लोग एक खंड से दूसरे खंड पर झाड़ू-बुहाड़ू के कार्य को व्यवस्थित करते हुए और झुँझलायी हुई मेहतरानियों को प्रसन्न करते हुए घूम रहे थे। अन्य किसी भी रातको ऐसा न होता। शुक्रवार ही सप्ताह का अन्त था।

"श्री बुलार्ड की मृत्यु हो गयी है।" यह बात दौड़ते हुए मुख्य द्वारपाल लोग चारों ओर फैला रहे थे; किन्तु स्त्रियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। वे सबकी-सब श्रीमती ओटूल के विचार की ही प्रतिध्वनि कर रही थीं, जो आयरलैंड की एक मात्र ट्रेडवे की मेहतरानी थी और इस कारण जिसने स्वयं नेतृत्व ग्रहण कर लिया था—"यदि रातभर जागरण ही करना है, तो इसके लिए कोई ऐसा स्थान ढूँढ़ो, जहाँ सच्चाई से पैसा कमानेवाले काम में बाधा न पड़ती हो।"

जो अकेला स्वर इसके विरुद्ध बोल सकता था, वह नहीं सुनायी पड़ा। अन्ना सुल्ज जो पिछले तेरह वर्ष से अधिकारी-कक्षको स्वच्छ किया करती थी, तेईसवें खंड के अंधेरे छज्जे में गंभीरतासे बैठी हुई थी और श्री शॉ के कार्यालय में होने वाली बैठक समाप्त होनेकी बाट देख रही थी। जब-जब कोई उसमें से बाहर निकलता, तब-तब अनेक बार उसे आशा बँधती पर इतनेमें ही कोई दूसरा भीतर आ घुसता। अब तो नीचे के खंडों के लगभग आधे दर्जन मनुष्य वहाँ भवनके इधर-उधर मँडराने लगे थे और इससे भी अधिक निरुत्सा-

हित करने वाली बात यह थी कि श्री वॉलिंग और श्री एल्डर्सन भी अभी-अभी ऊपर आकर श्री एल्डर्सन के कार्यालय में चले गये थे।

अन्ना ने गंभीरता के साथ अपनी विपत्ति स्वीकार कर ली। प्रमुख द्वारपाल जानता था कि अधिकारी-कक्ष में बहुत-से टिकाऊ लोग अभी आ इकट्ठे हुए हैं, इसलिए उसने कभी इस बातपर बातचीत ही नहीं की कि अन्ना को कितने दिन समयसे-अधिक काम करना पड़ता था। कुछ महीनों में जब श्री बुलार्ड अधिकांशतः नगर में ही रहते थे, तब उसे पच्चीस या तीस डॉलर तक अधिक मिल जाया करते थे। अब बैठे-बैठे वह यही अनुमान लगा रही थी और सोच रही थी कि क्या नया अध्यक्ष भी वैसा ही उदार होगा। यदि श्री शॉ ही अध्यक्ष होने वाले हों तो उन्होंने प्रारंभ अच्छा किया। इससे कम-से-कम आज ही दो घंटे अधिक समय का पैसा मिल जायगा और कौन जाने तीन का भी मिल जाय।

८.२१ रात

एल्डर्सन के पीछे डॉन वॉलिंग जबसे कार्यालय मे आया, तबसे बड़ी कठिनाई से दस-बारह शब्द कहे गये होंगे। उसने आशा की थी कि फ्रेड्रिक एल्डर्सन तत्काल शॉ के कार्यालय में प्रविष्ट हो जायगा। लिफ्ट से निकलकर एल्डर्सन का पहला पग उधर को ही घूमता हुआ प्रतीत होता था, पर फिर वह झिझककर घूम गया और वॉलिंग को पीछे-पीछे आने का संकेत देने के साथ वह अपने कार्यालय में चला गया।

पिछले दो मिनट तक एल्डर्सन अपनी नोटबुक में ही उलझा हुआ था और इतने धीरे-धीरे लिख रहा था मानो वह शब्दों का एक-एक अक्षर पढ़ रहा हो।

अन्त में वॉलिंग को मौन भंग करना ही पड़ा—"जान पड़ता है कि शॉने मुख्य विभागीय अध्यक्षोंमें से अधिकांश को बुला लिया है।" इस वक्तव्य के सुनते ही एल्डर्सन के मुँहसे निकल पड़ा—"इसमें तो कोई तुक नहीं दिखायी देता, कोई तुक नहीं।"

एल्डर्सन ने नगर के निम्न भागसे आते हुए जो निश्चित विश्वास प्रकट किया था, वह पूर्णतः समाप्त हो गया और डॉन वॉलिंग ने उस भाव के शीघ्र लौट आनेकी तात्कालिक आवश्यकता का अनुभव किया—"यदि आप मुझे यह कहने के लिए क्षमा करें, श्री एल्डर्सन—तो मैं समझता हूँ कि यह बात प्रत्यक्ष ही है।"

"क्या ?"

"कि शॉ दौड़ कर और कूदकर घोड़े की पीठ पर चढ़ जाना चाहता है। उसने सबको यही बताने के लिए बुलाया है कि लगाम उसीके हाथ में है।"

इन शब्दों का कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा। एल्डर्सन का मुँह कुछ निश्चय के साथ कठोर पड़ गया। उसने खड़े होकर कहा—"आओ, चला जाय।"

जब वह अपने कार्यालय से निकल कर शॉ के द्वार पर पहुँचा, तो उनकी गति में कुछ झिझक थी।

उसके ठीक पीछे-पीछे चलते हुए डॉन वॉलिंग ने देखा कि ज्योंही एल्डर्सन ने द्वार खोला, त्योंही लॉरेन शॉ ने ऊपर मुँह उठाया।

"ओह फ्रेड! अच्छा—अच्छा, तुम आ गये? बड़ी प्रसन्नता हुई!" शॉने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"अच्छा, डॉन भी? बहुत अच्छा, आइए—आइए। संभवतः आप लोग कुछ सुझाव दे सकें।"

वहाँ का विज्ञापन और प्रकाशन-व्यवस्थापक वान आरमंड वहीं शॉ की मेजके पास बैठा हुआ था।

"मैंने और वान ने एक बहुत अच्छी योजना बना ली है। पर संभव है, हम लोगोंसे कोई बात छूट गयी हो।" शॉ ने कहा—"टाइम्स और हैरल्ड ट्रिब्यून आदि न्यूयॉर्क के प्रातःकालीन समाचारपत्रोंको हम घंटे भर में तारसे मुख्य विवरण दे देते हैं। आर्थिक पत्रों के लिए एक विशेष कहानी बनानी होगी और उसका शेषांश संध्या के और रविवार के पत्रों के लिए पीछे भेज दिया जायगा। मूल कथा तो वही होगी, जो न्यूयॉर्क को दी जायगी; किन्तु जिन नगरों में हमारे कारखाने हैं उनके प्रातःकालीन सामचारपत्रोंके लिए कंपनी के सम्बन्ध में विशेष प्रभावशाली वक्तव्य रहेगा। इसके अतिरिक्त, अन्य तारसे भेजे जाने-वाले समाचारों के लिए छोटा विवरण होगा। हम 'टाइम्स' और 'न्यूजवीक' के व्यवसाय-संपादकों को फोन कर देंगे। इससे प्रारंभिक काम तो निबट जाता है। मासिक व्यवसाय-पत्रिकाओं के कार्यालय तो बन्द हो गये हैं, इसलिए उनके लिए बहुत समय है। 'रिटेलिंग डेली' पत्र रविवार को प्रकाशित नहीं होता, किन्तु हम उनके सोमवार के संस्करण के लिए सब प्रस्तुत कर रखेंगे।"

अप्रत्याशित रूप से उसकी आँखें एल्डर्सन की ओर घूम गयीं—"कोई बात मुझसे छूट गयी, फ्रेड?" यह प्रश्न इतने वेगशील समर्थन के साथ किया गया कि एल्डर्सन स्तब्ध रह गया और उसका उत्तर केवल नकारात्मक रहा।

डॉन वॉलिंग ने एल्डर्सन की इस स्तब्धता को अत्यन्त सहानुभूतिके साथ देखा, क्योंकि इस नाटक ने उसे भी परास्त कर दिया था। शॉ ने एक बार भी न तो कागज की ओर और न वान की ओर देखा। उसके स्वर से जान पड़ता था कि वह प्रकाशन-कला के ज्ञान का पूर्ण पंडित है।

वान आरमंड ने अपने सब कागज-पत्र इकट्ठे किये और वेगसे शॉसे कहा—"आपकी सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद !" कहते हुए वह चल दिया। इसी के साथ उसने सिर का एक झटका एल्डर्सन के लिए और उससे भी अधिक वेगपूर्ण झटका वॉलिंग के लिए दिया।

द्वार बन्द हो जाने पर एल्डर्सन ने कहा—"मैं समझता हूँ कि आरमंड इसका प्रयोग उस प्रकार से नहीं कर रहा है, जैसे किसी प्रचार की कहानी का किया जाता है।"

वॉलिंग को क्षोभ हुआ। यह बड़ी क्षुद्र टिप्पणी थी और एल्डर्सन ने अपने कहने के ढंग से उसे और भी साधारण बना दिया। उसका कारण भी वह समझ गया; क्योंकि वह भी शॉ के अत्यन्त भावहीन और शीलहीन व्यवहार से कुढ़ गया था। किन्तु एल्डर्सन की इस शीलहीनता के लिए कोई कारण नहीं था।

शॉ अपनी मेज की दराज से एक नया रूमाल निकाल कर उसे धीरे-धीरे रगड़ी हुई हथेलियों में दबाने लगा—"मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम आरमंड के निर्णय और उसकी सुरुचि पर पूर्ण विश्वास कर सकते हैं। क्यों, डॉन ?"

यह अंतिम प्रश्न दूसरा वेगशील आघात था। डॉन वॉलिंग झिझका। उसे शंका हुई कि शॉ जानबूझकर फ्रेड्रिक एल्डर्सन की सहायता से मुझे दूर करना चाहता है। उसने गोलमोल उत्तर दिया—"मैं समझता हूँ कि इसमें शोक-समाचार देनेके अतिरिक्त कोई और विशेष बात तो है नहीं।"

शॉने सिर हिलाया और कहा—"विभिन्न पत्रों और पत्रिकाओं की संपादकीय आवश्यकताओं के अनुसार यह समाचार विभिन्न परिमाण का और विभिन्न बातों पर बल देकर भेजा जाय। ठीक है ? क्या तुम कुछ और कहना चाहते हो, फ्रेड ?"

फिर यह प्रश्न अचानक वैसे ही सामने आ गया, जैसे धीरेसे चलाये हुए कोड़े के सिर पर पटाखा लगा हुआ हो। पिछले दो मिनट में शॉने वही काम तीसरी बार किया था। डॉन वॉलिंग को निश्चय हो गया कि यह पूर्व निश्चित कौशल के साथ किया जा रहा है। मुझे अब आगे सावधान हो जाना चाहिए।

शॉ कहने लगा—"समाचार देना भी जितना सरल दिखायी पड़ता है, उतना है नहीं। मैंने यही ठीक समझा कि आरमंड को तत्काल यहाँ बुला लूँ। जब मुझे यह बात पहले-पहल सूझी तो मेरी समझ में ही नहीं आया कि क्या करना चाहिए और मैं समझने लगा कि मुझसे पहले किसी और के ध्यान में यह बात आ गयी होगी, किन्तु प्रत्यक्ष किसी के ध्यान में आयी नहीं।"

यद्यपि बातका कौशल तो बदल गया था, किन्तु छुरी का आघात कम तीव्र नहीं था। डॉन वॉलिंग ने आशा की थी कि एल्डर्सन कुछ उत्तर देनेका प्रयत्न करेगा, किन्तु सौभाग्यवश उसने उत्तर दिया नहीं।

अपने सामने पड़े हुए एक कागज के पन्नेकी ओर देखते हुए शॉने कहा—"मैंने और भी छोटी-मोटी बातें निश्चित कर दी हैं। उनमें से कोई भी बड़े महत्व की नहीं हैं, किन्तु मैं उन्हें भी सूचना के रूप में भेज देता हूँ। अन्त्येष्टि-संस्कार सोमवार को साढ़े चार बजे होगा। मैंने कह दिया है कि—"

एल्डर्सन ने अत्यन्त तीव्र विस्फोट से भरे स्वर में रोक दिया। वह शब्द स्पष्ट तो नहीं सुनायी पड़ा, किन्तु कोई भी शब्द इससे बढ़िया रूपमें आश्चर्य और क्रोध को व्यक्त नहीं कर सकता था।

यह शॉकी धृष्टता थी कि वह आगे कूदकर अन्त्येष्टि-संस्कार का समय भी निश्चित कर दे। उसने एल्डर्सन की ओर देखा और उसे प्रतीत हुआ कि उसका जबड़ा दृढ़ था और उसका हाथ भी सधा हुआ था।

"अन्त्येष्टि-संस्कार दो बजे होगा।" एल्डर्सन ने कठोर मुद्राके साथ कहा। ये शब्द नहीं, अचूक चुनौती थी।

शॉ ने इस प्रकार अपने ओठों पर रूमाल रक्खा मानो वह अपने मुख पर प्रकट होनेवाले विक्षोभ को रोक रहा हो—"सेंट मार्टिन में ?"

"हाँ"।

"मैं समझा।" शॉ ने कोमलता से अपना गला साफ करते हुए कहा—"संभवतः मुझे ठीक सूचना नहीं मिली। जब मैंने गिरजाघर का अनुक्रम पत्र देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि दो बजे वहाँ कोई विवाह होने वाला है।"

डॉन वॉलिंग ने एल्डर्सन के मुख की ओर एक दृष्टि डाली। वह जानता था कि गिरजाघर वालोंसे बातचीत नहीं हुई है; क्योंकि उसने आते समय गाड़ी में ही कहा था कि यह एक काम तय करना रह गया है। उसने देखा कि एल्डर्सन को बड़ी करारी चोट लगी है। उसके मन में यह बात उठी कि कोई ऐसी बात कह दी जाय जिससे उसे क्षणिक सान्त्वना मिल जाय। वह यही

कहनेकी सोच रहा था कि अन्त्येष्टि-क्रिया के समयका इतना महत्व नहीं है, जिसपर इतना शास्त्रार्थ किया जाय। किन्तु वह इसे इसलिए नहीं कह पाया कि फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने उसे प्रधान विषय बना डाला था —"गिरजाघर के सम्बन्ध में कुछ किया तो जा सकता है।" एल्डर्सन ने अन्त में कहा।

"संभवतः।" शॉ ने अत्यन्त शालीनता के साथ स्वीकार कर लिया—"किन्तु एक और भी बात है। मैं समझता हूँ कि कारखाने के पुराने अधिकांश काम करनेवाले —वे लोग जो अन्त्येष्टि में सम्मिलित होना चाहेंगे वे सभी—तीन से सात बजेवाली पाली में ही प्राप्त हो सकेंगे। साढ़े चार बजे अन्त्येष्टि रख कर उन्हें भी सम्मिलित करना संभव होगा।"

एल्डर्सन ने टोका—"इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। कारखाना बन्द कर दिया जायगा।"

"दिन भरके लिए?" शॉने कोमलता के साथ पूछा ।

"हाँ, दिनभर के लिए।"

वॉलिंग ने एल्डर्सन को उत्तर देने से पहले, आँखसे संकेत करनेका विचार किया, किन्तु उस बुड्ढे का क्रोध इतना बढ़ चुका था कि वह तत्काल भभक पड़ा और उसने यह नहीं देखा कि मैं किस जाल में फँसा जा रहा हूँ। अभी कुछ महीने पूर्व कारखानों के संघका अध्यक्ष मर गया था और उसके उपाध्यक्ष मेक्स हार्टजेल ने लोकप्रियता प्राप्त करनेके लिए यह माँग की थी कि अन्त्येष्टि के दिन सब कारखानेवालों को भत्ते और वेतन-सहित छुट्टी दी जाय। ये वेतन-सहित छुट्टियाँ सदा झंझट की बातें रही हैं और ऐवरी बुलार्ड ने नयी परिपाटी स्थापित न करने की इच्छा से यह प्रार्थना ठुकरा दी थी। हार्टजेल ने यह बात संघके सदस्यों में फैलाकर उन्हें इतना उत्तेजित कर दिया था कि सब लोग कारखाना छोड़कर बाहर निकल आये थे। अन्त में हड़ताल ज्यों-त्यों करके दूर हटी और शॉ ने स्पष्टतः समझ लिया था कि एक बार यह जो आदर्श उपस्थित किया गया है, वह दूसरी बार उत्तेजना उत्पन्न किये बिना अब तोड़ा नहीं जा सकता।

"श्रमिक-संघ की परिस्थिति को दृष्टि में रखकर"—वॉलिंग ने कहना प्रारंभ किया और फिर अपना स्वर इस आशा से धीमा कर दिया कि एल्डर्सन की स्मृति को उकसाने के लिए इतना ही पर्याप्त होगा।

किन्तु एल्डर्सन ने ऐसी मुद्रा धारण की मानो उसने कुछ सुना ही न हो। वह शॉ की ओर घूरने लगा और उसका शरीर क्रोध से काँपने लगा—

"मैं समझता हूँ तुम यह सोच रहे होगे कि इसमें कितने रुपये की हानि हो जायगी।"

शॉ ने भली प्रकार समझा कर कहा—"यह मेरी पहली दृष्टि नहीं है। मैं उस दृष्टि से कह रहा था जिसका डॉन ने अभी संकेत किया है—यूनियन की परिस्थिति। यद्यपि यह बात तुम ठीक कहते हो फ्रेड, कि रुपयेकी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। श्री बुलार्ड ने श्रमिक-संघ से जो कहा था, वह मुझे स्मरण है, कि सवेतन छुट्टी का अर्थ है—कंपनी को लगभग सत्तासी हजार डालर की हानि। ये आँकड़े पिछली वेतनवृद्धि से पूर्व के हैं और नये वेतन—दरपर तो ये और भी अधिक बढ़ जायँगे।"

"मैंने यही सोचा था।" एल्डर्सन ने बेतुके ढंग से कहा।

वॉलिंग ने शॉ के इस व्यवहार की मन-ही-मन प्रशंसा की कि उसने किसी प्रकार भी यह न जानने दिया कि मैं झुंझला गया हूँ।

शॉ कहता गया—"संघ के प्रतिनिधियोंको श्री बुलार्ड ने जो तर्क दिये थे, उनमें से एक यह भी मुझे स्मरण है कि सवेतन छुट्टी को शोक-दिवस नहीं कहा जा सकता; क्योंकि अन्त्येष्टि में तो लोग कम सम्मिलित होंगे। हाँ, ज्वायलैंड पार्क की भीड़ अवश्य बढ़ायेंगे।"

एल्डर्सन के पास इसे स्वीकार करनेके अतिरिक्त कोई चारा ही नहीं रह गया था। किन्तु यह भी स्पष्ट था कि वह स्वीकार करने जा नहीं रहा था।

शॉ कहता गया—"एक और भी बात है—जो छोटी, किन्तु है विचारणीय। साढ़े चारका समय ऐसा है कि शिकागो का खेलकूद भी, जो इस अन्त्येष्टि अवधि में किया जाता है, बन्द करना सुविधाजनक होगा।"

वॉलिंग ने अपनी मुट्ठियाँ बाँध लीं। सुविधाजनक शब्द बड़ा बुरा चुना गया था और उसे स्वयं लग रहा था कि शॉ उसका प्रयोग न करता तो अच्छा होता। इससे अर्थ तो बहुत स्पष्ट हो गया। किन्तु भीतर-ही-भीतर उसे ऐसा लगा कि एल्डर्सन के मन में जो क्रोध पहले से समाया हुआ है, वह और भी अधिक भड़क उठेगा।

"सुविधाजनक?" एल्डर्सन ने बड़े तीव्र आवेग से पूछा—"सब बातोंकी ओर तुम्हारी यही प्रवृत्ति जान पड़ती है, शॉ कि श्री बुलार्ड की मृत्युको जितना सुविधाजनक बनाया जा सके उतना बनाना।" एल्डर्सन का उठना और द्वारकी ओर चलना ऐसा अचानक और सहसा हुआ कि वॉलिंग भी अचानक पकड़ में आ गया। ज्योंही एल्डर्सन लुप्त हुआ और वह चलनेके लिए खड़ा हुआ, शॉ ने मेज के पीछे से आगे आकर आधे में ही उसे रोक लिया।

शॉके स्वर ने अचानक ऐसी आत्मीयता धारण कर ली, जो उसमें पहले नहीं थी—"कहो, डॉन ? मैंने कुछ भूल की या बुड्ढा ही कुछ आपे से बाहर हो गया ? मैं जानता हूँ कि वह कुछ दिनोंसे स्वस्थ नहीं है। किन्तु तुम इसे मुझसे अधिक भली प्रकार जानते हो। तुम्हारी क्या सम्मति है ?"

"समझना कुछ कठिन नहीं है। अभी दो ही घंटे पूर्व तो हम लोगों ने श्री बुलार्ड की मृत्युका समाचार सुना है।"

'हम लोगोंने' शब्द को शॉ ने पकड़ लिया।

"क्या इससे मैं यह समझूँ कि जो कुछ मैंने किया, उससे तुम भी सहमत नहीं हो?"

"पूर्णरूपसे तो नहीं।"

शॉने चिंता प्रकट की—"किस विशेष बातसे तुम सहमत नहीं हो? जो मैंने निर्णय किया है, उसके अतिरिक्त और तो मेरी समझ में कुछ कर्तव्य नहीं था। समाचारपत्रों को सूचना देना आवश्यक था और शीघ्र भी। ठीक है न?"

वॉलिंग झिझका। किन्तु समर्थन न करना असंभव था।

"अन्त्येष्टि का समय और छुट्टी की नीति तो परिस्थिति के कारण ही निश्चिय की गयी थी।" शॉ कहता गया—"हाँ! यह हो सकता है कि मैं कोई विशेष बात छोड़ गया होऊँ। यदि कोई ऐसी बात छूट गयी हो और यदि तुम मेरा ध्यान दिला दो, तो मैं इसे व्यक्तिगत कृपा समझूँगा।"

"मैं आपके साथ तर्क नहीं कर रहा हूँ।" वॉलिंग ने अपनेको यह कहते सुना।

"किन्तु मुझे तुम्हारा पूरा समर्थन प्राप्त नहीं है, क्यों? मैं समझता था कि मैं इसपर भरोसा करूँगा, डॉन—तुम्हारे समर्थन पर।"

यह बड़ी साहसपूर्ण अभ्यर्थना थी और शॉ ने आवश्यकता से कुछ अधिक ही कर डाला। किन्तु अचानक वॉलिंग ने समझ लिया कि यह सारा नाटक शॉ अपने लाभ के लिए खेल रहा है। वह सूखा कुआँ, जिसमें से एल्डर्सन के प्रति डॉन वॉलिंग का आदर सूख गया था, फिर उस वृद्ध के प्रति दया के जलसे भर उठा।

"कोई सुझाव नहीं?" शॉने पूछा—"कोई आलोचना नहीं?"

वॉलिंग रुका और मन में यह विचार करने लगा कि कुछ भी कह देने में न तो कोई तुक है, न उद्देश्य। यह मेरी नहीं, शॉ और एल्डर्सन की लड़ाई है। किन्तु भीतरी सच्चाई ने उसे प्रेरणा दी—"अब जब आपने पूछा है, तो मैं बता

ही दूँ। मुझे ऐसा लगा कि आप श्री फ्रेड के प्रति कुछ रूखा व्यवहार कर रहे थे।"

"रूखा! मेरी समझ में नहीं आता कि यह बात तुम्हारे मनमें आयी कैसे?"

"आप जानते हैं कि वह ऐवरी बुलार्ड के निकटतम था—व्यक्तिगत रूपसे—हम सब लोगोंकी अपेक्षा अधिक निकट। यह स्वाभाविक है कि उसे यह चोट कुछ गहरी लगी होगी। थोड़ी देर के लिए वह असंतुलित हो गया होगा। मैं जो कुछ कहनेका प्रयत्न कर रहा हूँ, उसका महत्व संभवतः आप नहीं समझेंगे। किन्तु—"

"मैं समझता क्यों नहीं हूँ।" शॉ ने शीघ्रता से कहा—"और मैंने उस बातको ध्यान में रखने का पूर्ण प्रयत्न भी किया। मैंने समझा था कि यह बात तुम समझ जाओगे। तुमने देखा होगा कि मैं फ्रेड के प्रत्यक्ष अमित्रतापूर्ण व्यवहार से क्षुब्ध हो सकता था। फिर भी मैंने पूर्ण प्रयत्न किया कि उस क्षोभ का प्रदर्शन न करूँ।"

"ठीक है—जाने दीजिए; जो हुआ-सो हुआ।"

ज्योंही वह द्वार की ओर घूमा, त्योंही शॉ के हाथने उसका हाथ पकड़ लिया—"ठहरो, डॉन। मैं समझता हूँ तुम उस दृष्टि से नहीं देखोगे—तुम विशेषतः।"

"मैं विशेषतः! क्यों?"

"क्योंकि—डॉन! मैं सदा यही समझता रहा हूँ कि मेरा और तुम्हारा दोनों का एक समान स्वार्थ है। मैं यह आशा कर रहा था कि हमें एक साथ सन्निकट होकर काम करनेका अवसर मिलेगा। संभवतः अब मिल जायगा।"

"संभवतः।"

"ठीक है।"

शॉ तो प्रसन्न जान पड़ा; किन्तु वॉलिंग ने यह आवश्यकता समझी कि मेरे इस कहने से शॉ के मन में जो कुछ समझौते की भावना आ गयी है, उसकी मैं ठीक सीमा स्पष्ट कर दूँ। उसने धीरे से कहा—"जहाँ तक समान स्वार्थ की बात है, तो मैं कंपनी के स्वार्थको किसी भी व्यक्ति के स्वार्थ के साथ समान समझता हूँ।"

"तब यह बात हम दोनों की समान है। हाँ, एक बात कह दूँ। क्या तुम कृपा करके दो बातों में मेरी सहायता करोगे? अभी बहुत-से लोग मुझसे मिलनेके लिए बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं। और—"

"वह तो मैंने देखा।" वॉलिंग बीच में ही बोल उठा और उसने अपना स्वर ऐसा साधा मानो प्रश्न कर रहा हो।

"मुझे ऐसा लगा कि बहुत-सी बातें ऐसी पड़ी हुई हैं, जो श्री बुलार्ड के निर्णय के लिए रुकी हैं।" शॉने समझाया—"उन्हें कार्यसमिति के द्वारा निश्चय करने में विलम्ब हो जायगा और कार्य की गति में बाधा होगी। इसलिए मैंने सोचा कि यदि मैं सारी परिस्थिति शीघ्रता से समझ लूँ तो सबको कुछ लाभ ही होगा। इससे हमारा सप्ताहांत भी ठीक बीत जायगा और फिर हमारी मेजें भी सोमवार के कार्य के लिए साफ रहेंगी।"

शॉ झिझका और तब जैसे उसने और अधिक सफाई की [illegible] हो, कहता गया—"मैं बड़ी कठिन परिस्थितियों को संभाल रहा हूँ। तुम जानते ही होगे कि दक्षिण की मिलों से लकड़ी का चालान निश्चित समय से चार सप्ताह विलंबित हो गया है। क्रय-विभाग ने अभी सूचना दी है कि वॉटर स्ट्रीट के कारखाने में तीन सप्ताह से भी कम में लकड़ी समाप्त हो जायगी और तत्काल कुछ न किया गया, तो कारखाना बन्द कर देना पड़ेगा। क्या तुम्हें सूचना मिली थी ?"

लकड़ी मँगानेका काम डॉन वॉलिंग के सामान्य उत्तरदायित्व से बाहर की बात थी। किन्तु कुछ दिन पूर्व भोजनके समय जेसी ग्रिम ने यह परिस्थिति बतला दी थी। इसलिए अब शॉ की बातका उत्तर देने में आनन्द प्राप्त करने की इच्छासे उसने कहा—"मैं समझता हूँ जेसी ने सब व्यवस्था कर दी है और उत्तर-पूर्व के कुछ गोदामों को लगभग ढाई लाख फीट बोर्ड भेजनेका ठेका दे दिया गया है।"

"मैं भी यही समझता था।" शॉ ने आह भर कर कहा जिससे जान पड़ता था कि उसका भ्रम दूर हो रहा है—"दुर्भाग्यवश ये आदेश दिये ही नहीं गये। हमें यह अधिकार है यह सत्य है, किन्तु इस अधिकार का प्रयोग नहीं किया गया। क्रय-विभाग ने उसे रोक रखा था ताकि जेसी ग्रिम उसपर श्री बुलार्ड का आदेश ले आवें।"

डॉन वॉलिंग को काठ मार गया।

"तुम कुछ अधिक गंभीर हो गये हो क्या ?" शॉ ने मन्द मुस्कान के साथ पूछा—"सौभाग्यवश सोमवार की दोपहरी तक हमें यह अधिकार है। इसलिए अभी इस समस्या को सुलझानेका अवसर है। मैं जेसी से भी बात किये लेता हूँ। मैं समझता हूँ, वह नगरके बाहर गया हुआ है।"

"हाँ, मैरीलैंड गया है।" वॉलिंग ने अपनेको कहते हुए सुना और अपना स्वर उसे कहीं दूर से और टूटा-टूटा-सा सुनायी पड़ा। उसके मन में लॉरेन

शॉ के विरोध की बात सूझ रही थी. . . .जितना ही तुम उस मनुष्य से घृणा करते हो, उतना ही वह अपनेको योग्य सिद्ध कर रहा है।

"क्या किसी प्रकार यह जान सकते हो कि जेसी से कैसे सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है?"

"मैं समझता हूँ, फ्रेड ने उसके लिए संदेश भेज रखा है कि जब वह आये तो फोन कर ले।"

शॉके नीचे के ओठ में मुस्कराहट घूम गयी। "यदि हमारे मित्र एल्डर्सन को बहुत अधिक आपत्ति न हो तो, क्या तुम कृपा करके उनसे कह दोगे कि श्री ग्रिम मुझसे भी बात कर लें?"

"कह दूँगा।"

यह स्वाभाविक प्रस्थान की सीमा थी। वह द्वार में पहुँच गया।

"ओह, डॉन!" शॉ का स्वर उसके पास तक पहुँचा—"यदि तुम्हारे पास कुछ थोड़ा-सा समय हो—?"

"मुझे दुःख है, म भूल गया। क्या करना है?"

"यदि तुम्हें कष्ट न हो तो ऊपर जाकर यह देख लो कि कुमारी मार्टिन की क्या स्थिति है। मैंने उसे बाहर के कारखानों और शाखाओं में तार भेजनेके कार्य में लगा दिया है। जाकर देख लो कि काम कहाँ तक हुआ है। ठीक है? मौरिसन! भीतर आओ।"

मौरिसन बाहर बेंच पर बैठे हुए लोगोंमें से एक था। डॉन वॉलिंग ने उस कार्यालय-व्यवस्थापक के मुख पर उस समय उत्सुक आधीनता की मुद्रा देखी, जब वह अचानक उठकर खड़ा हुआ और शॉके पीछे-पीछे उसके कार्यालय में चला गया। राजा मर गया, राजा चिरजीवी हो!—वॉलिंग ने मन-ही-मन कहा।

वह अभी आधी दूर ऊपर गया होगा कि उसकी चेतना ने झट उसे स्मरण दिलाया कि एल्डर्सन अपने कार्यालय में बैठा मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। पीछे उलटकर उसने देखा कि एल्डर्सन के बन्द द्वार के कॉच के पल्ले से फर्श पर पीले प्रकाशकी एक रेखा पड़ रही थी। वह फिर नीचे उतर आया। किन्तु पहले ही पग के साथ उसने ऊपर अपने सिरपर कोई स्वर सुना और देखा कि सीढ़ीके ऊपर के डंडे पर ऐरिका मार्टिन खड़ी है। उसके कार्यालय के खुले हुए द्वारसे जो प्रकाश आ रहा था, वही प्रकाश वहाँ है। उसका मुख तथा उसकी आकृति उस अंधकार में ऐसी प्रतीत होती थी मानो किसी अन्धकारमय शून्य के तीर पर कोई आत्मा हो, जिसे मार्ग न मिल रहा हो।

वेगसे एक साथ दो-दो सीढ़ियाँ पार करते हुए वह उसके सामने पहुँच गया और एक सीढ़ी नीचे खड़े होकर उसके मुखकी ओर देखने लगा।

"ठीक तो हो, कुमारी मार्टिन?"

कुमारी मार्टिन का शरीर सहसा वेग से घूम गया और वह अपने कार्यालय में चली गयी।

उसके पास तक पहुँचने में डॉन को जो पाँच-छः पग चलना पड़ा, उतनी देर में तो उसने अपनी मुद्रा संभाल ली और जब वह डॉन की ओर देखने के लिए घूमी तो उसकी आँखें इतनी स्पष्ट थीं जितना सूखे हुए आँसू उन्हें स्पष्ट कर सकते थे।

"सब ठीक ही है।" उसने कहा और अपनी मेज की ओर इस प्रकार देखने लगी मानो जो कार्य उसने किया था, वह डॉन की ओर घूम जाय।

उसने प्रतिलिपियों का वह ढेर देखा और ऊपर वाली प्रति ही पढ़कर उसकी समझ में आ गया कि इन पिछले कुछ क्षणों में उसे कितनी बार ऐवरी बुलाड की मृत्यु का मस्तिष्क चूर कर देने वाला समाचार दुहरानेके लिए बाध्य होना पड़ा है। करुणा की भावना से आगे बढ़कर उसने ऐरिका मार्टिन के कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

तत्काल अन्तःप्रेरित वेगसे ऐरिका ने अपना शरीर डॉन के शरीर पर डाल दिया और उसका झुका हुआ सिर उसके कंधों के बीच आ गया। तब डॉन ने अपने अत्यन्त समीप हृदय हिलानेवाली सिसकी और दुःखका ऐसा कंपन-भरा रुदन सुना मानो वह उसके अपने गलेसे निकल रहा हो। उसकी भुजाएँ कस गयीं और उसके मन में मेरी की उस रातकी स्मृति कौंध गयी जब उसके पिता की मृत्यु हुई थी।

तभी ऐरिका मार्टिन ऐसे वेगसे हट गयी मानो प्रारंभ और अन्त में केवल एक ही क्षण बीता हो। किन्तु वह इस बातको स्पष्ट करनेके लिए पर्याप्त था कि उसे कितना दुःख हुआ है और उसने अचेतनावस्था में जो कर दिया, उसके लिए वह कितनी दुःखी है।

"मैं—मुझे बहुत दुःख है, श्री वॉलिंग...मैं—"

डॉन का हाथ उसकी पीठपर पहुँचते-पहुँचते उसकी बाह तक पहुँच गया और उसने उसे कसकर पकड़ लिया—"दुःखी मत हो—दुःखी मत हो! मैं जानता हूँ कि तुम्हारी क्या भावना है। विश्वास करो, मैं समझता हूँ।" वह स्वयं समझ रहा था कि मैं जो कुछ भी कहूँगा उसका कोई अर्थ नहीं होगा।

ऐरिका मार्टिन ने डॉनकी ओर देखा और डॉन ने उसकी आँखों में वह कृतज्ञता देखी, जो मेरी के मुख के अतिरिक्त अन्य किसी के मुख में उसने आजतक नहीं देखी थी। तत्काल उसके मन ने कहा कि अब इसे अकेले छोड़ देना चाहिए। यही उसने किया और उसके पीछे धीरे से द्वार बन्द कर दिया।

सीढ़ी के ऊपर खड़े होकर उसने फिर विचार किया। यह कितनी विचित्र बात है कि लोग जैसे दिखायी देते हैं उससे कितने भिन्न हैं. . .और, इससे भी विचित्र बात यह है कि जो गुण वे छिपाने का अधिक प्रयत्न करते हैं, वे ही उन गुणोंकी अपेक्षा अधिक आकर्षक होते हैं, जो वे संसार को दिखाते रहने का आग्रह करते रहते हैं।

एल्डर्सन के द्वार से पीला प्रकाश अब भी निकला आ रहा था। उसका मन करुणा से द्रवित हो उठा और वह नीचे चला अया। उसने शॉ से जो यह कहा था कि ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु से एल्डर्सन को बहुत तीव्र आघात लगा है, वह पिछले एक क्षण में सार्थक सिद्ध हुआ था। किन्तु अब जो सहानुभूति थी, वह करुणा के इतने समीप पहुँच चुकी थी कि आशा की अंतिम चिनगारी भी बुझ गयी—फ्रेड एल्डर्सन अब ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का कभी अध्यक्ष नहीं होगा। यह स्पष्टतः असंभव है।

ज्योंही डॉन वॉलिंग ने द्वार खोला, त्योंही उसने जान लिया कि एल्डर्सन ने अपनी हार मान ली है। वह बूढ़ा अपनी मेजपर थका-सा, निःसत्व हुआ बैठा था। उसके मुखसे तनाव और क्रोध उतर गये थे और क्षमा याचनापूर्ण प्रायश्चित्त की मुद्रा झलकने लगी थी।

"मुझे दुःख है, डॉन ? मैंने सब गड़बड़ कर दिया। किया न ?"

"यह तो मैं नहीं कहूँगा, फ्रेड। तुम......"

एल्डर्सन ने हाथ उठाकर उसे टोक दिया। उसका हाथ काँप रहा था— "नहीं, नहीं—तुम्हें मुझसे निराशा हुई। इसके अतिरिक्त कोई उपाय ही नहीं था। मुझे स्वयं अपने से निराशा हुई है। मैंने सोचा था कि मैं उसे सँभाल ले जाऊँगा, पर सँभाल न सका।"

यह प्रत्यक्ष स्वीकृति थी और डॉन वॉलिंग ने वैसा ही व्यवहार किया जैसा वह ऐसे समय किया करता था, जब कोई उसके सम्मुख दुर्बलता दिखाता था—"मैं जानता हूँ फ्रेड, कि शॉ के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या धारणा है और—"

"नहीं, यह शॉ नहीं था—शॉ बिलकुल नहीं था। तुम समझे नहीं, डॉन ? शॉ के लिए तो मैं तैयार था। मैं उसे समझ भी लेता। पर वह नहीं था। यही

तो मैंने भूल की। यह समझकर कि मैं शॉ से लड़ रहा हूँ। नहीं, नहीं: उनसे नहीं लड़ रहा था। मैं समझता हूँ। तुमने भी नहीं पहचाना।"

"फ्रेड, मैं..."

"नहीं, मुझे टोको मत। मैं तुम्हें समझा देना चाहता हूँ। तुम्हें समझना पड़ेगा। यदि तुम नहीं समझोगे तो तुम मेरी सहायता नहीं कर सकते। मैं ऐवरी बुलार्ड से लड़ रहा था। जब मैं नीचे था, तभी म यह बात जान रहा था और लिफ्ट में चढ़ते समय तक समझता रहा। इसीलिए मैं अपने कार्यालय में गया था.... अपनेको आश्वस्त करने के लिए कि मैं इसे पार कर लूँगा.. पर कर नहीं पाया। तुम समझते हो कि मैं शॉ से डर गया। क्यों? नहीं; यह बात नहीं थी। यह तो बहुत सरल था...जिससे तुम घृणा करते हो उससे लड़ना बहुत सरल है। यही तो सारी कठिनाई है... मैं ऐवरी बुलार्ड से नहीं लड़ सका। मैं कभी नहीं लड़ सका।"

डॉन को ऐसा लगा जैसे यह दूसरे बचपन का प्रलाप हो और जब एल्डर्सन अचानक पुनः कहने लगा तो उसने उसका कोई गंभीर अर्थ निकालने का प्रयास करना ही बन्द कर दिया—"तुम्हें यह जानना होगा, डॉन! ऐवरी बुलार्ड मुझे अध्यक्ष बनाना नहीं चाहता था। वह मुझे उसके अतिरिक्त कुछ नहीं बनाना चाहता था , जो मैं अब हूँ। नहीं, ठहरो! यह सत्य है। यदि यह सत्य न होता तो उसने मुझे कार्यवाहक-उपाध्यक्ष बना दिया होता। अभी अंतिम बार नहीं, वरन पहली बार ही... जब उसने यह पद फिट्जेराल्ड को दिया था।"

करुणा की माँग थी कि इस भावको रोक दिया जाय—"किन्तु वह तो विलय की शर्तों का एक अंग था, फ्रेड! फिट्जेराल्ड इसलिए आ गया, क्योंकि.."

"नहीं डॉन, नहीं; यह सत्य है कि ऐवरी बुलार्ड मुझे चाहता ही नहीं था। मैं इस विषय में बड़ा चिंतित हूँ। नहीं, अपने लिए नहीं.. क्योंकि वह किसी दूसरे को चुनने के लिए रोके हुए था। तुम जानते हो, वह मेरी भावनाओं को आघात नहीं पहुँचाना चाहता, डॉन—दो बार मुझे टालकर। मैं उससे बात करना चाहता था। कह देना चाहता था कि मुझे वास्तव में चिन्ता नहीं है। तुम आगे बढ़कर किसी और को नियुक्त कर दो।"

डॉन वॉलिंग के मस्तिष्क के सामने एक प्रश्न कूद आया और झिझक होने पर भी वह बिना पूछे न रहा—"फ्रेड! यदि ऐवरी बुलार्ड किसीको नियुक्त करता भी तो वह कौन होता?"

एल्डर्सन ने अपनी मुट्ठियाँ बाँध लीं—"इसका मुझे भय था. . मैंने क्यों नहीं पूछा. . . मैंने क्यों नहीं उससे बातें कर लीं?"

"क्या वह शॉ होता?" डॉन वॉलिंग ने इस प्रश्नकी क्रूरता तो समझ ली, किन्तु एक बार पूछकर उसने समझ लिया कि पूछना ठीक ही था।

जैसे किसी बच्चे को भावात्मक आवेग में कोई थप्पड़ लगा दे, वैसे ही एल्डर्सन ने एक क्षण उसकी ओर घूरकर देखा और जब वह बोला, तब उसकी आँखें स्पष्ट होती हुई दिखायी दीं। उस समय उसके स्वर के प्रलाप की तान मन्द पड़ गयी थी—"हाँ, हो सकता था। किन्तु जो कुछ आज तीसरे पहर मैंने देखा, उसे मैं ऐवरी बुलार्ड को बता सकता तो नहीं।" वह क्षणभर रुका मानो वह किसी बात पर विचार कर रहा हो और तब निश्चय करके कहने लगा—"कुछ भी हो, डॉन! शॉ नहीं हो सकता। उसे होने ही नहीं देना चाहिए।"

डॉन वॉलिंग ने अचेतन रूप से उसका समर्थन किया।

"जेसी होना चाहिए।" एल्डर्सन ने कहा—"यही एक उपाय है जिससे शॉ को रोका जा सकता है।"

"जेसी?"

एल्डर्सन ने अपनी नोटबुक इस प्रकार मोड़कर अपने सामने खोल दी कि वॉलिंग भी उसे पढ़ सके। अपनी ताम्रपत्रवाली लिपि में एल्डर्सन ने दो आमने-सामने स्तम्भों में नाम लिख रखे थे।

ग्रिम. . . . . शॉ

एल्डर्सन. . . . . डडले

वॉलिंग. . . . . कासवेल

"क्या तुम समझते हो कि मत इस प्रकार होंगे, फ्रेड?"

"हाँ; मैं जेसी का समर्थन करूँगा और मेरा विश्वास है तुम भी करोगे कम-से-कम शॉके विरुद्ध।"

पूर्व वचन देनेसे वॉलिंग ने अपने आपको रोक लिया—"यह कैसे समझते हो कि डडले भी शॉको मत देगा?"

"वे लोग पिछले कुछ महीनों में 'चोर-चोर मौसेरे भाई' रहे हैं। तुमने देखा नहीं कि शॉ किस प्रकार आज उसे विमान के अड्डे पर पहुचानेके लिए कूद पड़ा था?"

डॉन वॉलिंग ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया और उसे स्मरण हो आया कि पिछले फीडरल क्लब के नृत्य में डडले के भोज में शॉ—परिवार भी आया था।

"और जार्ज कासवेल तो शॉ के लिए मत देगा ही।" एल्डर्सन कहता गया।

"तुम ऐसा सोचते क्यों हो?"

"कासवेल ने ही तो श्री बुलार्ड से कहकर इस बेतुके आदमी को रख लिया था। नहीं, शॉ तो कासवेल का ही आदमी है। इसपर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

"और जूलिया ट्रेडवे प्रिंस किधर रहेगी?"

"यही तो मैं समझने का प्रयत्न कर रहा था।" एल्डर्सन ने धीरेसे कहा—"मेरी समझ में नहीं आता कि इसे किधर रखें।"

वॉलिंग ने नोटबुक की ओर देखा.. तीन के विरुद्ध तीन—"जिस प्रकार से तुमने यह बनाकर रखा है, फ्रेड! उससे जान पड़ता है कि निश्चय करने वाला मत उसीके हाथ में है।"

"मैं जानता हूँ, इसलिए—हाँ, मैंने सोचा कि मैं जाकर मार्ग में श्रीमती प्रिंस से मिल लूँ। यह मुझे करना ही पड़ेगा। तुम्हें स्मरण होगा कि आज संध्या को उसने मुझे फोन पर बुलाया था... जब कुमारी मार्टिन मुझे कार्यसमिति की बैठक में से बुलाकर बाहर ले गयी थी।"

"हाँ।"

"वह श्रीमती प्रिंस का ही फोन था। किसीने उसे न्यूयॉर्क से फोन किया था, जो उससे ट्रेडवे के शेयर लेना चाहता था। यही बात मैं शॉ के सम्बन्ध में कुछ मिनट पूर्व बताने लगा था। मैं निश्चय तो नहीं कह सकता किन्तु..."अपने पीछे अचानक द्वार खुलते हुए देखकर दोनों चौंक उठे।

"शुभ रात्रि, सज्जनो!" शॉ ने बलात् प्रसन्नता के साथ कहा—"मैं समझता हूँ, मैं प्रातःकाल आप दोनों से मिलूँगा?"

"शुभ रात्रि!" वॉलिंग ने अपने को अपने-आप कहते हुए सुना और उसीके साथ-साथ एल्डर्सन की भी आवृत्ति की ध्वनि सुनायी दी। द्वार बन्द हो गया। बिना कुछ समझे हुए ही वॉलिंग अपनी साँस रोके खड़ा रहा।

"क्या तुम समझते हो कि वह सुन रहा था?" एल्डर्सन ने कुछ देर शान्ति के पश्चात् धीरे से कहा।

"सुनता भी रहा होगा, तो कुछ सुनायी न पड़ा होगा। द्वार बन्द था।"

एल्डर्सन ने तो सिर हिलाया, किन्तु बिना आश्वासन के—"मैं समझता हूँ कि अब हम लोगों को भी चल देना चाहिए। अब हम कुछ और तो कर नहीं सकते।"

बाहर लिफ्ट की प्रतीक्षा करते हुए डॉन वॉलिंग ने ऊपर सीढी पर देखा। एरिका मार्टिन के कार्यालय की बत्ती बढ़ चुकी थी। एक मेहतरानी जल्दी-जल्दी अपनी झाड़न खींचती हुई उनकी ओर आयी।

"दुःख है कि आप लोगों को इतनी देर तक रोक रखा।" वॉलिंग ने क्षमा-प्रार्थना के स्वर में कहा।

"और भी न जाने कितनी देर होती।" उसने कोमलता के साथ कहा—"किन्तु आप लोग अंतिम हैं। उनके साथ तो इससे भी अधिक देर तक रुकना पड़ता था।" उसके भूरे हाथ ऊपर सीढ़ीकी ओर संकेत करते हुए उठ गये—"मैं समझती हूँ कि उनकी अन्त्येष्टि में कोई भी जा सकता है ?"

"हाँ, हाँ; क्यों नहीं ?"

"कब हो रही है ?"

वॉलिंग ने अनुभव किया कि उसकी साँस घुट रही है और तब उसने बिना हिचकिचाहट के फ्रेड्रिक एल्डर्सन को कहते हुए सुना—"सोमवार को साढ़े चार बजे सेंट मार्टिन में।"

"अच्छी अन्त्येष्टि होनी चाहिए, उनके जैसे बड़े आदमी की।" उसने उस अंधेरे दालान की ओर नीचे बढ़ते हुए कहा और उसका स्वर उसीके साथ मन्द पड़ गया।

लिफ्ट का द्वार खुला। लुइजी उनके मुख नहीं देखना चाहता था। इस-लिए उसने अपना सिर इस प्रकार घुमा लिया कि उसकी आँखें छिपी रहें। द्वार बन्द हो गया और लिफ्ट उस स्तम्भ में होकर नीचे जाने लगा।

वे जब लिफ्ट से बाहर निकले तो एल्डर्सन ने अपनी घड़ी की ओर देखा। नौ बजकर दस मिनट हो गये थे। उसने घूमकर कहा—"लुइजी, आज नौ बजे घड़ी को क्या हो गया ? मैं कान लगाये बैठा था, किन्तु कुछ सुनायी नहीं पड़ा।"

"श्री शॉ ने उसे बन्द कर देने के लिए कह दिया था; इसलिए वह नहीं बजी।" लुइजी ने कहा और द्वार बन्द कर दिया। डॉन वॉलिंग ने एल्डर्सन की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा की; किन्तु कुछ हुई नहीं। वे साथ-साथ दालान से होते हुए संध्याके झुटपुटे में निकल गये।

"मैंने जेसी के लिए संदेश छोड़ दिया था कि मैं नौ बजेतक कार्यालय में रहूँगा।" एल्डर्सन ने धीरेसे कहा—"मैं इसलिए समय का निश्चय कर लेना चाहता था।"

केंट काउन्टी, मेरीलैंड, ९.१४ रात

जब जेसी ग्रिम उस पहाड़ी पर पहुँचा, जहाँ से वह प्राय: किलफौक कोव की प्रथम झाँकी पा जाता था, तब आकाश से झुटपुटे की अंतिम क्षीण लालिमा लुप्त हो रही ही थी। उसने आँखें गडाकर देखा तो दूरपर प्रकाश के तीन बिन्दु दिखायी दे रहे थे। एक लाल और चमकदार, दो पीले और स्थिर। यह लाल प्रकाश उस ढोल पर था, जिससे जान पड़ता था कि यहाँ से तट और धारा अलग-अलग होती है। पीला प्रकाश रसोईघर की खिड़कियों का था। इनमें से एक तो लुपगुप हो रहा था जिससे उसने कल्पना की कि मेरी पत्नी सारा ही खिड़की से बाहर आकर मेरी बाट देख रही होगी। सारा को यह बतानेका कोई साधन नहीं था कि मैं आज देरीसे लौटूँगा, क्योंकि अभीतक टेलीफोन कंपनीवालों ने बड़ी सड़क से वहाँ तक तार नहीं खींचे थे।

विलंब के कारण ही जेसी ग्रिम को यह प्रलोभन हुआ कि टील स्टोर पर बिना रुके ही घर घूम चलूँ। किन्तु उसने सोचा कि एक-दो मिनट रुक जाना बुरा नहीं होगा। क्योंकि संभव है, सारा ने वहाँ संदेश छोड़ा हो कि उसे क्या मँगाना है। कभी-कभी वह ऐसा कर देती थी। वह जानती थी कि मैं वहाँ ठहरा करता हूँ।

टील स्टोर भी एक ऐसा अज्ञात कारण था जिससे जेसी ग्रिम ने किनफौक कोव पर रहनेका निश्चय किया था। स्टोर के पीछे रात्रिको जो बैठकें होती थीं, उनमें उसे बड़ी सरलता से ऐसे साथी मिल गये थे, जो न तो उसे पिट्सबर्ग के पुराने मशीन के युगके समय मिले थे, न फीडरल क्लब में ही मिल पाये थे।

जब जेसी ग्रिम ने पहले-पहल किनफौक कोव में आना प्रारंभ किया था, तब टील स्टोर में नियमित रूप से आनेवाले लोग उसके आते ही चुप हो बैठते थे। ऐसा व्यवहार किसी भी नये व्यक्ति के प्रति प्रदर्शित किया जा सकता था। पर वह विशेषत: उन अतिथियों के लिए सुरक्षित था, जो नगर के धनी समझे जाते थे। टील स्टोर में आनेवालों में जेसी ग्रिम की भर्ती उस समय हुई, जब जिम बिशप ने चारों ओर यह बात फैला दी कि 'इस ग्रिम पट्ठे' ने टिम कुलर के अग्नि -बोट के इंजिन पर मैगनेटो बैठा दिया है। यों तो बोट-इंजिन को कोई भी खोल-खाल सकता था, पर मैगनेटो बैठाना कुछ और ही बात थी। मैगनेटो बिगडनेका अर्थ यह होता था कि उसे खोलकर चैस्टर टाउन भेजो

और दो-तीन दिन केकड़े पकड़ने का काम बन्द करो। जब जिम बिशप ने जेसी ग्रिम के सम्बन्ध में यह कहानी फैला दी कि उसने टिम कुलर का मैगनेटो बातकी बात में बैठा दिया, तब टील स्टोर में जेसी ग्रिमके आते ही वे उसे बैठने के लिए ओक का डिब्बा दे देते थे। एक दिन जब मैट टील बहुत हल्ला मचाये हुए था कि मेरा सारा मलाई का बरफ पिघल गया। क्योंकि बरफ की मशीन में कुछ गड़बड़ी हो जानेसे बरफ का डिब्बा बिगड़ गया था तो उसे भी जेमीने ठीक कर दिया था। इसके पश्चात् जब मलाईकी बरफ कड़ी पड़ने लगी तो मैटने कहा—"कैप्टन जेसी ! यह बड़ी अच्छी बात हुई कि आपने यहाँ चले आनेका निश्चय किया।" इसके पश्चात् उसे सब लोग "कैप्टन जेसी" कहने लगे थे।

जेसी ग्रिम ने अपनी गाड़ी गैस पम्प के पीछे ही इस भयसे खड़ी कर दी कि कहीं मैट टील दौड़ा न चला आये और वह पैदल चल दिया।

"ओहो ! कैप्टन जेसी ?" उसके द्वार में घुसते ही मैट ने तत्काल अभिवादन किया—"अभी यही बात हो रही थी कि आप आ रहे हैं या नहीं।"

जेसी की हँसी भी अन्य लोगों के साथ ही गूँज उठी और किसीने उसकी ओर बक्स बढ़ा दिया। "नहीं, मैं बैठ नहीं सकता। अभी घर पहुँचना है। नहीं तो, सारा भी मुझे केकड़े के बिल में सोने के लिए भेज देगी। आज बहुत देर हो गयी है।" वह वहीं रुक गया। मैट टील एक भूरे कागज का फटा हुआ टुकड़ा उसके पास लेकर पहुँचा—"आपके लिए टेलीफोन आया था, कैप्टन जेसी। आपको इस आदमी से बात करनी है। इसने कहा था कि यह नौ बजे तक कार्यालय में रहेगा। इसके पश्चात् आप उससे घरपर बात कीजियेगा।"

कागज पर नाम था—'फ्रेड्रिक एल्डर्सन।'

मैट को लिखना तो आता नहीं था। पर वह दूकान अच्छी चलाता था। छत बनानेकी सीमेण्ट से लेकर चटनी—अचार तक आप कुछ भी टील स्टोर में ले सकते थे।

मैट अपनी घड़ी की ओर देख रहा था—नौ बजकर बीस—"इसका अर्थ है कि आप उसके घरपर बात करें।"

जेसी टेलीफोन करने चल दिया।

जेसी ने टेलीफोन किया; किन्तु फ्रेड्रिक एल्डर्सन के मिलवर्ग वाले घरसे कोई उत्तर नहीं मिला—"मैं समझता हूँ कोई ऐसी बात नहीं है, जिसके लिए कल तक प्रतीक्षा न की जा सके।" जेसी ने कहा—"घर पहुँचना है।"

हर्ब टिलिगास द्वारतक उसके पीछे-पीछे आया—"कैप्टन जेसी ? आपके यहाँ मुलायम केकड़े की भाजी खायी जाती है ?"

"हाँ, हाँ; कैप्टन हर्ब। क्यों नहीं ?"

"मैं आपके लिए कल लाऊँगा।"

हर्ब की नाव पर पानी का पम्प फिर काम करने लगा होगा। जेसी ग्रिम अपने मन-ही-मन चुहल करता हुआ चला गया।

मिलबर्ग, पेंसिल्वेनिया, ९.३१ रात

नार्थ फ्रंट स्ट्रीट से जाते हुए फ्रेड्रिक एल्डर्मन ने डॉन वॉलिंग से जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के यहाँ जानेकी बात कही।

"तुम कहते हो कि वह पिल्चर ही उसके शेयर लेना चाहता था।" डॉन ने पूछा—"और वह शॉ–परिवार का मित्र भी है ?"

"क्या तुम्हें शॉ के उसके सम्बन्ध में बात करनेका स्मरण नहीं है– उस समय जब हम ओडेसा से ठेके की बात कर रहे थे ?"

डॉन ने धुँधली स्मृति के साथ सिर हिलाया –"अभी मैं बात नहीं समझ सका, फ्रेड।"

"क्या तुम नहीं समझते, डॉन ? शॉ और भी अधिक शेयर इसलिए अपनी मुट्ठी में करना चाहता था कि ऐवरी बुलार्ड पर कुछ और अधिक दबाव पड़े।"

"उसने समझा होगा कि वह इसी प्रकार कार्यवाहक उपाध्यक्ष बन जायगा?"

"हाँ; किन्तु यह बात चल नहीं सकती थी– ऐवरी बुलार्ड के साथ नहीं चल सकती थी। शॉ इतना गधा है कि वह यह बात समझ नहीं पाया।"

"किन्तु वह पिल्चर के द्वारा यह सब क्यों करा रहा था ?"

"इसलिए कि जूलिया को यह कुचक्र ज्ञात न हो सके।"

"शॉ जानता है कि जूलिया ऐवरी बुलार्ड से हिलीमिली थी। वह कभी कोई काम ऐसा नहीं करेगी, जो वह उसे करनेको न कहे। वे अत्यन्त आत्मीय थे। तुम जानते ही हो और जितना लोग समझते हैं उससे भी अधिक आत्मीय थे। हाँ, मैं यही सोच रहा था कि क्या मुझे इस सम्बन्ध में आज ही बातचीत कर लेनी चाहिए, इतने शीघ्र। आज उसको बहुत दुःख हुआ होगा।" एल्डर्मन

झुककर घड़ी की ओर देखने लगा–"देर तो हो गयी है– क्यों न सबेरे तक उससे मिलने को रुका रहूँ।"

वे कुछ देरतक गाड़ी में मौन चलते रहे और तब डॉन वॉलिंग के मन में कुछ पूछने की प्रेरणा हुई – "क्या ऐसा भी अवसर आ सकता है, फ्रेड? कि श्रीमती प्रिंस कंपनी की ओर से अपनी धारणा बदल दें; क्योंकि ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी है और अपने शेयर बेच दें?"

एल्डर्सन झिझका–"मैं भी इसी विषय में सोच रहा था। हाँ, आज ही रातको मिलना ठीक होगा। यों भी मेरे आ जानेको वह अच्छा ही समझेगी। वह यहीं दूसरे खंड में ही तो है, डॉन। यहीं मुझे छोड़ दो। मैं पीछे पैदल चला आऊँगा।"

वे कोने तक पहुँच ही गये थे। डॉन वॉलिंग ने रोक लगाकर गाड़ी को उस लंबी श्वेत दीवार की ओर बढ़ा दिया, जो सड़क से ट्रेडवे भवन की रक्षा कर रही थी और वहाँ रोक दिया, जहाँ भीतर जानेका मार्ग बना हुआ था।

एल्डर्सन गाड़ी से बाहर निकला तो सही, किन्तु तत्काल जड़ होकर जम गया। वॉलिंग ने तत्काल व्याकुल होकर पूछा–"फ्रेड? क्या बात है?"

पर तभी उसने भी देख लिया। लॉरेन शॉ की गाड़ी पहले से ही भीतर आयी खड़ी थी।

शिकागो, इलिनोइस, १०.०९ रात

विमान-अड्डे के कुलियों की सधी हुई आँखें नवें फाटक में आनेवाले यात्रियों को ध्यान से देख रही थीं। तीन कुली एक साथ एक सुन्दर और अवस्था से पहले ही श्वेत बालवाले व्यक्ति की ओर लपके, जो सभी यात्रियों में सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होता था। उनमें सबसे अधिक चपल गतिवाला कुली जीत गया और जे. वाल्टर डडले ने अपने सामान की सूची उसे दे दी।

यह जो कुछ हो रहा था उससे वाल्ट डडले न अपरिचित था, न चकित। इस चाटुकारी का वह बहुत पहले से अभ्यस्त था और यह उसे अच्छी भी लगती थी। वह जानता था कि विमान परसे सामान उतारने और लाने में अभी कुछ समय लगगा, इसलिए वह समाचारपत्र पढ़ने खड़ा हो गया। एक ओरसे यह स्वर सुनायी पड़ा–"नहीं? यह पूर्वी समय है। शिकागो में अभी सवा नौ बजे हैं।"

सवा नौ...सारी संध्या समाप्त हो गयी...होटल का कमरा...अकेले। नहीं, मैं ईवा हार्डिंग से नहीं मिलूँगा। यह निर्णय उसने कर लिया। वह उसके विषय में सोच भी नहीं रहा था और फिर टेलीफ़ोन के कक्ष भी सब घिरे हुए थे। इस बार कुछ दूसरी बात थी....इस बार उसने निश्चय कर लिया था.. उसने ठीक निर्णय कर लिया था...केवल एक निर्णय......कभी उससे न मिलूँगा।

चमकीले नीले परिधान में एक मोटी-सी स्त्री टेलीफोन के कक्ष में से पीठ सामने करके निकली चली आ रही थी। वह खाली था...प्रतीक्षा कर रहा था.....वह घूमा और जब उसकी आँखें उधर हुई तो उसने देखा कि एक युवती किसी पुरुष के हाथों में झपटकर जा पहुँची है। वह घूम गया। उसकी आँखें सामान की मेज पर लगी हुई थीं।

अभी तक बैग नहीं आये थे और वह लम्बी, नीची छतवाले छज्जे में खड़ा हुआ खिड़की में से उन अनन्त पीली, पीली, पीली, टैक्सी-गाड़ियों को चलते जाते हुए देख रहा था। यह बड़ी अच्छी बात हुई कि मैंने निर्णय कर लिया है...कितना सरल है....मुझे यही करना है कि "पामर हाउस" कहने के बदले........"बत्तीस–चवालीस उत्तर....."

"आपका सामान आ गया, श्रीमान्? गाड़ी श्रीमान्?"

डॉलरका नोट–"धन्यवाद, श्रीमान्! अनेक धन्यवाद।"....और तब दूसरा स्वर सुनायी पड़ा–"कि घर को मैक–?"

एक क्षण के लिए उसे यह कहना बड़ा कठिन लगा कि "पामर हाउस" चलना है। जे. वाल्टर डडले को 'मैक' कहलाने से बड़ी चिढ़ होती थी।

गाड़ी में जाते समय मार्ग भर वह अपने मन में यही कहता रहा कि ईवा के विषय में न सोचना जितना सरल है उतना वह सोच भी न सकता था।

जब वह पामर हाउस के विश्राम-कक्ष में पहुँचा, तब दस बजने में दो मिनट थे......ग्यारह बजने में दो मिनट मिलबर्ग में। मैं अच्छी नींद लूँगा... आगे अभी हाट के दो सप्ताह पड़े हैं। किन्तु यह हाट उतना बुरा नहीं जायगा .....अधिक निद्रा। हाँ, उसने ठीक निर्णय कर लिया था.....और नींद नहीं खोनी होगी....ईवा के साथ कभी न सोनेवाली रातें और नहीं होंगी..........और नहीं.....।

"अपना सामान संभाल लीजिए, श्रीमान्?" उसे प्रसन्न करने को उत्सुक होकर चपरासी ने कहा–"हाँ, धन्यवाद....जे. वाल्टर डडले।"

श्वेत साटिन के वस्त्रों में लिपटी हुई कोई स्त्री एम्पायर रूमकी ओर सीढ़ी पर चढ़ी चली जा रही थी, जिसके पग के साथ उसका शरीर भी इधर–उधर झूलता रहा।.....इसके पीछे-पीछे जाने वाला पुरुष मूर्ख है...रातको अच्छी नींद नहीं पायेगा। ईवा की कभी इच्छा नहीं थी कि एम्पायर रूम में चला जाय।....“यह बड़ी मूर्खता है, प्रिय ? जब कि हम यहाँ रह सकते हैं, तब कहीं ओर जाँय।” मूर्खता, मूर्खता ...हाँ, मूर्खता...कहीं ओर जाना मूर्खता है........।

“दो टेलीफोन के संदेश हैं, श्रीमान् ? आपके थैले कौन-कौनसे हैं श्रीमान् ?”

उसने संकेत कर दिया और उस चपरासी ने जो दो संदेश लाकर दिये थे, उसके छोटे-छोटे लिफाफे फाड़ने लगा। **आते ही श्री पियर्सन से बात कर लेना।** यह पियर्सन शिकागो कार्यालय का व्यवस्थापक था। **मिलबर्ग में श्री शॉ से तत्काल बात कर लेना।**

ज्योंही वह अपने कक्ष में गया, त्योंही उसने लॉरेन शॉ से फोन मिलाया। चपरासी को भी एक डॉलर पुरस्कार दिया और उसका अभिवादन भी उसी बीच स्वीकार किया, जब फोन का सम्बन्ध चल रहा था।

बहुत देर में ऑपरेटर ने कहा–“मुझे खेद है, श्रीमान् ? श्री शॉ का कोई ठिकाना नहीं मिल रहा है। कहिए तो बीस मिनट में फिर प्रयत्न किया जाय ?”

“बीस मिनट मत रुको। प्रयत्न करते रहो।”

तब उसने पियर्सन से फोन मिलाया और लारी पियर्सन से ही उसे ज्ञात हुआ कि ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी।

एक घंटे से भी कम में यूनियन स्टेशन में तीव्र आँखों वाले कुली ने गाड़ी से उतरते हुए उस प्रकार के एक सुन्दर सज्जन को देखा, जो भारी पुरस्कार दिया करते हैं।

पाँच संख्यक-कक्ष में बैठे हुए और गाड़ी चलने की प्रतीक्षा करते हुए वाल्टर डडले ने लारी पियर्सन से बात करने के पश्चात् सब काम-काज फिरसे देख लिया। बैठक ठीक हो गयी थी...पियर्सन उसे सँभाल सकता था...कल संध्या के सब कार्यक्रम रद्द कर दिये......अन्त्येष्टि का समय निश्चित करने तक अन्य कार्यक्रम भी रोक दिये गये...मंगल की बैठक बदलकर गुरुवार को कर दी गयी। पियर्सन ही शॉ से बात करने का प्रयत्न करेगा और वह कह देगा कि मैं गाड़ी पकड़ने चला गया।

कुली खुले द्वार के पास पहुँचा।

श्वेत साटिन के वस्त्रों में लिपटी हुई कोई स्त्री एम्पायर रूमकी ओर सीढ़ी पर चढ़ी चली जा रही थी, जिसके पग के साथ उसका शरीर भी इधर-उधर झूलता रहा।.....इसके पीछे-पीछे जाने वाला पुरुष मूर्ख है...रातको अच्छी नींद नहीं पायेगा। ईवा की कभी इच्छा नहीं थी कि एम्पायर रूम में चला जाय।....“ यह बड़ी मूर्खता है, प्रिय ? जब कि हम यहाँ रह सकते हैं, तब कहीं ओर जाँय।” मूर्खता, मूर्खता ...हाँ, मूर्खता...कहीं ओर जाना मूर्खता है........।

“दो टेलीफोन के संदेश हैं, श्रीमान् ? आपके थैले कौन-कौनसे हैं श्रीमान् ?”

उसने संकेत कर दिया और उस चपरासी ने जो दो संदेश लाकर दिये थे, उसके छोटे-छोटे लिफाफे फाड़ने लगा। **आते ही श्री पियर्सन से बात कर लेना।** यह पियर्सन शिकागो कार्यालय का व्यवस्थापक था। **मिलबर्ग में श्री शॉ से तत्काल बात कर लेना।**

ज्योंही वह अपने कक्ष में गया, त्योंही उसने लॉरेन शॉ से फोन मिलाया। चपरासी को भी एक डॉलर पुरस्कार दिया और उसका अभिवादन भी उसी बीच स्वीकार किया, जब फोन का सम्बन्ध चल रहा था।

बहुत देर में ऑपरेटर ने कहा—“मुझे खेद है, श्रीमान् ? श्री शॉ का कोई ठिकाना नहीं मिल रहा है। कहिए तो बीस मिनट में फिर प्रयत्न किया जाय ?”

“बीस मिनट मत रुको। प्रयत्न करते रहो।”

तब उसने पियर्सन से फोन मिलाया और लारी पियर्सन से ही उसे ज्ञात हुआ कि ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी।

एक घंटे से भी कम में यूनियन स्टेशन में तीव्र आँखों वाले कुली ने गाड़ी से उतरते हुए उस प्रकार के एक सुन्दर सज्जन को देखा, जो भारी पुरस्कार दिया करते हैं।

पाँच संख्यक-कक्ष में बैठे हुए और गाड़ी चलने की प्रतीक्षा करते हुए वाल्टर डडले ने लारी पियर्सन से बात करने के पश्चात् सब काम-काज फिरसे देख लिया। बैठक ठीक हो गयी थी...पियर्सन उसे सँभाल सकता था...कल संध्या के सब कार्यक्रम रद्द कर दिये......अन्त्येष्टि का समय निश्चित करने तक अन्य कार्यक्रम भी रोक दिये गये...मंगल की बैठक बदलकर गुरुवार को कर दी गयी। पियर्सन ही शॉ से बात करने का प्रयत्न करेगा और वह कह देगा कि मैं गाड़ी पकड़ने चला गया।

कुली खुले द्वार के पास पहुँचा।

"कुली !"

"हाँ, श्रीमान् ?"

"क्या रात में गाड़ी कहीं ऐसे स्थानपर ठहरेगी, जहाँ टेलीफोन से बात करनेका समय मिल जाय ?"

"नहीं श्रीमान् ? इतनी दूर तक कोई ठहराव नहीं।"

ठीक है। यदि शॉ से बातचीत नहीं भी हुई, तब भी इसमें कोई आपत्ति नहीं है कि मिलबर्ग लौटना ही उचित था। यह बड़ी बुरी बात है कि रातका कोई विमान नहीं मिल रहा है . . . किन्तु नौ पैंतालीस पर प्रातःकाल पहुँच जाना भी बहुत बुरा नहीं होगा। शिकागो में सब बातें ठीक नियंत्रण में थीं. . . . . . . .पियर्सन उन्हें संभाल ही सकता है . . . . और ईवा भी जब ऐवरी बुलार्ड की मृत्युका समाचार पढ़ लेगी, तब समझ जायगी कि मैं क्यों नहीं उसके पास गया। वह प्रातःकाल के समाचारपत्र में निश्चय ही यह समाचार पा लेगी।

मिलबर्ग, पेंसिलवेनिया, ११.४० रात

मेरी वॉलिंग अंधकार में प्रतीक्षा करती हुई पड़ी थी और अपनी साँस इसलिए रोके हुए थी कि वह अपने पति की साँस की ध्वनि सुन सके। वह साँस कोमल और समान गति से चल रही थी और उसने समझ लिया कि वह सो गया होगा। अब वह अकेली थी और उन विचारों को सोचने के लिए स्वतंत्र थी, जिन्हें पहले सोचने में उसे भय था कि कहीं मेरा पति मेरा मुख देखकर ताड़ न ले।

ऐसे बहुत-से अवसर आये, जब मेरी वॉलिंग ने अपने पति को अत्यन्त रहस्य-पूर्ण व्यक्ति पाया, किन्तु इसके कारण उसके प्रेम में कमी नहीं हुई। उसके मन में यही इच्छा उत्पन्न होती कि मैं उसकी सहायता करूँ और अधिक पूर्णता के साथ उसके जीवन में भागीदार बनूँ। इसलिए आज फिर वह अंधेरे में जागी पड़ी थी।

वर्षों से उसने मकान की योजना और उसके सम्बन्ध की सब बातें बना ली थीं और एक नोटबुक में बड़ी सावधानी से सब बातें लिख ली थीं। किन्तु जब अन्त में घर बनानेका निश्चय किया, तो डॉन ने ऐसी हड़बड़ी में पन्ने उलटे कि मेरी को निश्चय हो गया, डॉन ने कुछ भी देखा नहीं है। इतने में ही डॉन

बैठ गया और थोड़े ही समय में उसने मेरी के देखे हुए सभी भवनों से भिन्न ठीक वैसा ही घर खींच दिया, जो वह चाहती थी। जब वह मकान बन गया, तब उसमें वे सब वस्तुएँ विद्यमान थीं—जो उसकी अनदेखी नोटबुक में लिखी हुई थीं। डॉन निश्चय ही अपने व्यवसाय में सफल है; केवल रूपमान-निर्माता या अन्वेषक के रूप में ही नहीं... वरन् अन्य रूपों में भी। अपने पति की विचित्र भिन्न योग्यताओं के सम्बन्ध में उसका निर्णय निश्चय ही पक्षपातपूर्ण था —किन्तु बार-बार यह निश्चय हो चुका था और अभी उस पेटेंट के मुकदमे में भी स्पष्ट हो गया था। इस मुकदमे से पूर्व मेरी को विश्वास था कि डॉन को पेटेंट के कानून का बहुत कम ज्ञान है। वह बहुत-सी पोथियाँ घर उठा लाया था। मेरी ने उसे उपयुक्त प्रसंग खोज निकालने के लिए अपनी सहायता भी देनी चाही थी, किन्तु उसने उसे टाल दिया। उसने इधर-उधर पन्ने उलट-पलट लिये और एक भी नोट नहीं बनाया। फिर भी जब इस विजय पर फीडरल क्लब में उत्सव मनाया गया, तब विल्मिंग्टन कानूनी फर्म के जिस वृद्ध भागीदार ने ट्रेडवे की ओरसे मुकदमा लड़ा था, उसने मेरी को समझाते हुए कहा था—"श्रीमती वॉलिंग ? तुम्हारे पति ने ठीक व्यवसाय नहीं चुना है। जितने लोगोंको मैंने देखा है उनमें सबसे अच्छा कानूनी मस्तिष्क उनका है, बहुत ऊँचा। मैं तो यहाँ तक कह सकता हूँ, कि मेरे अपने साथी वकीलों में भी बहुतों-से बहुत ऊँचा।"

आज रातको, उसने आशा की थी कि डॉन उसी भाव से घर लौटेगा, जिसमें वह गया है, ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु के भयानक संवाद से धुँधले मस्तिष्क-वाला होकर। उसके आगमन की प्रतीक्षा करते समय उसने अपने मन में बहुत-सी बातें एकत्र कर रखी थीं कि उसका दुःख कम करने के लिए मैं क्या-क्या कहूँगी। पर कोई भी बात कही नहीं गयी। वे दोनों लगभग एक घंटे से ऊपर बातचीत करते रहे; किन्तु ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु की बात कभी सीधे आयी नहीं। वह जानती थी कि डॉन को अब भी दुःख है, किन्तु वह इतना गहरा गड़ा हुआ प्रतीत हुआ कि अब उभाड़ा नहीं जा सकता। उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ.... इससे पहले भी बहुत बार ऐसी घटना हो चुकी थी।

आज रातको उन्होंने इस विषय पर बातें की थीं कि ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का नया अध्यक्ष कौन होगा। पर वह उस व्यवस्थित और क्रमिक रीतिसे नहीं हुई जिस रीतिसे वह बात करना चाहती थी। उन सब बातों को इकट्ठा करके उसने परिणाम निकाला कि एल्डर्सन तो इस दौड़से बाहर है और ग्रिम ही

चुना जायगा। इसलिए नहीं कि उसमें कोई विशेष गुण है, वरन् इसलिए कि वही एक ऐसा व्यक्ति है, जो शॉ को हरा सकता है। शॉ के विरुद्ध मत ही ग्रिम के पक्ष के मत होंगे।

अब अंधेरे में पड़े-पड़े उसने लॉरिन शॉ के प्रति डॉन की भावना का रहस्य खोजने का प्रयत्न प्रारंभ किया। उसे यह बात खोजने की कोई शीघ्रता नहीं थी; क्योंकि वह जानती थी कि मैं जो भी परिणाम निकालूंगी, उसका कोई प्रभाव डॉन की धारणा पर पड़ने वाला नहीं है। किन्तु इस विषय पर बहुत दिनों से न सोचनेके पश्चात् आज पुनः विचार करने की आवश्यकता इसलिए पड़ गयी कि उसके मन में यह भय अब भी घुसा हुआ था.... कि मेरा पति लॉरिन शॉ से जो घृणा करता है, वह मेरे ऊपर एक प्रकार का आक्षेप है। क्योंकि मैंने ही उसे अत्यन्त रुचिकर व्यक्ति समझा था।

"सो गयी ?"

डॉन की यह सहसा जागने की फुसफुसाहट भी ऐसी तीव्र प्रतीत हुई मानो पुकार हो और क्षण भरके लिए उसे एक ऐसी घबराहट प्रतीत हुई मानो उसकी अपनी एकान्तता पर किसीने अत्यन्त कर्कशतापूर्वक आक्रमण कर दिया हो।

"नहीं। क्या नींद नहीं आ रही है, प्रिय ?" मेरीने पूछा।

"अभीतक तो नहीं।"

"मैं नहीं जानती थी कि तुम जाग रहे हो।" उसने धीरेसे कहा।

"आज रातको बहुत बातें सोच रखनी हैं।"

"मैं जानती हूँ।" उसने अपना हाथ आगे बढ़ाकर उसका हाथ थाम लिया और उसकी उँगलियों की कसी हुई पकड़ से उसे हर्षपूर्ण विश्वास हो गया कि उन दोनों में परस्पर कितनी अभिन्नता है।

"फ्रेड को अपने मन से दूर नहीं कर पा रहा हूँ।" उसने अधीर होकर कहा मानो इस प्रयास ने झुंझलाहट की भूमिका प्रस्तुत कर दी—"मेरी समझ में नहीं आता कि मैं उसे एक मिनट भी स्मरण किये बिना छोड़ क्यों नहीं सकता ?"

"क्या तुम वास्तव में यह चाहते हो कि वह अध्यक्ष हो जाय, डॉन ?"

"नहीं। इसलिए नहीं।" उसने तीव्र प्रतिरोध के साथ कहा—"बात यह है ....तुम जानती हो कि फ्रेड—जैसे व्यक्ति का अध्यक्ष-पद जैसी बात के लिए इच्छा करना ही ठीक नहीं है।"

मेरी के शरीर में इतने वेग से घबराहट आयी कि वह उस कंपन को अपने हाथ तक पहुँचने से रोक न सकी।

"क्या बात है ?" उसने चिंता के साथ पूछा।

"कुछ नहीं, प्रिय। मैं........"

"किसी बात से घबरा गयी क्या ? क्या बात है ?"

अपने शरीर में उष्ण उत्तेजनायुक्त स्फुरण का अनुभव करते हुए उसने कहा—"नहीं—कुछ नहीं है, डॉन....कुछ नहीं।"

"नहीं क्या ?"

"प्रिय, कृपया...मैं तुम्हें अपने से प्रेम करने के लिए चाल नहीं चल रही थी।"

"क्यों नहीं ?" डॉन का हाथ मेरी के शरीर से खेलने लगा। उसे अनुभव हुआ कि मेरी के शरीर में....एक सुरसुरी—सी दौड़ गयी, बिजली प्रवाहित हो गयी। मेरी ने उसका हाथ हटाते हुए कहा—"सो जाओ।"

"क्यों ?" उसने भर्राये हुए स्वर में पूछा।

"उँहुँ ?"

"तुम बड़ी जादूभरी नागिन हो!" उसके मन्द हास्य में भी स्वर की भर्राहट स्पष्ट थी।

उसने तत्काल उत्तर दिया—"कैसी भयंकर बात...।" और तब वह उसके शब्द पी लेनेवाले चुंबन के विरुद्ध तबतक प्रयास करती रही, जब तक वह प्रयास स्वयं पराजित नहीं हो गया। उसने उसे यह कहने के लिए अपने ओठ उठा लिये—"क्या मैं इतनी बुरी हूँ ?"

"कितनी ?"

"जितनी तुमने बताया।"

"मैंने क्या कहा ?"

"तुम्हीं जानो।"

"बताओ"— उसने तंग किया।

"मैं नहीं बता सकती।"...किन्तु कुछ ऐसी बात अवश्य थी, जिसने उसके ओठों को बाध्य किया कि वे उसके कान के पास जाकर वे शब्द कह दे।

"हाँ, तुम हो।" उसने भयानक रूप से कहा और उसके शरीर को मरोड़कर अपने वक्ष में भर लिया—"मेरी ! मैं चाहता हूँ कि कोई ऐसा उपाय निकालता कि मैं तुम्हें सदा के लिए समझा देता कि मैं कभी तुम्हें प्रेम करना बन्द नहीं करूँगा।"

"मैं इसे सदा के लिए नहीं चाहती।" उसने धीरे से कहा—"मैं चाहती हूँ कि तुम मुझसे बार-बार, सदा-सर्वदा यही कहते रहो कि..."

वह अपना कथन पूरा करने जा ही रही थी कि डॉन ने उसके शब्दों को अपने चुंबन में समेट लिया और उसे प्रतीत हुआ मानो उसके ओठ उसके मुख में दबे हुए शब्दोंपर थिरककर मौन स्वरमें उससे कह रहे हों—"मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

"प्रिय ! यदि कोई ऐसा समय आये, जब तुम मुझसे प्रेम न करो तो क्या तुम मुझे वचन देते हो कि मुझे बतला दोगे ?"

"ऐसा समय आयेगा ही नहीं।"

"वचन दो.... बहुत बार मुझे भय होने लगता है, प्रिय ? तुम मेरे लिए ऐसे रहस्य हो.... मैं तुम्हें सहायता करना चाहती हूँ... मैं उसी प्रकार सोचना चाहती हूँ, जिस प्रकार तुम सोचते हो... किन्तु जब मैं तुम्हारे पास आती हूँ, मैं सोच ही नहीं पाती... मैं यही चाहती हूँ कि तुम्हारा अंग बन जाऊँ......"

और तब उस अंधकार में वह उसका अंग बन गयी। जब वह रात्रि की ध्वनि फिर सुनने लगी, तो जो ध्वनि उसने पहले सुनी, वह डॉन की गहरी नींद की साँस की थी।

उसे अनुभव हुआ मानो वह सदा से जागती रही है, मानो वह कभी फिर सोयेगी नहीं; न फिर कभी सोना चाहेगी। अब उसने जान लिया जैसा कि उसने पहले कभी नहीं जाना था कि उसके लिए मुझसे बढ़कर कोई व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है। उसे मेरी की इतनी आवश्यकता कभी नहीं रही, जितनी आज रातको रही है..... आज रातको।

११.५६ रात

ड्वाइट प्रिंस ने कुछ निर्णय करने की आवश्यकता समझी। यह ऐसी बात थी जो उसे कभी अच्छी नहीं लगी। वह भवन के उस शयन-कक्ष के बन्द द्वार के सामने खड़ा हुआ, जिसमें वह अपनी पत्नी के साथ शयन किया करता था। उसके सामने दो विरोधी बातें खड़ी थीं... द्वार खोलूँ या न खोलूँ। यदि वह पिछली बातका निश्चय करता है तो उसे सामने के अतिथि-भवन में अकेले

"क्या बात है ?" उसने चिंता के साथ पूछा।

"कुछ नहीं, प्रिय। मैं........"

"किसी बात से घबरा गयी क्या ? क्या बात है ?"

अपने शरीर में उष्ण उत्तेजनायुक्त स्फुरण का अनुभव करते हुए उसने कहा—"नहीं—कुछ नहीं है, डॉन.... कुछ नहीं।"

"नहीं क्या ?"

"प्रिय, कृपया... मैं तुम्हें अपने से प्रेम करने के लिए चाल नहीं चल रही थी।"

"क्यों नहीं ?" डॉन का हाथ मेरी के शरीर से खेलने लगा। उसे अनुभव हुआ कि मेरी के शरीर में.... एक सुरसुरी—सी दौड़ गयी, बिजली प्रवाहित हो गयी। मेरी ने उसका हाथ हटाते हुए कहा—"सो जाओ।"

"क्यों ?" उसने भर्राये हुए स्वर में पूछा।

"उँहुँ ?"

"तुम बड़ी जादूभरी नागिन हो !" उसके मन्द हास्य में भी स्वर की भर्राहट स्पष्ट थी।

उसने तत्काल उत्तर दिया—"कैसी भयंकर बात ...।" और तब वह उसके शब्द पी लेनेवाले चुंबन के विरुद्ध तबतक प्रयास करती रही, जब तक वह प्रयास स्वयं पराजित नहीं हो गया। उसने उसे यह कहने के लिए अपने ओठ उठा लिये—"क्या मैं इतनी बुरी हूँ ?"

"कितनी ?"

"जितनी तुमने बताया।"

"मैंने क्या कहा ?"

"तुम्हीं जानो।"

"बताओ"— उसने तंग किया।

"मैं नहीं बता सकती।"... किन्तु कुछ ऐसी बात अवश्य थी, जिसने उसके ओठों को बाध्य किया कि वे उसके कान के पास जाकर वे शब्द कह दे।

"हाँ, तुम हो।" उसने भयानक रूप से कहा और उसके शरीर को मरोड़कर अपने वक्ष में भर लिया—"मेरी ! मैं चाहता हूँ कि कोई ऐसा उपाय निकालता कि मैं तुम्हें सदा के लिए समझा देता कि मैं कभी तुम्हें प्रेम करना बन्द नहीं करूँगा।"

"मैं इसे सदा के लिए नहीं चाहती।" उसने धीरे से कहा—"मैं चाहती हूँ कि तुम मुझसे बार-बार, सदा-सर्वदा यही कहते रहो कि..."

वह अपना कथन पूरा करने जा ही रही थी कि डॉन ने उसके शब्दों को अपने चुंबन में समेट लिया और उसे प्रतीत हुआ मानो उसके ओठ उसके मुख में दबे हुए शब्दोंपर थिरककर मौन स्वरमें उससे कह रहे हों—"मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।"

"प्रिय ! यदि कोई ऐसा समय आये, जब तुम मुझसे प्रेम न करो तो क्या तुम मुझे वचन देते हो कि मुझे बतला दोगे ?"

"ऐसा समय आयेगा ही नहीं।"

"वचन दो.... बहुत बार मुझे भय होने लगता है, प्रिय ? तुम मेरे लिए ऐसे रहस्य हो .... मैं तुम्हें सहायता करना चाहती हूँ... मैं उसी प्रकार सोचना चाहती हूँ, जिस प्रकार तुम सोचते हो... किन्तु जब मैं तुम्हारे पास आती हूँ, मैं सोच ही नहीं पाती... मैं यही चाहती हूँ कि तुम्हारा अंग बन जाऊँ......"

और तब उस अंधकार में वह उसका अंग बन गयी। जब वह रात्रि की ध्वनि फिर सुनने लगी, तो जो ध्वनि उसने पहले सुनी, वह डॉन की गहरी नींद की साँस की थी।

उसे अनुभव हुआ मानो वह सदा से जागती रही है, मानो वह कभी फिर सोयेगी नहीं; न फिर कभी सोना चाहेगी। अब उसने जान लिया जैसा कि उसने पहले कभी नहीं जाना था कि उसके लिए मुझसे बढ़कर कोई व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है। उसे मेरी की इतनी आवश्यकता कभी नहीं रही, जितनी आज रातको रही है..... आज रातको।

११.५६ रात

ड्वाइट प्रिंस ने कुछ निर्णय करने की आवश्यकता समझी। यह ऐसी बात थी जो उसे कभी अच्छी नहीं लगी। वह भवन के उस शयन-कक्ष के बन्द द्वार के सामने खड़ा हुआ, जिसमें वह अपनी पत्नी के साथ शयन किया करता था। उसके सामने दो विरोधी बातें खड़ी थीं... द्वार खोलूँ या न खोलूँ। यदि वह पिछली बातका निश्चय करता है तो उसे सामने के अतिथि-भवन में अकेले

सोना पड़ेगा। यदि वह पहली बातका निश्चय करता है तो, संभव है वह अप्रिय रूप से बाधक सिद्ध हो।

जूलिया जब शॉ के चले जाने पर दौड़ी हुई सीढ़ी पर चढ़ी चली गयी, तब प्रत्यक्षतः अकेली रहना चाहती थी। पर यह तो एक घंटे पहले की बात है। सदा की भाँति ड्वाइट प्रिंस ने अपने मनको कहने दिया। उसने द्वार खोल दिया।

वह अपने बिस्तर मे पड़ी हुई थी। पर इस प्रकार शरीर को लपेटे हुई थी कि द्वार आधा खुलने से पूर्व वह बैठने की स्थिति में आ गयी।

उसके मन में पहला विचार यह आया कि मेरा निर्णय भ्रामक सिद्ध हुआ; क्योंकि जिस प्रकार जूलिया ने अपने आँसुओं के प्रवाह को रोकने का प्रयत्न किया, वह बड़े आवेग का था।

"मुझे दुःख है, ड्वाइट।" उसने मुँह खोलकर कहा और अपने रात्रि के वस्त्र की तहों में अपना मुँह ऐसे छिपा लिया मानो वह उसे अपने आँसू दिखाने का साहस न कर रही हो।

वह जूलिया के पास पहुँच गया। उसके पास बैठ गया। अपना हाथ कसकर उसकी कमर के चारों ओर डाल दिया और उन सिसकियों का अनुभव करने लगा, जिन्हें वह मौन में रोकने का प्रयत्न कर रही थी। वह शोक अभीतक ठंडा नहीं हुआ था, जो उसने ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु का समाचार सुनने के समय से एकत्र कर रखा था। अपने पति से भी छिपा रखा था और फिर लॉरेन शॉ से भी।

"यदि तुम अकेली रहना चाहो तो. . . ."उसने धीरे-धीरे कहना प्रारभ किया।

जूलिया के हाथ लटक गये और उसका सिर सहसा पीछे की ओर तन गया —"क्या तुम मुझसे घृणा करते हो, ड्वाइट ?"

"नहीं ! यह तुम क्यों सोचती हो कि मैं घृणा करता हूँ !"

"ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में इस प्रकार शोक करते देखकर।"उसकी आँखें अब भी ड्वाइट की आँखों से दूर रहना चाहती थी।

वह प्रतीक्षा करता रहा, सोचने का प्रयत्न करता रहा और फिर उसने प्रयास ही छोड़ दिया—"यह कोई भेद की बात नहीं रही है कि कभी तुम उससे प्रेम करती थी . . यह बात तुमने विवाह से पहले भी मुझे बता दी थी. . .

इसलिए अब कोई कारण नहीं है कि मुझे अपने आँसू दिखाने में तुम्हें भय हो।"

जूलिया उसकी ओर घूम गयी और जिन आँसुओं को वह अभी तक दबा नहीं पायी थी, वे अचानक बन्द हो गये। जूलियाने उसे चूम लिया।

भवन की घड़ी में बारह बज गये थे, किन्तु ट्रेडवे टॉवर की घड़ी से उसका कोई उत्तर नहीं मिला ।

दूसरा भाग

शनिवार, जून २३

"...राजा चिरजीवी हो!"

नवम अध्याय

मिलबर्ग,
पेंसिलवेनिया
४.४७ प्रातःकाल

अर्द्धरात्रि से ही वान आरमंड अपने जीवन के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गया था। जबसे वह ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के विज्ञापन और प्रकाशन विभाग का संचालक नियुक्त हुआ है, तबसे ऐसी कोई उत्तेजक बात नहीं हुई थी। ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में सब समाचार भेज चुकने पर, वह मिलबर्ग टाइम्स के दफ्तर में यह देखनेके लिए रुक गया कि प्रातःकाल के संस्करण का विवरण किस प्रकार निकल रहा है। उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जब नगर-संपादक बिल फ्रीश ने उसके हाथ पकड़कर उसे पुनर्लेखन मेज के पास कुर्सी में बैठा दिया। उसे वहाँ पहुँचकर अत्यन्त सच्चे और वास्तविक समाचार – संपादक की अत्यन्त सन्निकटता का आनंद प्राप्त हुआ। उसने सहस्रों तथ्यों की जाँच की थी। सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर दिये थे और पिछले दस वर्षों में मिलबर्ग में जो सबसे बड़ा कांड हुआ, उसके विचित्र कोलाहल का वह केन्द्र-बिन्दु बना रहा। जी हाँ, यही बिल ने कहा था. ...पिछले दस वर्षों में यह सबसे बड़ी स्थानीय कहानी रही है।

बिल बड़ा छँटा हुआ घाघ था। बिल ने उससे कंपनी के इतिहास की एक विस्तृत कहानी भी लिखवा ली थी और अब वह अक्षरों में आ गयी थी। एक-एक अक्षर ठीक उसी प्रकार जैसा उसने लिखा था और चित्र भी बहुत सुन्दर थे। बिल उन चित्रों के सम्बन्ध में पूर्णतः भूल गया था, जो टाइम्स ने चार वर्ष पहले उस समय प्रयोग किये थे, जब मिलबर्ग ने अपना द्विशताब्दि महोत्सव मनाया था। श्री शॉ उसे देखते ही उछल पड़ेंगे।....पृष्ठ दो के सिरपर ही अध्यक्षों के चित्रों की पंक्ति थी...और तब दो कालम में कटा हुआ वह

श्री बुलार्ड का चित्र, जिसका वह सदा प्रयोग करने को कहा करता था. . . "मैं ऐसा तना हुआ तो नहीं प्रतीत होता।" ईश्वर की शपथ बुलार्ड सच कहता था। तुम उसके सम्बन्ध में चाहे जो कहो, किन्तु वह बुड्ढा घाघ सबमें आगे था।

अपनी आँख के कोने से वान आरमंड ने देखा कि बिल फ्रीश अपनी पेंसिल से उस पृष्ठ के प्रूफ़ की काटछाँट कर रहा है और अपराधी की भाँति पुनः अपनी अशुद्धियों को ढूँढ़ने में एकाग्र होने का प्रयत्न करने में लगा है।

बिल अब उसीकी ओर चला आ रहा था। अपने दोनों हाथों में एक-एक प्रूफ़ फटकारते हुए मानो वे टूटे हुए डैने हों—"कोई और अशुद्धि मिली, वान ?"

"कुछ टाइप की अशुद्धियाँ, बिल।" उसने डींग मारते हुए कहा।

फ्रीश देखने के लिए उसके कंधे पर झुक गया—"हाँ। यह तो मैं सब देख चुका हूँ।"

उसने अपना प्रूफ़ उसके सामने ला फैलाया और उसकी उँगलियों ने एक प्रश्न निकाला—"वॉलिंग का पहला नाम क्या है ?"

"डॉन। तुमने ठीक लिखा है, बिल।"

"संक्षिप्त नहीं"—फ्रीश ने टोककर कहा—"हम सदा पूरे नामका प्रयोग करते हैं। क्या है. . . . . डोनाल्ड ?"

वान आरमंड सोचने लगा—"मैं तो सोचता हूँ कि डॉन ही उसका पूरा नाम है। बस, डॉन। इसी प्रकार वह सदा हस्ताक्षर करता है. . . ."एक धुँधली स्मृति उसके मन में सहसा फैली और स्थिर हो गयी।

"अरे ठहरो ! मुझे स्मरण हो आया. . . मैकडॉनल्ड। मैंने एक बार उसके व्यक्तिगत कागजपत्रों में देखा था, जब मैं उसके उपाध्यक्ष बननेके समय अपनी कहानी उलट रहा था. . . . मैकडॉनल्ड वॉलिंग।"

बिल ने पृष्ठ के प्रूफ़ के कोने पर कुछ चिन्ह बनाये और उस वृद्धकी ओर आगे बढ़ा दिये, जो प्रतीक्षा कर रहा था। तब उसने दीवार की घड़ी की ओर देखा। केवल इक्कीस मिनट देर हुई है। प्रेसवाले इतनी देर की कमी तो निकाल ही लेंगे। समाचार को देखते हुए कोई बहुत देर नहीं।

"मैं समझता हूँ, बिल ! यह बड़ी सुंदर बात रही और मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हें इस सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ. . . अर्थात् अपनी ओर से भी और कंपनी की ओरसे भी।"

"अरे भाई ! यह तो समाचार था।"

"हाँ, मुझे विश्वास है कि तुमने उसे बहुत अच्छे ढंग से छापा है, बिल ! और मैं यही कहना चाहता था।"

"अच्छा तो यह हुआ कि शनिवार को निकला।" बिल ने थकावट की खीस मुँहपर लाते हुए कहा, ठीक उसी प्रकार जैसे बड़े-बड़े समाचारपत्रों के लोग उस समय कहा करते हैं, जब पिछले दिन के पत्र का काम पूरा हो जाता है– "शनिवार को हमें सदा अवकाश रहता है। यदि यह समाचार कल मिला होता तो मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इसके लिए स्थान कहाँ निकाल पाता। वे सब शुक्रवार के विज्ञापन जो थे।"

"हाँ, ये विज्ञापन तो सिर की पीर समझिए।"

वान आरमंड ने व्यावसायिक साथीपन के स्वर में कहा –"बहुत दिनों से मैं सोच रहा हूँ कि इस विज्ञापन के झंझट से छूटकर किसी अच्छे पुराने समाचारपत्र में पहुँच जाऊँ।"

"चलो ! मैं समझता हूँ कि तुम यहाँ बैठकर इतनी अधिक चाँदी काट रहे हो जितनी हम इस सारे नगर-विभाग के कार्यालय को देते होंगे।"

"यदि जीवन का आनंद न मिला तो चाँदी लेकर क्या करेंगे ? वान आरमंड ने गंभीरता के साथ पूछा।

बिल हँसा–"मुझसे क्या पूछते हो ? मुझे ही कौन आनद मिलता है। चलो, जब तक यह छपे तब तक एक प्याला कॉफी न पी आया जाय।"

"हाँ, हाँ ; चलो बिल, चलो।"

"ओ हो.....ईसा की सौगंध ! तुमने सब चौपट कर डाला।"

वान आरमंड ने नीचे ताका और देखा कि जब वह कम्पोजिंग की मेजपर झुका, तब उसकी श्वेत जाकेट के सामने कालिख की धारी लग गयी।

"धत्तेरे की !"

वह हँसा और अपने मुँह से अत्यन्त ऊँचे स्वर में बिना सोचे यह बात कह दी– "मैं अभी इसे पुराने हिसाब में डाले देता हूँ। बस यही करूँगा। इसे अभी उस पुरानी बही में डाल देता हूँ।"

६.०५ प्रातःकाल

लॉरेन शॉ ने फिर अपनी आँखें खोलीं और इस बात के लिए अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट की कि रात्रि पूर्णतः व्यतीत हो चुकी है। वह आज रातको कई बार

अंधेरे में ही जागा था और उसे प्रत्येक बार फिर से सोना अत्यन्त कठिन और भयानक लगा था। उसके स्वप्न केवल कल्पना की उड़ान नहीं थे ; वे कभी नहीं रहे....वरन् उसके दिन के विचारों के सरल अनियंत्रित क्रम मात्र थे। यह नियंत्रण न होना ही अधिक चिंताजनक था। यदि कहीं कोई दूसरी ऐसी ही भूल कर दी, जैसी संध्या को हो गयी है तो मैं जो कुछ प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ वह भी कहीं हाथ से न निकल जाय।

चार वर्ष पूर्व जिस दिन उसने ऐवरी बुलार्ड के मन में वह संस्कार बैठा दिया था जिसके कारण वह उपाध्यक्ष और नियंत्रक नियुक्त हुआ था। उसी दिन हाईस्कूल से आगे उसकी शिक्षा केवल उस रात्रि पाठशाला तक हुई थी, जो "प्रमाणित लोकगणक" की राज्य परीक्षा के लिए छात्रोंको तैयार करती थी। लॉरेन शॉ की उपाधि थी—सी. पी. ए. (सर्टिफाइड पब्लिक एकाउंटेंट)।

सी. पी. ए. होना उसके लिए वैसा ही योजनापूर्ण सिद्ध हुआ था जैसा उसके जीवन में होनेवाली उसकी अन्य क्रियाएँ। उसका वेग से समाचारपत्र पढ़ना.... विशेषत: कचहरी के उन मुकदमों का विवरण पढ़ना, जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध लोगों और विशाल द्रव्य-राशि से होता था....इससे उसे विश्वास हो गया था कि धनी और सामाजिक दृष्टि से ऊँचे परिवार ही मोटी फीस देते हैं और उन मेधावी युवकों के लिए उनका द्वार सदा खुला रहता है, जो इनकमटैक्स के विषय में जोड़-तोड़ करना जानते हों। थोड़े ही दिनों में लॉरेन शॉ को भी बड़ी मोटी फीस मिलने लगी, किन्तु उसके लिए द्वार नहीं खुले। सामाजिक दृष्टि से वह अपने ग्राहकों के घर नहीं निमंत्रित किया जाता था और धीरे-धीरे उसे अनुभव भी होने लगा कि मैं निमंत्रित किया भी नहीं जाऊँगा। वह जितना ही सफल होता गया, उतना ही लोग इस बात के लिए सावधान होते गये कि उसे अपने भीतरी कार्यालयों की सुरक्षित एकान्तता में ही रहने देना चाहिए।

जब पार्किंगटन मॅककोनल ने उसे अपनी उपाध्यक्षता प्रदान की तो उसने स्वीकार कर ली। यह उपाध्यक्ष का पद कोई बड़े महत्व का नहीं था....वहाँ बत्तीस थे जिससे कि कोई भी अपने को छोटा न समझे....किन्तु श्री पार्किंगटन की यह भविष्यवाणी ही वास्तविक प्रलोभन थी कि "तुम एक दिन राष्ट्र के प्रमुख व्यवसायी नेताओं के अत्यन्त निकट, व्यक्तिगत और निकट सम्पर्क में रहोगे।" एक बात यह भी वृद्ध श्री पार्किंगटन ने समझायी थी कि 'किसी भी मेधावी युवक को अपना क्षेत्र विस्तृत करनेका अवसर खोजना चाहिए।' यह तो ऊपर-ऊपर की बनावटी बात थी। लॉरेन शॉ कोई मूर्ख नहीं था।

अपने इस नये सम्बन्ध के नये वर्ष में लॉरेन शॉ ने उस प्रकार की पत्नी से विवाह किया, जो उसकी योजना के अनुकूल थी। श्वसुर, हेरिंगटन फौनटर्न, पार्किंगटन मॅक्कोनल का ग्राहक था, इसलिए शॉ को फौनटर्न की पुत्री एवेलिन के सम्बन्ध में सब बातें ज्ञात हो गयी थीं। वह मिस मिलिंगटन की ग्रेजुएट थी जो जूनियर लीग की सदस्य, राजदूत की प्रपौत्री, लेफ्टीनेण्ट गवर्नर की पौत्री और ऐसे व्यक्ति की कन्या थी, जो विलियम पेन के अत्यन्त सन्निकट मित्रोंमें से एक की कुल परम्परा में से थी और अन्तर्राष्ट्रीय प्रख्यातिवाले श्री वाली वान्टर्न की बहन थी। दुर्भाग्य की बात यह थी....किन्तु उसकी अन्य योग्यताओं की दृष्टि से अक्षम्य नहीं....कि एवेलिन वान्टर्न उससे चार वर्ष बड़ी थी.... अत्यन्त अनाकर्षक, कुछ मद्यप जैसी और कुछ अधिक अच्छी न लगने वाली। जो वह चाहता था वह उसे दे देती थी और जो वह नहीं देती थी उसका अपेक्षाकृत कोई महत्त्व नहीं था।

ट्रेडवे के उपाध्यक्षोंमें से किसीका भी वैसा उच्च सामाजिक पद नहीं था जैसा लॉरेन शॉ ने प्राप्त कर लिया था। यह बात ऐसी थी जिसने ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के अध्ययन के प्रारंभ में ही उसे प्रभावित किया था। इससे भी अधिक बात यह थी कि कार्यवाहक उपाध्यक्षता के लिए मार्ग खुल गया था। एक बड़बड़िया डाक्टर के मुँह से यह गुप्त बात निकल गयी थी कि फिट्जेराल्ड का स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। जिस एल्डर्सन को बुलार्ड ने फिट्जेराल्ड से नीचे कर दिया था, वह यों ही नीचे जा चुका था। ग्रिम यद्यपि अत्यन्त उच्च श्रेणीका उत्पादक था, किन्तु उसे व्यवसाय के अन्य क्षेत्रों का कोई अनुभव नहीं था। डडले भी ग्रिम के ही समान अपने क्षेत्र में तो बहुत अच्छा था, पर लकड़ी के व्यवसाय के व्यापक प्रबंध के लिए उसमें पूरी योग्यता नहीं थी।

फिट्जेराल्ड की मृत्यु ने लॉरेन शॉ को अपनी योजना में अधिक विश्वस्त कर दिया। हाँ, यह बाधा तो बनी हुई थी कि कहीं बुलार्ड अपने विचित्र व्यवहार के क्षणों में कभी किसी दूसरे को ही कार्यवाहक उपाध्यक्ष न चुन ले। लॉरेन शॉ इस बात के लिए बहुत अधिक चिंतित नहीं था। उपाध्यक्ष और नियंत्रक अपने विजयी स्थान में सुरक्षित थे। वह ऐसा खेल खेल रहा था जिसमें हार की बात ही नहीं थी। क्योंकि वह खिलाड़ी भी था और निर्णायक भी।

किसी प्रकार भी कोई कह नहीं सकता था कि उसने आजतक जो कुछ भी किया, वह कॉर्पोरेशन के सर्वश्रेष्ठ हित में नहीं है। चार वर्ष से भी कमके भीतर ही लगी हुई पूंजी पर कॉर्पोरेशन को जो लाभ हुआ वह लगभग पचास

प्रतिशत बढ़ गया था। यही उसकी योग्यता का वास्तविक उत्तर था। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के कामका विरोध नहीं कर सकता था।

अब अचानक लॉरेन शॉ को ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरी सारी योजना टूक-टूक हुई जा रही है....और वह भी केवल एक सप्ताह के कारण ही। बस कुछ दिन और हैं, अगले मंगलवार को संचालकों की बैठक में बुलार्ड निश्चित रूप से बोर्ड के द्वारा उसे कार्यवाहक उपाध्यक्ष बनवा देता। किन्तु अब ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी है और लॉरेन शॉ ने देखा कि मेरा भाग्य-निर्णय वे ही लोग करने जा रहे हैं, जिनकी मित्रता को वह कॉर्पोरेशन के प्रति अपने कर्तव्य की वेदी पर बलिदान करने को बाध्य हुआ था'।

अपनी चारपाई पर बैठे हुए लॉरेन शॉ ने जो सिगरेट जलायी थी उसने उसके मुँह में कड़ुवाहट उत्पन्न कर दी। उसने सिगरेट पैरों तले मसल डाली और अपने परिधान-कक्ष में होता हुआ स्नानागार में घुस गया।

"धतेरे की!" उसने उच्च स्वर से कहा।—गत रात्रि को मैंने जो कुछ किया वह किया ही क्यों? क्योंकि मैंने योजना नहीं बनायी, हाँ, यही कारण है....मैं अपने मनकी झोंक पर काम कर बैठा। केवल मूर्ख ही ऐसा काम करते हैं। हाँ, मैं मूर्ख बन गया....मूर्ख से भी बुरा....दलित, नासमझ, जड़। मैंने एल्डर्सन के साथ अत्यन्त भद्दे रूप में व्यवहार किया और संभवतः इस फेर में मैंने वॉलिंग को भी विरोधी बना लिया। द्वार पर वॉलिंग से मैंने जो अंतिम बात कही थी, वह सबसे बुरी थी....भिक्षा माँगना....अपने को दुर्बल सिद्ध करना। मैं क्यों नीचे कार्यालय में झपट कर गया और क्यों सब विभागीय अध्यक्षों को इकट्ठा कर लाया? मैंने यह क्यों नहीं समझ लिया कि इनका कोई महत्व नहीं है? विभागीय अध्यक्ष तो नया अध्यक्ष नहीं चुनते हैं....उन बीसों का तो कोई एकमत भी नहीं है। एल्डर्सन का एक मत था। वॉलिंग का एक मत था। एल्डर्सन का मत तो संभवतः प्रारंभ से ही हाथसे निकल गया था, किन्तु वॉलिंग का मत प्राप्त करनेका तो फिर भी अवसर था। एल्डर्सन ने वॉलिंग को साथ लेकर मुझे मूर्ख बना दिया। हाँ, यही मुझे करना चाहिए था....जो एल्डर्सन ने चतुराई से कर लिया था....वॉलिंग से मिलना। संभवतः वॉलिंग ही निर्णायक मत देनेवाला हो।

अचेतन रूप से लॉरेन शॉ ने दूसरी सिगरेट जलायी। उसके मस्तिष्क में एक नयी योजना अपना रूप ग्रहण करने लगी।—एल्डर्सन का मत समाप्त हो गया। ग्रिम पर भरोसा किया नहीं जा सकता। वह संभवतः एल्डर्सन के साथ

ही रहेगा। वॉलिंग और डडले संदिग्ध थे....किन्तु मैं इन दोनोंमें से एक को कार्यवाहक उपाध्यक्षता देकर मिला सकता हूँ। नहीं...डडले को फाँसने का एक उपाय और है। यदि मुझे करना होता....वॉलिंग के मतका मूल्य देनेके लिए मैं कार्यवाहक उपाध्यक्षता बचा सकता हूँ। किन्तु डडले ने शिकागो से मुझे बुला क्यों नहीं लिया। संभवतः विमान देर मे पहुँचा होगा।....वह आज प्रातः-काल बुलावेगा। हाँ, मैं डडले और वॉलिंग को साथ लूँगा। किन्तु ये तो कुल दो ही मत हुए....अपना मिलाकर तीन मत। एक और होना चाहिए। इसका अर्थ है कि या तो जॉर्ज कासवेल को साधा जाय या जूलिया ट्रेडवे प्रिंस को। कासवेल को साधना संभव है....कासवेल उसके लाभ के पक्षकी उपेक्षा नहीं करेगा....किन्तु जूलिया ट्रेडवे प्रिंस....? किसी कंपनयुक्त मुद्रा ने उसका मुख विकृत कर दिया। जब उसके पीछे लौटने वाले मस्तिष्क ने इस समय की स्मृति दिलायी जो उसने जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के साथ बिताया था। कमसे कम मैं वहाँ पहले पहुँच गया था....एल्डर्सन को तो पछाड़ ही दिया था। किन्तु मैंने सब मामला उस समय यह बताकर बिगाड़ दिया, जब उसने पूछा कि क्या मैं उन चारलेस्टन के शॉ लोगोंमें से हूँ, जिनका जमैका मे अत्यन्त सुंदर स्थान है। मैं उस समय यह क्यों नहीं भूल गया कि वह कभी एक बार पागल थी और अब भी हो सकती है। नहीं, नहीं, नहीं,....वह पागल नहीं थी....मैं ही पागल था। यदि मैं पागल न होता तो इस प्रकार....मूल्य पर लाभ के सम्बन्ध में बड़बड़ाता न चला जाता। जूलिया ट्रेडवे प्रिंस की समझ में मेरी कही हुई एक भी बात नहीं आयी होगी।

उसके ओठों से कराह से भरा शाप निकला और जब वह शौचालय के ऊपर अपने काँपते हुए हाथ बढ़ाकर झुका तो वह उल्टी करने की इच्छा को रोक रहा था।

केंट काउन्टी, मेरी लैंड ७.०५ प्रातःकाल

जेसी ग्रिम ने अपनी पेटी-रहित खाकी पतलून के सिरे में अपने अँगूठे डाल लिये और बरसाती के डंडे से लगकर झुक गया। उसकी स्थिर दृष्टि समुद्रतट की ओर जानेवाले देवदार के वृक्षोंसे बँधे हुए मार्ग की ओर घूमकर उस खाड़ी के काँच जैसे चिकने ज़ल के पार ढेले के समान खिसक गयी और फिर खाड़ी के पार पहुँचकर स्थिर हो गयी। रातके उत्तरी पवन ने आकाश को धो कर

ऐसा निर्मल नीला कर दिया था जैसे कोई चमकाया हुआ रत्न हो। वायु इतनी स्वच्छ थी कि वह उस पुराने चार मस्तूलोंवाले जलयान के भूरे पालों पर के धब्बे भी देख सकता था, जो ऊपर तक लकड़ी लादे धीरे-धीरे वाल्टीमोर की ओर चला जा रहा था।

अत्यन्त संतोष के साथ जेसी ग्रिम ने कारखाने की ओर अपनी आँखें घुमायीं ....काले रंगके देवदार के आगे चमकीली नयी लकड़ी का रंग इतना सुहावना था कि उसे रंगवाने की बात सोचना ही भूल थी।

उसके पीछे परदेवाला द्वार कूक कर खुल गया और उसने देखा कि सारा प्रातःकाल की चमक पर आँख मिचका रही है और उन भूरे बालों को ठीक कर रही है, जो शीघ्रता से बनानेके समय रह गये थे।

"मुझे क्यों नहीं पुकार लिया, जेसी ? मैं नहीं जानती थी कि तुम इतने शीघ्र उठ गये हो।"

"नहीं, शीघ्र क्या ?" उसने स्नेहपूर्वक कहा—"सुंदर प्रभात है !"

"मैं आशा कर रही थी कि वह होगा ही।" उसने इस प्रकार कहा मानो जेसी को प्रसन्न करना ही उसके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है....और जेसी भी जानता था कि यह बात असत्य नहीं है।

"जेसी ?"

"अब आगे ?" सारा के मुखपर विचित्र नन्हीं-सी खीस ने बता दिया कि वह जेसी से कुछ काम कराना चाहती है। "तुम फ्रेड से फोनपर बात करने स्टोर में जलपान से पहले आओगे या पीछे ?" उसने पूछा।

"तुम क्या मंगाना भूल गयी हो ?"

"शर्वत....हाँ ; यदि तुम मालपुए न खाना चाहो तो....। मैं कोई शर्बत लाना ही भूल गयी।" इस भूल पर बनावटी लज्जा का नाटच करते हुए उसने कहा।

"निश्चय ही मैं मालपुए खाना चाहता हूँ। शनिवार के प्रातः मैं सदा यहाँ मालपुए खाता रहा हूँ।" उसने स्वच्छ उत्तरी पवन की साँस लेते हुए जम्हाई ली और उसके पास से होकर, उसके गालपर स्नेहपूर्ण मुक्का दिखाते हुए आगे बढ़ा।

वह आगे बढ़ी और उसने उसकी मुट्ठी अपने हाथ में पकड़ ली—"मैं समझती हूँ, फ्रेड का तुमसे कोई ऐसा काम नहीं होगा कि तुम्हें शीघ्र जाना पड़े।"

"नहीं, कोई ऐसा काम नहीं है कि मुझे शीघ्र जाना पड़े।"

"जेसी ? तुमने अभी श्री बुलार्ड को अपने अवकाश प्राप्त करने के सम्बन्ध में कहा है या नहीं ?"

"नहीं, मैं अभी मार्ग में सोच रहा था कि मैं उसे यथासंभव शीघ्र बता दूँ। इसलिए मैंने निश्चय किया है कि उसे सोमवार या मंगल को....सप्ताह के पहले ही दिनों में बता दूँ।"

"वह क्या कहेगा ?"

"हल्ला मचायगा, मैं समझता हूँ।"

"मुझे विश्वास है कि वह तुम्हें बातों में फँसा नहीं लेगा। क्यों जेसी ?"

"जान तो नहीं पड़ता।"

उसने प्रसन्न होकर सिर हिलाया और ज्योंही वह गाड़ी की ओर बढ़ा, त्योंही उसने पीछे से पुकारा—"देखो ? वहाँ स्टोर पर पहुँचकर किसी से बातें न करने लगना और सारा सबेरा वहीं न निकाल देना।"

"जान पड़ता है तुम अब कुछ शासन करने लगी हो।" उसने उत्तर दिया।

"अभ्यास किए रखती हूँ।" उसने हँसकर कहा—"जीवन में यह पहला ही वास्तविक अवसर है, तुमपर शासन करने का।"

"यह तुम्हारी बड़ी बुरी बात है।" वह हँसता हुआ गाड़ी में प्रविष्ट हो गया। सारा के सम्बन्ध में यह बड़ी विचित्र बात थी।

मिलबर्ग में जब वह थी तो सदा यही कहा करती थी कि तुम पर्याप्त बातें नहीं करते और यहाँ दिन भर यही कहती रहती है कि तुम बहुत बातें करते हो।

मिलबर्ग, पेंसिलवेनिया ७.१४ प्रातःकाल

डॉन वॉलिंग का जागना धीरे-धीरे नहीं हुआ। वह अचानक उस हड़बड़ी में उछल पड़ा, जब एक पैंतीस सेर का लड़का ऊँची कुदानें भरता हुआ उसके पास आ कूदा। उसके चौंके हुए वचन का स्वागत किया स्टीव की बचपन-भरी हँसी ने।

"यह कौन-सा ढंग है....तुम इतने सबेरे कर क्या रहे हो ?"

"मछली मार रहा हूँ।" स्टीव ने कहा और तब एक साँस में वह कह गया—"माँ ने कहा है कि बिना जलपान किये मैं जा नहीं सकता और जबतक आप उठेंगे नहीं, तबतक जलपान मिल नहीं सकता और आपको कार्यालय जाना ही है, इसलिए मैंने सोचा कि आपको थोड़ा-सा झटका दे दूँ।"

"अच्छा झटका दिया !" उसने प्यारसे कहा—"तुम ऐसे बचपन के खेलों के लिए अब बहुत बड़े हो गये हो, बेटा !"

वह जम्हाई लेता और अपनी छाती चौड़ाकर अंगड़ाई लेते हुए उठा—"बड़ा अच्छा दिन जान पड़ता है।"

स्टीव ने टोका—"जब बादल हों तब मछली मारना बहुत अच्छा होता है। क्यों, पिताजी ? श्री बुलार्ड की मृत्यु से बहुत उदास हैं, क्यों ?"

डॉन वॉलिंग ने आँखें झपकायीं और इस बात पर चौंका कि अपने जागरण के इस प्रारंभिक प्रथम क्षण में ही मैं यह बात भूल गया था।

"मैं समझता हूँ कि आज सायंकाल आप शिकागो नहीं जायेंगे। क्यों पिताजी ?"

वह फिर चौंका—"नहीं, ठीक है....मैं भूल गया था। अपने सुरक्षित स्थान कटवाने पड़ेंगे।"

स्टीव चारपाई की पट्टी पर सिमटकर बैठ गया। उसके हाथ उसके घुटनों में लिपटे हुए थे—"माँ सोचती थी कि आप नहीं जायँगे। क्या मैं उससे कह दूं कि आप दो मिनट में भोजन के लिए तैयार हो जायँगे ? क्यों पिताजी ?"

उसने सिर झुकाया। स्नानागार में पहुँचते-पहुँचते उसने सुना कि स्टीव वेग से भवन में दौड़ा हुआ खटखट करता चला जा रहा है।

जलधारा की ठंढक ने उसके स्नायुओं को झकझोर दिया और वह अत्यन्त चेतन प्रयास के साथ उस विचारधारा को पकड़ने का प्रयास करने लगा, जिसे रात्रि ने विच्छिन्न कर दिया था। ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु उसे ऐसी प्रतीत हुई मानो किसी ऐसे द्वार के पीछे हुई हो जो समीप तो हो, किन्तु दृष्टिसे परे हो। जब वह उस बरसाती में पहुँचा जहाँ वे अच्छी ऋतु में जलपान किया करते थे, तो मेरी ने प्रातःकाल का समाचारपत्र लाकर मेजपर फैला दिया। उसने द्वार से ही काले मोटे अक्षरों में शीर्षक पढ़ लिया और तब अपनी पत्नी के पास बैठकर दायें हाथ के स्तम्भ को आँखोंसे टटोलने लगा। उसका नाम उसकी ओर उछल पड़ा :

कंपनी के उपाध्यक्ष, मैकडॉनल्ड वॉलिंग, ग्रे रॉक रोड से, इस समाचार का समर्थन प्राप्त हुआ है, जिन्हें कॉर्पोरेशन के न्यूयॉर्क कार्यालय में काम करनेवाले ट्रेडवे के एक अधिकारी से समाचार मिला था। वहाँ....।

"इन प्रेतों को यह सब मिल कहाँसे गया ?" वह बुदबुदाया और उसकी उँगली उसके पहले नामको निर्देश करने लगी।

"यह तो तुम्हारा नाम है, प्रिय?" मेरी ने सरलतासे पूछा।

"नहीं, यह नहीं है। मैं...." उसने अपना स्वर मौन में समाप्त कर दिया।

"तुम्हें इसपर आपत्ति क्यों है प्रिय? सचमुच यह सुनने में बड़ा अच्छा लगता है....ग्रे रौक रोड के मैकडॉनल्ड वॉलिंग।" उसने अपने स्वर को ऐसे विनोदात्मक ढंग से ढाला कि वह समझ गया कि अब वह मुस्कराहट के साथ दिन प्रारंभ करनेके लिए उसे खोदना चाहती है।

स्टीव ने अपनी माँ की बात दुहरा दी और उस प्रहसन को भँड़ैती मे बदल दिया। उसने अपने चम्मच को ही नगाड़े का डंडा बना दिया।

"अच्छा, अब बस करो पट्ठे!"

"माँ ने भी तो यही कहा था।"

"तुम्हारी माँ को बहुत विशेष अधिकार मिले हुए है।" उसने कहा और तब अपनी पत्नी की ओर उस मुस्कराहट के साथ देखा जिसकी वह प्रतीक्षा कर रही थी।

मेरी ने उसके कंधे पर थपकी लगायी और रसोई की ओर चली गयी— "भीतर भी बहुत कुछ है, डॉन?"

वह अभी पन्ना उलट ही रहा था कि उसने टेलीफोन की घंटी सुनी।

स्टीव का चम्मच उसके दाल के कटोरे में खनक गया—"मै बाजी लगाता हूँ कि यह मेरे लिए है। मैं बाजी लगाता हूँ। मैंने कैनी से कहा था कि मैं वहाँ...."

उसने अपने पुत्र के इस प्रयास को हाथ फैलाकर रोक दिया—"तुम्हारी माँ रसोई से उत्तर दे रही है।"

मेरी भीतर चली आयी—"तुम्हारे लिए है, डॉन।" उसके स्वरके ढंगसे चिंता प्रकट हो रही थी—"श्री एल्डर्सन हैं।"

वह रसोईघर की ओर चला और तब बीच में अपना विचार बदलकर भवनकी ओर घूम गया।

एल्डर्सन के स्वर की पहली ध्वनि ने मेरी की चिंता का समर्थन किया। एल्डर्सन स्पष्टतः अत्यन्त घबराहट की दशा में थे।

"रंग-ढंग अच्छे नहीं है, डॉन। बहुत बिगड़ गये हैं। मैंने जेसी से बातचीत की है....रात बातचीत न हो पायी... मिल ही नहीं पाये....पर मैंने अभी उससे बातचीत की है और वह अध्यक्ष-पद नहीं लेगा। वह पहली नवम्बर को अवकाश ग्रहण कर रहा है।"

"अवकाश!"

"यही तो वह कह रहा है।"

"पर अभी तो वह....क्या अवस्था हुई है उसकी ?"

"अक्टूबर में साठ, पर उसने निश्चय कर लिया है।"

"ठीक है, फ्रेड ? मैं आते समय तुम्हारे यहाँ रुकूँगा।"

"रुकोगे, डॉन ? ठीक है। बहुत अच्छा होगा। तब हम बात कर लेंगे।"

उसने फोन रख दिया और अपने को यह दोष देने लगा कि मैंने उस बात की आशा दिला दी है जिसके लिए कोई आशा नहीं है। यदि जेसी ग्रिम क्षेत्र से बाहर हो गया तो शॉ अध्यक्ष बन जायगा।

वेस्टकोव, लांग आयलैंड ७.३५ प्रातःकाल

शनिवार को प्रातःकाल नौका-संघ जाना जार्ज कासवेल के सप्ताह का नियमित काम था और यह पिछले पाँच वर्षोंसे गर्मी के महीनों में निरन्तर होता रहा है। उसने अड़तीस फुट लम्बी 'मूनस्वीप' नाम की नाव ले ली थी, जिससे अभ्यास-यंत्रित जीवन से छुटकारा मिले; पर परिणाम यह हुआ कि वह नौका ही अभ्यास बन गयी।

'मूनस्वीप' ने निश्चय ही उसे आनंद दिया था। धूप में काले पड़े हुए उसके साथ युवक नाविक उस क्लब के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे और वे उसके साथ इस बात को भुलाकर व्यवहार करते थे कि वह धनी था और कासवेल था। नाव की दौड़ान का सरदार कैनकेस विशेष रूपसे बड़ा अच्छा था। जार्ज कासवेल ने कई बार सोचा कि बारबार नावकी दौड़ में हम लोगों का ही जीतना कोई बहुत अच्छी बात नहीं समझी जायगी। किन्तु क्लब में इस सम्बन्ध में कोई बात नहीं थी; क्योंकि सब लोगों ने मिलकर उसे वाइस कमांडर चुन लिया था। इसका अर्थ यह था कि वह स्वतः अगले वर्ष कमोडोर हो जायगा। उसके पिता और उसके दादा दोनों कमोडोर थे। यह बड़ा आनंददायक कुलरीति-निर्वाह रहा।

आज प्रातःकाल समुद्र-तटपर गाड़ी चलाते हुए जार्ज कासवेल के विचारों का सम्बन्ध नौका-संघके साथ नहीं था। उसे सहसा यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जो बात रात सोते समय वह सोच रहा था, वह अब भी उसके मस्तिष्क में विराजमान है। यह संभावना अब भी उसके मन को घेरे हुई थी कि संभवतः मैं ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष हो जाऊँ। जितना ही वह उसपर सोचता उतना

ही वह पद उसे वांछनीय प्रतीत होता। उसकी चिंतनधारा इस सीमा तक पहुँच गयी कि उसने अपने मनसे पूछा—इस बात पर किटीकी क्या प्रतिक्रिया होगी? वह समझता था कि किटी इसका स्वागत करेगी। यदि इसका अर्थ न्यूयॉर्क और लांग आयलैंड छोड़ना हो, तब भी। किटी भी तो यदा-कदा कुछ उत्तेजना की बात चाहती रहती थी और आजतक जितनी बातें हुई हैं, उनमें यह सबसे अधिक उत्तेजनापूर्ण बात है।

नौका-संघ के द्वार में घूमते ही जार्ज कासवेल ने देखा कि खाड़ी के उत्तरी सिरे पर, जहाँ बड़ी-बड़ी नावें खड़ी थीं, वहाँ बड़ी चहल-पहल मची हुई थी। धूप के कारण आँख मींचते हुए उसने देखा कि मेरे नाविक मुझसे पहले ही नाव पर पहुँच गये हैं। यह दृश्य एक दिन पूर्व जार्ज कासवेल को कुछ थोड़ा उत्तेजित अवश्य कर देता। किन्तु आज ऐसी प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी। व्हेलर्स कप के लिए नाव-दौड़ करना उसके लिए अब बड़ी महत्वहीन बात हो गयी थी।

न्यूयॉर्क सिटी, ७.५० प्रातःकाल

ज्योंही टेलीफोन की घंटी बजी, ब्रूस पिल्चर जाग गया और उसने योंही साधारणतः इस पूर्व विचार के साथ उत्तर दे दिया कि टेलीफोन ऑपरेटर ही प्रातःकाल की घंटी दे रहा है। पर यह तो किसी युवक का स्वर था—"श्री पिल्चर?"

"हाँ।" उसने संयत रूपसे कहा।

"ईश्वर को धन्यवाद है कि आप मिल तो गये। मैं बर्नार्ड स्टीगल बोल रहा हूँ। दादाजी को रात दौरा हो गया और मैं तब से प्रयत्न कर रहा हूँ...."

ब्रूस पिल्चर के मन पर कोड़ा-सा पड़ा। नहीं, यह भ्रामक है....जूलियस स्टीगल को दौरा नहीं पड़ा....ऐवरी बुलार्ड को....ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हुई है....।

"क्योंकि जब वे घर आये, तब किसी बात के कारण घबराये हुए थे।" बर्नार्ड स्टीगल कहता जा रहा था—"माताजी ने इसे तबतक कोई महत्व नहीं दिया, जबतक वे उन्हें भोजन के लिए बुलाने गयी। उन्होंने दादाजी को...."

पिल्चर ने मद्यप की भाँति सिर हिला दिया।

बर्नार्ड स्टीगल का स्वर फिर मंद पड़ गया–"अभी कुछ निश्चय तो नहीं कहा जा सकता, किन्तु डाक्टर लोग बहुत आशा नहीं दिला रहे हैं। मैं यहाँ अस्पताल में तब तक प्रतीक्षा करूँगा, जब तक कुछ निश्चय न हो जाय।"

"क्या....कौन-सा अस्पताल?" पिल्चर ने पूछा।

"माऊँट सिनाई, श्रीमान्।"

"मैं यथाशीघ्र आ रहा हूँ।"

"वास्तव में आने जैसी कोई बात नहीं है। यदि आप स्वतः आना चाहें तो दूसरी बात है। वे पूर्णतः अचेत हैं। हममें से किसी को नहीं पहचानते; किन्तु यदि आप आना चाहें...."

"तो ऐसी दशामें...." पिल्चर ने टोककर कहा–"जब वे सचेत हो जायँ तो तुम बुला लेना। मैं यहीं होटल में रहूँगा....या कह जाऊँगा कि मैं कहाँ मिल सकूँगा।"

"ठीक है, श्रीमान्! मैंने सोचा कि मैं यथाशीघ्र आपको बता दूँ। मैं कल संध्याको ही आपसे सम्पर्क स्थापित करना चाहता था, पर कर नहीं पाया।"

"नहीं....मुझे प्रसन्नता है कि तुमने बता दिया, बर्नार्ड।"

"ओह, श्री पिल्चर!" बर्नार्ड ने इस प्रकार कहा मानो यह बात उसे बाद में सूझी हो—"जब हम दादाजी से मिले तो वे हमें किसी बातके सम्बन्ध में कुछ समझानेका प्रयत्न कर रहे थे....हम स्पष्टतः तो नहीं समझ पाये, किन्तु कुछ ऐसा सुनायी पड़ा मानो वह स्टोर बेचनेके सम्बन्ध में कुछ कहनेका प्रयत्न कर रहे थे और वे किसीका नाम दुहरा रहे थे। वह कुछ बुलार्ड–जैसा नाम था....या वैसा ही कुछ। मैं समझता हूँ कि आप उनका उद्देश्य समझते होंगे?"

ब्रूस पिल्चर के मन में नीला प्रकाश चमक गया और एक ठंडी तलवार चिनगारी की चोट करती-सी दिखायी दी–"हाँ; मैं जानता हूँ, बर्नार्ड। उनका क्या अर्थ था।"

"अच्छा, यदि कोई परिवर्तन होगा श्री पिल्चर तो मैं आपको बुला लूँगा।"

"हाँ, कृपया अवश्य बुला लेना।" उसका स्वर अत्यन्त स्पष्ट और संयत था–"तुम्हारे साथ मेरी बड़ी गहरी सहानुभूति है, बर्नार्ड! और मुझे विश्वास है कि तुम मेरी भावना अपने परिवार को बता दोगे। हम इस समय यही कर सकते हैं कि अच्छे की आशा करें।"

"मैं समझता हूँ यही ठीक है, श्रीमान्।" बर्नार्ड का स्वर सुनायी पड़ा।

फोन का घंटा ठनका और ब्रूस पिल्चर वेग से द्वार की ओर लपका। उसने द्वार खोला और वहाँ पड़ा हुआ समाचारपत्र उठा लिया। जब उसने पहले पन्ने उलटे, उसकी उँगलियाँ काँप रही थीं। ऐवरी बुलार्ड की अन्त्येष्टि पहले ही स्तम्भ में थी। उसका कंपन बन्द हो गया।

उसने अपना हाथ खोल दिया और समाचारपत्र धरती पर डाल दिया। खिड़की की ओर जाते हुए वह उसे रौंदता हुआ चला गया और फिर प्रातः-काल की छाया से युक्त गली में नीचे झाँकने लगा। नीले प्रकाश ने उसके मन में ठंडी आग जला दी थी। उसकी लपटों की कड़कड़ाती ध्वनि बर्नार्ड स्टीगल की यह ध्वनि थी, जो कह रही थी—"कुछ स्टोर बेचने के सम्बन्ध में....बुलार्ड....'

मृत ऐवरी बुलार्ड और मरते हुए जूलियस स्टीगल के बीच केवल एक ही व्यक्ति था जो जानता था कि कल तीसरे पहर जूलियस स्टीगल के कार्यालय में क्या बात हुई थी। यह व्यक्ति ब्रूस पिल्चर था।

दशम अध्याय

मिलबर्ग,

पेंसिलवेनिया

८.१२ प्रातःकाल

नेल्सन फाउलर कनिष्ठ, फाउलरों की पाँचवीं पीढ़ी में था....ये फाउलर पिछली एक शताब्दी से भी अधिक से मिलबर्ग के प्रसिद्ध पुष्प-विक्रेता रहे हैं। जब उसने अन्त में सब आदेश जोड़-जाड़कर देखे तो उन सबकी संख्या दर्जनों में बहुत अधिक निकली। वह जानता था कि इतने फूल मिल नहीं सकेंगे। फाउलरों के इतिहास में यह सबसे बड़ी घटना होगी। सोमवार के पश्चात् मेरा पिता अब यह डींग हाँकता नहीं फिरेगा कि १९२९ में जब पाथमोर की कन्या ने गवर्नर के पुत्रसे विवाह किया था, तब सबसे अधिक फूल लगे थे। बुलार्ड की अन्त्येष्टि सब पुराने लेखे समाप्त कर देगी....सौ वर्षों में सबसे अधिक फूल....।

८.१८ प्रातःकाल

युवक पादरी लुइजीकी बातें सुनता हुआ द्वार में खड़ा था। "मैं भली-भाँति समझता हूँ।" उसने कहा—"मुझे अधिक बतानेकी आवश्यकता नहीं है, लुइजी। तुम्हें श्री बुलार्ड के अन्त्येष्टि-संस्कार में सम्मिलित होने में कोई कठिनाई नहीं है।"

"आप जानते हैं कि यह ऐपिस्कोपल चर्च है और यहाँ जनता को आज्ञा नहीं....?"

"मुझे विश्वास है कि यहाँ बहुत-से कैथलिक लोग श्री बुलार्ड की अन्त्येष्टि में आयेंगे, यहाँ तक कि स्वयं फादर स्टीगर।"

"तब ठीक है न?"

"हाँ, ठीक है।"

"धन्यवाद, फादर। मैं आपको बहुत धन्यवाद देता हूँ।" लुइजी ने कहा और उस द्वार के आगे झुक गया जो पहले ही बन्द हो रहा था।

सीढ़ी से नीचे उतरकर उसने अपनी घड़ी में देखा। उसे योंही देर हो चुकी थी। पहली बार उसे तब विलंब हुआ था, जब उसे पहले बच्चा हुआ था और यह इतनी पुरानी बात है कि अब बच्चा भी मनुष्य हो गया है। उस समय उसने अपनी देरी का कारण श्री बुलार्ड को समझा दिया था और श्री बुलार्ड ने कहा भी था–"ठीक है....मनुष्य को प्रतिदिन बच्चे नहीं होते....।" किन्तु इस बार की बात ही दूसरी थी। वहाँ कोई रह ही नहीं गया था जिसे समझाया जाता।

सड़क की ओर लपकते हुए लुइजी को खेद के साथ स्मरण आया कि मैंने उस युवक पादरी से श्री बुलार्ड के लिए मोमबत्ती मोल लेनेकी बात तो पूछी ही नहीं। संभवतः पूछना आवश्यक नहीं था....संभवतः फादर स्टीगर कल सामूहिक प्रार्थना में यह बात बता दें। फादर स्टीगर बड़े अच्छे पादरी थे। बहुत बातों में वे श्री बुलार्ड के समान थे।

८.२४ प्रातःकाल

उबलते हुए पानीमें से भाप का एक धुआँ-सा निकला और ऐरिका मार्टिन ने कड़ाही उठा कर उलट दी। तत्काल प्याले की तली में रखा हुआ चूरा काला पड़ गया और भाप में से कॉफी की गंध आने लगी।

उसने प्याला उठाकर अपने ओठों से लगाया और पी लिया; किसी स्वाद के साथ नहीं, वरन् काम समझकर। ज्योंही उसने आँखें उठायीं, तो खिड़की से उसने ट्रेडवे के टॉवर का प्रातःकाल से प्रकाशित श्वेत स्तम्भ देखा। उसने देखा कि यह उस मनुष्य का स्मारक है, जिसकी मृत्यु हो गयी है। ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी है। मैं आजसे सदा उसके बिना रहूँगी।

उसकी आँखें झुक गयीं और फिर कॉफी के प्याले की कालिमा को घूरते हुए वह भविष्य के सम्बन्ध में विचार करनेके लिए अपनेको बाध्य करने लगी। प्याला हिल उठा और उसने उसे चूल्हे के एक ओर रख दिया और वह उस क्षणका स्मरण करने लगी, जब गत रात्रि उसने अपने आपको डॉन वॉलिंग के हाथों में डालकर अपने ऊपर नियंत्रण खो दिया था। जितने व्यक्तियों से रात उसने बातचीत की थी, उनमें वही अकेला व्यक्ति था–जिसने उसके साथ सहानुभूति दिखायी थी। वही अकेला व्यक्ति था, जिसने उसके शोक में हाथ बँटाया था।

दशम अध्याय

मिलबर्ग,

पेंसिलवेनिया

८.१२ प्रातःकाल

नेल्सन फाउलर कनिष्ठ, फाउलरों की पाँचवीं पीढ़ी में था....ये फाउलर पिछली एक शताब्दी से भी अधिक से मिलबर्ग के प्रसिद्ध पुष्प-विक्रेता रहे हैं। जब उसने अन्त में सब आदेश जोड़-जाड़कर देखे तो उन सबकी संख्या दर्जनों में बहुत अधिक निकली। वह जानता था कि इतने फूल मिल नहीं सकेंगे। फाउलरों के इतिहास में यह सबसे बड़ी घटना होगी। सोमवार के पश्चात् मेरा पिता अब यह डींग हाँकता नहीं फिरेगा कि १९२९ में जब पाथमोर की कन्या ने गवर्नर के पुत्रसे विवाह किया था, तब सबसे अधिक फूल लगे थे। बुलार्ड की अन्त्येष्टि सब पुराने लेखे समाप्त कर देगी....सौ वर्षों में सबसे अधिक फूल....।

८.१८ प्रातःकाल

युवक पादरी लुइजीकी बातें सुनता हुआ द्वार में खड़ा था। "मैं भली-भाँति समझता हूँ।" उसने कहा—"मुझे अधिक बतानेकी आवश्यकता नहीं है, लुइजी। तुम्हें श्री बुलार्ड के अन्त्येष्टि-संस्कार में सम्मिलित होने में कोई कठिनाई नहीं है।"

"आप जानते हैं कि यह ऐपिस्कोपल चर्च है और यहाँ जनता को आज्ञा नहीं....?"

"मुझे विश्वास है कि यहाँ बहुत-से कैथलिक लोग श्री बुलार्ड की अन्त्येष्टि में आयेंगे, यहाँ तक कि स्वयं फादर स्टीगर।"

"तब ठीक है न?"

"हाँ, ठीक है।"

"धन्यवाद, फादर। मैं आपको बहुत धन्यवाद देता हूँ।" लुइजी ने कहा और उस द्वार के आगे झुक गया जो पहले ही बन्द हो रहा था।

सीढ़ी से नीचे उतरकर उसने अपनी घड़ी में देखा। उसे योंही देर हो चुकी थी। पहली बार उसे तब विलंब हुआ था, जब उसे पहले बच्चा हुआ था और यह इतनी पुरानी बात है कि अब बच्चा भी मनुष्य हो गया है। उस समय उसने अपनी देरी का कारण श्री बुलार्ड को समझा दिया था और श्री बुलार्ड ने कहा भी था—"ठीक है....मनुष्य को प्रतिदिन बच्चे नहीं होते....।" किन्तु इस बार की बात ही दूसरी थी। वहाँ कोई रह ही नहीं गया था जिसे समझाया जाता।

सड़क की ओर लपकते हुए लुइजी को खेद के साथ स्मरण आया कि मैंने उस युवक पादरी से श्री बुलार्ड के लिए मोमबत्ती मोल लेनेकी बात तो पूछी ही नहीं। संभवतः पूछना आवश्यक नहीं था....संभवतः फादर स्टीगर कल सामूहिक प्रार्थना में यह बात बता दें। फादर स्टीगर बड़े अच्छे पादरी थे। बहुत बातों में वे श्री बुलार्ड के समान थे।

८.२४ प्रातःकाल

उबलते हुए पानीमें से भाप का एक धुआँ-सा निकला और ऐरिका मार्टिन ने कड़ाही उठा कर उलट दी। तत्काल प्याले की तली में रखा हुआ चूरा काला पड़ गया और भाप में से कॉफी की गंध आने लगी।

उसने प्याला उठाकर अपने ओठों से लगाया और पी लिया; किसी स्वाद के साथ नहीं, वरन् काम समझकर। ज्योंही उसने आँखें उठायीं, तो खिड़की से उसने ट्रेडवे के टॉवर का प्रातःकाल से प्रकाशित श्वेत स्तम्भ देखा। उसने देखा कि यह उस मनुष्य का स्मारक है, जिसकी मृत्यु हो गयी है। ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी है। मैं आजसे सदा उसके बिना रहूँगी।

उसकी आँखें झुक गयीं और फिर कॉफी के प्याले की कालिमा को घूरते हुए वह भविष्य के सम्बन्ध में विचार करनेके लिए अपनेको बाध्य करने लगी। प्याला हिल उठा और उसने उसे चूल्हे के एक ओर रख दिया और वह उस क्षणका स्मरण करने लगी, जब गत रात्रि उसने अपने आपको डॉन वॉलिंग के हाथों में डालकर अपने ऊपर नियंत्रण खो दिया था। जितने व्यक्तियों से रात उसने बातचीत की थी, उनमें वही अकेला व्यक्ति था—जिसने उसके साथ सहानुभूति दिखायी थी। वही अकेला व्यक्ति था, जिसने उसके शोक में हाथ बँटाया था।

८.५५ प्रातःकाल

डॉन वॉलिंग ने फ्रेड्रिक एल्डर्सन को पत्थर की उन पैड़ियों के नीचे प्रतीक्षा करते हुए पाया जो उसके घर की ओर जाती थीं। उसके मुखपर जो मुद्रा बनी हुई थी, वह उसकी आशा से पूर्णतः विपरीत थी। टेलीफोन पर बातचीत करने के पश्चात् उसने अपने आपको एक परास्त वृद्ध मनुष्य के साथ बातचीत करने के लिए तैयार कर लिया था; किन्तु उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एल्डर्सन के मुखपर चिंता के बदले उत्सुकता विराजमान थी। रुकती हुई गाड़ीकी ओर वह जिस वेगसे चलता हुआ आया उससे निश्चय हो गया कि पिछले घंटे में कोई बात ऐसी अवश्य हुई है, जिसने विशेष रूपसे परिस्थिति बदल दी है।

"बहुत अच्छा दिखाई देता है, डॉन? बहुत अच्छा।" एल्डर्सन ने बहुत विश्वास के साथ कहा और वह गाड़ी की बायीं ओर चला आया—"सब काम ठीक चल रहा है।"

"जेसी ने अपना विचार बदल दिया?"

"जेसी ने? नहीं, कोई ऐसी बात तो नहीं है।"

"मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। तुम्हें नहीं हुआ?....जेसी अवकाश ग्रहण कर रहा है! मैंने सोचा भी नहीं था कि उसके मन में कुछ ऐसी बात थी। इससे यही सिद्ध होता है कि मनुष्य क्या सोच रहा है, यह आपको कभी ज्ञात नहीं हो सकता। इसलिए तो वह यहाँ मेरीलैण्ड में आकर जम गया है।"

"तो यह कोई ऐसी बात नहीं है, जो उसने श्री बुलार्ड की मृत्यु के कारण निश्चित की हो।"

वॉलिंग ने वह प्रश्न पूछा जो टेलीफोन पर बातचीत करनेके समय से ही उसके मस्तिष्क में घूम रहा था।

एल्डर्सन को भी बड़ा आश्चर्य हुआ मानो यह विचार उसके मन में कभी आया ही न हो।

"नहीं, वह बहुत दिनों से उसकी योजना बना रहा था....अपने मन में रखे हुए था। जेसी के काम करनेका ढंग ही यही है। यदि मैं अध्यक्षपद की बात न उठाता, तो संभवतः अभी भी मुझे न बताता।"

"तो तुमने इस सम्बन्ध में उससे बातें कर ली?" एल्डर्सन ने अपना सिर हिला दिया। उसके मुख की मुद्रा पर आश्चर्य अंकित था—"जानते हो, उसने

क्या कहा? उसने कहा—फ्रेड? मैं दस लाख डालर प्रतिमास पर भी यह पद नहीं ग्रहण कर सकता। यही उसने कहा था। दस लाख डॉलर प्रतिमास!"

"वही केवल ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने अध्यक्ष-पद अस्वीकार किया है।" यह शब्द विचार करने से पहले ही मुँह से निकल गये और उसे अपनी असावधानी पर दुःख हुआ, जब उसने एल्डर्सन के मुख पर कष्ट की झलक देखी।

"मैं जानता हूँ, मैं मानता हूँ।" एल्डर्सन ने कहा, किन्तु वह तत्काल संभल गया—"मैं समझता हूँ कि रात तुम्हें यह बात कुछ थोड़ी विचित्र लगी होगी। जिस ढंगसे मैंने—" उसने अपने घरकी ओर वेगसे दृष्टि डाली। "देखो, मैंने ईडिथ को वचन दिया था कि मैं अब कुछ विश्राम करूँगा....मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहता है। तुम जानते ही हो....और हो सकता है कि वह ठीक कहती हो।"

"निश्चय ही वह ठीक कहती है, फ्रेड। और फिर...."

एल्डर्सन का स्वर और आगे बढ़ आया मानो उसने कोई अरुचिकर बाँध तोड़ दिया हो—"जहाँ तक जेसी का सम्बन्ध है, कोई चिंता की बात नहीं। वह शत-प्रतिशत हमारे साथ है। शॉ के सम्बन्ध में उसकी वही धारणा है जो हमारी है। इससे हमें तीन मत मिल जाते हैं....तुम, मैं और जेसी। अब सारी बात यह है कि हमें एक मत और चाहिए।"

"पर हम मत देंगे किसके लिए? यदि जेसी निकल जाता है, तो कौन...."

एल्डर्सन ने इसमें बाधा दी—"यह मेरी समझ में नहीं आता कि मैंने इस बात पर पहले क्यों नहीं सोचा। समझ लो, मैंने इस प्रकार मतक्रम लगाया है....डडले तो शॉ के लिए मत दे रहा है।"

"हाँ।"

एल्डर्सन की आँखों में एक धूर्ततापूर्ण चमक खेल गयी—"एक उपाय है रोकने के लिए।"

"क्या?"

"यदि उसे अपने लिए मत देनेका अवसर मिले तो वह शॉ के लिए मत नहीं देगा।"

एल्डर्सन ने जो सुझाव दिया था, वह डॉन वॉलिंग ने कभी सोचा ही नहीं था। वह विश्वास ही नहीं कर रहा था कि मैं इस बातको ठीक-ठीक समझ भी गया हूँ—"क्या तुम्हारा अर्थ है कि....फ्रेड? तुम वाल्ट को तो अध्यक्ष नहीं बनाना चाहते?"

"चार ही मत तो चाहिए। डडले को लेकर पूरे हो जायँगे।"

वॉलिंग ऐसा चौंका कि उसका शरीर अपने आप संचालित हो गया और पैर सरकने के कारण गाड़ी नीचे की ओर सरक चली।

"ठहरो।" एल्डर्सन ने झपट कर कहा। उसका हाथ वेगसे द्वार के हैंडिल को पकड़े रहा। वह चलती हुई गाड़ीके साथ-साथ चलने लगा।

वॉलिंग के पैर ने फिर गाड़ी संभाल ली और झटके के साथ खड़ी कर ली— "फ्रेड ? मैं कल्पना भी नहीं कर सकता...."

"मैं जानता हूँ। मैं जानता हूँ। पर तुम एक या दो मिनट इस सम्बन्ध में सोच लोगे, तो बहुत-सी बातें तुम्हारी समझमें आ जायँगी।" एल्डर्सन झपट कर गाड़ी का चक्कर लगा कर आगेकी गद्दी पर बैठ गया और डॉन वॉलिंग गाड़ी चलानेही वाला था कि उसने झट उसका हाथ रोक लिया—"नहीं, एक मिनट ठहरो। इस सम्बन्ध में बात कर ली जायगी। फिर कोई हड़बड़ी नहीं है। उसकी गाड़ी अभी एक घंटे तक आ नहीं रही है।" उसने इस प्रकार लम्बी साँस ली मानो वह किसी प्रयास के लिए तैयारी कर रहा हो—"मैं जानता हूँ, वाल्ट के सम्बन्ध में तुम्हारी क्या भावना है। मैंने जब पहले इस सम्बन्ध में विचार किया था, तो मैंने भी ऐसा ही सोचा था पर जितना ही मैं इस सम्बन्ध में सोचता गया, उतना ही मैं उसके पक्ष में होता गया। फर्नीचर के व्यवसाय में ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है, जिसके वाल्ट डडले से अधिक मित्र हों। तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ। वाल्ट बहुत दिनोंसे इस काम में है। वह संघ का अध्यक्ष है...सरकारी समितियों में है....देश भर में व्याख्यान देता रहा है। यह महत्व की बात है... विशेषतः ऐसी कंपनी के साथ जो इतनी बड़ी हो। मेरे कहनेका तात्पर्य यह है कि कंपनी के लिए वह ठीक प्रकार का व्यक्ति है।"

"मैं यह जानता हूँ।" उसने एल्डर्सन की प्रश्नवाचक मुद्रा को बन्द करनेके लिए कहा और न जाने कहाँसे उसके मन में कार्ल ईरिक फासिल और उसकी लाल दाढ़ी की स्मृति हो आयी।

"और वह काम करनेवाला आदमी है।" एल्डर्सन कहता गया—"इस बात में भी तुम विरोध नहीं कर सकते। अभी दूसरे महीने में न्यूयॉर्क में एलेक्स ओल्डम से बातचीत कर रहा था और उसे भी इस बात पर आश्चर्य था कि वाल्ट इतना सब काम करता कैसे है....मेरे कहनेका तात्पर्य यह है कि विक्रय-विभाग में जितने कर्मचारी हैं, सब वाल्ट के प्रशंसक हैं। यह गुण तो उसमें है ही कि लोगोंको कैसे प्रसन्न और एक साथ बाँधकर रखा जाय और यह बात

बहुत महत्वपूर्ण है, बहुत अधिक महत्वपूर्ण। अब बुलार्ड के चले जाने पर कंपनी को ऐसे ही किसी व्यक्ति की आवश्यकता है।"

डॉन वॉलिंग ने चुपचाप सिर हिलाया। वह तर्क नहीं कर सकता था। ये वे ही बातें हैं जो उसने कल रात मेरीसे कही थी....पर फिर भी यह ठीक नहीं है। यह ऐसा उत्तर था जो ठीक तो लगता था, पर ठीक था नहीं। कहीं-न-कहीं दोष ढूँढ़ना ही पड़ेगा....कोई भूल....कोई ऐसी बात जिससे सत्य सिद्ध किया जा सके।

एल्डर्सन का स्वर गूँजता रहा। वह शब्दों-पर-शब्द लादता रहा; किन्तु डॉन वॉलिंग के कान में वह निरर्थक गूँज तबतक बनी रही, जब कि उसने उसे यह कहते हुए सुना—"वाल्ट में दुर्बलताएँ भी हैं।....जेसी और मैं दोनों उन्हें जानते हैं। किन्तु यदि वाल्ट न होगा तो शॉ होगा और यदि तुम्हें उसे ही चुनना हो तो मैं वाल्ट के ही पक्ष में रहूँगा। मैं समझता हूँ तुम भी रहोगे।"

यह थी त्रुटि। उसका स्वर आगे कूद चला—"फ्रेड! क्या तुम नहीं समझते हो कि फिर भी अध्यक्ष शॉ होगा। यदि वाल्ट चुन लिया गया, तो वह शॉ को कार्यवाहक उपाध्यक्ष बना देगा। वाल्ट ठीक शॉ के अँगूठे के नीचे रहेगा और शॉ ही कंपनी चलाएगा।"

"एक क्षण ठहरो।" एल्डर्सन मुस्कराया—"कार्यवाहक उपाध्यक्ष का चुनाव अध्यक्ष तो करता नहीं है। उसे तो बोर्ड उसी प्रकार चुनता है, जैसे अध्यक्ष को।"

"ओह!...." यह संकोच की निराशापूर्ण ध्वनि थी।

"मैं जानता हूँ।" एल्डर्सन ने सहानुभूति के साथ कहा—"श्री बुलार्ड के समय तो हम लोगोंको यह अभ्यास हो गया था कि हम उनकी बात को बोर्डकी ही बात मान लेते थे।"

"यह मैं मानता हूँ।" उसने धीरे से कहा और अपनी पराजय निश्चित समझ ली।

एल्डर्सन ने थोड़ी देर प्रतीक्षा की और तब अपने स्वरकी गति कुछ तीव्र कर दी। "वे ही लोग जो वाल्ट को अध्यक्ष चुनेंगे, वे तुम्हें कार्यवाहक उपाध्यक्ष चुन लेंगे।" एल्डर्सन जो कुछ कहना चाहता था, उसका भाव तत्काल डॉन की समझ में नहीं आया। वह विलंबित विस्फोट बनकर आया—समयसे फूटनेवाले बम गोलेके समान, जबतक कि सर्वनाश की अग्नि उसके मस्तिष्क में फैल नहीं गयी। डॉन वॉलिंग के ओठ खुल गये, किन्तु उसने वेग से उन्हें कस लिया

और उन निरर्थक शब्दों को भीतर ही रोके रहा, जो उसके मन से विस्फोट के पश्चात् गिरते हुए ध्वंस के समान पड़े जा रहे थे।

"अब तो ठीक समझ में आ रहा है न ?" एल्डर्सन ने मंद मुस्कान के साथ पूछा। अब भी कहने योग्य शब्द नहीं निकल रहे थे।

"वाल्ट को बड़ी सहायता की आवश्यकता होगी।" एल्डर्सन कहता गया- "बस, यहीं तुम आ जाते हो। जहाँ वाल्ट दुर्बल पड़ता है, वहाँ तुम सशक्त हो। तुम दोनों ही होगे। यदि तुम चाहो तो इसे एक प्रकार का साझे का प्रबंध कह सकते हो।"

"मैं....मेरी समझ में ही नहीं आता कि मैं क्या कहूँ, फ्रेड।"

"तुम्हें कुछ कहना ही नहीं है। यह निश्चय है। हमारे पास चार मत हैं और इतने ही हमें चाहिए भी।" उसने अपना हाथ बढ़ाया और वॉलिंग का हाथ चलानेवाले चक्के के घेरेसे अपने हाथ में उठा लिया-"बधाई है, पट्ठे!"

डॉन वॉलिंग स्वीकृति की पकड़ में अपनी उँगलियों को कस नहीं पा रहा था। यह नितान्त नयी बात थी, अत्यन्त अविश्वसनीय-"फ्रेड, मैं....फ्रेड! यदि तुम अध्यक्षपद न भी चाहो तो तुम कार्यवाहक उपाध्यक्ष तो बन ही सकते हो।"

अब लम्बे मौन का भंग हुआ, जब एल्डर्सन ने अपने हाथ छोड़ दिये और उसके घुटने की टोपी पर अपनी उँगलियाँ फैला दीं-"मैंने इस सम्बन्ध में सोचा था, किन्तु एक या दो मिनट। यह ठीक बात नहीं होगी....कंपनी के लिए ठीक नहीं होगी। जो व्यक्ति अब कार्यवाहक उपाध्यक्ष बनाया जाय, वह ऐसा होना चाहिए जो कंपनी का आगे अध्यक्ष बन सके। मैं तो कभी बन न पाऊँगा। मैं तो बहुत पहले ही अवकाश ग्रहण कर लूँगा और यह प्रश्न फिर ज्यों-का-त्यों सामने खड़ा हो जायगा। ईश्वर ही जानता है उस समय क्या होगा। संचालकों का नया बोर्ड होगा....फिट्जेराल्ड के स्थान पर नया संचालक होगा....जेसी के बदले एक दूसरा व्यक्ति होगा। मेरे स्थान पर भी कोई होगा ही। तीन नये संचालक और उनमें से एक भी ऐसा नहीं होगा, जो कभी ऐवरी बुलार्ड के इतने समीप हो कि वह जान सके....समझ सके...."

एल्डर्सन का स्वर अचानक मौन पड़ गया और उस भावावेग की समाप्ति से रुक-सा गया, जो उस बाँधको तोड़कर निकल पड़ा था और जिसके लिए वह इतनी देरसे प्रयत्न कर रहा था। यह भावावेग फिर कुछ अंशों में सँभला,

जब वह कहने लगा—"मैं अपने लिए केवल एक बात चाहता हूं....केवल एक बात। मैं यह निश्चित रूप से देख लेना चाहता हूँ कि कंपनी उसी प्रकार की कंपनी बनी चली जा रही है, जैसी ऐवरी बुल्लार्ड बनाना चाहता था। इसे बनाये रखनेका एक ही उपाय है और वह है उसे अभीसे ठीक कर देना....जब जेनी के और मेरे मत बने हुए हैं। हम तुम्हें वाल्ट के साथ वहाँ पहुँचा देंगे और तुम चला सकोगे, डॉन! मैं जानता हूँ तुम चला सकोगे। तुम कंपनी को उसी प्रकार चलाये रख सकते हो जैसे वह चलाना चाहता था।"

यह अभ्यर्थना डॉन वॉलिंग के मन में पहुंच गयी और जो द्वार कल पूरा खुल गया था और जो विचित्र रूप से आज प्रातःकाल बन्द हो गया था. उसके किवाड़ पुनः खुल गये। एक बार पुनः उसने अपने मन में उस आवेगात्मक बाढ़ की पूरी शक्ति का अनुभव किया।

डॉन वॉलिंग के गले में शब्द उठते चले जा रहे थे। उसने अपने ओठों से कह ही दिया—"मैं तुम्हारे लिए जो कुछ कर सकता हूँ, अवश्य करूँगा, फ्रेड।"

"मैं जानता हूँ कि तुम करोगे। मैं जानता हूँ यह मेरे लिए नहीं....कंपनी के लिए होगा।" एल्डर्सन गाड़ीमें से उतरने लगा।

"क्या तुम कार्यालय की ओर नहीं जा रहे हो?"

"नहीं; मैं अपनी गाड़ी में आऊँगा। मैं वाल्ट से गाड़ी पर मिल रहा हूँ। वह शिकागो से नौ पैंतालीस की गाड़ी से आ रहा है। मैं शॉ के जानेसे पहले उससे मिल लेना चाहता हूँ।"

उसे स्मरण था कि शॉ ने डडले को शिकागो से बातचीत करनेके सम्बन्ध में कुछ कहा था—"फ्रेड! यदि मैं भूल नहीं करता तो शॉ भी उससे गाड़ीपर मिलने जायगा।"

"यह तुम सोचो मत।" एल्डर्सन ने कहा—"पियर्सन ने रात में शॉ से बातचीत करनेका प्रयत्न किया था शिकागो से और वह बता देना चाहता था कि डडले लौट रहा है। वह शॉ से मिल नहीं पाया, इसलिए उसने मुझे सूचना भेजी। मैंने वचन दिया था कि मैं शॉ को बता दूँगा....और बता भी दूँगा....किन्तु नौ पैंतालीस से पहले नहीं।"

एल्डर्सन ने अपनी सब बातें अभिवादन के साथ समाप्त कर दीं और वह उन पुराने अस्तबलों की ओर घूम चला, जो अब मोटर रखनेके कक्ष बन गये थे।

मिलबर्ग, पेंसिलवेनिया ९.१२ प्रातःकाल

पिछले घंटे से लॉरेन शॉ एक स्मरण-पत्र बोल रहा था, जो जॉर्ज कासवेल के लिए वह तैयार कर रहा था। उसने प्रत्येक बोले हुए वाक्य को दो-दो बार उलटकर सुन लिया था। पहली बार तो अपनी मेज पर फैली हुई सारणियों से भरे हुए कागजों पर दिये हुए आँकड़ों को मिलाने के लिए और दूसरी बार यह देखने के लिए कि प्रत्येक शब्द और वाक्य का जॉर्ज कासवेल पर क्या प्रभाव होगा। अंतिम वाक्य के साथ वह मौन हो गया। प्रत्येक अशुद्धि ठीक कर दी गयी थी।

प्रत्येक त्रुटि निकाल दी गयी थी। कोई ऐसा तथ्य नहीं रहा था, जो पूर्णतः मिला न लिया गया हो। वह तैयार था। प्रत्येक बात पूर्णतः पूर्वयोजित थी। इस बार आवेग की ऐसी कोई भूल न होगी; जैसी कल रात कर दी थी।

परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं थी। कोई भी व्यक्ति इन मौलिक तथ्यों के विरुद्ध कुछ कह नहीं सकता। सत्य तो सत्य ही है।

उसने अपनी घड़ी की ओर देखा। अभी शिकागो में केवल सवा आठ ही बजे थे। पियर्सन अभी आध घंटे अपने कार्यालय में नहीं आवेगा। इस डडले को हो क्या गया? वह अभी तक पामर हाउस पहुँचा क्यों नहीं!

९.१६ प्रातःकाल

ड्वाइट प्रिंस पुस्तकालय में आया और जूलिया ने अपने सामने मेजपर बिखरे हुए कागजों से दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखा। वह कुछ चकित-सी लगी मानो उसे अपने पतिके आनेकी बात अचानक स्मरण हो आयी हो।

"क्या मुझसे कुछ काम था?" उसने पूछा।

"नीना कहती थी कि तुम मुझे ढूँढ़ रही हो।"

"नीना? हाँ; मैं केवल यही पूछ रही थी कि तुमने जलपान किया है या नहीं और उसने बताया कि तुम कर चुके हो।"

"मुझे दुःख है, प्रिये! यदि मैं जानता कि तुम–"

"तुम तो आज अँधेरे मुँह उठ बैठे होगे।"

उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

"क्या तुम सो नहीं पाये?" उसने पूछा।

"हाँ, यह ऐसी ही रातोंमें से एक थी।"

"कोई चिंता हो गयी थी?"

उसने कंधे हिलाकर मुस्करा दिया।

"क्या बात थी प्रिय?" उसके स्वर में उस धैर्यशालिनी माँ की ध्वनि थी, जो अपने घबराये हुए बच्चे को सान्त्वना दे रही हो।

उसकी झिझक के कारण जूलिया ने अपनी पेंसिल रख दी, जिसे वह अभीतक कागज पर सीधी गड़ाये बैठी थी।

"कोई नयी बात नहीं।" उसने कहा—"उसी बात का दूसरा दौरा... अनुभव करता रहा कि मैं कितना निरर्थक हूँ।"

जूलिया तत्काल उसके पास चली आयी जैसे कोई अभ्यस्त परिचारिका किसी परिचित रोगके लक्षणों के प्रति व्यवहार करती है—"ओह प्रिय ड्वाइट, तुम जानते हो कि तुम इस प्रकार............"

"मैं गंभीरता से कहता हूँ, जूलिया! मैं कभी-कभी यह अनुभव करता हूँ कि........"

वह इस प्रकार हँसी मानो वही औषधि हो—"ठीक है, प्रिय। यदि तुम उपादेय होना ही चाहो, तो मेरे लिए ये आँकड़े मिला दो।"

फुसलाये हुए बच्चे की भाँति वह तत्काल मेज के पास बैठ गया और जो पेंसिल उसने छोड़ दी थी वह उठा ली। जूलिया उसके पीछे खड़ी हो गयी और ज्योंही उसकी आँखें पूर्णतः घूमी, त्योंही उसने गंभीर मुद्रा धारण कर ली और जब ड्वाइट ने अचानक पीछे सिर घुमाकर उसकी ओर देखा, तो वह लगभग पकड़ गयी।

"यह सब क्या है, जूलिया?"

"मैं कुछ उन बातों को समझ लेना चाहती हूँ, जो श्री शॉ ने रात कही थीं।"

"पर वह तो तुम्हें अच्छा नहीं लगा। क्यों?"

"अच्छा लगने या न लगनेकी कोई बात नहीं। संभवतः अध्यक्ष होने के लिए वही ठीक व्यक्ति हो।"

"कम-से-कम इस बात में तो संदेह नहीं है कि वह अध्यक्ष-पद चाहता अवश्य है।"

"नहीं, इसमें कोई संदेह नहीं है।" जूलिया ने कहा—"संभवतः इसीलिए उसके सम्बन्ध में मुझे इतना संशय है।"

"मैं तुम्हारे स्थान पर होता तो संशय न करता। वह ठीक व्यक्ति है।"

"अर्थात्"?

"वह लगभग उस लिंच का दुगुना है, जिसने पिताजी की मृत्यु के पश्च... कंपनी का प्रबंध अपने हाथ में ले लिया था। रात जब वह यहाँ बैठा था तो मुझे इसी का स्मरण हो आया। दोनों एक ही साँचे के हैं ... दोनों के नाम की ध्वनि भी मिलती है।"

"हाँ; लिंच ने हमारी कंपनी की बड़ी सेवा की है।" जूलिया ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाकर कहा।

"कम-से-कम वह मुझे इतना पर्याप्त रुपया देता जाता है कि अब मैं रखैल आदमी नहीं लगता।"

"मुझे तुम्हारी यह बात अच्छी नहीं लगती।" जूलिया ने चमक कर कहा—"तुम जानते हो कि वह रुपया कभी भी नहीं......."

"मुझे दुःख है, प्रिये। मेरा यह आशय नहीं था।"

वह उसके बढ़े हुए हाथ की पहुँच से परे सरक गयी—"तो तुम सोचते हो कि शॉ ठीक व्यक्ति होगा?"

"मैं यही जानता हूँ कि वह ठीक उसी प्रकार का है। बड़ी कंपनी के निर्माण के लिए तो कोई पिताजी के जैसा या श्री बुलाई जैसा व्यक्ति ही होना चाहिए, किन्तु उसमें से वास्तव में लाभ खींच निकालने वाला शॉ या लिंच-जैसा ही व्यक्ति होना चाहिए।"

वह घूमी और उसने किताबों की आलमारी पर घबराहट के साथ अपनी उँगलियों के नख फेर दिये—"मैं जानती नहीं.... यही सारी कठिनाई है... मैं जानती नहीं। मैं जानना चाहती हूँ, पर जानती नहीं। यदि मैं संचालकों की बैठकों में जाती रहती। यदि मैं जानती रहती कि वहाँ क्या होता रहता है........."

"क्या तुम अन्य सदस्यों से बातचीत नहीं कर सकती?" उसने पूछा—"अर्थात्.... तुम श्री एल्डर्सन या श्री ग्रिम से बातें कर सकती हो। यदि मुझसे कहो....... मैं भी............"

उसका मुख तत्काल एक विचार से सजीव हो उठा—"ड्वाइट, तुमने मुझे बड़ा आश्चर्यजनक विचार प्रदान किया है।"

"सचमुच?"

"हाँ, अब मैं समझ गयी कि मुझे क्या करना चाहिए।"

उसने धैर्य के साथ प्रतीक्षा की और उसकी आँखों की ओर देखता रहा कि किस प्रकार उसके मनकी बात उन आँखों में चमक उठी है।

"प्रिय ड्वाइट, क्या एक उपकार करोगे?"

"अवश्य।"

"क्या आज तुम फीडरल क्लब में जाकर भोजन कर आओगे?"

उसने आँखें मिचकायी।

वह बलपूर्वक मुस्करायी—"स्पष्ट बात कह दूँ। मैं एक महिला को यहाँ भोजन के लिए बुलाना चाहती हूँ और मैं उसके साथ अकेली रहना चाहती हूँ।"

"किस महिला के साथ?"

"एरिका मार्टिन के।"

उसने शून्य दृष्टिसे देखा।

"वह श्री बुलार्ड की सचिव है।"

"ओह....हाँ; मैं समझता हूँ. वह तो जानती ही होगी कि यहाँ क्या हो रहा है?"

जूलिया ने उसके मुख का वेग से चुंबन लिया—"अब कभी मत कहना कि तुम मेरे लिए बहुत सहायक नहीं हो।"

उसने पेंसिल रख दी और द्वार की ओर घूम गया—"यदि मेरी आवश्यकता हो जूलिया! तो मैं बाहर बैठक में रहूँगा।"

तबतक वह नंबर घुमाने लगी थी। पर आधा घुमाकर ही उसने बीच में से काट दिया—किसी नये विचार की प्रतीक्षा में; उसे अपने मन में जाँचते हुए और अन्त में अपना समर्थन देकर सिर हिलाते हुए। हाँ, यही ठीक होगा.....यदि केवल भोजनके लिए निमंत्रण होगा, तो एरिका मार्टिन अस्वीकार भी कर सकती है: किन्तु इस प्रकार उसे आना ही पड़ेगा। भोजन की बात पीछे होगी; ....प्रसंगवश... या संभवतः बहुत पीछे प्रकाश में आये। नहीं, यह नहीं हो सकता। एक बार देखने में ही स्पष्ट हो जायेगी... यदि उस मार्टिन नामक स्त्री और ऐवरी बुलार्ड में कोई सम्बन्ध रहा होगा तो......"

"ठहरो।"

नहीं, इसलिए वह एरिका मार्टिन को नहीं बुला रही थी। उसने यह नहीं सोचा था कि.....यह विचार ही नहीं था....केवल एक विचार की

स्मृति. . . . या एक स्मृति की स्मृति। उसने इस बार फिर नंबर घुमाया और इस बार रुकावट नहीं थी।

"मैं कुमारी मार्टिन से बातचीत करना चाहती हूँ।" उसने कहा। उसका स्वर दृढ़ और निश्चित था।

९.१९ प्रात.काल

डॉन वॉलिंग अपने कार्यालय में घुसकर उस अधीरतासे छुटकारा पाने का आनंद लेने लगा, जो द्वार बन्द होने के साथ उसे प्राप्त हुई थी। मोटर के अड्डे से लेकर कार्यालय तक एक के पश्चात् दूसरा व्यक्ति निरन्तर बाधा देता जा रहा था। वे सब ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु के सम्बन्ध में बात करना चाहते थे और उस पुराने वाक्य को दुहराते जा रहे थे, जो बहुत पहले से ही निरर्थक हो चुका था। उसके बदले वे वही उत्तर भी चाहते थे, जो प्रत्येक दुहराने के साथ जीभ को बहुत कठोर प्रतीत होता जा रहा था।

जिस प्रेरणा ने उसे अपने कार्यालय में शीघ्र जाने के लिए प्रेरित किया था, उसका एक कारण यह भी था कि उसे इस अत्यन्त परिचित वातावरण में स्पष्ट सोचने का अवसर प्राप्त होनेकी आशा थी–जो उस समय से प्राप्त नहीं हो रही थी–जबसे वह सोचने लगा था कि मैं ट्रेडवे कॉरपोरेशन का कार्यवाहक उपाध्यक्ष बन जाऊँगा।

डडले के कार्यालय का बीचवाला द्वार खुला हुआ था और वह उसमें चला गया। दीवार पर टँगे हुए संयुक्त राज्य अमरीका के पिन से निर्दिष्ट मानचित्र से आकृष्ट होकर उसने अपने कारखानों के रंगीन पिन-चिन्हों की ओर तब तक घूरते हुए देखा, जबतक वे उसकी आँखों में बिंब मात्र नहीं रह गये और तब अन्त में उसने खिड़की की ओर घूमकर नीचे फैले हुए नगरकी ओर झाँका। सुदूर पहाड़ी पर उसने पाइक स्ट्रीट फैक्टरी का दूर तक फैला हुआ विस्तार देखा; पहाड़ी की तलहटी में नदी के तट पर फैले हुए वाटर स्ट्रीट प्लांट के पुराने भवन देखे। फ्रंट स्ट्रीट के घुमाव पर लता से ढँके हुए पत्थर और उसके परे सूखे भट्ठों की छाया पर लाल धातु और लकड़ी का गोदाम देखा, जो इतनी दूर था कि वह नदी के नीले धुंध में लगभग ओझल हो गया था। फिर वह ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के अनेक कारखानों से आनेवाली ध्वनियों और प्रत्येक ध्वनि के साथ काम करनेवाले मनुष्यों की कल्पना में डूब गया। मनुष्य, मनुष्य, मनुष्य!

उसके नये मस्तिष्क ने अपनी कल्पना के परदेपर अनेक बिम्बों का समूह देखा.....एक कारखाने में दो सौ व्यक्ति, सज्जा के काम पर सौ व्यक्ति, ...पाली बदलते समय द्वार में आनेवाले सहस्रों व्यक्ति, दूसरे सहस्रों व्यक्ति, बाहर निकलने वाले।

उसके मस्तिष्क का परदा और चौड़ा हुआ और भी सहस्रों मुख उसके सामने आ फैले—अब स्त्रियाँ भी। ट्रेडवे टावर का लड़कियों से भरा हुआ खंड.....सहस्रों कक्षों में, सहस्रों द्वारों के पीछे ठसाठस भरे हुए मनुष्य ....सभी प्रधान नगरों में कार्यालय...यह था ट्रेडवे कॉर्पोरेशन, यही सब का सब....कारखाने और कार्यालय, भवन और यंत्र, पुरुष और स्त्रियाँ ....हाँ, सबसे अधिक, पुरुष और स्त्रियाँ।

यह सारा दृश्य अत्यन्त भयपूर्ण जटिलता से भरा हुआ था। किन्तु डॉन वॉलिंग को भय और आतंक का तबतक चेतन नहीं हुआ जबतक उसकी आँखें उस नगरकी छतों पर नहीं आ पड़ीं, जो उसके सामने फैली पड़ी थीं। कल्पना ने छतें उखाड़ दीं और उसके नीचे सक्रिय दृश्य खोल दिया...चक्की पीसती हुई, इकट्ठी होती रहती स्त्रियाँ, एक-एक प्रकोष्ठ में रहने वाले लोग। प्रत्येक कक्ष में रहनेवाले जीवन का केन्द्रीय प्रकाश था—ट्रेडवे का वेतन—चेक ... नीले कागज का टुकड़ा, जो बटुए में पहुँच कर हरे नोट का रूप धारण कर लेता था.....और ये हरे नोट सहस्रों उदरों के लिए भोजन के अखंड स्रोत थे .....सहस्रों की नग्नता को ढँकने के लिए कपड़े लानेके मार्ग....सदा दौड़ते रहनेवाले बच्चों के पैरों के लिए जूते, शनिवार की रात को मनुष्य के आत्मा को कोमल कर देने के लिए मदिरा। सबमें पैसा लगेगा, पर चिन्ता क्या.....पैसा तो केवल वेतन—चेक है और प्रति शनिवार की रातको वेतन—चेक मिल ही जाता था।

ऐवरी बुलार्ड की मूर्ति चलते हुए बादल की छाया के समान उन छतों पर से टहलती हुई निकल गयी। क्या इन छतों के नीचे रहनेवाले लोग समझते हैं कि ऐवरी बुलार्ड ने इनके लिए क्या किया है? क्या वे समझते हैं कि यदि ऐवरी बुलार्डका प्रयास न होता तो ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का भी अस्तित्व न होता...कि पाइक स्ट्रीट प्लांट भी न बन पाता...कि वाटर स्ट्रीट कारखाना भी गल जाता और लोहे की मिल के समान, चमड़े के कारखाने के समान और गाड़ीके कारखाने के समान उसमें भी मोर्चा लग जाता....कि ट्रेडवे की नौकरियाँ न होतीं.......ट्रेडवे के वेतन-चेक न होते?

नहीं; वे नहीं जानते...या यदि वे जानते भी हों तो इसपर विश्वास नहीं करते और यदि विश्वास भी करें तो वे कृतज्ञता का मूल्य देनेके लिए सहमत न होंगे। क्या किसी व्यक्ति ने ऐवरी बुलार्ड को उन बातों के लिए धन्यवाद दिया था, जो उसने इन लोगों के लिए की हैं ? नहीं।

डॉन वॉलिंग ने अपना भविष्य बना लिया। मैं धन्यवाद की आशा नहीं करूँगा...मैं भी एकान्त में रहूँगा...किन्तु ट्रेडवे कॉर्पोरेशन चलता ही रहेगा। नौकरियाँ और वेतन के चेक बनते रहेंगे; कहीं भुखमरी नहीं होगी। बेकार लोगों की संपत्ति सड़क में नहीं खड़ी होगी। कोई बच्चे अनाथालय में नहीं भेजे जायँगे।

समय और स्थान का उसे ध्यान नहीं रहा और उस समय उसे बड़ा धक्का-सा लगा जब उसने घूमकर देखा कि मैं डडले के कार्यालय में हूँ। उसी क्षण उसकी समझ में आया कि मेरी कल्पना ने क्या भूल कर दी थी। न जाने किस प्रकार मैंने मन में यह सोच लिया कि मैं ही टॉवर का अध्यक्ष हूँगा, वह नहीं होगा। ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष होगा जे. वाल्टर डडले।

वह फिर खिड़की की ओर घूम गया—छतों के सिरों की ओर, उन दूरस्थ कारखानों की ओर, उनसे परे धुंध की ओर और ऐवरी बुलार्ड की सर्व-व्यापक स्मृति की ओर। आजतक किसी ने भी ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में वह बात नहीं कही, जो एल्डर्सन ने वाल्ट डडले के सम्बन्ध में कही है कि "फर्नीचर के व्यवसाय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसके इतने मित्र हों, जितने वाल्ट डडले के।" किन्तु यह ऐवरी बुलार्ड ही था जिसने ट्रेडवे कॉर्पोरेशन में काम किया था।

अब उसे एल्डर्सन की धारणा में भयंकर भूल दिखाई पड़ी। यह असंभव था कि जिस प्रकार ऐवरी बुलार्ड चाहता था, उस प्रकार ट्रेडवे कॉर्पोरेशन भी चले और साथ-ही-साथ वाल्ट डडले उसका अध्यक्ष भी रहे।

एक क्षण में उसे स्मरण आया कि एल्डर्सन ने "भागीदार-व्यवस्था" के सम्बन्ध में भी कहा था। डडले के साथ भागीदारी ? एल्डर्सन पुराना घोंघा है..और ऐसा भीरु जो सदा दुर्बलों की-सी बातें करता है...समझौता ! नहीं... भागीदारी नहीं हो सकती। यह हास्यास्पद है। टॉवर के ऊपर केवल एक व्यक्ति का ही स्थान है, एक व्यक्ति...एक स्वर...एक दृढ़ शासक हाथ।

तब, अचानक, एल्डर्सन ने जो कुछ कहा था वह उसकी विचारधारा में स्पष्ट होने लगा—"तुम उसे कर सकते हो, डॉन ? मैं जानता हूँ तुम कर सकते

हो। तुम उस प्रकार कंपनी को चलाये रख सकते हो, जिस प्रकार वह चलाये रखना चाहता था।" स्वर ने अपनी आवृत्ति की गूँजते हुए और पुनः गूँजते हुए और उसके नये मस्तिष्क के विशाल भवन में क्रोध की ध्वनि कड़की। एल्डर्सन ने धोका देकर डडले को अध्यक्ष बनाने की मुझसे स्वीकृति ले ली है। मैं.... डडले नहीं.... मैं ही एक व्यक्ति हूँ, जिसे अध्यक्ष होना चाहिए। एल्डर्सन ने यह मान लिया था। "तुम इसे कर सकते हो, डॉन ! तुम कर सकते हो।".... एल्डर्सन इस बातको जानता है... वह सदा से इस बातको जानता रहा है। किन्तु अब इस क्षण यह वाचाल वृद्ध मूर्ख उस डडले को अध्यक्षता देकर कंपनी को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए तैयार खड़ा है।

डॉन वॉलिंग की आँखें घड़ी की ओर मुड़ गयीं। डडले की गाड़ी आने में कुछ ही क्षण थे। एल्डर्सन को रोकना पड़ेगा। उसने द्वार खोल दिया और आँख मूँद कर लिफ्ट की ओर दौड़ पड़ा।

९.३७ प्रातःकाल

शिकागो से पियर्सन की घंटी लॉरेन शॉ को मिल चुकी थी। वह सुन रहा था। उसका मुख क्रोधसे कस गया था और उसके दाएं हाथ की उँगलियाँ घबराहट के साथ हथेली में लिए हुए रूमाल को गेंद बना रही थी।

"ठीक है, पियर्सन।" उसने कड़क के साथ अन्त में कहा—"जान पड़ता है मुझ तक संदेश पहुँचाने में एल्डर्सन से कुछ भूल हो गयी है। तुमने कौन-सी गाड़ी बतायी.... नौ पैंतालीस.... हाँ, मैं समझता हूँ ... नहीं, इस समय इतना ही कहना था। तुम्हारी बैठक कैसी होती है, यह बता देना।"

तीन वेगशील पगों ने उसे द्वार पर पहुँचा दिया। पर वह अचानक ठहर गया मानो द्वार के बाँस के ठंडे कुँडे ने उसकी.....एल्डर्सन के सामने जानेकी भावना स्तब्ध कर दी हो। वह एक क्षण खड़ा रहा, अनिश्चय में जकड़ा हुआ। एल्डर्सन के कार्यालय में जानेका अवसर देने के लिए, हिचकता हुआ, फिर भी उसके मन में जो संदेह उत्पन्न हो गया था, उसे पक्का करने की आवश्यकता से प्रेरित होकर उसने धक्का दे ही दिया। उसे जानना ही था।

धीरे-धीरे उसने द्वार खोला—सुनते हुए। वहाँ पैरों की या शब्दों की कोई ध्वनि नहीं थी। उसने द्वार और भी अधिक खोल लिया और भीतर चला गया। तब उसने डॉन वॉलिंग को लिफ्ट के आगे खड़ा देखा। बच निकलना अब संभव नहीं था। वॉलिंग ने उसे देख लिया।

"सुप्रभात डॉन!" लॉरेन शॉ ने तीव्र मुस्कान के साथ कहा और अपने स्वर के कंपन को रोकने का प्रयत्न करता रहा—"मैं यही देख रहा था कि फ्रेड अपने कार्यालय में है या नहीं ? क्या तुम्हें ज्ञात है कि वह आ रहा है या नहीं ?"

"मैं तो नहीं जानता।" वॉलिंग ने कहा और लिफ्ट के बटन में दूसरा अधीरतापूर्ण धक्का देनेके लिए घूम गया।

तीव्र उत्सुकता ने शॉ को यह पूछने के लिए बाध्य किया—"हाँ, यह तो बताओ कि क्या तुमने वाल्ट के शिकागो से आज सबेरे आनेके विषय में सुना है ?"

वॉलिंग ने इस प्रकार फिर बटन दबाया मानो उसने सुना ही न हो।

लॉरेन शॉ अपना प्रश्न दुहराने को तैयार ही था कि वॉलिंग ने अचानक कहा—"वह नौ-पचपन से यहाँ आ रहा है।"

लॉरेन शॉ के हाथ ने द्वार पा लिया और इससे पहले कि वॉलिंग उसे देखने के लिए घूमे, वह अपने कार्यालय में प्रविष्ट हो गया। उसकी उँगलियों ने द्वार के कुँडे को ऐसा पकड़ लिया कि जिससे बन्द होने पर कोई ध्वनि न आये। जब उसने हाथ हटाया तो वह पसीने से भीग गया था।

वॉलिंग के व्यवहार ने सब बात स्पष्ट कर दी थी। एल्डर्सन गाड़ी पर डडले से मिलने वाला था..... वॉलिंग उनसे मिलने कहीं जा रहा था... तीन मत.... चौथा ग्रिम ? यदि शीघ्र ही कुछ न कर लिया गया तो...। एल्डर्सन के हाथ में अध्यक्ष को चुनने के लिए चार मत विद्यमान थे।

उसका मस्तिष्क इन संकटपूर्ण घड़ियों की निराशा से थक गया। मुझे कुछ करना ही होगा..... कुछ भी।..... इसका कोई महत्व नहीं कि क्या। डडले... डडले... डडले.... डडले को रोकना ही होगा। डडले के बिना सारी आशा समाप्त समझो।

९.४० प्रातःकाल

डॉन वॉलिंग की अधीरता क्रोध की परिस्थिति पर पहुँच चुकी थी। यह दुष्ट लिफ्टमैन कहाँ रह गया ! गाड़ी में कुल पाँच मिनट रह गये हैं... सारा संसार विस्फोट के मुखपर खड़ा है.... और केवल इसलिए कि लिफ्ट पर एक सुस्त, हरामजादा काम कर रहा है जो.......।

द्वार का पल्ला खुला।

वह भीतर घुस गया—"तुम कहाँ पड़े रह गये थे, लुइजी ?"

"हमारा एक है.....।"

"शीघ्रता करो, भाड़ में जाने दो, शीघ्रता करो।" ज्योंही द्वार बन्द हो रहा था कि उसने सीढ़ी से वेग से उतरती हुई ऐरिका मार्टिन की झलक देखी और उसे अपना नाम लेकर पुकारते हुए सुना।

लुइजी द्वार खोलनेके लिए तैयार हुआ।

"नहीं, भाड़ में जाने दो लुइजी ? मुझे शीघ्रता है।"

वे उस शून्य में उतरते चले जा रहे थे। नियंत्रण-फलक पर प्रत्येक खंड के अंक उसी प्रकार प्रकाशित हो रहे थे जैसे किसी भयंकर विस्फोट में पहले गिने हुए क्षण हों।

"हम सब लिफ्ट-चालकों की एक बैठक हो रही है।" लुइजी ने क्षमा-याचना के स्वर में कहा—"हमें अन्त्येष्टि के लिए फूल मोल लेने हैं और यह काम मुझे ही करना है। आप जानते ही हैं ... यह चुनाव की बात है ? सब लोगों ने फूल मोल लाने को मुझे ही चुना है।"

"ठीक है, लुइजी ! ठीक है।" उसने क्षमा करते हुए कहा। द्वार खुल ही रहा था कि, उसने आगे बढ़कर अपना पूरा हाथ फैलाकर खोल लिया।

आगे निकलने पर डॉन वॉलिंग को यह ज्ञात नहीं था कि लुइजी भी लिफ्ट से बाहर निकल आया है और इस प्रकार आश्चर्यचकित होकर देख रहा है मानो कोई जादू देख रहा हो।

९.४२ प्रातःकाल

ध्वनि-विस्तारक ने सूचना दी कि शिकागो से आनेवाली गाड़ी दो नंबर के प्लेटफॉर्म पर आ रही है। फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने यह जानने के लिए सीढ़ी की ओर दृष्टि डाली कि शॉ कहीं अंतिम क्षण में अचानक न टपक पड़े।

आनेवाली गाड़ी के लिए प्रतीक्षा करनेवाली भीड़ आगे बढ़ चली। अतः उसने प्लेटफॉर्म के दूसरी ओरवाला मार्ग पकड़ लिया कि कहीं कोई ऐसा परिचित न मिल जाय जो टोक दे। वह इस अंतिम क्षण में तैयारी कर लेना चाहता था कि वाल्ट डडले से मैं क्या कहूँगा। उससे बातचीत करने का एक सीधा ढंग होना चाहिए..... यह नहीं कि आप सीधे बढ़े चले गये और कह दिया कि तुम ट्रेडवे कार्पोरेशन के अध्यक्ष होने जा रहे हो। एक भूमिका होनी चाहिए.... एक प्रस्तावना.... कुछ ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में। हाँ,

ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में कुछ कह देने से वॉलिंग के सम्बन्ध की बात भी लाने का अवसर मिल जायगा। यही ऐसी बात भी थी जिसे सबसे अधिक सावधानी के साथ संभालनी थी. . . . . डडले से यह कहना कि तुम्हें वॉलिंग को कार्यवाहक उपाध्यक्ष बनाना स्वीकार करना होगा। संभवतः डडले यह न चाहे. . . संभवतः उससे शास्त्रार्थ करना पड़े; कह दिया जाय कि मैंने और जेसी ने निश्चय कर लिया है। नहीं, जेसी को इसमें नहीं घसीटूँगा. . . जेसी ने फोनपर जो कुछ कहा उसके पश्चात् तो नहीं ही. . . कमसे कम तबतक नहीं, जबतक, उससे फिर बात न कर लूँ। और उसे बता न दूँ कि यह सब कैसे हो गया। वॉलिंग का वोट लेना ही है। एक क्षण की देर होते ही वॉलिंग भी शॉ की ओर चला जायगा। हाँ, यह बात जेसी को समझ लेनी चाहिए . . . कि वॉलिंग लगभग हाथ से निकल गया था. . . पर उसने ठीक समय पर उसे साध लिया और गाड़ी के आगमन के लिए वह तनकर खड़ा हो गया।

जे. वाल्टर डडले डिब्बे से निकलनेवाला पहला व्यक्ति था, जिसने कुली की ओर सिर हिलाया और दौड़कर आनेवाले लेस्टर की ओर देखकर मुस्कराया, जो अभीतक मिलबर्ग स्टेशन पर कुली था।

एल्डर्सन को देखते ही डडले के मुख की मुस्कान सहसा अन्त्येष्टि की गंभीरता में बदल गयी। ज्योंही डडले उसकी ओर आया, त्योंही एल्डर्सन यही भूल गया कि वह पहले कहना क्या चाहता था।

"फ्रेड ? मैं कह नहीं सकता कि तुम्हारे इस व्यवहार से कितना प्रभावित हुआ हूँ।" डडले ने कहा और उसका स्वर शोक के स्वर में मन्द पड़ गया।

"सोचा कि तुमसे मिल लूँ।" एल्डर्सन ने धीरे से कहा।

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि वह चल बसा है; विश्वास नहीं हो रहा है।"

लेस्टर थैले लिए हुए प्रतीक्षा कर रहा था—"टैक्सी लेंगे श्री डडले या आपकी अपनी गाड़ी आयी है ?"

डडले कुछ कहने ही वाला था कि एल्डर्सन ने रोक दिया—"पहले इन्हें गिन लो वाल्ट ? हम कुछ क्षण के लिए क्लब में चलेंगे. . . . कुछ बातचीत करनी है।"

एक क्षणके लिए झिझक दिखायी दी। डडले ने कुलीसे कहा—"लो, लेस्टर. . . . . गिन तो लो ?"

लेस्टर ने डॉलर का नोट जेब में डाला और उनसे आगे बढ़ गया। एल्डर्सन उसके पीछे-पीछे चला, किन्तु डडले के हाथ ने उसे रोक लिया। वे एक-दूसरे के सामने मुँह करके खड़े हो गये।

"फ्रेड! मैं यही कहना चाहता हूँ कि तुम मुझपर शत-प्रतिशत भरोसा कर सकते हो। यह बात तुम मेरे बिना कहे भी जानते हो। जानते हो न, फ्रेड?" एल्डर्सन को यह झिझक हुई कि मैं डडले को इस बात को सोचने का अवसर दे रहा हूँ, जो स्पष्टतः मेरे मन में नहीं है।

"मैं अध्यक्षपद नहीं लेना चाहता, वाल्ट।"

डडले अपनी बनावटी मुखमुद्रा के बीच पकड़ा गया— "तुम नहीं?"

"नहीं।"

"ओह......अच्छा। मुझे यह सुनकर खेद है, फ्रेड! बहुत दुःख है। मैंने सोचा था कि...."

"चलो, क्लब चला जाय। वहाँ हम लोग निश्चिंत होकर सोच सकेंगे।"

ऊपर सीढ़ी पर चढ़कर जाते समय दोनों मौन थे। एल्डर्सन ने पहले कभी वाल्ट डडले को यह मौन धारण करते नहीं देखा था।

सीढ़ी के सिरे तक पहुँचते-पहुँचते सामने के द्वारकी ओर स्वभावतः देखते हुए, फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने वेग से डॉन वॉलिंग को आते हुए देख लिया। वह स्पष्टतः उत्सुकता से पीछा कर रहा था; क्योंकि वह सावधानी के साथ सिर ऊँचा करके रुका और उसकी आँखें उस प्रतीक्षालय मे चारों ओर घूम गयीं।

यह केवल संयोग की ही बात थी कि डडले ने वॉलिंग को नहीं देखा। जिस क्षण वह उसे देख सकता था, उस क्षण डडले सामान संभालने वाले कुली की ओर घूम गया था।

पुरुषों के स्नान-कक्ष की ओर वॉलिंग के हाथ का संकेत हुआ। एल्डर्सन ने उत्सुकता के साथ पीछे घूमकर, जब देख लिया कि डडले की पीठ अभीतक ठीक प्रकार घूमी हुई है, तो वह झटपट स्नान-कक्ष की ओर बढ़ गया।

वॉलिंग अभी दालान में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था—"तुमने अभी उससे कुछ कहा तो नहीं?"

"नहीं? मैं बात करने के लिए उसे क्लब ले जा रहा हूँ।"

"नहीं, उससे कुछ मत कहना। बात समाप्त हो गयी।"

"किन्तु हम....."

"नहीं, मै इसमें सम्मिलित नहीं हो सकता।"

"किन्तु तुमने तो कहा था..."

"नहीं, धता बताओ। नहीं। छोड़ो उसे...कुछ भी करो...किन्तु एक शब्द भी मत कहना—एक शब्द भी।"

"मैं यथाशीघ्र तुमसे क्लब में मिलूँगा।" एल्डर्सन ने स्वतः कहा।

९.५० प्रात.काल

लुइजी ने चौबीसवें खंडपर पहुँच कर लिफ्ट का द्वार खोल दिया।

ऐरिका मार्टिन उसके लिए प्रतीक्षा कर रही थी, किन्तु उसने लिफ्ट में प्रवेश करने का कोई प्रयत्न नहीं किया।

"तुम अभी श्री वॉलिंग को एक क्षण पहले नीचे ले गये थे। क्यों लुइजी ?"

"श्री वॉलिंग ? हाँ, मैं नीचे ले गया था।"

"तुम जानते हो वे कब लौट रहे हैं ?"

लुइजी ने अपने हाथ नकारात्मक उत्तर की मुद्रा में फैला दिये—"मैं यही जानता हूँ....बहुत शीघ्रता थी....बहुत आवश्यक।"

"यह नहीं जानते कि वे कहाँ गये हैं ?"

लुइजी ने अपनी मुद्रा दुहरा दी।

"जब वे लौटें लुइजी, तो क्या तुम इतना कह दोगे कि मैं उनसे शीघ्रातिशीघ्र मिल लेना चाहती हूँ ?"

"अवश्य, कुमारी मार्टिन ! मैं आते ही कह दूँगा।"

"धन्यवाद, लुइजी !"

"वह बड़ा अच्छा व्यक्ति है—श्री वॉलिंग।" वह पीछे लौट ही रही थी कि लुइजी ने शीघ्रता से कहा।

"हाँ, वह है बहुत अच्छा आदमी।"

"वे कब ऊपर आ रहे हैं ?"

"क्या ?"

लुइजी ने हल्की-सी मुस्कराहट का प्रयोग कुमारी मार्टिन को यह बतलानेके लिए किया कि मुझे और अधिक धोखे में रखने से कोई लाभ नहीं—"मैं जानता हूँ...अन्त्येष्टि के पश्चात् तो वे ऊपर आ ही जायँगे। इससे पहले ऊपर आना संभवतः उचित न होगा।"

ऐरिका मार्टिन ने उसकी ओर घूरकर देखा—"लुइजी, उन्होंने ..

तुमसे कोई ऐसी बात तो नहीं कही होगी... ।" निश्चय ही उसने नहीं कही थी ...कोई नहीं जानता था...अगले मंगलवार को संचालकों की बैठक होने तक कोई संभवतः जान भी नहीं सकता था...संभवतः तब भी कोई नहीं।

लुइजी ने अपनी मंद मुस्कान का फिर प्रयोग किया। कुमारी मार्टिन को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह कोई ऐसी बात जानता था, जिसे जानने की उससे आशा नहीं की जा सकती थी।

"चिंता न करो कुमारी मार्टिन ? मैं किसीको नहीं बताऊँगा। बहुत वर्षोंसे .... मैं बहुत-सी बातें जानता हूँ, पर कभी कहता नहीं।"

उस स्तंभ में नीचे जाते हुए लुइजी अपने मन में कुमारी मार्टिन की विचित्रता पर सोचता रहा कि कुछ बातों में यह मेरिया से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। मेरिया को भी उस समय बड़ा बुरा लगता था, जब वह कोई भेद की बात पहले से समझ लेता था। कभी-कभी वह बड़ी रुष्ट होती थी; इतनी रुष्ट कि वह रातभर उसकी ओर पीठ करके सोयी पड़ी रहती थी और प्रातः-काल उसका जलपान बनाने के लिए भी नहीं उठती थी।

अत्यन्त खेद के साथ लुइजी ने मन-ही-मन स्वीकार किया कि मैं कोई बड़ा चतुर व्यक्ति नहीं हूँ। कोई भी चतुर व्यक्ति किसी भी स्त्री को यह कभी न जानने देगा कि उसने किसी रहस्य की बात ताड़ ली है। किन्तु कुमारी मार्टिन मुझे क्षमा कर गयी। कुमारी मार्टिन सचमुच बड़ी अच्छी स्त्री हैं। यह बड़ी अच्छी बात है कि अन्त्येष्टि के पश्चात् वह अकेली नहीं रह जायगी।

ड्यूक की मृत्यु के पश्चात् बेचारी डचेज सारे जीवन भर उसी दुर्ग में अकेली पड़ी रही और गाँव में यह बात प्रसिद्ध हो गयी थी कि कोई रात ऐसी नहीं रही जब वह रोयी न हो। यह बड़ी बुरी बात थी। यह तो ठीक है कि स्त्री कभी रो ले; क्योंकि यह उसकी प्रकृति है...और इसके पश्चात् वह श्रेष्ठ स्त्री हो जाती है... किन्तु यह बात अच्छी नहीं है कि कोई स्त्री प्रति रात केवल इसलिए रोती रहे कि उसका पति नहीं है।"प्रत्येक स्त्री को पति होना ही चाहिए..... चतुर पति न मिले तब भी।" यह बात उसने अनेक बार मेरिया से कही थी और वह जानता था कि मेरिया इस बात की सत्यता को जानती है। यद्यपि कभी-कभी वह कहती थी कि यह सत्य नहीं है। अच्छा यही है कि किसी स्त्री को यह कहनेके लिए बाध्य न किया जाय कि कोई बात सत्य है, जैसे यह सदा अच्छा होता है कि किसी स्त्री को यह जानने न दिया जाय कि आपने उसका रहस्य जान लिया है।

ग्यारहवाँ अध्याय

लांग आयलैंड साउंड
९.५२ प्रातःकाल

साउंड की खाड़ी दर्पण के समान सपाट थी—धुँधले दर्पण के समान, जिसपर ज्वार की लहरों की धुँधली रेखाएँ खिची हुई थीं। दो घंटे पहले उत्तरी वायु के जो लक्षण दिखायी पड़ रहे थे, वे निकलते हुए सूर्य के साथ समाप्त हो गये और अब इतना भी पवन नहीं रह गया था कि "मूनस्वीप" के बड़े पाल को उस समय टेढ़े होने से रोक ले, जब वह नाव एक दूर जाते हुए अगिनबोट की ओर बढ़ी चली जा रही थी। लहरें किनारे की ओर बढ़ी आ रही थीं और जॉर्ज कासवेल की आँखें उनकी गति के साथ-साथ तट तक बढ़ी चली जा रही थीं।

उनके चारों ओर बहुत-सी नावें पड़ी हुई थीं, जो दौड़ के लिए प्रस्थान करने की प्रतीक्षा में थीं। वे घायल पक्षियों की भाँति बैठी हुई थीं और उनकी पालें टूटे हुए पंखों के समान लटक रही थीं।

पिछले आध घंटे में जॉर्ज कासवेल को यह अभ्यास बड़ा बुरा लगा जिसके कारण वह आज नाव पर चढ़ा चला आया। पर अब तो वह चला ही आया था और तटपर पहुँच सकनेका कोई साधन नहीं था। अपने साथियों को छोड़कर चला जाना खेल के शिष्टाचार से परे की बात थी।

वास्तव में उसकी इच्छा भी तत्काल मिलबर्ग जानेकी नहीं थी। वहाँ जाने में कोई तुक नहीं है। सप्ताहांत तक कुछ नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु से इतना स्तब्ध होगा कि किसीको अन्त्येष्टि तक यह सोचने का अवसर ही कहाँ होगा कि नया अध्यक्ष कौन हो।

धैर्य का अवलंब लेकर, वह नाव की कोठरी के ऊपर जा लेटा और आकाश की ओर देखने लगा। वह कल्पना करने लगा मानो वह ट्रेडवे कॉर्पोरेशनके संचालकों के कक्ष में बैठा है — यह तो मानी हुई बात है कि मुझमें वह योग्यता नहीं है, जो ऐवरी बुलार्ड में थी, कि वह फर्नीचर के निर्माण की सभी यांत्रिक विशेषताओं से परिचित था। किन्तु अध्यक्ष के कर्तव्यों को सफलतापूर्वक निबाहने में यह कोई बाधा नहीं होगी। हो सकता है कि बाधा देने के बदले यह सहायक ही हो।..... उसे और भी अधिक निर्लिप्त रहने का अवसर

मिल जायगा। ट्रेडवे को सभालना तो और भी सरल होगा। फर्नीचर का उत्पादन स्थिर हो गया है। कभी-कभी उसमें कुछ थोड़ा यंत्र-प्रयोग आ जाता है, किन्तु पिछले सौ वर्षों में कोई विशेष बाधक परिवर्तन नहीं हुए....। हाँ, फर्नीचर बड़ा अच्छा स्थिर व्यवसाय है...ऐसा व्यवसाय जिसमें कोई भी आनंद ले सकता है।

उसने अपनी नाकपर भिनभिनाती हुई एक समुद्री मक्खी को हटा दिया और अपने मन में अपनी अध्यक्षता की योजना का पहला कच्चा खाता बनाने लगा, हाँ, यही करना ठीक है....दूसरा बुलार्ड बननेका प्रयत्न न किया जाय....भिन्न प्रकार से चला जाय...गति में परिवर्तन करके। और यह ठीक भी होगा....अधिकार का अधिक वितरण...सारी व्यवस्था बाँट दी जाय। बुलार्ड ने कुछ बातों में भूल की थी। जब जेसी ग्रिम-जैसे व्यक्ति को उसने उत्पादन का अधिकारी-उपाध्यक्ष बना ही दिया था, तब कोई कारण नहीं था कि अध्यक्ष स्वयं उसकी प्रत्येक बातमें टाँग अड़ाए...उसे केवल यही देखना चाहिए कि जेसी भी नीचेवाले को अधिकार सौंप देता है या नहीं। यही बात विक्रय के सम्बन्ध में भी है...डडले बड़ा कुशल व्यक्ति है इसमें कोई संदेह ही नहीं। उसे अधिकार दिया जाय। शॉ अत्यन्त कुशल व्यक्ति है.... अत्यन्त व्यवस्थित, पूर्णतः विश्वस्त। एल्डर्सन के पास अनुभव है.........परामर्श का बहुत अच्छा स्रोत है... उसका प्रयोग भी ठीक प्रकार से किया जाय। वॉलिंग? वॉलिंग उन मेधावी युवकों में से है....विचार...उसे साथ रखना अच्छा होगा... सजीव किये रखता है। बड़े अच्छे लोगों का समूह है। कोई परास्त नहीं कर सकता। ऐसे लोगों का मंडल साथ लेकर अध्यक्ष को बहुत चिंता करने की बात ही नहीं है...।

"आपने देखा श्रीमान्?" यह स्वर उसके ऊपर सुनायी दे रहा था और उसने कैनकेस के उत्सुक मुख की ओर देखा—"क्या?"

कैन संकेत कर रहा था और कासवेल ने अपना शरीर इस प्रकार घुमाया कि उसकी आँखें कैन की उँगली के साथ उस नौका को देखने लगीं, जो प्रस्थान की रेखा से दूर किनारे पर थी। उसपर एक पीला और नीला झंडा उड़ रहा था। "दूसरी बार स्थगित हुआ श्रीमान्—" कैन ने समझाया। कासवेल उठ बैठा और अपनी पीठ के पुट्ठे को सहलाने लगा जो रेलिंग से दब गया था।

"मैं सोच रहा था, श्रीमान्?" कैन ने कहा—"यदि आप समय से लौटने की बात सोच रहे हों....उस ब्राइटन के विवाह में जानेके लिए, तो श्रीमान्

जान पड़ता है कि यह दौड़ तो ऐसी-वैसी होकर रह जायगी। अब तो निश्चय ही देरसे समाप्त होगी. . . . संभवतः बहुत देरसे।"

उसने तिनके का सहारा लिया—"कैन, मैं तुम लोगों को अकेला छोड़ना बहुत बुरा समझता हूँ। किन्तु मैं समझता हूँ कि श्रीमती कासवेल के सम्बन्ध में तुम ठीक सोच रहे होगे कि वे विवाह में जानेके लिए मेरे लौटने की प्रतीक्षा में होंगी। मुझे आशा है कि तुम लोग बहुत बुरा नहीं मानोगे।"

"तनिक भी नहीं, श्रीमान्?" कैन ने कहा—"सचमुच आपके बिना दौड़ वैसी तो नहीं होगी। पर हम लोग पुरानी लड़ाई लड़ेंगे उन पट्‌ठोंसे।"

"संभवतः यही ठीक होगा।" वह उतर चला और उतरने की सीढ़ी से निकल चला—"मुझे विश्वास है कि तुम मेरे बिना भी सब संभाल लोगे।"

"क्या मैं आपके लिए छोटी नाव ले चलूँ?" कैनकेस ने नीचे से पुकारा।

"हाँ, हाँ; अवश्य।"

उसने कैन को नावका भोंपू बजाते सुना और जितनी देर में वह अपने कपड़े बदले और लौटकर ऊपर आये, उतनी देर में क्लब की नाव पास आ लगी।

"ऋतुके लिए बड़ा खेद है, श्रीमान्।" कैन ने ऊपर रेलिंग से ही कहा जब कासवेल नाव में बैठ गया—"अगले सप्ताह हम आपके लिए वास्तव में नौकाचालन की बयार ला खड़ी करनेका प्रयत्न करेंगे।"

"अच्छा विदा।" उसने कहा। नाव चलने लगी। इस बातको कहने में कोई तुक नहीं था कि अब दूसरा सप्ताह होगा ही नहीं और अब 'मून-स्वीप' पर फिर कभी पैर रखना नहीं होगा। ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष-पद ले लेने के पश्चात् ऐसे अवकाश के सप्ताहांत मिलेंगे कहाँ?

उस नौका ने उसे डिंघी तटपर उतार दिया और क्योंकि उसकी आँखें पटरेपर जमी हुई थीं, जो उस नाव और तट के बीच में लगा दिया गया था। इसलिए उसने तबतक ब्रूस पिल्चर को नहीं देखा, जबतक कि वे आमने-सामने नहीं पड़ गये।

"भाग्य आज मेरा साथ देता दिखायी पड़ता है।" पिल्चर ने स्नेहपूर्वक कहा—"मैं यों ही चल पड़ा था कि आपसे भेंट कर लूँ। आने पर ज्ञात हुआ कि आप नावपर निकल गये हैं। यह केवल दैव-संयोग की बात है कि मैंने आपको नावपर आते देख लिया। आप दौड़ में भाग नहीं ले रहे हैं?"

यह सीधा प्रश्न था और इसका उत्तर भी अनिवार्य था। उसने उत्तर यथासंभव छोटा ही दिया—"नहीं।"

"मैं कुछ क्षण आपसे बातें कर लेना चाहता हूँ।" जार्ज कासवेल झिझका। जिन परिस्थितियों में ब्रूस पिल्चर ने ट्रेडवे के शेयरों को बेच डाला था उससे कासवेल के मनमें पिल्चर के प्रति घृणा हो गयी थी; किन्तु उसकी प्रत्यक्ष सज्जनता ने उसके प्रति स्पष्ट अशिष्टता दिखाना असंभव कर दिया। अतः कासवेल ने अत्यन्त उपेक्षा के साथ कहा–"आज तो मैं बहुत व्यस्त हूँ।"

"आप इतने व्यस्त नहीं होंगे कि मेरी हितकर बात भी नहीं सुन सकेंगे।" पिल्चर ने विश्वास के साथ कहा–"इसका सम्बन्ध ट्रेडवे कॉर्पोरेशन से ही है।"

"मुझे भी यही आशंका थी।" पिल्चर के प्रस्ताव में नम्रता न देखकर उसे आश्चर्य नहीं हुआ। उसका प्रायः ऐसे आदमियों से सम्बन्ध था, जिनका मुख्य गुण था कि बड़ी कठिनाई में पड़े हुए लोगों को अच्छा चकमा देना।

"मैं समझता हूँ आप बुलार्ड की मृत्यु का समाचार तो पा ही चुके होंगे।" पिल्चर ने कहा।

"हाँ।"

वह ऊपर चढ़ता गया और पिल्चर को पीछे-पीछे आने को विवश करता गया।

"यह बात आप जानते हैं या नहीं कि श्री बुलार्ड की मेरे और स्टीगल के साथ एक बैठक हुई थी।"

"मैं जानता हूँ।"

"ठीक है।" पिल्चर ने इस प्रकार कहा मानो पहली महत्व की बात पूर्ण हो गयी हो–"किन्तु एक बात निश्चय ही आप नहीं जानते होंगे श्री कासवेल, कि उस बैठक में हुआ क्या?"

कासवेल के मन में एक प्रश्न कौंध गया। क्या बुलार्ड इस पिल्चर को कार्य-वाहक अध्यक्ष-पद देनेकी स्थिति तक बढ़ गये थे? अत्यन्त असंभव। फिर भी बुलार्ड की शीघ्र निर्णय करने की और मनमानी करने की वृत्ति समझकर उसने अपने मन में यह मान लिया कि संभवतः ऐसी बात हो गयी हो।

"हमारी बैठक में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समझौता किया गया था।" पिल्चर कहता गया –"और क्योंकि उसका ट्रेडवे कॉर्पोरेशन पर अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है......और आपके अपने स्वत्वों पर भी....मैंने समझा कि आपके पास यह परामर्श लेनेके लिए आना ठीक होगा कि मैं इस दृष्टि से आगे क्या करूँ। हाँ, यदि श्री बुलार्ड की यह दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु न हुई होती तो...."

"क्या समझौता था?" कासवेल ने बीच में टोका।

"सिगरेट लीजिएगा ?" उस बात को और भी देरतक रोक रखने के लिए पिल्चर ने कहा मानो उसका रस ले रहा हो।

"नहीं, धन्यवाद।" वे कुछ और कदम आगे बढ़े और कासवेल ने निश्चय कर लिया कि मैं मौन भंग नहीं करूँगा।

"संभवतः मैं इस बात में आपसे अधिक रुचि ले रहा हूँ।" पिल्चर ने अन्त में कहा—"मैंने समझा कि आप यह अवश्य जानना चाहेंगे कि हमने ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के हाथ ओड़ेसा स्टोर बेचने का सौदा कर लिया था।"

जॉर्ज कासवेल का आत्मनियंत्रण चरम सीमातक पहुँच गया था, किन्तु उसने प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया का प्रदर्शन रोक रखा। उसने सोचा कि मेरा मौन कहीं स्वीकृति न समझ लिया जाय। अतः वह पिल्चर की ओर मुँह करके बोला—" बात मुझे बड़ी आश्चर्यजनक प्रतीत हो रही है।"

"हाँ; जितनी हमने आशा की थी उससे भी कहीं अधिक वेगसे यह बात हो गयी।" पिल्चर ने कहा। उसके स्वर में विश्वास भरा हुआ था।

"उस विक्रय का आधार क्या था ?"

"दोनों पक्षों के लिए अत्यन्त सुविधाजनक.....तीस लाख डॉलर नकद और ट्रेडवे के दस सहस्र साधारण शेयर।"

कासवेल उस पिल्चर की कोई भी बात न मानने के लिए तैयार खड़ा था। किन्तु ट्रेडवे के साधारण शेयर के बाजार-मूल्य की वेगसे मन में गणना करके उसे प्रतीत हुआ कि संभवतः बुलार्ड ओडेसा स्टोर मोल लेनेके लिए उत्सुक हो गया हो; क्योंकि वह स्पष्टतः लाभ में मिल रहा था। किन्तु तर्क अब भी उसके संदेह को दूर करने में सफल नहीं हो रहा था। उसने सावधानी से कहा—"मैं समझता हूँ श्री पिल्चर, कि श्री बुलार्ड ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किया होगा। पर वह निश्चय भी ट्रेडवे बोर्ड की स्वीकृति पर अवलंबित है। मैं समझता हूँ यह समझौता लिखित होगा ?"

"नहीं, दुर्भाग्यवश नहीं।" पिल्चर ने बिना झिझक के कहा—"और इस समस्या में एक और जटिलता आ गयी है कि श्री स्टीगल को कल रात दौरा हो उठा। चिकित्सकों का कहना है कि उन्हें संभवतः फिर कभी चेतना न प्राप्त हो। मुझे विश्वास है आप समझ गये होंगे कि यह बड़ी असाधारण परिस्थिति हो गयी है।"

"अत्यन्त।"

"यही तो बात है.....और इसलिए मैंने सोचा कि चलकर आपकी सम्मति ले लूँ।" जॉर्ज कासवेल झिझका। उसका क्रोध उबल रहा था—"मेरा परामर्श यही है कि सब बातें यथा शीघ्र भूल जाओ, पिल्चर।"

"क्या आपने यह निर्णय हड़बड़ी में नहीं किया है।" ब्रन पिल्चर ने अत्यन्त शान्त भावसे पूछा।

"मैं कल्पना नहीं करता कि कोई व्यक्ति भी तुम्हारी बात को सत्य समझेगा। मौखिक समझौते को कौन महत्व देगा?....."

"एक पक्ष की मृत्यु पर—"पिल्चर ने वाक्य पकड़ लिया—"दूसरा पक्ष पूर्णतः स्तब्ध हो गया है और संभवतः वह एक दिन भी न जी सके...और मैं ही एकमात्र साक्षी हूँ। मैं यह मानने को प्रस्तुत हूँ कि यह अत्यन्त असाधारण परिस्थिति है और फिर एक और भी महत्व की बात है कि अपनी चेतना खोनेसे पहले जूलियस स्टीगल ने अपने पौत्र बर्नार्ड को हमारे समझौते की बात कह दी थी। क्योंकि बर्नार्ड ही उस वृद्ध का मुख्य उत्तराधिकारी होगा। मुझे विश्वास है कि वह इस सौदे को पूरा करने के लिए पूर्णतः सहमत हो जायगा। उधर से कोई कठिनाई नहीं होगी। ट्रेडवे की दृष्टिसे......यदि आप ओडेसा के विवरण से परिचित होंगे, तो मुझे विश्वास है कि आप समझ सकेंगे कि यह बड़े लाभ का सौदा है; वर्तमान लागत से कहीं अधिक ट्रेडवे का कोई संचालक इसके विरुद्ध नहीं जा सकता।"

"मैं इतना विश्वास नहीं करता।" कासवेल ने कहा।

"और अधिक विचार करेंगे तो मैं समझता हूँ कि आप भी सहमत हो जायेंगे।" पिल्चर मुस्कराया—"अब दूसरी बात लीजिए....और मुझे विश्वास है यह आपको अच्छी भी लगेगी। वह यह है कि अब ट्रेडवे निश्चय ही क्रय-कोष के लिए नये शेयर चलायेगा। कासवेल एण्ड कंपनी ही निश्चय इसका भार लेगी। इसके साथ-साथ स्टीगल की सम्पत्ति के संरक्षण का सौदा भी बहुत बढ़िया होगा। मोटे रूप में मैं कह सकता हूँ कि कासवेल एण्ड कंपनी को पूरा लाभ...यदि ठीक से संभाला जाय तो...लगभग ढाई लाख डॉलर का लाभ होगा।"

क्रोध की ठंडक ने जार्ज कासवेल के स्वर को उसके गले में जमा दिया—"तुम्हारा उद्देश्य क्या है पिल्चर?"

"उद्देश्य?" पिल्चर ने इस प्रकार पूछा मानो वह कासवेल के इस शब्द के प्रयोग पर चकित हुआ हो—"स्वभावतः मेरा हित है।"

"स्वभावतः।"

ब्रूस पिल्चर ने अपनी लंबी उँगलियाँ झटकी और हरी घासपर सिगरेट फेंक दी—"मैं अपने लिए जो कुछ चाहता हूँ, वह है ट्रेडवे कॉर्पोरेशन की अध्यक्षता।"

कासवेल जानता था कि मैं पिल्चर की ओर आश्चर्य के साथ घूर रहा हूँ और उसे यह जानकर बड़ा क्षोभ हुआ कि मैं अपनी वास्तविक भावना प्रदर्शित करने को रोक नहीं पा रहा हूँ।

पिल्चर ने कहा—"आपको आश्चर्य हो रहा है मेरी आकांक्षा पर। कोई संदेह की बात नहीं.... किन्तु मैं अपने लिए इतना ही चाहता था श्री कासवेल! ट्रेडवे की अध्यक्षता और जैसी कि आप आशा भी करते होंगे, सस्ते मूल्य पर ट्रेडवे के शेयरों का थोक। यह समझिये कि चालीस के भाव दस हजार शेयर?"

"तुम मुझसे यह चाहते हो कि मैं यह प्रस्ताव करूँ।" कासवेल ने पूछा।

"मैं समझता हूँ यह आपके हित में ही होगा।"

अपने जीवन में पहली बार जॉर्ज कासवेल पूर्णतः क्रुद्ध हुआ—"देखो पिल्चर? मैंने अपने जीवन में आजतक जितने नीच हरामजादे देखे हैं, उनमें तुम निश्चय ही सबसे नीच हो। तुम्हारी प्रत्येक बातसे मैं घृणा करता हूँ, प्रत्येक बात से ...."क्रोधसे काँपने के कारण उसका स्वर रुक गया।

पिल्चर की मुस्कराहट उसके मुखपर जम गयी। पर वह ऐसा सधा हुआ अभिनेता था कि अपना स्वर बिना परिवर्तन किये कहता रहा—"मैं यह अत्यन्त आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया देख रहा हूँ.......मैं।"

"बस, चुप रहो पिल्चर! पहली बात तो यह है कि तुम महा झूठे हो। मैं जानता हूँ, क्या हुआ है। कल जब तुमने बुलार्ड को मरकर गिरते देखा, तो तुमने ट्रेडवे के शेयर बेच दिये...दो हजार शेयर।"

पिल्चर का मुख काला पड़ गया।

"यह आपने कैसे........"

"जितनी झूठी बातें तुम मुझसे कहते जा रहे थे, उनमें यदि एक शब्द भी सत्य होता तो तुम शेयर कभी न बेचते। हे ईश्वर! तुम कितने नीच हो!" अपने उस क्रोध के वेग से संचालित होकर जिसे वह शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पा रहा था, जार्ज कासवेल अपनी एड़ी पर घूमा और वेगसे निकल गया।

उसके पीछे उसने पिल्चर की मन्द पुकार सुनी—"आप इस प्रकार नहीं चले जा सकते, श्री कासवेल। कोई व्यक्ति मुझसे ऐसा नहीं कह सकता..धिक्कार है आपको! मैं जो चाहूँगा, वह कर लूँगा और आप मुझे रोक नहीं सकेंगे।"

धीरे-धीरे कासवेल के शान्त होने में कुछ समय लगा। शान्त होने पर उसे पिल्वर की अंतिम धमकी का स्मरण हो आया। एक बात निश्चय थी. . . पिल्वर इस ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के अध्यक्षपद को पाने के लिए कुछ उठा नहीं रखेगा। यदि पिल्वर जाकर जूलिया ट्रेडवे प्रिंस से बात कर ले तो. . . . उसने वेगसे पैर दबाया और मोटर गरज उठी। यही निर्णय था। मिलबर्ग जाने में एक मिनट का भी विलंब उचित नहीं।

केंट काउन्टी, मेरीलैंड, १०.१८ प्रात:काल

सारा की ओर जेसी देखता रहा और समझता रहा कि वह कुछ अधिक प्रसन्न है और मेरे मन को ऐवरी बुलार्ड के मृत्यु की बात से दूर रखने का प्रयत्न कर रही है – "सारा?"

वह घूमी अपने हाथ मलती हुई।

"सारा, तुम्हें विश्वास है न? हम सब ठीक काम कर रहे हैं न? यदि तुम चाहती तो ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष की पत्नी हो सकती थी।"

उसकी मुस्कान उतनी ही वेगशील थी जितनी साराकी ध्वनि–"मैं तो इससे अच्छा यही चाहती हूँ कि कोमल केकड़े मिलते रहें और ऐसा [illegible]।"

"ठीक है, सारा; मैं इसी बात का निश्चय कर लेना चाहता था।"

"तुम्हें इसका खेद तो नहीं है न? क्यों जेसी?"

वह बड़ी देर तक सारा की ओर देखता रहा –

"यदि तुम दिनभर मेरे सामने खड़ी रहा करो तो नहीं।"

"मैं समझती हूँ मैं साध लूँगी।" उसने जेसी की ओर कनखियों से उसी प्रकार देखा जिस प्रकार वह वर्षों पहले उस समय देखा करती थी, जब उसे चुंबन की इच्छा होती थी।

वेस्ट ग्रोव, लांग आयलैंड, १०.२४ प्रात:काल

"किन्तु, जार्ज प्रिय! तुम जा नहीं सकते।" किटी कासवेल अत्यन्त भयपूर्ण विवाद के साथ चीख उठी–"हमें आज तीसरे पहर छः बजे नैनसी. ब्राइटन के विवाह में जाना है न?"

किटी को यह जानकर बड़ा बुरा लगा कि कासवेल घर आकर अपना थैला ठीक करने लगा।

"मुझे खेद है, किटी ! पर कोई उपाय नहीं है। एक महत्वपूर्ण बात आ पड़ी है।"

"क्या ?"

"एक काम है, प्रिये ? इस सम्बन्ध में तुम अपने छोटे-से मस्तिष्क को कष्ट मत दो।"

"मैं जानना चाहती हूँ।"

"किटी प्रिये, मैं......"

"मुझे बताओ।"

उसने एक लंबी सॉस ली जो आह के ही लगभग थी—"एक अत्यन्त दुष्ट व्यक्ति ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अधिकार लेने का प्रयत्न कर रहा है और मुझे उसे रोकना है।"

"कौन ?"

"तुम उसे जानती नहीं, प्रिये ? अब मुझे शीघ्रता करनी चाहिए नहीं तो..."

"उसका नाम क्या है ?"

उसने दूसरी गहरी साँस ली—"उसका नाम है पिल्चर।"

"पिल्चर ?"

"अच्छा, अब प्रिये......." उसने अपना झोला उठाया।

"नहीं—" उसने समझौते के साथ सिर हिलाया—"हमने कभी उसे भोजन पर नहीं बुलाया है, मुझे विश्वास है।"

"और हम कभी बुलायेंगे भी नहीं।" वह विदाई का चुंबन करने ही वाला था; किन्तु किटी के स्वर ने उसके ओठों को रोक लिया—"क्या वह वास्तव में दुष्ट है।"

"बहुत।"

"हो सकता है हम उसे भोजन पर बुलायें, जार्ज। वह बड़ा रुचिकर प्रतीत होता है। जितने लोगों को हम जानते हैं, वे सब कितने सज्जन हैं।"

"देखो किटी ! मूर्ख मत बनो।" उसने अत्यन्त तीव्रता से कहा और तत्काल किटी के मुखपर चढ़े हुए रुष्ट बालक की मुद्रा को दूर करने के लिए अपने स्वर में कोमलता भरते हुए कहा—"मुझे खेद है, प्रिये ! मुझे जाना है।"

"ठीक है—" उसने हारकर कहा और चुंबन के लिए एड़ी ऊपर उठा ली।

उसने कहा—"हो सकता है मैं विवाह में सम्मिलित होने के लिए समय से लौट आऊँ।"

किटी ने झोले की ओर देखा—"तुम ठीक कह रहे हो न ?"

"जाने-आने में एक घंटा लगेगा और किसी भी प्रकार मैं समय से लौट ही आऊँगा।"

"एक घंटा ?"

"हाँ, मैंने रोनी से कहा है और वह मुझे अपना विमान दे रहा है।"

"ओह जार्ज ! नहीं, उस छोटे भयंकर विमानपर नहीं।"

"प्रिये, वह छोटा विमान नहीं है.... यह तो उसकी कंपनी का डी. सी. ३ है और वे........"

न जाने कैसे उसने उसका मुँह नीचे को खींच लिया और अत्यन्त वेगसे फिर उसका चुंबन ले लिया तथा वेगसे हट गयी—"शीघ्र जाओ, प्रिय ! नहीं तो तुम समय से लौट नही पाओगे।"

बारहवाँ अध्याय

मिलबर्ग,
पेंसिलवेनिया,
१०.२९ प्रातःकाल

डॉन वॉलिंग पूरे आध घंटे तक एल्डर्सन के पहुँचने की बाट जोहता हुआ क्लब में बैठा रहा। डडले से छूटकर आने में उस बूढ़े को कहाँ इतना समय लग गया.... यहाँ तक कि यदि वह उसे घर तक भी पहुँचा आता, तब भी न लगता ? बात ! हाँ, यही तो एल्डर्सन की कठिनाई थी... बात, बात, बात,....पर वे तो दो हैं....एल्डर्सन और डडले... संभवतः वहाँ बैठे हुए अपना सिर खपा रहे होंगे।

इतनी देर तक प्रतीक्षा करते-करते उसकी सारी नसें इतनी क्षुब्ध हो उठीं थीं कि उसकी प्रत्येक ध्वनि से क्रोध फूट पड़ रहा था। गाड़ी-कक्ष के बन्द द्वार के पीछे उसने किसी भारी वस्तु के गिरने की ध्वनि सुनी और उस क्षण में संचरण करने के लिए उठ पड़ा। एल्डर्सन मुझसे इस बेढंगे स्थान पर क्यों मिलना चाहता है ? दिनमें तो यह फीडरल क्लब अत्यन्त नरक बना रहता है... और फिर प्रातःकाल साढ़े दस बजे और भी बुरा।

बीच के भवन में पगध्वनि सुनायी दी और वह द्वारकी ओर मुँह करने को घूमा। उसने देखा कि एक बूढ़ा सेवक रसोईघर की ओर से झपटा चला आ रहा है।

सेवक ने कहा–"ओहो ! श्री बुलार्ड के लिए कितना दुःख है हमें, है न ? हमारे सबसे अधिक सम्मानित सदस्यों में से थे। भव्य पुरुष, सचमुच भव्य।" उसने एक रद्दी कागज का धरती पर पड़ा टुकड़ा झुककर उठा लिया।

"हमें क्षमा कीजियेगा, श्री वॉलिंग। प्रातःकाल के समय यहाँ बहुत स्वच्छता नहीं रहती। ऐसा कभी ही होता है कि हमारे अच्छे सदस्यों में से कोई दोपहर के पहले यहाँ पधारें।"

"मैं श्री एल्डर्सन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" वॉलिंग ने बाधित उत्तर के रूप में कहा–"वे मुझसे यहाँ मिलने आ रहे हैं।"

"अच्छा, श्री एल्डर्सन ? सचमुच बड़े अच्छे व्यक्ति हैं। हैं न, सचमुच बड़े अच्छे ?" उसने तत्काल अपना हाथ इस प्रकार उठा दिया जैसे चाय का

प्याला उठा रहा हो—"संभवतः आप यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं...वह लीजिए, श्री एल्डर्सन आ पहुँचे।"

"मुझे दुःख है कि इतनी देर हो गयी।" एल्डर्सन ने विनीत क्षमा-याचना के साथ कहा। वह बड़ी लंबी-लंबी साँसें ले रहा था मानो झपटा चला आ रहा हो—"मैंने समझा कि उसे घर पहुँचा आना सबसे अच्छी बात होगी। क्योंकि कार्यालय में उसे ले जानेका अर्थ होता, उसे शॉ की गोद में बैठा देना।" ऐसा प्रतीत हुआ कि वॉलिंग उसके समर्थन में सिर हिला रहा है।

"कहाँ बैठकर बातें हों?"

"ऊपर किसी ताश के कक्ष में?" यह प्रश्न था वक्तव्य नहीं और एल्डर्सन का स्वर कुछ सशंक प्रतीत हुआ।

सीढ़ी पर चढ़ते हुए डॉन वॉलिंग ने सोचना प्रारंभ किया कि मैं एल्डर्सन से क्या कहूँगा? पहले से बातचीत सोच रखना वह बहुत कम किया करता था। किन्तु वह जिस विशेष कठिनाई में पड़ गया था उसे जानता था। वह सीधे-सीधे यह नहीं कह सकता था कि मैं डॉन वॉलिंग...ही ऐसा व्यक्ति हूँ, जिसे ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष बनना चाहिए। वास्तव में स्वयं एल्डर्सन ने आज प्रातःकाल अपने घर यही बात लगभग कह भी दी थी...मैं एल्डर्सन को ही वह बात फिर कहने को प्रेरित करूँगा और तब डडले के सम्बन्ध में उसकी भूल प्रदर्शित करूँगा। हॉ, यही सबसे अच्छा उपाय होगा...पर जाने दो, उस बुड्ढे खूसट को देर तक फुसलाने की मूर्खता नहीं करूँगा...काम भी तो करना है।

वह ताश का कक्ष जिसमें वे लोग घुसें, उन बहुत-से घिरे हुए कक्षों में था जो सौ वर्ष पहले शयनकक्ष थे—जब इस क्लब के स्थान पर फीडरल टैवर्न था।

"क्यों क्या हुआ था?" वॉलिंग ने सीधे-सीधे मौन तोड़ते हुए, पूछा।

एल्डर्सन कुछ चकित दिखायी दिया मानो उसे इस प्रश्न की आशा न हो—"मैंने तुम्हें बताया न कि मैंने उसे घर से बाहर खदेड़ दिया।"

"उसने क्या कहा?"

"कहेगा क्या? मैंने उससे कुछ कहा ही नहीं, इसलिए कि उसके पास भी कहने को था क्या!"

'तुमने किसी विषय में तो बातें की ही होंगी।"

"हमने...वह ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में ही कुछ-कुछ कहता रहा।"

वॉलिंग मेज पर अपनी कोहनी टेककर आगेको झुक गया और उसने अपना स्वर कोमल बना लिया—"फ्रेड ! मैं जानता हूँ कि तुम मुझे सनकी समझते होगे, कि मैंने उस प्रकार तुम्हें स्टेशन पर जा घेरा, किन्तु वह आवश्यक था। जब मैं कार्यालय में गया और यह सोचने लगा कि कंपनी का अध्यक्ष किस प्रकार का व्यक्ति होना चाहिए.... उसे क्या काम करना होगा... क्या बताऊँ, फ्रेड ? क्या तुम नहीं समझते हो ? वाल्ट डडले उसे नहीं संभाल सकता। उसमें वह शक्ति नहीं है..... पर्याप्त शक्ति नहीं है... कुछ भी नहीं है। वह उसे संभाल नहीं सकता। बस, यही सौ बात की एक बात है।"

एल्डर्सन ने धीरेसे कहा—"मैंने समझा था कि वह चला सकेगा.... तुम्हें सहायक बनाकर।"

यही प्रारंभ था। ' जितनी सरलता और शीघ्रता की वह आशा करता था उससे भी अधिक सरलता और शीघ्रता के साथ यह बात आ खड़ी हुई—"इसका यही अर्थ है फ्रेड, कि सारा काम मुझे ही करना पड़ेगा।"

"वह तुम्हें सहायता देगा।" एल्डर्सन ने कहा तो, किन्तु बिना विश्वास के।

"नहीं, बहुत सोचने के पश्चात् मैं यह बात समझ पाया हूँ कि वाल्ट मुझे सहायता देनेके बदले बाधक ही होगा... गले में चक्की का पाट... ऐसा होगा कि जब मुझे कुछ करनेकी आवश्यकता होगी, तो मुझे उसे ढकेलकर दूर करना होगा।"

उसने देखा कि एल्डर्सन का हाथ काँप रहा है।

एल्डर्सन कुछ बोलता क्यों नहीं ? ठीक है, उसे चुप रहने दो...... एल्डर्सन का कोई महत्व नहीं है, हाँ ! अरे ! उसके मस्तिष्क में यह सनक-भरी बात आ कहाँ से गयी कि एल्डर्सन ही निश्चय करनेवाला है..... कि अध्यक्ष-पद कोई ऐसी वस्तु है, जो एल्डर्सन उसकी मुट्ठी में ला धरेगा। यह खूसट एल्डर्सन अपने को समझ क्या बैठा है ... वह क्लर्क से बढ़कर और कुछ रहा कब.... कुछ भी नहीं केवल...।

"मैंने आशा की थी कि तुम्हें यह समझाना नहीं पड़ेगा।" एल्डर्सन ने बड़े धीमे स्वर में कहा।

"क्या ?"

एल्डर्सन ने कहा—"मैं तुम्हें यह नहीं बताना चाहता था... क्योंकि उस सम्बन्ध में कुछ किया नहीं जा सकता और.... मैं जेसी के सम्बन्ध में तुम्हारे मन में भ्रामक धारणा नहीं बैठाना चाहता था।"

"आज प्रातः काल जब मैंने फोन पर उससे बात की.....

उसने देखा कि एल्डर्सन का मुँह उतर गया है मानो जो शब्द उसके ओठों पर आ रहे थे, उन्हें बोलना उसे बड़ा भारी पड़ रहा था।

एल्डर्सन ने लंबी साँस ली और उसके उठते हुए कंधों ने उसके सिर को भी ऊपर उठा दिया—"आज प्रातःकाल जब मैंने जेमी ग्रिम से बातचीत की, उस समय मेरा विचार था कि तुम्हें नया अध्यक्ष बनाया जाय। किन्तु जेमी उस में सहमत नहीं है।"

मुख्य कमानी में झटका लगा—"जेसी सहमत नहीं... क्या कह रहे हो?"

"मैंने तुम्हें इतना बता दिया। लो सारी बात ही बताये देता हूँ।" एल्डर्सन ने उदास होकर कहा और उसकी तर्जनी धीरे-धीरे मेज खटखटाने लगी—"जेसी ने कहा है कि वह मेरे साथ मत देगा। जिसे भी मैं निश्चय करूँ.. पर तभी जब वह नाम शॉ का हो, तुम्हारा नहीं।"

"शॉ या.....फ्रेड। मैं....मैं इसे मान नहीं सकता। जेसी और मैं, दोनों मित्र रहे हैं, साथ काम किया है। मैं विश्वास नहीं कर सकता कि मेरे सम्बन्ध में उसकी यह धारणा है।"

"कारण मुझसे न पूछो।"

"मैं पूछ रहा हूँ क्यों?"

"यह मैं नहीं जानता।"

"और क्या कहा उसने?"

"कुछ नहीं। मैंने उससे बात करनेका प्रयत्न किया... पर तुम जानते ही हो जेसी को।"

एल्डर्सन ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में दया भरी हुई थी।

"यह बात तुम उस समय सीखते हो, जब वृद्ध होने लगते हो.. जो बात मैंने आज प्रातः काल कही थी... उस समय मैं इस विषय में सोच रहा था.. तुम कभी जान नहीं सकते कि मनुष्य के मन में क्या है। तुम सोचते हो कि तुम जानते हो, पर तुम जानते नहीं। कभी-कभी तो जब तक कोई बात हो नहीं जाती और तुम्हें उसे जानने को बाध्य नहीं करती, तुम इतना तक नहीं जानते कि तुम्हारे अपने मन में क्या है।"

"मैं समझता हूँ यह ठीक है।" डॉन वॉलिंग बुदबुदाया—"फ्रेड! मैं एक बातके लिए क्षमा चाहता था। कमसे कम... मैं तुम्हें इस बात के लिए धन्यवाद देता हूँ कि मेरे सम्बन्ध में तुम्हारी क्या धारणा है?"

"जेसी के सम्बन्ध में कोई बुरी धारणा न बना लेना। वह बड़ा विचित्र व्यक्ति है, सदा विचित्र रहा है।"

इस संकेत ने सहसा निराशा को क्रोध में बदल दिया—"बड़ी अच्छी बात है कि वह अवकाश ग्रहण कर रहा है। ऐसा दुमुँहा हरामी जो....."

"ठहरो!" एल्डर्सन ने अप्रत्याशित तीव्रता के साथ कहा—"कोई कारण नहीं है कि........."

"जो आदमी तुम्हारी पीठ में छुरा भोंक दे उसे तुम क्या समझोगे?"

"ऐसा पहले भी हुआ है"—एल्डर्सन ने कोमलता के साथ कहा।

"मैं जानता हूँ....किन्तु....."

"कोई कारण नहीं है कि इससे किसी प्रकार का परिवर्तन हो।" एल्डर्सन ने कहा—"दुःख है कि मुझे यह बात बतानी पड़ी। मैं जानता हूँ कि तुम्हे कैसी लगेगी...किन्तु कमसे कम अब तुम समझ लोगे कि डडले को अध्यक्ष बनाना केवल बूढ़ेकी सनक भर नहीं थी। तुम कार्यवाहक उपाध्यक्ष बनकर ऐसे स्थान पर पहुँच जाओगे, जहाँ......"

"यदि जेसी मुझे अध्यक्ष-पदके लिए अपना मत नहीं दे सकता, तो उपाध्यक्ष-पदके लिए कैसे देगा?"

एल्डर्सन कहने लगा—"क्योंकि इसके अतिरिक्त उसके पास कोई दूसरा उपाय ही नहीं है। या तो तुम या शॉ। और मैं समझता हूँ, मैं जेसी को इस बातके लिए सहमत कर लूँगा कि अध्यक्ष तुम ही हो।"

ज्योंही वॉलिंग खड़ा हुआ कि कुर्सी भड़ाम के साथ गिर कर मौन हो गयी। उसने उठाने का कोई प्रयत्न नहीं किया—"ऐसी स्थिति में जेसी भाड़ में जाय और तुम मेरी ओर से यह बात उसे सादर कह भी देना।"

उसने पैर से ठेलकर कुर्सी अलग हटा दी और द्वार की ओर बढ़ गया। ज्योंही एल्डर्सन ने उसका मार्ग रोका कि दूसरी कुर्सी गिर पड़ी।

"इस भाव से मत सोचो, डॉन ? हमें तुम्हारी आवश्यकता है.....कंपनी को तुम्हारी आवश्यकता है।"

"किन्तु मुझे कंपनी की आवश्यकता नहीं है।" वह बमका—"मुझे नहीं है। नहीं। भाड़में जाय! यदि मैं केवल यही हूँ...शॉ के बदले दूसरा व्यक्ति।"

आँख मूँदकर वह द्वार के बाहर निकलकर नीचे भवन की ओर चल दिया।

१०.५४ प्रात:काल

क्रोध के उद्‌गार या तो कोमल होते हैं या उत्तेजक और ये उस मनपर अवलंबित होते हैं जिसपर जाकर बैठते हैं; किन्तु जब वॉलिंग ट्रेडवे टॉवर के विश्रामकक्ष में प्रविष्ट हुआ तो ये दोनों भाव क्रमश: आ-जा रहे थे। पिछले पाँच मिनट में उसके मनोवेग निराशा और संकल्प के झूले पर एक दर्जन बार झूल चुके थे।

वह एल्डर्सन से तो यह कहकर छुटकारा पा आया था कि मैं गाड़ी पर चलने के बदले पैदल जाऊँगा; किन्तु जेसी ग्रिम के विश्वासघात की स्मृति से बचकर वह नहीं निकल पा रहा था।

उस दुष्ट ने अत्यन्त विश्वासघात और द्वेष के साथ मेरे भाग्य-विधान को लूट लिया है.... मेरे अस्तित्व के सारे लक्ष्य और उद्देश्य नष्ट कर दिये हैं... और उसे रोकने का कोई उपाय भी नहीं है। आशा-रहित विषाद की व्यग्रता के साथ डॉन वॉलिंग पुनः व्याकुल हो गया.... किन्तु फिर तत्काल उसकी उलटी प्रतिक्रिया भी हुई। उसमें संघर्ष की वह वेगपूर्ण भावना आ समायी, जो आत्मरक्षण की मूल प्रेरणा से मिलती-जुलती थी। नहीं, मैं हार नहीं मानूँगा... नहीं मानूँगा।

"कुमारी मार्टिन आपसे तत्काल मिलना चाहती हैं–" लुइजी ने कहा। वे अभी आधे ही ऊपर पहुँचे होंगे कि ये शब्द उसके चेतन में भर गये।

"आप चौबीसवें खंडपर कुमारी मार्टिन से मिलने चल रहे हैं?" लुइजी पूछ रहा था।

"ठीक है.....चौबीस।" उसने कहा....सोचते हुए नहीं, वरन् कुमारी मार्टिन की बुलाहट का उत्तर देने के अभ्यास के कारण ये शब्द निकल गये मानो यह स्वयं ऐवरी बुलार्ड की बुलाहट हो। चौबीसवें खंड पर मृत्यु की शान्ति विराजमान थी। उसे अपने निर्णय के लिए खेद हुआ, किन्तु अब उलटकर नीचे जानेके लिए विलंब हो चुका था। ऐरिका मार्टिन ने लिफ्ट का द्वार खुलते ही सुन लिया था और वह उससे मिलने के लिए अपने कार्यालय से बाहर आ रही थी–"ओह! आगमन के लिए धन्यवाद, श्री वॉलिंग! मुझे भय था कि कहीं मैं आपसे मिलने का अवसर न पा सकूँ।"

ये शब्द इस प्रकार निकले मानो इनके पीछे प्रतीक्षा ने कोई प्रेरणा का दवाव एकत्र कर लिया था और वे ऐरिका को भी बड़े विचित्र लगे होंगे; क्योंकि

उसने झट आगे इस प्रकार कहा मानो यह व्याख्या आवश्यक हो—"आज प्रातःकाल श्रीमती प्रिंस ने मुझे फोन किया था। आप जैसे ही जा रहे थे, मैं आपसे मिलने गयी; किन्तु मुझे एक सेकंड का विलंब हो गया।"

"क्या मेरे लिए बुलावा था ?"

"नहीं, मेरे लिए। किन्तु मैं आपकी सम्मति ले लेना चाहती थी। वे कहती थीं कि उनके व्यक्तिगत कागजों का एक डिब्बा श्री बुलार्ड की आलमारी में है। उन्हें वह आज प्रातःकाल चाहिए।"

"क्या तुम इस सम्बन्ध में कुछ जानती हो ?"

उसकी झिझक ने उसकी स्वीकृति को कुछ विलंबित कर दिया—"हाँ, एक डिब्बा तो है, जिसपर उनका नाम लिखा है।"

"क्या कोई ऐसा कारण तो नहीं है कि वह उन्हें दिया न जा सके।"

फिर वह अलक्ष्य झिझक उपस्थित हो गयी।

"नहीं, मैं समझती हूँ कोई कारण तो नहीं है।"

एक क्षण पहले वह नहीं जानता था कि वह जूलिया ट्रेडवे प्रिंस से बात करना चाहता है। किन्तु अब अचानक उसकी युद्ध-योजना में यह पहली ही मूल गति बन गयी।

"मान लो, यह डिब्बा तुम मेरे हाथ मे दे दो कुमारी मार्टिन।" उसने कहा—"तो मैं इसे घर जाते समय उन्हें दे दूँगा।"

"आप दे देंगे ?" उसका उत्तर कुछ वेगशील हो गया; क्योंकि उसके अन्य उत्तर कुछ मन्द होते थे—"क्या आप सचमुच इसे बुरा तो नहीं मानेंगे ?"

"नहीं, तनिक भी नहीं।"

"मैं उसे लाये देती हूँ।"

वह अपने कार्यालय में से होकर निकली और एक झिझक के संकेत के साथ उसने ऐवरी बुलार्ड का द्वार खोल दिया। डॉन वॉलिंग उसके पीछे-पीछे उस बड़े कक्ष के झुटपुटे में प्रविष्ट हो गया। भय की विभीषिका वहाँ भारी भापके समान लटकी हुई थी। सब परदे बन्द थे और केवल रंगीन पल्लों से वह प्रकाश आ रहा था, जो ऊपर उठा हुआ सूर्य उन मोटी-मोटी छतों की शहतीरों के बीच से भेज रहा था। अंधेरे में छाया के समान चलती हुई ऐरिका मार्टिन दीवार में लगी हुई तिजोरी के पास पहुँची। द्वार खुला और उसके हाथों ने छोटा-सा काला पच्चीकारी किया हुआ डिब्बा इस प्रकार निकाल लिया मानो उसे आँख की आवश्यकता ही न हो। उसने वॉलिंग को डिब्बा ला

थमाया—"एक बात आपको जान लेनी चाहिए, जो संभवतः श्रीमती प्रिंस पूछें। उन्होंने मुझे स्वयं यह डिब्बा लानेको कहा था।"

"स्वयं?"

"जी, हाँ।"

वह झिझका। जो उसने प्राप्त कर लिया था उसे खोने मे वह झिझक रहा था—"संभवतः कुछ महत्वपूर्ण कागजपत्र हो।"

"मैं नहीं समझती। मुझे संदेह है कि यह मुझे अपने यहाँ बुलाने के लिए उन्होंने उपाय रचा है।"

"क्यों, वे ऐसा क्यों चाहती हैं?"

"क्योंकि. . . . ."उसने अपने आपको संभाल लिया। और वह भी समझ गया कि अब वह जो कुछ कहेगी, वह वह बात नहीं होगी—जो वह पहले उत्साह में कह देना चाहती थी—"मैं जानती तो नहीं, वास्तव में. . . . किन्तु मैं कल्पना करती हूँ कि वह मुझसे कहलवाना चाहती है कि यहाँ क्या होगा। मैं समझती हूँ कि मैं संभवतः वह व्यक्ति नहीं हूँ, जो श्रीमती प्रिंस को उस बातकी सूचना देने की पात्र हैं।" और तब उसने बिना प्रश्न चिह्न का एक प्रश्न विशेष रूपमे कहा—"यदि कोई ऐसी बात जानती भी जो उसे बता सकती।"

उसने उपेक्षापूर्ण एक शब्दहीन ध्वनि की और वह काला डिब्बा अपने हाथ में ले लिया।

उस अर्द्ध अंधकार में भी वॉलिंग ने देखा कि एरिका की आँखे वह बता रही हैं जो वह पूछनेवाली है—"श्री वॉलिंग? क्या कोई ऐसी बात है, जो आप मुझे बता सकते हैं? हो सकता है कि आप मुझसे बातचीत करना ठीक न समझें. . . . . . यदि ऐसी बात हो तो मैं समझ जाऊँगी, वास्तवमें. . . किन्तु यदि आप कुछ बता सकते हों कि क्या होने वाला है . . . तो कृपया बताइए, श्री वॉलिंग।"

अंतिम शब्द फुसफुसाहट की अभ्यर्थना में कहे गये थे और उसने अनुभव किया कि मुझे कुछ कहना ही चाहिए, पर क्या?

"मैं समझता हूँ तुम यह पूछना चाहती हो कि इस पद पर कौन आयेगा?" उसने धीरेसे पूछा।

"आप स्वयं समझ सकते हैं कि यह मेरे लिए क्यों इतना महत्वपूर्ण है।"

वह जितनी देर रुक सकता था उतनी देर तक रुका रहा, किन्तु रुकने में कोई तुक नहीं था। उसे कुछ-न-कुछ तो कहना ही था—"मैं चाहता था कि कोई

ऐसी बात होती तो तुम्हें बता सकता, कुमारी मार्टिन ? पर मुझे दुःख है कि कोई बात है ही नहीं। मुझे विश्वास है कि इस बड़ी विचित्र परिस्थिति को तुम स्वयं समझती होगी। यदि पहले से कोई कार्यवाहक उपाध्यक्ष चुन लिया गया होता........."

"हाँ, मैं जानती हूँ।" वह विचित्र प्रकार से आत्म-समालोचना करने लगी–लगभग इस प्रकार से मानो वह कार्यवाहक उपाध्यक्ष न चुने जानेका सारा दोष अपने ऊपर ले रही हो।

अचानक वॉलिंग ने धीरेसे पूछा–"क्यों कुमारी मार्टिन ? क्या श्री बुलार्ड ने कभी तुम्हें ऐसा संकेत दिया था कि वे किसे कार्यवाहक उपाध्यक्ष बनाना चाहते थे ?"

ऐरिका की आँखें उसके मुखपर तब तक गड़ी रहीं, जब तक उसने उस प्रश्न का भाव नहीं समझ लिया। उसने एक क्षण को अपनी आँखें हटायीं; कोई उत्तर सोचनेके लिए नहीं, वरन् अपनी झिझक का कारण वॉलिंग को भली-भाँति समझा देनेके लिए...."यदि मैं उत्तर न दूँ..." किन्तु उसने उत्तर दिया और उस उत्तर में तनिक भी झिझक नहीं थी–"नहीं; उन्होंने कभी नहीं बताया। मुझे विश्वास है कि उन्होंने कोई अंतिम निश्चय ही नहीं किया था....हाँ, यदि कल न्यूयॉर्क में निश्चय किया हो तो दूसरी बात है।"

"मैं नहीं जानता था, मैं...."

"कमसे कम एक व्यक्ति ऐसा है जिसने यह सब समझ लिया है।" उसने ऐसी सरलता से यह बात कही, जो इससे पहले कही हुई सब बातोंसे कुछ विचित्र लगती थी।

वॉलिंग के मन में सहसा लॉरेन शॉ का ध्यान फूट पड़ा और वह यह सुनने के लिए प्रस्तुत हो गया कि इस प्रश्न के पश्चात् वह क्या कहेगी–"वह कौन है, कुमारी मार्टिन ?"

"लुइजी। वह पहले से आपको ही यहाँ ऊपर ला बैठाने को तैयार है।"

यह बात ऐसी अचानक आयी कि वह अत्यन्त चकित हो गया और उसने देख लिया कि ऐरिका ने भी उसकी यह चेष्टा भाँप ली है।

"मुझे दुःख है कि आप इतने चकित हो गये, श्री वॉलिंग ? मुझे आशा थी कि आप इतने चकित न होंगे।"

जो उत्तर वह दे सकता था, वह केवल मुस्कान थी–जो ऐरिका के लिए भी अर्थहीन थी; क्योंकि स्वयं उसके लिए भी उसका कोई अर्थ नहीं था।

ऐरिका की ध्वनि ने जो उसका नाम लेकर पुकारा तो वह द्वार पर ही रुक गया।

"श्री वॉलिंग, यदि आपको सहायता देनेके लिए मैं कुछ कर सकूँ, तो मुझे विश्वास है कि आप मुझे बुला लेंगे। यदि मैं यहाँ न हुई तो घर पर रहूँगी। मेरा नंबर टेलीफोन की पोथी में है।"

"धन्यवाद, कुमारी मार्टिन!" उसने कहा और जब चौबीसवें खंडपर लिफ्ट का द्वार खुला तो लुइजी मुस्करा दिया।

११.२१ प्रातःकाल

यह मानकर फ्रेड्रिक एल्डर्सन के दुबले-पतले शरीर में एक कंपन दौड़ गयी कि मैंने ही वॉलिंग को यह आशा दिलायी थी कि तुम अध्यक्ष हो सकते हो। यह मेरा ही दोष है कि अब वॉलिंग उस संघर्ष के लिए अपना हृदय तक चीरकर रख देगा, जो जीता नहीं जा सकता।

एडिथ का स्वर उसके कानों में पड़ रहा था।

"श्री वॉलिंग यहाँ तुमसे मिलने आये हैं।"

"वॉलिंग. . . . यहाँ।" आशा उछली। वॉलिंग ने अनुभव कर लिया था। वह यहाँ दो टूक बातें करने आया था. . . कि कुछ नहीं से आधी रोटी अच्छी है. . . . कि वाल्ट डडले फिर भी इतना बुरा अध्यक्ष नहीं रहेगा. . . कि जो हो रहा है ठीक हो रहा है।

उसके हृदय में सन्तोष की उष्ण चमक दिखायी दी, जब वह डॉन वॉलिंग से मिलने के लिए घूमा।

डॉन वॉलिंग के तड़क-भरे स्वर में कोई क्षमा-याचना नहीं थी; प्रारंभिक अभिवादन भी नहीं—"तुम वाल्ट को उसके घर ले गये थे क्यों?"

"हाँ, मैं. . . . . ."

"और तुमने उससे मेरे लिए मत देनेको नहीं कहा।"

"मत देनेके लिए. . . ."

"जाने दो, फ्रेड? क्या तुमने यह नहीं समझा कि मुझे मत की आवश्यकता है। मैं इसे शीघ्र ही निश्चय कर लेना चाहता हूँ। निरर्थक तर्कों से क्यों व्यर्थ बात चलाये रखें। यदि वाल्ट और शॉ दोनों इकट्ठे हो गये तो सब नष्ट हो जायगा। हमें यह चुनाव दूसरे ढंगसे करना होगा। इस बातको तुम भी जानते

हां, मैं भी जानता हूं। लाखों काम करने हैं। सीधे वहां जाओ और बातें कर लो, फ्रेड!.....उसे साध लो....उसे साध लो.... उसे बता दो कि स्थिति क्या है।"

इन शब्दों के प्रभंजन के बीच में ही फ्रेड्रिक एल्डर्सन का आश्चर्य पुनर्निर्णीत ज्ञान में परिवर्तित हो गया। ऐवरी बुलार्ड के साथ जीवन भर रहते-रहते उसने सीख लिया था कि प्रत्येक आँधी में शान्ति का केन्द्र भी होता है और अब मेरा कर्तव्य है कि इसमें पड़कर वह शान्ति ढूँढ निकालूँ। हॉ, यही मेरा काम है—यह सरल नहीं होगा... कभी हुआ भी नहीं....... किन्तु पीछे चलकर इसका सम्मान होगा।

"अच्छा, एक मिनट—"उसने कहा।

"फ्रेड, जाने दो, मैं नहीं. .... "

"ठहरो।" उसने अपने स्वर को वेग के परिवर्तन की ऐसी गति दी जिसे उसने ऐसे अवसर पर प्रयोग करना सीख रखा था—"तुम मुझे यह बता दो कि तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो और किस प्रकार करना चाहते हो।"

"मैं यह क्यों बताऊँ कि वह कैसे कराया जायगा?" प्रभंजन चिल्लाया—"मैं इसे कराना चाहता हूँ और मुझे इसकी चिंता नहीं कि तुम इसे कैसे करोगे।"

फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने उसके विश्वास की आवेगपूर्ण शक्ति का अनुभव किया। प्रत्येक बात ऐवरी बुलार्ड के साँचे पर हो रही है, एक-एक शब्द.....।

वॉलिंग ने पूरी छाती फुलाकर इस प्रकार साँस बाहर निकाली मानो उसकी पसलियाँ बैठ जायँगी—"फ्रेड, मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए। यदि तुम डडले को ठीक कर सको और मैं जूलिया ट्रेडवे प्रिंस को साध सकूँ, तो हम लोग इस सारे झगड़े को झटपट ठीक कर देंगे और काम प्रारंभ कर देंगे।"

फ्रेड्रिक एल्डर्सन के मन में वॉलिंग से यह पूछने का प्रलोभन हो रहा था कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस का मत वह किस प्रकार प्राप्त करना चाहता है। उसने बहुत पहले ही से यह पाठ सीख रखा था कि नया विषय हाथमें लेनेसे पहले अपने हाथ स्वच्छ कर लेना चाहिए—

"मैंने डडले को पकड़ा तो ठीक, पर मेरी समझ में नहीं आता....."

एल्डर्सन अत्यन्त चतुराई के साथ रुक गया।

वॉलिंग ने कहना प्रारंभ किया—"मैंने यह नहीं कहा कि तुमने उसे ठीक से नहीं पकड़ा, फ्रेड? मैं यही कहना चाहता था... मैं भूल रहा हूँ... बस

अभी चले जाओ और उसे साधने का कोई उपाय निकालो। मैं तुमपर भरोसा कर रहा हूँ, फ्रेड। मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।"

"हाँ, संभवतः मैं साध सकूँ।" एल्डर्सन ने वही बात कही जो ऐसे अवसरों पर सदा ठीक सिद्ध होती है। पर अब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे आगे क्या कहना चाहिए। वह जानता था कि वह यदि अपनी कठिनाई बताने लगेगा तो वह फिर भड़क उठेगा। फिर भी यह तो स्पष्ट था कि डडले को शॉ की ओर से हटाने के लिए कुछ लाना तो चाहिए ही। क्यों न उसे कार्यवाहक उपाध्यक्ष-पद दिया जाय ? यदि शॉ उसके लिए यही करता तो वह भी क्यों न करे? हाँ, यह विचार ठीक है—किन्तु सदा की भाँति अच्छी बात यही होगी कि यह बात स्वयं अपनी ओर से न कही जाय।

"अच्छा, अब हमें समझ लेना चाहिए..... यदि ... यदि शॉ अध्यक्ष हो तो वह संभवतः डडले को....."

"शॉ अध्यक्ष नहीं होगा। क्या यह नहीं समझते हो ?"

"नहीं, नहीं, निश्चय नहीं।" एल्डर्सन ने उलटकर वेग से कहा। उसे यह प्रस्तावना देनी ही नहीं चाहिए थी—"मैं यही सोच रहा था कि यदि हम वाल्ट को कुछ ठोस वस्तु दे सकते....."

"हम उसे कुछ दें ही क्यों ?" वॉलिंग ने वेग से पूछा।

"तो........"

"ठीक है, जो तुम्हें करना है करो।" वॉलिंग ने अत्यन्त अधीरता के साथ कहा—"मेरे पास तर्क करने का समय नहीं है क्योंकि मुझे श्रीमती प्रिंस से मिलना है।"

इस पूरी बातचीत के समय वॉलिंग खड़ा ही था। इसलिए उसके जाने का अर्थ केवल घूमना और चलना भर था। फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने उसे रोका और तत्क्षण आदेश के कारण वॉलिंग का सिर अधीरता के साथ घूम गया।

"क्या ?"

"तुम श्रीमती प्रिंस को कितना जानते हो ?" उसने शान्ति के साथ पूछा।

"तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?"

उसने देखा कि मैं जीत गया हूँ—"एक मिनट बैठ जाओ। यदि तुम जूलिया ट्रेडवे प्रिंस से बात करने जा रहे हो, तो उसके सम्बन्ध में तुम्हें कुछ बातें जान ही लेनी चाहिए।" वॉलिंग ने आधी बात मानी और मेज की कोर पर बैठ गया।

"उसके विषय में क्या बात जाननी है ?"

"तुम जानते ही हो कि मैं श्री बुलार्ड के बहुत समीप था और बहुत-सी बातें अत्यन्त समीप से जानता हूँ.....।" ज्योंही उसने सिर उठाया कि शब्द बन्द हो गया। वॉलिंग के पीछे कंधे पर उसने देखा कि अपनी ठंढी स्थिर दृष्टि से चित्र के चौखटे में से ऐवरी बुलार्ड उसकी ओर देख रहा है।

"हाँ, कहो ?" वॉलिंग ने कहा।

एल्डर्सन ने उस दृष्टि से बचने का प्रयत्न करते हुए हटकर अपना स्थान बदल दिया, किन्तु जान पड़ा कि वे आँखें अब भी उसकी ओर लगी हुई हैं, मानो वे कह रही हों कि ऐवरी बुलार्ड और जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के बीच जो व्यक्तिगत सम्बन्ध था उसके विषय में कुछ न कहना।

"वह....हाँ, उसके पास जो कुछ भी है, वह सब श्री बुलार्ड की कृपा से है। यदि बुलार्ड ने उसके लिए वह सब न किया होता तो जो उसके पास है....वह उसे कुछ न मिलता।...उसने जो अपने पिता से शेयर पाये थे, उनकी एक पाई भी न मिलती।"

"वह इस बातको जानती है ? क्यों ?" वॉलिंग ने अधीरता से पूछा।

"हाँ, मैं समझता हूँ वह जानती है.......एक प्रकार से। पर वह भी अन्य पैसेवालों के ही समान। जब उनके पास पैसा आ जाता है तो वे भूल जाते हैं कि कहाँ क्या है। वे समझते हैं कि उस पर उन्हें अधिकार है....तो मैं तुम्हें यही समझाने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि कंपनी की ओर उसकी वह रुचि नहीं है जो हम लोगों की है....जो मेरी और तुम्हारी है। उसे तो केवल लाभ से मतलब है। ऐसे बहुत अवसर आये हैं....एक दो नहीं, अनेकों.. जब उसने श्री बुलार्ड को बड़े संकट में डाल दिया था।"

वॉलिंग के मुख से ज्ञात हुआ कि वह परास्त हो रहा है, घबरा रहा है, असफल हो रहा है और उसके स्वर की अधीर झुंझलाहट का मंद स्वर इस बातका समर्थन कर रहा है। जब उसने कहा—"क्या बात है ? क्या वह दो डॉलर के लाभ से सन्तुष्ट नहीं है ?"

"नहीं.....नहीं; पिछले कुछ वर्षों से इतनी बुरी अवस्था नहीं रही.. जबसे हमने लाभ बढ़ा दिया तबसे नहीं।" एल्डर्सन ने दुर्बलता के साथ कहा मानो उसकी पकड़ ढीली हो गयी हो।

वॉलिंग द्वार की ओर बढ़ गया—"तुम अभी सीधे वाल्ट के पास जाओगे और उससे मिलोगे ? क्यों ?"

"कुछ भी, जो तुम निश्चय करना चाहो।" उसने शीघ्रता से वचन दिया और अपने स्वर को इस प्रकार बल देकर कहा मानो वह समझने के लिए अंतिम संकेत हो।

आशा के अंतिम क्षण में वह समझ आ भी गयी..... वॉलिंग का हाथ उसके कंधे पर पहुँच गया। वेग से उसने खीसें निकालीं और दृढ़ स्वर में कहा—"धन्यवाद, फ्रेड। मैं इसे नहीं भूलूँगा। समझ में नहीं आता कि तुम्हारे बिना मैं करूँगा क्या?" वह चलने लगा।

"फ्रेड! तुम कहाँ जा रहे हो?" यह ईडिथ का स्वर था। न जाने कैसे बिना जाने ही उसे अपना हैट मिल गया और सामने का द्वार भी खुल गया।

"श्री वॉलिंग के लिए कुछ काम करना है।"

ईडिथ ने जो कुछ पुकारकर कहा वह उसने सुना ही नहीं; क्योंकि वह वेग से जो सीढ़ी से उतरता चला जा रहा था, उसीमें वह ध्वनि मंद पड़ कर खो गयी।

११·४० प्रातःकाल

ज्योंही वह ट्रेडवे भवन के चारों ओर घिरी हुई श्वेत भीत के पास पहुँचा, तो डॉन वॉलिंग को ऐसा लगा कि एल्डर्सन ने जूलिया ट्रेडवे प्रिम के सम्बन्ध में जो संकेत दिया था, उसे वह दूर हटाने में असमर्थ है। वास्तव में उसे साव-धान होने की आवश्यकता थी।

उसने बहुत दिन पहले इधर-उधर से एवरी बुलार्ड और जूलिया ट्रेडवे प्रिम के सम्बन्ध में कुछ उड़ती-उड़ती बातें सुन रखी थीं और अब उसे केवल इतना याद था कि उसने कुछ सुना था। पर क्या सुना था वह स्मरण नहीं था। अविश्वास ने जो कुछ मिटाकर दूर नहीं किया था, वह समय बीतने के साथ स्वयं धुँधला पड़ गया।

अपनी गाड़ी से उतरकर वॉलिंग अभी छः-सात पग ही गया होगा कि उसे काले डिब्बे का स्मरण हो आया और वह उसे लेने लौट आया।

उसने ज्योंही द्वार की घंटी बजायी कि वह तत्काल चौंक उठा; क्योंकि द्वार खुलनेपर उसने किसी नौकर, सेविका या चौकीदार की आशा की थी; किन्तु उसके सामने निर्भ्रान्त रूप से ड्वाइट प्रिम खड़ा था। उसने उसे बहुत कम देखा था, किन्तु उसकी वेशभूषा ने पहचान पक्की कर दी। मिलबर्ग में कोई दूसरा व्यक्ति वैसा शिकारी कोट नहीं पहनता था।

उसे अपना परिचय देने की आवश्यकता बड़ी बुरी लगी, पर परिचय देना पड़ा।

"ओ, वॉलिंग! हाँ, आप भी उस कार्यालय के एक व्यक्ति हैं? क्यों?" ड्वाइट प्रिंस ने अत्यन्त स्पष्ट भावना के साथ कहा और उसे द्वार में आनेका संकेत तो किया, पर उससे मिलाने के लिए हाथ नहीं बढ़ाया।

"मैं श्रीमती प्रिंस के लिए कुछ लाया हूँ।"

काला डिब्बा उसके हाथ में था...... किन्तु ड्वाइट प्रिंस की आँखों ने उसे देख लिया और उसके कोमल मुखपर एक मन्द उत्सुकता की लहर चमकी और गूँज गयी।

"क्या श्रीमती प्रिंस घर में हैं?" वॉलिंग ने पूछा और इस संभावना को समाप्त कर दिया कि कहीं ड्वाइट प्रिंस स्वयं डिब्बा न ले ले।

प्रिंस उसकी ओर इस प्रकार देख रहा था मानो कोई निश्चय करने के लिए तर्क कर रहा हो—"मैं समझता हूँ वे कपड़े बदल रही हैं। यदि आप उचित समझें तो.... ...."

"मैं प्रतीक्षा करूँगा।"

ड्वाइट प्रिंस धीरे-धीरे उस चक्करदार सीढ़ी पर चढ़ा चला गया, जो उस भवन के बड़े मध्यकक्ष में बनी हुई थी और फिर उसी उत्सुकता की मुद्रा से उसने घूमकर देखा।

इस बातका कोई प्रमाण नहीं मिल रहा था कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस उससे मिलने नीचे आयगी और इसके कारण उसकी अधीरता क्रोध के रूप में परिवर्तित हो गयी। एल्डर्सन ने जो संकेत किया था उससे उसकी आशंका और भी बढ़ गयी। डॉन वॉलिंग उस मंद नारी-स्वर की कोमलता के लिए पूर्णतः अप्रस्तुत था, जो अचानक पीछे से बोल उठी।

उसने घूमकर देखा तो जूलिया उस तल से कुछ सीढ़ियाँ ऊपर ही खड़ी हुई थी और उसकी चमकीली काली पोशाक से ढँकी हुई मूर्ति उस चक्करदार रेलिंग के घुमाव में सुंदरता के साथ मिल गयी थी।

"आपने यहाँ आकर कितना अच्छा किया, श्री वॉलिंग!" उसने आवेग के साथ कहा और दो पैड़ी ऊपर खड़े ही अपना हाथ बढ़ाया—"मैंने अभी कुमारी मार्टिन को बुलाया था और उसके लिए गाड़ी भेजने वाली थी, पर उसने बताया कि आप आ रहे हैं। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आपने मुझपर कृपा की और दुःख है कि आपको इतनी देर तक प्रतीक्षा कराती रही।"

वह दो सीढ़ी नीचे उतर आयी और अब उसने देखा कि वह जितना समझता था वह उससे भी नाटी है, लगभग बच्चों जैसी। और जैसा उसके सम्बन्ध में सोच रखा था, वह उससे कहीं कम सुन्दर दिखायी पड़ती थी। फिर भी उसने अपनी शंकापूर्ण कल्पना में जिस व्यक्ति की कल्पना की थी उससे वह पूर्णत: अधिक सुहावनी प्रतीत हुई।

जूलिया ने उसके हाथ से बिना कुछ टीका–टिप्पणी किये काला डिब्बा ले लिया और अत्यन्त उपेक्षा के साथ मेज पर रख कर, उस चौड़े भवन में चली गयी। इससे वॉलिंग के मन में ऐरिका मार्टिन की यह बात और भी जम गयी कि इस डिब्बे का कोई महत्व नहीं है।

"चलिए, पुस्तकालय में चला जाय।" उसने द्वार खोलते हुए कहा और वह समझ गया कि एक बाधा तो पार हो गयी; कम-से-कम उसके साथ बातचीत करने में अब कोई झंझट नहीं होगी।

जिस कक्ष में वे प्रविष्ट हुए थे वह भिन्न प्रकार का कक्ष था। छत तक ऊँची आलमारियों में, भूमितल की आलमारियों में और दूर की दीवार के पास की बड़ी-सी खिड़की में पोथियों के ढेरके-ढेर भरे या फैले हुए थे। वहाँ अनेकों कुर्सियाँ थीं, जिनमें से बहुत-सी तो लगभग सोफा जितनी बड़ी थीं और उनके आगे एक अत्यन्त सुंदर मेज लगी हुई थी।

जूलिया ने भली-भाँति समझकर कहा–"मुझे प्रसन्नता है कि आपको यह अच्छी लग रही है। यह मेरे दादा, ऑलिवर की है।" उसने अपने दादा की घड़ी की ओर संकेत किया जिसका डिब्बा दूर से खुरदरी लकड़ी का जान पड़ता था। किन्तु पास जानेपर उसकी समझ में आया कि उसपर जो दाने-दाने प्रतीत हो रहे थे, वे वास्तव में कौशल से खोदी हुई बारीक मूर्तियों के रूप थे।

"मैं नहीं जानता था कि आपके दादा ऐसे व्यक्ति थे...।" वह कहता-कहता रुक गया।

जूलिया की दृष्टि और स्पष्ट हो गयी–"चित्र में वे जैसे दिखायी पड़ते हैं, उससे बहुत भिन्न थे।"

"आप उन्हें जानती थीं?"

"केवल उनकी दैनन्दिनी के द्वारा। वे मेरे जन्म से पहले ही चल बसे थे।"

"वे दैनन्दिनी भी लिखते थे?"

"हाँ, अपने सारे जीवन ... सत्रहवें जन्मदिन से लेकर अपनी मृत्यु के एक वर्ष पहले तक। मुझे दुःख है, श्री वॉलिंग।" उसने कहा और उसका स्वर

धीमा पड़ गया—"मेरा यह विचार नहीं था कि मैं आपको अपने परिवार की कथा पर व्याख्यान दूँ। बैठ जाइए। अब, जब आप यहाँ आ गये हैं तो मैं इसका अधिक-से-अधिक लाभ उठाना चाहती हूँ।"

वह भली-भाँति समझ गया कि जूलिया ने खिड़की की ओर पीठ वाली एक कुर्सी पहले ही खाली कर दी है, जिससे उसका मुख छाया में पड़ जाय और वॉलिंग का मुख पूर्ण प्रकाश में; किन्तु उसने यह शंका मन से हटा दी कि यह बात जानबूझकर की गयी है।

"मुझे दुःख है कि आप पहली बार इस घर में आ रहे हैं, श्री वॉलिंग! मैंने कई बार आप और श्रीमती वॉलिंग को यहाँ भोजन करने के लिए बुलानेका विचार किया था। मैं जानती हूँ कि कला में आपकी बड़ी रुचि है और मैंने सोचा कि संभवतः आप और ड्वाइट दोनों को बहुत-सी बातें समान प्रतीत हों।"

इससे पहले कि वह कोई उत्तर दे, जूलिया कहती गयी—"आपकी पत्नी बहुत सुंदर हैं, क्यों? मैंने कुछ सप्ताह पूर्व उन्हें पुष्प-प्रदर्शनी में देखा था। मुझे लगा कि जितनी स्त्रियाँ मैंने देखी हैं, उनमें वे सबसे सुंदर हैं।"

"हाँ, मेरी सुंदर है।" उसने कहा। ये शब्द उसे ऐसे शीलरहित प्रतीत हुए मानो आत्मश्लाघा के दोषी हों।

"वे यूनानी हैं न?"

फिर उसे आश्चर्य हुआ। "हाँ, उसके माता-पिता दोनों यूनान में उत्पन्न हुए थे।"

"मैंने और ड्वाइट ने एक जाड़ा एथेन्स में बिताया है। वे लोग बड़े स्वस्थ होते हैं. . . . यूनानी स्त्रियाँ. . . और फिर भी उनमें नारीत्व तनिक भी कम नहीं होता। संभवतः इसलिए मैंने श्रीमती वॉलिंग की इतनी प्रशंसा की. . . . जैसे हम उस व्यक्ति को प्रशंसित करते हैं जो हम होना तो चाहते हैं, किन्तु कभी हो नहीं पाते। या यह केवल नारी की ही विशेषता होती है। नहीं, मैं समझती हूँ यह बात नहीं है।"अपने प्रश्नका स्वयं उत्तर देकर उसने वॉलिंग की ओर से उतर के लिए कोई अवसर नहीं छोड़ा; पर वॉलिंग कुछ कहनेका, ऐसी बात कहने का अवसर ढूँढ़ रहा था, जो बातचीत को उस ओर घुमा दे जिस ओर वह उसे घुमाना चाहता था।

अचानक जूलिया के हाथों ने अधीरतापूर्ण झटका दिया—"हम दोनों व्यर्थ इस पर बातचीत कर रहे थे; क्यों. . . उस सम्बन्ध में बातचीत नहीं कर रहे थे?"

कल संध्या को इसी कक्ष में लॉरेन शॉ के बैठने की कल्पना उसके मस्तिष्क के पास आ गयी और उसका गला रुंध गया।

"ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी।" जूलिया ने कहा, मानो वह बलपूर्वक उससे यह बात मनवाना चाहती हो।

उसने सिर हिलाया और अपनी सूझ की कमी पर झुँझलाया कि मैंने व्यर्थ शॉ की बात मन में आने दी।

वह अपने पैर मोड़ कर एक बड़ी-सी कुर्सी के कोने में दूर बैठी हुई थी।

"मैं उसके सम्बन्ध में बातचीत करना चाहती हूँ, श्री वॉलिंग। आपको आपत्ति तो नहीं है?"

"तनिक भी नहीं।"

"मैं उसके सम्बन्ध में बात करना आवश्यक समझती हूँ.... और उससे, जो उसे बहुत भली प्रकार जानता हो। मुझे विश्वास है कि आप जानते होंगे।"

"यह सत्य है कि श्री बुलार्ड को जाननेके लिए उन्हें समझना आवश्यक था.....पर बहुत-से लोगों ने ऐसा किया नहीं; ऐसे बहुत-से लोगों ने, जो यह कल्पना करते थे कि वे उनके बहुत समीप हैं। मैंने इस बातको अभी एक क्षण पहले सोचा, जब आप अपने दादा के सम्बन्ध में बातें कर रही थीं। कुछ बातों में वे बहुत कुछ एक जैसे रहे होंगे... ऐवरी बुलार्ड और ऑलिवर ट्रेडवे।"

जूलिया ने उसकी ओर चकित दृष्टि से देखा और जो कुछ कहा उससे प्रतीत हुआ कि वह कुछ दूसरी बात कह रही है—"मैं नहीं सोचती कि आप ठीक कहते हैं, श्री वॉलिंग। आपने कहा कि आप ऐवरी बुलार्ड को तभी समझ सकते थे, जब आप उसे भली-भाँति जान लेते। पर मैं समझती हूँ कि आप उसे कभी नहीं समझ सकते थे। वह अपने को समझने ही नहीं देता था। जब आप उसे समझने के लिए उसके पास पहुँचते थे, तो वह झट आपको झटककर फेंक देता था....... उस जादूगर की भाँति जो इस बात से डरता रहता है कि कहीं मेरी चाल कोई समझ न ले।"

वह केवल आधे कान से सुनता जा रहा था और अभी एक क्षण पहले ही उसने अनुभव किया कि जूलिया ने कितनी सटीकता के साथ ऐवरी बुलार्ड का वर्णन किया है।

"क्या यह उपमा ठीक नहीं है?" जूलिया ने पूछा।

"नहीं, बहुत ठीक है। मैं उसीके सम्बन्ध में सोच रहा था।"

क्या यह संभव है कि उसके और ऐवरी बुलार्ड के बीच कुछ सम्बन्ध रहा हो. . . . ऐसा सम्बन्ध जो बुलार्ड ने उस समय तोड़ डाला हो, जब वह उसके बहुत पास पहुँचने का प्रयत्न कर रही थी ?

जूलिया ने अपने भारी काँसे के डिब्बे में से एक सिगरेट निकाल ली और डॉन वॉलिंग झट उसके लिए उसे जलानेको आगे बढ़ गया। उसने पीछे हटनेका संकेत किया—"धन्यवाद ! आप चिंता न कीजिये, श्री वॉलिंग ? जब मैं घबराने लगती हूँ तब धुआँधार सिगरेट पीने लगती हूँ।"

यह पहली सिगरेट थी जो उसने जूलिया को पीते देखा था। किन्तु उसके वक्तव्य ने जो प्रस्तावना खोल दी थी, उसकी अधीरता ने उसे इस अवसर का लाभ उठानेके लिए प्रेरित कर दिया—"आप घबराती क्यों हैं, श्रीमती प्रिंस ? मैं आशा करता हूँ कि कंपनी के भविष्य के सम्बन्ध में आप चिन्तित नहीं होंगी?"

"कंपनी ? नहीं। मैं कंपनी के सम्बन्ध में नहीं सोच रही हूँ या संभवतः सोच भी रही हूँ।" कुछ घुमा-फिराकर जूलिया ने कहा, विचारमग्न होकर। तब अचानक जूलिया ने अपनी आँखें उसकी ओर घुमायीं—"श्री वॉलिंग ? यदि मैं कंपनी के सम्बन्ध में आपसे कुछ पूछूँ तो आप बुरा तो नहीं मानेंगे ?"

"नहीं, तनिक भी नहीं।"

"यह मेरा अपना दोष है। यदि मैं इतनी उपेक्षाशील संचालिका न होती तो मैं उत्तर स्वयं जान जाती।"

वैसी ही सरलता के साथ वॉलिंग ने कहा—"यह इतना अक्षम्य नहीं है, श्रीमती प्रिंस ? प्रायः संचालकों की बैठकों का कभी कोई अर्थ नहीं रहा।"

"इससे मेरे प्रथम प्रश्नका उत्तर मिल जाता है।" उसने मन्द विजयपूर्ण मुस्कान के साथ कहा—"मैं आपसे पूछना चाहती थी कि क्या सचमुच ऐवरी बुलार्ड कुछ तानाशाही प्रकृति के थे ? कंपनी लगभग इसी ढंग से चलायी जा रही थी। क्यों यही बात है न, श्री वॉलिंग ?"

प्रश्न की बनावट और उसके कहनेका ढंग दोनों ने वॉलिंग को सशंक कर दिया कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस इतनी भोली नहीं है जितनी मैं पहले सोचता था।

"मैं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि मैं आपका अर्थ समझ सका हूँ, श्रीमती प्रिंस ? यदि आपका अभिप्राय यह है कि कंपनी की व्यवस्था में श्री बुलार्ड का सबसे अधिक हाथ रहा है तो. . . . हाँ, यह सत्य है।"

"क्या आप समझते हैं कि कंपनी के लिए यह बुरी बात नहीं. . . या आप उसका समर्थन करते हैं ?"

"वहाँ का विवरण ही स्वयं इसका उत्तर दे सकता है।"

"तो आप अधिनायकवादी व्यवस्था को बुरा नहीं समझते ?"

"मैं पूर्णतः इतनी दूर तक तो नहीं जाता, श्रीमती प्रिस। प्रत्येक बात के साथ कुछ-न-कुछ दोष होता ही है। मैं समझता हूँ.... और मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि मैं इस अधिनायकवादी व्यवस्था का अर्थ समझ भी पाया हूँ या नहीं।"

"क्या आपने कभी इसका विरोध किया है, श्री वॉलिंग? आपके जैसे लोग साधारणतः किसी अधिनायक के नीचे काम करने में झिझकते हैं, क्यों? इसी लिए अधिनायकवाद साधारणतः असफल होता है। यह बात है न.. उस समय, जब अच्छे लोग इस प्रकार का अधिकार सहन नहीं कर पाते?"

उसके मन में प्रतिरोध का पहला ज्वार उठता प्रतीत हुआ, किन्तु उसने उसे उड़ा दिया।

"एक बात स्पष्ट कर दूँ, श्रीमती प्रिस? कि मैं श्री ऐवरी बुलार्ड का अन्ध प्रशंसक हूँ। वे महापुरुष थे और मैं उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता। मुझमें जो कुछ है सब ऐवरी बुलार्ड का है।"

"मै आपकी भावना समझती हूँ, श्री वॉलिंग।" जूलिया ने कहा...... और क्षणभर मे डॉन ने सोचा कि उसने दाँव मार लिया.... किन्तु तब वह कहती चली गयी– "किन्तु यह पूर्णतः ठीक नहीं है, क्यों? जो कुछ आपको मिला है वह ट्रेडवे कॉर्पोरेशन से मिला है; व्यक्तिगत रूप से उस व्यक्ति से नहीं मिला, जो उसका अध्यक्ष हो गया था।"

"वे ही कंपनी थे। यदि ऐवरी बुलार्ड न होते तो ट्रेडवे कॉर्पोरेशन ही न होता।"

"क्या यह कहना वैसा ही नहीं है कि यदि रूजवेल्ट न होता तो संयुक्त राज्य अमरीका ही न होता। निश्चय ही, देश बहुत बुरी अवस्था में था, जब वह राष्ट्रपति हुआ..... किन्तु उससे पहले एक जॉर्ज वाशिंगटन भी था ....और एक जेफर्सन और एक लिंकन और.........."

वॉलिंग को इस बात पर बड़ी झुंझलाहट हुई कि वह किस प्रकार मेरी हड़बड़ी की बात का लाभ उठाकर बढ़ती चली जा रही है–"आप ठीक कहती हैं, श्रीमती प्रिस.... कोई भी कंपनी एक अध्यक्ष से बहुत अधिक बड़ा है।"

"किसी भी अध्यक्ष से बहुत बड़ी"– उसने आग्रह किया–"और विशेषतः आज, जब कि कंपनी इतनी बड़ी हो गयी है। कल सायंकाल इस विषय पर मैंने बड़ा रुचिकर विचार-विमर्श किया था।"

शॉ ! अब इसका अर्थ उसकी समझ में आने लगा. . . .जितनी बातें उसने कहीं थीं वे अब इकट्ठी हो रही हैं. . . . . .हाँ, अब वह शॉ से मिलती-जुलती ध्वनि भी कर रही है. . . . . . .उसी प्रकार के वाक्य।

डॉन ने तर्क करने की भावना ही रोक दी। उससे कुछ लाभ होता नही दिखायी दिया। उसे मूल बात पर आ जाना था. . .खुली दो टूक बातें कर लेनी चाहिए—"मैं सोचता हूँ कि जिस व्यक्ति से आपने बातें की थीं वह शॉ था?"

आश्चर्य ने उसका मुँह ऊपर उठा दिया—"हाँ, वह शॉ था।"

"मैंने यही सोचा था।"

"क्यों ?"

"मैं उसका अभिमत जानता हूँ।"

"यह आपका मत नहीं है ?"

"नहीं,।"

"तो आपका क्या मत है, श्री वॉलिंग ?" वह झिझका, क्षणभर चुप रहा। यह निश्चय हो गया कि जूलिया के पागल होने के सम्बन्ध में जो पुरानी किंवदंतियाँ थीं, वे सब द्वेषभरी गप्पें थीं। वह बड़ी चतुर स्त्री है . . . . . बहुत ही चतुर। उसके प्रत्येक शब्द पर सावधानी रखनी होगी।

जूलिया ने उसकी झिझक का लाभ उठाते हुए कहा—"संभवतः आप इस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते।"

"नहीं, नहीं; श्रीमती प्रिंस ? मै यही सोचनेका प्रयत्न कर रहा था कि उसे थोड़े में कैसे कह दूँ।"

"तो मैं उसे सरल किये देती हूँ। अभी कुछ क्षण पूर्व आपने कहा था कि आपकी समझ में ऐवरी बुलार्ड बहुत कुछ मेरे दादा के समान थे। क्या आपका यह तात्पर्य है कि श्री बुलार्ड उसी ढंग से कॉर्पोरेशन चला रहे थे. . . . . . उसी सन् १८९० वाले ढंग से कि उसका अध्यक्ष कोई पहाड़ी पर का देवता है. . सर्वशक्तिमान्. . . अप्रतिम. . . . . पूर्ण अधिनायक ?"

क्रोध उठकर उसके शब्दों का बाधक बन गया; जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के प्रति क्रोध नहीं, वरन् लॉरेन शॉ के प्रति। सारा दोष शॉ का है. . . वह शॉ के शब्दों को दुहरा रही है. . . . . शॉने ही जूलिया की खोपड़ी में अधिनायकवाद की भावना बैठा दी है। इससे संघर्ष करना पड़ेगा। पर कैसे ? केवल दो मार्ग रह गये हैं और दोनों ओर गिरने की संभावना है। यदि मैं ऐवरी बुलार्ड का पक्ष लेता हूँ तो अधिनायकवाद का और जो कुछ शॉने उसका अर्थ बना दिया

है, उसका पक्ष लेता हूँ।.... कंपनी में भी कुछ दोष हैं, बहुत कुछ। हाँ, बहुत-सी बातें ठीक नहीं हैं....बहुत-सी बातें.... और यथाशीघ्र मैं उन सबको दूर भी कर दूँगा। किन्तु इस समय उन सबको स्वीकार करने का अर्थ होगा, उस जाल में फँस जाना जो शॉने मेरे लिए फैला दिया है।

"आपके दादा ने जिस प्रकार पुरानी ट्रेडवे फर्नीचर कंपनी की व्यवस्था की थी, उससे वर्तमान ऐवरी बुलार्ड द्वारा ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के प्रबन्ध की तुलना करना संभव नहीं है। आपके दादा के समय में......."

उसके हाथ के झटके ने रुकने का संकेत किया....."यही बात है, श्री वॉलिंग... यही वाक्य जो आपने प्रयोग किया....ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का ऐवरी बुलार्डवाला प्रबन्ध।"

"यह तो अलंकार था, श्रीमती प्रिंस।"

"क्या यह सत्य नहीं है कि ऐवरी बुलार्ड इस कॉर्पोरेशन को लगभग अकेले चला रहे थे? स्वयं सब बातों का निर्णय करते थे।"

"नहीं, यह ठीक नहीं है। ठीक हो भी नहीं सकता। कॉर्पोरेशन इतना बड़ा है कि इस बात की उसमें संभावना ही नहीं है। वहाँ प्रतिदिन सहस्रों निश्चय होते हैं और जिसके कारखाने समूचे......."

"मेरा अर्थ था महत्वपूर्ण निर्णय, ऊपरवाले निर्णय; वे निर्णय जिनका महत्व होता है।"

"यदि उस निर्णय का अर्थ किसी बड़ी नीति से होता था तो संचालक-मण्डल ही उसका निर्णय करता था।"

"किन्तु श्री वॉलिंग? मैं समझती हूँ कि अभी आपने एक या दो क्षण पहले कहा था कि संचालकों की बैठकों का कोई अर्थ नहीं होता।"

वह मन-ही-मन बड़ा कुड़बुड़ाया और यह अनुभव करने लगा कि मैं बड़ा बुरा फँसा। फिर भी क्रोध न आने देनेके लिए वह बलपूर्वक मुस्काने लगा—"हम लोग कुछ घुमाफिरा कर बातचीत कर रहे हैं।"

"हाँ, क्या नहीं करनी चाहिए?"

"क्या मैं बात की धारा बदलकर आपसे एक प्रश्न पूछूँ, श्रीमती प्रिंस?"

"अवश्य।"

"आप श्री बुलार्ड द्वारा कंपनी की व्यवस्था से बहुत सशंक प्रतीत होती हैं। क्या आप उस व्यवस्था को सफल नहीं समझतीं?"

उसने इतने वेगसे उत्तर दिया मानो वह प्रश्न को पहले से ताड़ गयी हो—"मैं भविष्य के सम्बन्ध में जितनी चिंतित हूँ श्री वॉलिंग, उतनी भूत के सम्बन्ध में नहीं......श्री बुलार्ड की व्यवस्था को चलाये रखना ठीक होगा या नहीं ?"

"मुझे निश्चय नहीं हो रहा है कि आपका अर्थ क्या है ?"

"मैं उस शब्द का पुनः प्रयोग करने में हिचक रही हूँ; क्योंकि मैं जानती हूँ वह आपको अच्छा नहीं लगता।"

"आप अब भी उन्हें अधिनायक समझे जा रही हैं ?"

"क्या वे नहीं थे ?" जूलिया की मंद मुस्कान ने उसके आक्रमण की इस आग्रहपूर्ण निरंतरता को कम नहीं किया।

डॉन ने अपनी उँगलियाँ फँसाकर उन्हें इस प्रकार बलपूर्वक बाँध लिया कि उँगलियों के जोड़ श्वेत पड़ गये—"श्रीमती प्रिंस ! ऊपर तो एक आदमी होना ही चाहिए। दूसरा उपाय ही नहीं है। यह बात सदा उचित होती है, चाहे कोई व्यावसायिक संघ हो—सेना हो, राष्ट्र हो या किसी प्रकार का भी संघटन हो। आप चाहे जिस प्रकार से व्यवस्था करें, पर ऊपर तो एक व्यक्ति रखना ही पड़ेगा। अन्त में उसीको सारा उत्तरदायित्व वहन करना पड़ेगा, दूसरा उपाय नहीं। इस अर्थ में......"

"आप उत्तरदायित्व की बात करते हैं, श्री वॉलिंग। किसके प्रति ?"

"कंपनी के प्रति।"

"भागीदारों के प्रति नहीं ?"

"हाँ.....अंशतः।"

"अंशतः ? क्या आप यह विश्वास नहीं करते कि कंपनी भागीदारों की है, श्री वॉलिंग ? यह उनकी संपत्ति है...कंपनी का केवल यही उद्देश्य है कि अपने भागीदारों के लिए लाभ करे ?"

उसने अपने बढ़े हुए क्रोध को दूर करने का अबतक बहुत प्रयत्न किया था, किन्तु अब वह ज्वार उसके मस्तिष्क में भर गया था। उस धुँधले धुएँ में जूलिया ट्रेडवे प्रिंस और लॉरेन शॉ में कोई भेद की रेखा नहीं दिखायी पड़ रही थी। शब्द तो शॉ के थे, किन्तु स्वर था जूलिया का। उन शब्दों के प्रयोग के उत्तर-दायित्व से जूलिया अब नहीं बच सकती थी।

उसे क्या अधिकार है कि मुझे इस प्रश्नावली में घसीटे.....मुझे पेट पर रेंगकर चलनेके लिए बाध्य करे ? क्योंकि वह भागीदार है....क्योंकि

उसके पास कुछ थोड़े-से कागज के टुकड़े हैं, जिनके द्वारा वह मधु चूसनेवाले कीड़ों के समान दूसरों के परिश्रम पर जीवित रहे। एल्डर्सन ठीक कहता था......जूलिया ट्रेडवे प्रिंस को लाभ चाहिए, बस रुपया चाहिए... उस अयोग्य पति को खिलाने-पिलाने के लिए रुपया, जिसने जीवन में कोई उपयोगी काम नहीं किया। इसने श्री बुलार्ड के लिए बड़ी कठिनाई खड़ी कर दी थी। कोई आश्चर्य नहीं। क्या वह इतनी धन-लोलुप है कि उसे मानवीय कृतज्ञता का भी कोई ध्यान नहीं... इतनी स्वार्थान्ध है, इतना भी नहीं देख सकती कि वह ऐवरी बुलार्ड के कारण धनी स्त्री बनी हुई है... और उसके पास जितने शेयर हैं उनका मूल्य एक पाई भी न होता, यदि ऐवरी बुलार्ड ने सहायता न की होती? उसके पास जो कुछ है, सब ऐवरी बुलार्ड के कारण है....और वही जूलिया अब उसके विरुद्ध हो गयी है, और उस शव को छुरा भोंकने जा रही है जो उससे उलटकर लड़ नहीं सकता।

अब सावधानी के लिए कोई बन्धन नहीं है—"आपने मेरा मत पूछा था, श्रीमती प्रिंस। और वह मैं आपको बतलाये भी देता हूँ। ऐवरी बुलार्ड बहुत बड़ा व्यक्ति था और उसने बहुत बड़ी कंपनी का निर्माण किया था। क्योंकि वह बड़ा शक्तिशाली और निर्भीक था। वह उन दुर्बल व्यक्तियों से तनिक भी नहीं डरता था, जो उसे अधिनायक या पहाड़ीपर का देवता या और कुछ कहते थे। वह किसी की चिंता नहीं करता था। उसके लिए किसीका कोई महत्व नहीं था। ऐवरी बुलार्ड की दृष्टि में केवल एक बात का महत्व था... कंपनी का। ईश्वर को धन्यवाद है कि ऐवरी बुलार्ड उत्पन्न हुआ और जीवित रहा. और आपको भी यही बात कहनी चाहिए जूलिया ट्रेडवे कमसे कम और लोगों की अपेक्षा आपको।"

उसके शब्दों की प्रेरणा ने उसे खड़ा कर दिया और वह द्वार की ओर घूम गया; किन्तु जूलिया ने द्वार बन्द कर लिया और उसके हाथों ने भी उसे रोकनेका प्रयत्न किया।

"नहीं-नहीं!" उसने प्रतिरोध के पूर्ण परित्याग के साथ चिल्लाकर कहा—"आप असत्य कहते हैं; असत्य-अत्यन्त असत्य। आप नहीं जानते कि मैं उससे स्नेह करती थी, किन्तु मैं करती थी, उतना ही जितना आप करते हैं..... नहीं, नहीं, और भी अधिक। कृपया मेरा विश्वास कीजिए, कृपया।"

डॉन ने अविश्वास के साथ उसकी ओर घूरकर देखा और उसके क्रोध का सारा ज्वार जाता रहा।

"मैं वह बात सोचने नहीं दे सकती, जो आप सोच रहे हैं—नहीं—कृपया नहीं।" उसने अभ्यर्थना की—"आपने कहा और लोगों की अपेक्षा आपकी। हाँ, यह ठीक है। आप नहीं जानते कि यह कितना सत्य है। क्या आप जानते हैं कि यदि ऐवरी बुलार्ड न होता तो मैं कहाँ होती? अबतक किसी पागलखाने में पड़ी सड़ा करती। यह सत्य है कि उसने मुझे बचा लिया। वह मेरी समझ को लौटाकर लाया—उसने मुझे जीवनदान दिया। आप समझते हैं कि आप ही उसके बहुत आभारी हैं। किन्तु मैं आपसे सहस्र गुना उसकी आभारी हूँ। आप समझ बैठे हैं कि मैंने उसके विरुद्ध कुछ नहीं कहा, मैं कह नहीं सकती थी, कभी नहीं कह सकती थी। यह असंभव होगा—मैं तो केवल—"

उसने अपना स्वर समाप्त कर डाला और वेग से सिसकियाँ भरी हुई साँसें लेने लगी। उसकी साँसें उतनी ही वेगशील थीं जितनी उसकी छाती की धड़कनें—"आप समझते हैं कि मैं अभी भी पागल हूँ?"

उसने अपना सिर हिला दिया—"पर, मेरी समझ में नहीं आया कि आप क्यों—"

"क्योंकि मैं जानती थी, वह मर गया है। क्योंकि श्री शॉ ने मुझसे कहा कि दूसरा ऐवरी बुलार्ड हो नहीं सकता।"

डॉन ने अनुभव किया कि उसके शब्दों की समाप्ति अब मेरे शब्दों में भी आ रही है। वे सूखकर रीते होते जा रहे हैं। क्रोध के पश्चात् स्वस्थ होते हुए रोगी की दुर्बलता है— "नहीं, दूसरा ऐवरी बुलार्ड हो नहीं सकता।"

"पर, मॅकडानल्ड वॉलिंग तो हो सकता है।" उसने धीरे से फुसफुसाया; किन्तु वह फुसफुसाहट भी इतनी तीव्र थी कि उसमें चिल्लाने की ध्वनि भरी हुई थी।

"मैं यह पहले नहीं जानती थी पर अब जान गयी हूँ। तुम्हीं, ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष बनोगे, तुम—मॅकडॉनल्ड वॉलिंग।"

यह उसी प्रकार की विचित्र विजय थी, जैसी उस योद्धा की—जो यह भूल जाय कि मैं लड़ा क्यों था!

वह बड़ी उत्सुकता से उसके मुँह की ओर देखने लगी—"तुम सँभाल सकोगे?" उसने मुस्काने का प्रयत्न किया।

यह विजय उस वास्तविकता की ठंडी लहर की अपेक्षा अधिक विचित्र नहीं थी, जो उसके मस्तिष्क में लहरा गयी थी—"इसके लिए हमें दो से अधिक की आवश्यकता होगी, श्रीमती प्रिंस? उसके लिए चार होने चाहिएँ।"

"चार ?"

"अध्यक्ष चुनने के लिए चार मतों की आवश्यकता होती है।"

"क्या इतना जुटाना कठिन होगा ?"

"मैं नहीं जानता।"

"हाँ; श्री शॉ अपने लिए चाहते हैं। उन्होंने कल रात को यह बात स्पष्ट कर दी थी।"

"मैं जानता हूँ।"

"और श्री एल्डसर्न भी ? श्री शॉ की बातों से मुझे ऐसा लगा कि वह भी एल्डर्सन को ही अपना प्रधान प्रतिद्वन्द्वी मानते हैं।" जूलिया की आँखें चमक उठीं।

"श्री शॉ को यह जानकर आश्चर्य होगा, जब वे देखेंगे कि वास्तव में हो कौन रहा है।" डॉन ने अपना अंतिम वाक्य कहा—"मैं समझता हूँ कि मैं एल्डर्सन के मतपर भरोसा कर सकता हूँ; मुझे विश्वास है, मैं कर सकता हूँ। यह भी संभावना है कि मुझे वाल्ट डडले का भी मत मिल जाय। एल्डर्सन उससे मिलने गया है।"

"तुम कब तक जान सकोगे ?"

उसने एक क्षण सोचा—"क्या मैं आपके टेलीफोन का प्रयोग कर सकता हूँ।"

"हाँ, करो।" जूलिया के स्वर में अधीरता की उत्तेजना थी और जब वह मेज के पास पहुँचा तो उसकी आँखें उत्सुकता से देखती चली जा रही थीं।

१२·१२ दोपहर

ऐरिका मार्टिन ने बाहर से बात करने के लिए नौ अंक घुमाया और डायल की ध्वनि बजने से पहले जो क्षण व्यतीत हुआ वह भी उसे अनन्त प्रतीत हुआ। उसने नंबर घुमाया। व्यस्त का संकेत उसके कानों तक गरज उठा। उसकी उँगली सूची के स्तंभ पर घूम गयी—प्रिंस ड्वाइट, आर ८००, नॉर्थ फ्रंट... २४३४२।

"हाँ, अंक ठीक था।"

उसने फिर अंक घुमाया। अब घंटी बज रही थी। स्त्री के स्वर की ध्वनि का सामना करने के लिए वह तनकर खड़ी हो गयी।

यह डॉन वॉलिंग का स्वर था।

"श्री वॉलिंग ? मैं ऐरिका मार्टिन बोल रही हूँ। मुझे अभी श्री कासवेल का फोन मिला है। वे न्यूयॉर्क से उड़कर आ गये हैं और अब विमान-अड्डे पर पहुँच रहे हैं। मेरे पास अपनी गाड़ी है और मैं उन्हें लाने जा रही हूँ। मैंने सोचा कि आप उनसे मिलना चाहेंगे....इसलिए....हाँ....नहीं, वे मुझसे बात करना चाहते थे और मैंने उनसे यह कह दिया कि मैं उनसे मिल लूँगी।"

वह प्रतीक्षा करती रही, क्योंकि उसने प्रतीक्षा करने के लिए कहा था और उसने अपनी आँखें ऐसी बंद कर लीं जैसे अपनी मुट्ठी बंद कर ली हो। उसे इस प्रकार का अनुभव क्यों होना चाहिए? क्या केवल इसलिए कि वह उस महिला से (जूलियासे) बातें कर रहा था...क्यों, क्यों, क्यों?

उसका स्वर फिर सुनायी देने लगा—"हाँ, श्री वॉलिंग?....हाँ, मैं उन्हें वहाँ ला सकती हूँ। यदि....यदि आप मुझे ऐसा करनेके लिए कहें तो।"

उसने फिर अपनी आँखें बन्द कर लीं...कुछ ऐसी बात से युद्ध करते हुए जिससे फिर युद्ध करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी....पर यह तो फिर प्रारंभ हो रही है।

यह मेरा दोष था....मुझे डॉन वॉलिंग को वह डिब्बा ले जानेके लिए देना ही नहीं चाहिए था। किन्तु जूलिया ट्रेडवे प्रिंस जीतेंगी नहीं...इस बार नहीं, जब श्री कासवेल उस घर में जायेंगे। मैं भी उनके साथ जाऊँगी।

वह अपनी टोपी ढूँढ़ने लगी और भूल गयी कि वह उसके सिर पर ही है; क्योंकि वह उसी समय चली जा रही थी, जब टेलीफोन की घंटी बजी।

१२.१५ दोपहर

"यदि हम जॉर्ज कासवेल का मत प्राप्त कर सकें तो बस, तुम्हारा काम बन जायगा?" जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने पूछा।

"हाँ।" डॉन वॉलिंग ने कहा।

"अब मैं समझती हूँ कि चिंता की कोई बात नहीं है। सौभाग्यवश मैं श्री कासवेल को जानती हूँ। सच्ची बात यह है कि मैं कल फोनपर उनसे बात कर चुकी हूँ....किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में जो ट्रेडवे के कुछ शेयर मोल लेनेका प्रयत्न कर रहा था। मैं समझती हूँ कि श्री कासवेल को तुम भली प्रकार मुझपर छोड़ सकते हो।"

"क्या आप समझती हैं कि मेरा यहाँ न रहना ठीक होगा ?"

"संभवतः। मैं कहाँ आपको फोन करूँ ? घरपर ?"

उसने सिर हिलाया—"मैं एल्डर्सन के यहाँ रुकूँगा..... देखता हूँ, अभी लौटे हैं या नहीं..... और तब मैं घर चला जाऊँगा।"

१२.२१ दोपहर

"नहीं, मैं कह नहीं सकती कि वे कहाँ हैं, श्री वॉलिन।" ईडिथ एल्डर्सन ने दुखी होकर कहा—"वे आपके जानेके साथ ही चले गये थे और तबसे उनका कोई समाचार नहीं मिला।"

१२.२२ दोपहर

जार्ज कासवेल को यह जानकर बड़ा आघात-सा लगा कि मिलबर्ग-विमान के अड्डे के टेलीफोन-कक्ष से बाहर निकलते ही लॉरेन शॉ और जे. डडले उसे प्रतीक्षा करते हुए मिल गये। उन्होंने पहले से ही वे सब औपचारिक बातें कह डालीं, जो ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु के सम्बन्ध में कहनी चाहिए थी और अब शॉ ने कहना प्रारंभ किया—"आज प्रातःकाल कुछ बातें अचानक हो गयी हैं, जॉर्ज। मैं तुम्हारी सम्मति चाहता था, इसीलिए मैंने तुम्हारे घर फोन भी किया। श्रीमती कासवेल ने बताया कि तुम वायुयान से आ रहे हो, इसलिए वाल्ट और मैं दोनों तुमसे मिलने यहाँ चले आये।"

"ऐसे समय यहाँ मिलना बड़ा अच्छा हुआ।" डडले ने गंभीर स्वर में कहा—"प्रसन्नता है कि तुम चले आये, जॉर्ज ?"

"इसकी आशा भी नहीं थी।" शॉ ने कहा। जॉर्ज कासवेल को अनुभव हुआ कि मैं उनकी कृतज्ञता से फूला जा रहा हूँ। ये बड़े अच्छे हैं, दोनों के दोनों.... प्रशंसक और विचारशील.... यह ठीक प्रवृत्ति है।

"मैं नहीं जानता था कि मैं कुछ कर सकूँगा या नहीं.... संभवतः नहीं... किन्तु विमान मिल गया, इसलिए मैं चला आया कि संभवतः कोई काम मेरे योग्य पड़ा हो।"

वह क्या बात थी जिसके लिए शॉ ने कहा है कि आज प्रातःकाल कुछ बात हो गयी है...... क्या पिल्चर ने उससे बातचीत की है ? हाँ, यह संभव

हरी फोर्ड दुबैठकी गाड़ी पाइक की ओरसे घूमकर सड़क पर आती दिखायी दी और लोह के बाड़े के सामने आकर सहसा रुक गयी।

"वह आ गयी।" डडले ने कहा और ज्योंही वह गाड़ीसे से उतरी, उसका अभिनंदन करने आगे बढ़ गया। "हाँ, प्रिये! ऐसी बातें प्रतिदिन नहीं होती। तीन सुन्दर सज्जन तुम्हें अपने साथ भोजन के लिए ले जानेको प्रस्तुत हैं।"

उसके मुख पर दुःख का चिन्ह देखकर कासवेल को यह हर्ष हुआ कि ऐरिका मार्टिन बड़ी विवेकवती थी और यह एक ऐसा गुण था जिसे वह सदा अपने सचिव में होनेका आग्रह करता था।

तेरहवाँ अध्याय

मिलबर्ग,
पेंसिलवेनिया,
१२.४० दोपहर

मेरी वॉलिंग प्रतीक्षा कर रही थी.....और जानती थी, जैसा कि वह प्राय: जानती ही रहती कि प्रतीक्षा करना ही उसके जीवन का सबसे बड़ा अंश है।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सदा प्रतीक्षा करती रही है...इस बात की प्रतीक्षा करती रही है कि डॉन उसे पुकारे.....उसके आने की प्रतीक्षा करती रही है.......उससे बात करने की प्रतीक्षा करती रही है...कि वह आकर ऐसी बातें बताये जो वह डॉन के जीवन में भाग लेने के लिए जानना चाहती है।

डॉन यह बात क्यों नहीं समझता कि यदि वह अवसर दे, तो मैं उसकी सहायता कर सकती हूँ......मुझे ऐसे काम करने में सहायता दे जो मेरे बिना कर नहीं सकता ? नहीं, उसकी कृतज्ञता के लिए नहीं, उसके धन्यवाद के लिए नहीं....उसे ऐसी सहायता देने में सन्तोष की अपेक्षा अधिक आनंद यह है कि उसे यही ज्ञान न हो कि उसकी सहायता की गयी, तभी वह प्रेम का शुद्ध उपहार होगा। हाँ, वह प्रेम है...दान...किन्तु वह दान कोई माँगे तो सही। यदि उसने मुझे थोड़ा-सा भी अवकाश दिया होता तो मैं उसे बता देती कि डरने की कोई बात नहीं....तुम ऐवरी बुलार्ड पर आश्रित नहीं हो......तुममें अपनी शक्ति है....इतनी अधिक शक्ति, जिसका तुम्हें ज्ञान भी नहीं है। तुम्हें ऐवरी बुलार्ड की आवश्यकता नहीं है। तुम दूसरों से जो कुछ चाहते हो, वह बड़ी सरलता से मैं स्वयं दे सकती हूँ।

मेरी वॉलिंग मेज का दराज बन्द ही कर रही थी कि उसने भीतर गाड़ी के घूमने से टायरों की चूँ-चूँ सुन ली। यह ध्वनि भी वैसी ही पहचानी हुई थी। जैसे उसकी पगध्वनि और वह सामने के द्वार की ओर वेगसे बढ़ी। डॉन का हाथ मेरी के कंधों पर घूम गया। आज प्रात:काल कुछ बात अवश्य हुई है। वह उसके पुट्ठों के चंचल तनाव से और उसके मुखपर जो विश्वास की आभा चढ़ी हुई थी, उससे उसका अनुभव कर रही थी।

"श्रीमती प्रिंस का फोन आया था क्या?" उसने झट से पूछा और एक क्षण पहले उसने जो आत्मीयता प्रदर्शित की थी, वह अचानक इस स्वर के साथ समाप्त हो गयी।

"श्रीमती प्रिंस?"

"वह कासवेल के साथ साठ-गाँठ कर रही है। ज्यों ही [illegible] मुझे बुला लेगी।"

"किस लिए?" उसने पूछा। उसका स्वर आश्चर्य के स्तर तक पहुँच चुका था और तब अचानक सीधा हो गया— 'ओह... मैं अध्यक्ष बनने जा रहा हूँ!"

अध्यक्ष। डॉन, नहीं सच! मैं....मैं नहीं विश्वास करती। मैं...। ऐसा जान पड़ा कि उसकी आँखें उसके मुँह के शब्दों को तोड़-मरोड़ डाल रही हैं।

"तुम इतनी आश्चर्य-चकित क्यों हो गयी?" उसने लगभग इस प्रकार पूछा मानो यह आरोप हो।

"ओह, डॉन! डॉन? क्यों न आश्चर्य करूँ? मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि......."

उसने अपना स्वर रोक लिया। अपने दोनों हाथ उठाये और अपनी दोनों हथेलियों से डॉन का सिर पकड़ लिया—"प्रिय, मैं तुमपर कितना गर्व करती हूँ। यही तुम चाहते हो...है न?"

"यह मुझे करना है।" उसने इतना स्वरहीन होकर कहा कि उसकी यह समझ में नहीं आया कि उसका अर्थ क्या है—"मुझे भूख लगी है।"

उसने कॉफी तो लाकर रख दी और सेंडविच बनाने लगी जिसके लिए उसने आग्रह किया था और उसीके साथ-साथ प्रातःकाल जो कुछ हुआ उसके सम्बन्ध में प्रश्न पूछकर और उसकी झुंझलाहट का संकट लेकर भी कुछ टूटी-फूटी, बिखरी सूचनाएँ इकट्ठी करने लगी। खंडित सूचनाओं को इकट्ठा करके उसे सब बातें सजानी थी। पर इतना पूछने के पश्चात् भी बहुत-सी बातें वह नहीं जान पायी। हाँ, उसने अंतिम बात पूछने की स्थिति में पहुँचकर कहा—"तो यह श्री कासवेल पर ही अवलंबित है?"

"जूलिया उसे सँभाल लेगी।"

"जूलिया?"

"श्रीमती प्रिंस।" उसने अधीरता के साथ कहा।

"वह कैसी है डॉन ?"

"कैसी ? बड़ी चतुर स्त्री है, बड़ी ही चतुर। पुरुषों जैसी खोपड़ी है उसकी।"

उसने कॉफी का बर्तन उठाया—पुरुषों-जैसी खोपड़ी.........क्यो डॉन यही चाहता है ?

"मैं नहीं जानता कि किसीसे बातचीत करके मुझे इतना आनन्द मिला हो।" वह कहता गया—"पहली ही बार उसने वह कह डाला, जो उसने पूछा भी नहीं था—सीधे उसी बात पर आ गयी.....मुझे ध्यान में भी नहीं था कि वह ऐसी स्त्री होगी। जिस प्रकार वह मेरा समर्थन कर रही है, उसके लिए मैं उसका बड़ा ऋणी हूँ.....देखती रहो।"

जो कॉफी वह डाल रही थी, वह डॉन के प्याले के ऊपर से बह गयी और वह झट चाय का तौलिया लेकर उस भूरे फैले हुए धब्बे को सुखाने लगी और अपने मन में कहने लगी कि मैं कितनी बड़ी मूर्ख हूँ...वह उस प्रकार की स्त्री नहीं होगी जो मूर्खता से काम करती हैं। तब वह शान्त और निश्चित होकर कह पायी—"तुम किसीके किसी बात के ऋणी नहीं हो, डॉन ? तुम इसलिए अध्यक्ष बनोगे कि वह तुम हो.....क्योंकि तुम अत्यन्त मेधावी और प्रतिभाशाली हो और......" उस क्षण जब उसका स्वर बीच में रुका हुआ था, उसका मन हुआ कि हमारे बीच में जो परदा टंगा हुआ है, उसे फाड़ डालूँ—अपनी अभिन्नता पुनः स्थापित करने के लिए, और अब यह बड़ी भारी बात होगी कि मैं प्रतिरात वास्तविक सजीव अध्यक्ष के साथ सोया करूँगी।

वह प्रतीक्षा करती रही...हँसी उसके ओठों पर आकर बैठ गयी और डॉन की हँसी के साथ मिलने को तैयार हो गयी, किन्तु तभी उसे यह भयंकर अनुभूति हुई कि वह मुस्कराने को भी तैयार नहीं था।

१.२० दोपहर

ऐरिका मार्टिन ने नंबर घुमाकर आशा की थी कि अब फिर श्री वॉलिंग का स्वर सुनायी देगा, पर वह नहीं था.... जूलिया का भी नहीं।

"क्या मैं श्री वॉलिंग से बात कर सकती हूँ ?" उसने पूछा।

"मुझे दुःख है कि श्री वॉलिंग यहाँ नहीं हैं। श्री वॉलिंग चले गये। ओह ! एक क्षण रुकिये।"और अब यह उसका स्वर था—"कुमारी मार्टिन ?"

"हाँ"।

"मैं श्रीमती प्रिंस बोल रही हूँ। क्या तुम्हें कोई कठिनाई आ गयी ?"

"नहीं, मैं. . . ."

"मैंने समझा था कि तुम श्री कानवेल को वहाँ ला रही हो। मैं कल्पना कर रही थी कि संभवतः तुम्हारी गाड़ी में कुछ गड़बड़ी हो गयी होगी।" अब जो कुछ हुआ था उसे न बतानेका कोई दूसरा मार्ग नहीं था।

"जब मै पहुँची तो श्री शॉ और डडले विमान-अड्डे पर पहुँच चुके थे। अब हम लोग फीडरल क्लब में भोजन कर रहे हैं। मैं श्री वॉलिंग से सम्पर्क करके उन्हें बता देना चाहती थी कि". . . . उसका स्वर अचानक एक अनुत्तरणीय प्रश्न से रुक गया. . . वह डॉन वॉलिंग को ही क्यों बताना चाहती थी. . . . उसका क्या कारण था. . . क्या बहाना था ?

"धन्यवाद, कुमारी मार्टिन; मै तत्काल श्री वॉलिंग से कहे देती हूँ और कुमारी मार्टिन मैं स्वयं श्री कानवेल से मिलना चाहती हूँ। तुम्हारी समझ में क्लब में कितनी देर लगेगी ?"

फोन का चोंगा उसके हाथ में बड़ा भारी लग रहा था. . .भारी और कठोर —"मुझे खेद है, श्रीमती प्रिंस कि वे तत्काल कार्यालय की ओर चले जायेंगे।"

१.२२ दोपहर

मेरी वॉलिंग ने देखा कि उसका पति फिर घड़ी की ओर देख रहा है।

"न जाने अभी तक उसने बुलाया क्यों नहीं ?" वह अधीरता के साथ बुदबुदाया और कॉफी का अंतिम घूँट पी लिया—"घंटा भर हो गया. . . एक घंटे से भी ऊपर।. . . . . ."

वह प्रतीक्षा करती रही। डॉन उससे बात ही नहीं कर रहा था . . . केवल अपने से कर रहा था. . .उससे उत्तर की आशा भी नहीं कर रहा था. . . . केवल प्रतीक्षा. . . . प्रतीक्षा, प्रतीक्षा, प्रतीक्षा करना। चुपचाप प्रतीक्षा करना और उसे उस मनुष्य के रूप में देखना, जिसके विषय में उसने पिछले कुछ घंटों में संकेत किया था कि वह हो जायगा. . . वह, वह व्यक्ति नहीं है जो वह वास्तव में दिखायी देता था, वह मनुष्य नहीं जिससे उसने विवाह किया था; वरन् वह था दूसरा ऐवरी बुलार्ड ?

टेलीफोन की घंटी बजी और जिस ढंग से उसके पतिका हाथ उधर बढ़ा वह उन सब बातोंका भयानक समर्थन था, जिसका विश्वास करने में मेरी

ब्रॉलिंग अभी तक सफल नहीं हो रही थी।

वह घूम गयी। वह उसका मुख नहीं देखना चाहती। उसके स्वर की ध्वनिने उसे घूमने को विवश किया।

"हाँ, हाँ, मैं समझता हूँ– हाँ– हाँ– वास्तव में।"

ये शब्द स्वयं निरर्थक थे। किन्तु उसके स्वर का उतार-चढ़ाव स्वयं ऐसी भाषा बन गया था जो इतने वर्षों के विवाह-सम्बन्ध ने उसे समझना सिखा दिया था। वह समझ गयी कि कोई अत्यन्त निराशाजनक बात हुई है। अचानक डॉन ने उसकी ओर देखा और फिर टेलीफोन पर कहा–"ठीक है। हाँ, अभी सीधा, श्रीमती प्रिंस।" टेलीफोन का चोंगा उसके हाथ से गिर पड़ा। वह फिर प्रतीक्षा करने लगी। उसने निश्चय किया कि जब तक वह नहीं बोलेगा, तब तक मैं भी नहीं बोलूँगी। डॉन की आँखें जो सहानुभूति चाहती थीं, उस सहानुभूति का अनुभव करने का भी वह प्रयत्न नहीं कर रही थी।

"शॉ और डडले ने पहले ही कासवेल को जा पकड़ा है।" उसने ये शब्द अत्यन्त कठिनाई से हिचकिचाहट के साथ कहे।

"उससे विमान के अड्डे पर मिले। उसे क्लब ले गये। वे लोग वहीं भोजन कर रहे हैं– कुमारी मार्टिन भी।"

क्या मेरी कुछ कहनेका साहस कर सकती थी..... क्या उसमें यहाँ तक पूछने का साहस था कि उसका अर्थ क्या है ? नहीं। प्रतीक्षा करो..... प्रतीक्षा करो..... प्रतीक्षा करो।

"श्रीमती प्रिंस ने किसी प्रकार उन्हें अपने यहाँ बुलाने की व्यवस्था कर ली है। वे चाहती हैं कि हम लोग भी वहाँ पहुँच जायँ।"

"हम लोग ?"

"हाँ; और मैं चाहता हूँ कि तुम भी तैयार हो जाओ।" उसने धीरे से कहा। वह मेरी की ओर बड़े विचित्र ढंग से देख रहा था। उसकी आँखें मानो मेरी से कह रही हों कि मैंने कुछ ऐसी बात देखी है, जो पहले नहीं देखी थी। किन्तु वह पूछने में डर रही थी कि आखिर बात क्या है ? यही जानना पर्याप्त है कि मैं उसके साथ रहूँगी....... तब तो मैं उसके कार्य में भाग ले सकती हूँ...... जो कुछ वहाँ होगा उसमें मैं भी भागी हो सकती हूँ..।

"मैं कपड़े बदल लेती हूँ।" उसने वेग से कहा और बीच के भवन से अपने शयन-कक्ष की ओर निकल गयी।

१.४० दोपहर

"यदि मैं कुमारी मार्टिन के साथ चलूँ तो......" जार्ज कासवेल ने कहा—"अर्थात्, यदि......"

"इसमें कोई तुक नहीं है।" शॉ ने वेग से कहा—"दो गाड़ियों की आवश्यकता क्या है?"

"मैं तुम्हें यहीं लौटते समय उतार दूँगा, कुमारी मार्टिन।" उत्सुकता की यातना ने उसे उस स्थल तक पहुँचा दिया था कि किसी भी बात का श्रवण की सीमा से बाहर कहा जाना लगभग असंभव था।

"मैं तो अपनी गाड़ी अपने साथ ही रखना चाहूँगी।" ऐरिका मार्टिन ने प्रतिरोध किया।

"तब मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।" कासवेल ने कहा—"कहाँ खड़ी है तुम्हारी गाड़ी, कुमारी मार्टिन?"

"अन्य गाड़ियों के साथ। चलने में कष्ट तो न होगा आपको?"

"नहीं, कुछ भी नहीं।" कासवेल ने उन लोगों को पुकार कर कहा—"अभी थोड़ी देर में आप लोगों से मिलता हूँ।"

शॉ की आँखें उनके पीछे-पीछे चलीं। उनके प्रत्येक पगकी गति उन सहस्त्रों प्रश्नों में एक प्रश्न और जोड़ रही थी, जो उसके मस्तिष्क की प्रत्येक लकीर में अत्यन्त यातनापूर्वक ढंग से उलझा जा रहा था। कासवेल उनसे क्यों बात करना चाहता है.... वह भी उससे बात करने के लिए क्यों इतनी उत्सुक है? वे क्या बातचीत करेंगे?

"तो मैं भी साथ-साथ चले चलता हूँ।" ड्वाइट प्रिंस के स्वर ने कहा। शॉ यह बात भूल गया कि प्रिंस और डडले भी उसके साथ चलेंगे।

"जी हाँ, ड्वाइट। मैं अभी एक मिनट में आपसे मिलता हूँ।" डडले ने प्रसन्न होकर कहा।

"हाँ, मिलेंगे।" ड्वाइट प्रिंस ने चलते हुए कहा।

"इतना बुरा व्यक्ति नहीं है कि तुम इसे जान जाओ —मेरा अर्थ है —इस प्रकार के लोगों में।" डडले ने कहा, जब प्रिंस श्रवण की सीमासे बाहर जा चुका था—"कहीं ऐसी बात तो नहीं है कि जूलिया इस ड्वाइट को कंपनी में लाना चाहती हो, क्यों? तुमने वह बात सुनी थी न, जब उसने कहा था कि फर्नीचर में उसकी रुचि कैसे हुई?"

यह इतना हास्यास्पद विचार था कि उसने एक हुंकार के साथ उसे अस्वीकार कर दिया। शब्द प्रयोग करने की आवश्यकता ही नहीं थी। डडले की सनक-भरी बातों पर ध्यान देने के अतिरिक्त और भी अनेक गंभीर प्रश्न उपस्थित थे। उसने डडले को ही भोजन का पैसा देने दिया और देखा कि उसने डॉलर का नोट देकर रेजगारी नहीं ली है। डडले मूर्ख है . . . विक्रय-प्रबंधक के रूपमें तो वह ठीक है, किन्तु निवरम्य व्यवस्था के लिए वह काम नहीं देगा। ईश्वर को धन्यवाद है कि मैंने मूर्खता करके उसे कार्यवाहक उपाध्यक्ष-पद का प्रलोभन नहीं दिया। अब मुझे वॉलिंग के मत की आवश्यकता है। पर इस डडले को भी फँसाये रखना होगा। कार्यालय में इतना समय नहीं मिला कि उससे वचन ले लिया जाता. . . . और भी बहुत-से प्रश्नों का उत्तर देना था. . . . . अभी भी देना है। यदि डडले ने सत्य कह दिया होता. . . . सारा सत्य ! क्या एल्डर्सन इतनी दूरतक जाता जितनी दूरतक वह गया था—यदि वह अध्यक्षपद न चाहता ? निश्चय ही वह चाहता है। क्या उसने डडले की आँखों पर पट्टी बाँध दी है. . . . या क्या डडले ही झूठ बोल रहा है ?

एक बार पुनः जैसे कोई व्यक्ति किसी भयानक शस्त्र को उँगली से टटोलता हो, उसने सोचा कि डडले का मत पक्का कर लेना कितना सरल होगा।

१.४७ दोपहर

जार्ज कासवेल ने निश्चय कर लिया कि जो प्रश्न मेरे मस्तिष्क में विराजमान हैं, उन्हें ऐरिका मार्टिन से पूछने में कोई दोष नहीं है—"हाँ, कुमारी मार्टिन; क्या यह ज्ञात हो सकता है कि यहाँ न्यूयॉर्क के किसी श्री पिल्चर ने आज प्रातःकाल फोन किया था ?"

"मुझे तो उसका कोई ज्ञान नहीं है।" उसने तत्परता के साथ कहा—"यदि आप चाहें कि मैं इसका पता लगाऊँ—तो बाहर की पुकारों का यहाँ पूरा लेखा रखा जाता है।"

"नहीं, बहुत आवश्यक नहीं है।" वह कहने लगा और तब अचानक उसने बात बदल दी—"क्या इसका पता लगाने में आपको कष्ट होगा, कुमारी मार्टिन ?"

"नहीं, कुछ भी नहीं। बस, मैं झटसे टेलीफोन किये देती हूँ। क्या आप तत्काल जानना चाहते हैं ?"

वह झिझका—"मैं तुम्हें कष्ट देना तो ठीक नहीं समझता; किन्तु यह बड़ी सहायता होगी, यदि मैं श्रीमती प्रिंस के यहाँ पहुँचने से पहले ही यह बात जान जाता।"

"हाँ, कोनेपर जो तेल की टँकी है वहाँ संभवतः फोन होगा।" उसने कहा और गाड़ी दाहिनी ओर गली में रोकने के लिए घुमा दी— "आपने पिल्वर नाम बताया न ?"

"हाँ, ब्रूस पिल्वर।" उसने खिड़की में से उसकी गति भी देख ली और जब उसने देखा कि वह सूचना के लिए प्रतीक्षा कर रही है, तो उसका नाटकीय कुतूहल जाग उठा।

"न्यूयॉर्क के किसी श्री पिल्वर से आज प्रातः काल कोई पुकार नहीं आयी।" ऐरिका मार्टिन ने गाड़ी के पास आकर कहा—"इसके अतिरिक्त और भी कोई पुकार न्यूयॉर्क से नहीं आयी।"

"बहुत धन्यवाद, कुमारी मार्टिन।"

ज्योंही वे सड़क पर चले जा रहे थे कि उसके मनमें यह भावना बढ़ने लगी कि मैं बड़ी मूर्खता के काम पर निकला हूँ। मुझे चलने से पहले ही यह बात जान लेनी चाहिए थी कि क्रोध ठंडा होते ही पिल्वर समझ जायगा कि यह उसके बूतेका काम नहीं है। वह उस प्रकार की गीदड़-भभकियों से अधिक नहीं है, जैसी बहुत-से लोग आवेश में दे दिया करते हैं और पीछे चलकर भूल जाते हैं। पिल्वर ने संभवतः यही किया है। फिर भी आज तीसरे पहर इस बात को बता देना बुरा नहीं होगा....... विस्तार से नहीं, केवल इस बातका निश्चय करा देनेके लिए कि यदि वह इस सम्बन्ध में किसी प्रकार के प्रयास करने की मूर्खता करे तो उसके हाथ पाँव बँध जायेंगे। कम-से-कम इतना ही इस यात्राका उद्देश्य हो जाय। यह स्पष्ट है कि आज मैं इससे अधिक कुछ कर नहीं पाऊँगा। भोजन के समय ही यह स्पष्ट हो गया था कि नये अध्यक्ष के सम्बन्ध में शॉ या डडले, किसीने भी कुछ निश्चय नहीं किया है। उनके मस्तिष्क अब भी ऐवरी बुलार्ड से ही पूर्णतः प्रभावित हैं..... वे सब कहानियाँ जो वाल्ट डडले ने उसके सम्बन्ध में कहीं थीं....

ऐरिका मार्टिन के आश्चर्यजनक स्वर ने मौन भंग किया—"वह देखिए, श्री वॉलिंग।"

वे दूसरी खड़ी हुई गाड़ी के पीछे रुक रहे थे और उसके कहने के अनुसार काम्वेल ने सिर उठाया, तो देखा कि वॉलिंग-दम्पति श्वेत भवन के फाटक

में घुसे चले जा रहे हैं।

ऐरिका मार्टिन के स्वर में जो उसने अत्यन्त विचित्र उल्लास का स्वर ुना तो उसने ऐरिका मार्टिन की ओर घूर कर देखा। उसकी आँखें भीत भेदकर देखती हुई प्रतीत हो रही थीं।

"कुमारी मार्टिन?"

वह अपनी विचारधारा तोड़कर चौंक उठी– "जी।"

"भीतर जानेसे पहले मैं तुमसे कुछ पूछ लेना चाहता हूँ। यद्यपि यह ऐसा प्रश्न है जो अभी बड़ा असंगत प्रतीत होता है–श्री बुलार्ड की मृत्यु के पश्चात्। किन्तु यह निश्चित है कि मेरे इस प्रश्न के पूछने में बुलार्ड के प्रति शोक या आदर की कमी नहीं है। बहुत संभव है कि अगले कुछ दिनों तक मुझे तुमसे बातचीत करनेका कोई अवसर ही न मिले।"

"पूछिए, श्री कासवेल।"

ऐरिका की आँखों में जो हित चमक रहा था वह और भी दृढ़ हो गया और कासवेल कहने लगा–"जैसा कि हम दोनों जानते हैं–श्री बुलार्ड के कामों से तुम उसी प्रकार अधिक परिचित होगी, जिस प्रकार मेरी सचिव मेरे कार्यों से है।......श्री बुलार्ड अपना कार्यवाहक अध्यक्ष किसी उचित व्यक्ति को बनाने के लिए बड़े चिंतित थे।"

"हाँ, मैं जानती हूँ। मैं आशा कर रही थी कि मंगलवार को बोर्ड की बैठक से पहले वे अपना निश्चय कर लेंगे जिससे यह बात भी अर्द्धवार्षिक विवरण में सम्मिलित कर ली जा सके।"

उसने इस प्रकार सिर हिलाया मानो मन-ही-मन कह रहा हो कि मेरी यह कल्पना ठीक है कि कुमारी मार्टिन भीतर-बाहर की सब बातें जानती है– "जैसा कि तुम जानती हो, श्री बुलार्ड कंपनी के बाहर के भी कुछ लोगों के सम्बन्ध में विचार कर रहे थे। किन्तु कल दोपहर जब वे मेरे कार्यालय से गये, तो मुझे विश्वास हो गया कि वे निश्चित रूपसे अपने ही लोगों में से किसीको कार्यवाहक अध्यक्ष बनाना चाहते हैं। मैं सोचता हूँ कि इस बात को तुम प्रारंभ से ही संभवतः जानती होगी।"

"मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि श्री बुलार्ड किसी बाहरी व्यक्ति को ले आयेंगे।" उसने धीरे से कहा।

"कुमारी मार्टिन! उन्होंने अपने उपाध्यक्षों में से किसको चुना होता?"

उसने उत्तर देने में जो देर लगायी उससे कासवेल ने यह अनुभव किया कि ऐवरी बुलार्ड के परे कोई बात सोचना उसके लिए कितना कठिन है–"यह तो मैं नहीं जानती, श्री कासवेल ! उन्होंने कभी कोई निश्चित निर्णय किया ही नहीं था।"

"किन्तु जो व्यक्ति उनके मस्तिष्क में था उसे तो तुम जानती हो।" यह प्रश्न के बदले वक्तव्य था।

"मैं अनुमान लगा सकती हूँ।"

"क्या तुम मुझे अपना अनुमान बता सकती हो, कुमारी मार्टिन ?"

उसने देखा कि कुमारी मार्टिन का हाथ काँपने लगा है। किन्तु इससे पहले कि उसकी सहानुभूति उस प्रश्न को लौटा ले, उसकी उँगलियाँ मोटर के चक्के पर कस गयीं।

"वह श्री वॉलिंग होते।"

"वॉलिंग ?" संभवतः यह ठीक कहती है। मैं शॉ को ही उसका कार्यवाहक उपाध्यक्ष सोच रहा था। पर यह ठीक जँचता है कि वॉलिंग उसका उचित चुनाव था। हाँ, वॉलिंग की योग्यताएँ उसकी योग्यताओं से भली-भाँति मिलती-जुलती हैं। वॉलिंग में रूपयोजना बनाने और उत्पादन करने, दोनों की योग्यता है और विक्रय की भी अच्छी समझ है.... जहाँ बुलार्ड को सहायता की आवश्यकता पड़ती थी वहाँ.......।

"धन्यवाद, कुमारी मार्टिन ? मैं कह नहीं सकता कि मैं तुम्हारी इस सहयोगिता का कितना आदर करता हूँ।"

ऐरिका ने उसकी आँखों से बचने का प्रयत्न किया, किन्तु उस परिस्थिति में कोई विचित्र बात नहीं थी। वह पूर्णतः समझी जा सकती थी। वह बहुत वर्षों तक ऐवरी बुलार्ड की सचिव रही है, उसके सन्निकट....हाँ, जितना उसने पहले समझा था उससे भी निकट। कुमारी मार्टिन अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी.......बहुत ही अधिक सहायक....ज्योंही वह यह मान लेगी कि ऐवरी बुलार्ड की मृत्यु हो गयी है।

वह गाड़ी से उतरने लगी तो कासवेल ने द्वार थाम लिया। यह व्यवहार साधारण सहज शील के प्रदर्शन से कुछ अधिक था ? हार्दिक आदर का प्रदर्शन था।

"...राजा चिरजीवी हो"

कैंट काउन्टी, मैरी लैंड, १.५७ दोपहर

"मैं क्षमा चाहता हूँ।" फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने दूसरी बार कहा।

टील्स स्टोर की बरसाती में बैठे हुए लम्बी टाँगोंवाले व्यक्ति ने धीरे-धीरे अपने पैर खोले। उसने केवल एक आँख खोली; दूसरी आँख को तीव्र धूपसे बचाते हुए और उसने खुलकर जो जम्हाई ली तो उसने उसके बूढ़े पोपले मुँह में विचित्र कन्दरा बना दी।

"मुझे आपको कष्ट देनेके लिए खेद है।" एल्डर्सन ने कहा—"मुझे भय है कि मैं मार्ग भूल गया हूँ। क्या आप यह जानते हैं कि श्री जेसी ग्रेम कहाँ रहते हैं?"

उस व्यक्ति के मुखपर खीसें उभर आयीं—"श्रीमान्? आप इतना नहीं भूले हैं जितना मैंने औरोंको भूलते देखा है। अब मैं आपको बताता हूँ.... आप इस स्टोर के दायीं ओर वाली सड़क देख रहे हैं न? आप इसी सड़क को पकड़े चले जाइये। जहाँ यह जाकर रुक जाय, वहीं कैप्टन जेसी का घर है। आप उसे नहीं भूल सकते, क्योंकि उसके ऊपर अभी नया रंग चढ़ा है और वह नया कारखाना भी बनवा रहा है। कैप्टन जेसी का घर एक मील से अधिक नहीं होगा।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद!" फ्रेड्रिक एल्डर्सन ने कहा। केवल एक मील। तब तो मैं जेसी से बात कर ही लूँगा। यही अंतिम अवसर है। मैं एक बार असफल हो चुका हूँ.... मेरे जाने से पहले डडले ही शॉ के कार्यालय में पहुँच गया था। दुबारा असफल नहीं हो सकता।

चौदहवाँ अध्याय

मिलबर्ग,
पेंसिलवेनिया,
२.०५ दोपहर

प्राचीन ट्रेडवे भवन के पुस्तकालय में जो लोग तने बैठे हुए थे उनपर जो विचित्र प्रकार की आशंका का वातावरण छाया हुआ था, उसे मेरी वॉलिंग समझ रही थी। पिछले कुछ क्षणों में जो बातचीत हुई थी वह बनावटी, निरर्थक तथा निरुद्देश्य थी। किसीने भी खुलकर यह बात नहीं कही थी कि आज तीसरे पहर क्या निश्चय किया जायगा और वह यह भी समझती थी कि इस प्रकार की कोई बात यहाँ निश्चित होगी भी नहीं। यहाँ तक कि यदि निर्णय हो भी जाय तब भी; किन्तु यह बात वह भली-भाँति जानती थी कि सब लोग मन-ही-मन समझ रहे थे कि उस कक्ष से जानेसे पूर्व ट्रेडवे कॉर्पोरेशन का अध्यक्ष चुन लिया जायगा।

मेरी वॉलिंग के मन में पहले का यह भय कुछ कम नहीं हो रहा था कि यदि मेरा पति अध्यक्ष बना दिया गया तो मेरा अपना सारा सुख समाप्त हो जायगा। किन्तु यह भय तो इसी बात से दूर हो गया कि जिस लक्ष्य को डॉन अब स्पष्ट रूपसे अपने भाग्यकी पूर्णता मान रहा था यदि वह हाथसे निकल गया तो डॉनकी क्या स्थिति होगी और मुझ पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। वह जानती थी कि डॉन इस पद के बिना कभी सुखी नहीं हो सकता और मेरी को अपने सुखके लिए पहले उसका सुख भी आवश्यक था।

जिस समय वह डॉन के साथ कक्ष में घुसी तो मेरी वॉलिंग का भय इस बात से और भी अधिक बढ़ गया कि लॉरेन शॉ ने मेज के पास का स्थान खाली कर दिया और वह जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के अत्यन्त समीप जा बैठा था। जब एक क्षण पश्चात् जार्ज कासवेल वहाँ ऐरिका मार्टिन के साथ पहुँचा, तो शॉ ने जान-बूझकर कासवेल को अपने और डडले की कुर्सियों के बीच बैठाने का प्रबंध कर लिया। इस प्रकार कुछ तो संयोग से और कुछ मेरी की समझ से शॉ की कुटिलता से—डॉन अब अकेला शॉ, कासवेल और डडले के सामने जमकर बैठ गया था। वह जानती थी कि इन तीनों ने अभी साथ भोजन किया है और यह स्पष्ट हो रहा था कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस का एक मात्र मत ही लॉरेन

को अध्यक्ष बनाने के लिए आवश्यक था। डॉन ने कहा था कि मुझे श्रीमती प्रिंस के समर्थन का विश्वास है, किन्तु मेरी वॉलिंग अपने पति की इस बात को मानने में कठिनाई अनुभव कर रही थी। श्रीमती प्रिंस ने वहाँ आने पर डॉन का जिस प्रकार अभिनंदन किया था, वह साधारण शिष्टाचार से अधिक कुछ नहीं था और लॅरिन शॉ उधर जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के पास बैठकर अपनी स्थिति दृढ़ करता जा रहा था।

अपने को बाहरी समझकर—ऐसा दर्शक जिसे भाग लेनेका अधिकार न हो—मेरी वॉलिंग खिसक कर अपने पति के पीछे कोने में जा बैठी। बहुत देर में उसे यह अनुभव हुआ कि मेरे पति का मुख मेरी दृष्टि से ओझल है। तबतक ऐरिका मार्टिन ने पहले ही दूसरे कोने में कुर्सी ले ली थी—किन्तु इससे एक लाभ यह भी हो गया कि अब वह उस कक्ष में डॉन के दृष्टिकोण से सबको देख सकेगी और अन्य लोग डॉन की ओर किस प्रकार देख रहे हैं, वह भी समझ सकेगी।

एक बात का उसे निश्चय था। लॅरिन शॉ अपने इस अध्यक्ष-पद के युद्ध में डॉन को प्रतिद्वन्द्वी नहीं समझ रहा है। जब जार्ज कासवेल ने एल्डर्सन का नाम लिया, उस समय जिस प्रकार शॉ की आँखें उसके पतिकी ओर घूर रही थीं, उससे स्पष्ट हो गया कि डॉन केवल उसके वास्तविक प्रतिद्वन्द्वी का सेनापति भर है।

"मुझे भी बड़ा खेद है कि श्री एल्डर्सन यहाँ नहीं हैं।" जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने कहा।

"आप उन्हें नहीं पा सके, क्यों श्री वॉलिंग?"

डॉन ने मौन होकर सिर हिला दिया और मेरी वॉलिंग की इच्छा हुई कि मैं अपने पति की आँखों को देख लूँ—इस बात पर आश्चर्य करते हुए कि डॉन भी क्या मेरे ही समान यह जानता है कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस का यह कथन घुमा-फिराकर इस बातका पहला ही स्पष्टीकरण है कि इन लोगों को यहाँ निमंत्रित करने के पीछे कोई उद्देश्य है और शॉ की दृष्टि के अर्थको भी वह समझता है।

यदि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के वक्तव्य का वास्तव में कोई उद्देश्य रहा भी तो वह तत्काल समाप्त हो गया। वह झट जार्ज कासवेल की ओर घूमी और ऐसा प्रश्न पूछा, जिसका अर्थ प्रत्यक्षतः बलपूर्वक वार्तालाप करनेके

अतिरिक्त और कुछ नहीं था—"मैं समझती हूँ कि आप विमान से आये हैं, श्री कासवेल ?"

"हाँ—और अत्यन्त प्रसन्नता से मेरे एक मित्र ने कृपा करके मुझे अपनी कंपनी के विमान का प्रयोग आजके लिए प्रदान कर दिया है।"

"आप जानते-हैं आजकल क्या स्थिति हो गयी है ?" डडले इस प्रकार बमक उठा मानो वह बहुत देर तक मौन को वश में किये बैठा रहा हो—"बड़ी कंपनियों के सभी अध्यक्षों के पास अपने-अपने विमान हैं। मैं गत वर्ष एक समिति में था—न्यू ऑर्लियन्स में हम लोगों की बैठक थी और उनमें से तीन सदस्य अपने विमानों पर आये थे। सचमुच यही तो वास्तविक जीवन है, अपना विमान रखना।"

शॉ ने भी अपना गला संभाला—"मैं समझता हूँ कि यह अतिव्ययता है, जो हम भागीदारों के साथ अन्याय करके, कर रहे हैं।"

"ओ हो ! मैं तो जानता नहीं।" कासवेल ने मन्द प्रत्युत्तर के साथ कहा—"पर आजकल कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष को पर्याप्त रूप से सुविधा देनेका भी तो कुछ उपाय होना चाहिए। केवल वेतन से आजकल काम नहीं चलता; क्योंकि आयकर, जैसे लगे हुए हैं, वह आप जानते ही हैं।"

जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने अपने पति की ओर देखा, जो द्वार की चौखट के साथ सहारा दिये बैठा था—"मैंने और ड्वाइट ने पिछले जाड़े में जमैका में एक व्यक्ति को देखा जो अपने विमान में उड़कर आया था। वह किसी लोहे की कंपनीका अध्यक्ष था। स्मरण है ड्वाइट ?"

ड्वाइट प्रिंस का लम्बा मुख बलपूर्वक बनायी हुई खीसों में बदल गया—"हाँ, वह किसी व्यापार के सम्बन्ध में आया था और मैं समझता हूँ कि उसे कोई बहुत लाभ नहीं हुआ। वास्तव में. . .।" वह इस प्रकार झिझका मानो वह लोगों की एकाग्रता का आनंद ले रहा हो—"मेरी तो यह समझ में ही नहीं आता कि आजकल लोग किसी बड़ी कंपनी का अध्यक्ष बननेके लिए इतने व्याकुल क्यों होते हैं ? जहाँ तक मैं सोचता हूँ मैं-तो इसे आत्महत्या का, अत्यन्त कम पुरस्कार का रूप समझता हूँ।"

मेरी वॉलिंग को उस समय कोई आश्चर्य नहीं हुआ, जब उसने देखा कि शॉ का सिर उसके पति के कंधों की ओर उछल गया है; किन्तु वह जार्ज कासवेल की टेढी भौंहोंसे कुछ विचलित हो गयी।

"मैं तो इतना बुरा नहीं समझता।" कासवेल ने अपनी मुद्रा ठीक करते हुए कहा—"किसी भी पूर्णतः व्यवस्थित कॉर्पोरेशन में उचित रूपसे अधिकार बाँट देने पर कोई कारण नहीं कि किसी भी योग्य व्यक्ति को बहुत कष्ट उठाना पड़े।"

"योग्य व्यक्ति।" शॉ ने दुहराया मानो यही बात वह समझाना चाहता हो—"और आजकल का योग्य व्यक्ति पहले के योग्य व्यक्ति से बहुत भिन्न प्रकार का होता है।" शॉ के उद्देश्यपूर्ण स्वर में कुछ संकेत था। मेरी वॉलिंग ने अपने पति के सिर के पीछे के भाग को उत्सुकतापूर्वक देखा। उसके कंधे झुक गये थे और ऐसा जान पड़ा था मानो वह अपने जुड़े हुए हाथोंके अतिरिक्त और किसी बात में कोई रस नहीं ले रहा है।

"मुझे निश्चय नहीं है कि मैं आपको समझ पायी हूँ, श्री शॉ?" जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने कहा।

शॉ कुछ चकित प्रतीत हुआ—"यही बात मैंने कल रात भी कही थीं।"

कासवेल की वेगशील तिरछी दृष्टि में कुछ आघात के समान भाव प्रतीत हो रहा था, किन्तु शॉ तो श्रीमती प्रिंस की ओर ही देख रहा था। उसने उसे देखा भी नहीं।

"हाँ।" श्रीमती प्रिंस ने कहा—"यह अत्यन्त सुन्दर सिद्धान्त है। अच्छा; मान लीजिए, यही बात आपको दूसरे लोगों को समझानी हो, श्री शॉ तो...."

उस समय तीव्र प्रत्याशा की शान्ति वहाँ विराजमान थी और मेरी वॉलिंग ने देखा कि लॉरेन शॉ एक नया रूमाल निकाल रहा है। उसने देखा कि अभी पिछले पाँच मिनट में उसने दूसरी बार रूमाल निकाला है।

"हाँ, यह सिद्धान्त से कुछ अधिक बात थी।" शॉ ने कहा—"जो बात मैं समझा रहा था वह यह है कि कोई समय अवश्य था, जब हमारी कंपनियों के अध्यक्ष अधिकांश उत्पादन के कार्य से लिये गये थे। उन दिनों में साधारण कार्य-वहन के उत्तरदायित्व के लिए यह बहुत ही अच्छा था; क्योंकि अध्यक्ष के सामने अधिकांश समस्याएँ उत्पादन से सम्बन्ध रखने वाली ही आती थीं। पीछे चलकर जब वितरण की समस्याएँ अधिक महत्त्व की हो गयीं, तो हमने कभी-कभी देखा कि विक्रय-व्यवस्थापक ही अध्यक्ष हो गये—और यह भी अत्यन्त उचित ही था। किन्तु आजकल, स्थिति पूर्णतः भिन्न है। आजकल अध्यक्ष के पास जो समस्याएँ आती हैं, वे प्रधानतः आर्थिक महत्त्व की होती हैं। उत्पादन और वितरण से सम्बन्ध रखने वाली बातें तो इस व्यवस्था में

निम्नतर स्तर वाले लोग ही अधिकांशतः निबट लेते हैं। अध्यक्ष तो–हमें स्मरण रखना चाहिए– जो भागीदारों का प्रतिनिधि है, उसे तो भागीदारों के हित की दृष्टि से ही काम करना चाहिए।"

"और वास्तविक भागीदार लाभ के अतिरिक्त किसी बातमें रुचि रखता नहीं ?" जूलिया ट्रेडवे ने पूछा, जिसमें प्रश्न की अपेक्षा प्रेरणा अधिक थी।

"हाँ।" शॉने कहा–"निश्चय ही आप अपवाद हैं, श्रीमती प्रिंस ? आपमें फिर भी वह भावना है जिसे स्वामित्व कहा जा सके। साधारण भागीदार अपने शेयरों को वैसेही अपनी संपत्ति नहीं समझता जैसे कोई व्यक्ति बैंक में बचत का खाता खोलकर अपने को बैंक का आंशिक स्वामी नहीं मानता। जब वह ट्रेडवे के शेयर मोल लेता है तो वह पूँजी लगाता है। वह केवल इसलिए पूँजी लगाता है कि उसे बदले में अच्छा द्रव्य मिले। अतः, शिखरस्थ स्तर पर कोई भी व्यावसायिक संघ इस प्रकार शासित होना चाहिए जिस प्रकार उसके स्वामी चाहें, जिसमें वे अपनी पूँजी लगायें और सुरक्षा पर बल देते हुए सुरक्षित धनराशि प्राप्त करते रहें। वास्तव में आप जानते हैं श्री कासवेल कि दस में से एक भी भागीदार ऐसा नहीं है, जो यह तक बता सके कि किन-किन नगरों में हमारे मुख्य कारखाने हैं।"

"तुम ठीक कहते हो।" जार्ज कासवेल ने कहा और जिस प्रकार उसने शॉ का शक्तिशाली समर्थन किया, उसे देखकर मेरी वॉलिंग को अत्यन्त घोर निराशा का अनुभव हुआ।

"इसमें संदेह नहीं कि आजकल व्यावसायिक संघ की व्यवस्था में आर्थिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाने लगा है। मुझे विश्वास है कि इसलिए आजकल पिछले कुछ वर्षों से बैंकों से या न्याय-विभाग से लोग सीधे व्यवसाय-संघ की व्यवस्था में आ घुसे हैं।"

लॉरेन शॉ कुछ झिझका, मानो उसकी चोट प्रबल हो चली हो, किन्तु वह तत्काल कहता गया–"हाँ, ऐसा बहुत स्थानों पर हुआ है, जहाँ व्यावसायिक-संघ इतना अभागा रहा है कि उसके अधिकारियों में कोई भी आर्थिक नियंत्रक और वर्तमान व्यवस्था प्रणालियों में शिक्षित न हो। किन्तु विशेषतः हमारे संघठन में तो ऐसा व्यक्ति है ही।" यह सीधा आक्रमण था, चुनौती थी। और जब मेरी वॉलिंग ने देखा कि मेरा पति कुछ उत्तर नहीं दे रहा है तो उसका हृदय डूब चला। वह इतना आगे झुक गयी कि डॉन के मुख का भाव देख पाये

और जब उसने सिर उठाया तो उसकी आँखें जूलिया ट्रेडवे प्रिंस की आँखों से जा मिलीं।

"ओह, श्रीमती वॉलिंग ! आपको वहाँ कष्ट हो रहा है ?" श्रीमती प्रिंस ने झट कहा—"इधर आ जाइए न ?"

यह ऐसा निमंत्रण था जो अस्वीकार नहीं किया जा सकता था और ज्योंही मेरी वॉलिंग आगे बढ़ी कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस भी मेज के पास वाली कुर्सी से हटकर खिड़की के सामने उसके पास ही सोफ़ा पर आकर बैठ गयी।

"मैं नहीं समझता कि मैं तुम्हारी बात पूरी समझ सका हूँ, लॉरेन।" वाल्ट डडले ने अत्यन्त विचित्र कुड़बुड़ाहट के साथ कहा— "मैं समझता हूँ कि हमें भागीदारों को प्रसन्न रखना है—लाभ भी करना है; किन्तु मैं नहीं समझता कि तुम यह कैसे कह सकते हो कि विक्रय का कोई महत्त्व नहीं है या उत्पादन का ?"

"सचमुच ये महत्त्व के हैं।" शॉ ने ऐसे स्वर में कहा मानो वह किसी ऐसे अध्यापक का स्वर हो जो किसी कम मेधावी छात्र को समझा रहा हो—"पर क्या तुम यह नहीं देखते कि यह साध्य नहीं, वरन् साध्य के लिए साधन मात्र है और फिर यह तो व्यवस्था की बात है। मैंने अभी एक क्षण पहले कहा था कि जब आप अध्यक्षीय स्तर पर पहुँच जाते हैं, तब वहाँ आर्थिक प्रश्न पर ही प्रधानतः बल रहता है। अब एक आपकी ही समस्या ले लीजिए। आजकल व्यावसायिक संघ के प्रबंध में, जितना लोग समझते हैं, उससे कहीं अधिक आयकर की समस्या ही प्रमुख बात हो गयी है। अपने संघ की दृष्टि से देखें तो पिछले वर्ष से मैंने अपनी मूल कंपनी और सहायक संस्थाओं का सम्बन्ध बढ़ा दिया है जिससे कर-सम्बन्धी हमारी स्थिति और भी अच्छी हो जाय। यही तत्त्व की बात है—यह काम पूर्णतः आर्थिक है। इससे ही हमें इतनी नकद आमदनी हो जायगी, जितना हम अपनी छोटी-छोटी फैक्टरियों से कुल लाभ नहीं कर पावेंगे।

"दूसरा उदाहरण लीजिए—जो श्री वॉलिंग को भी प्रतीत होगा। डॉन और उसके साथियों ने वाटर-स्ट्रीट के कारखाने में तैयारी के काम में मूल्य कम करने में बहुत योग्यतापूर्ण काम किया है—बहुत अच्छी बचत की है। किन्तु दुर्भाग्यवश उससे हमारे नकद लाभ में कोई बहुत द्रव्य बढ़ता नहीं। यहाँ तक कि अपनी नयी गणना-प्रणाली के द्वारा मैंने सौभाग्यवश अपनी लकड़ी की कंपनी के घिसाव के सम्बन्ध में सरकार से जो स्वीकृत करा लिया है उससे

हम जितना कमा लेंगे उसके चौथाई से भी कम। मेरा अर्थ समझते हो न, वाल्ट? शिखरस्थ व्यवस्था आजकल मुख्यतः आर्थिक ही होनी चाहिए?"

डडले ने कुछ कहा और शॉ बोलता चला गया। किन्तु मेरी वॉलिंग के कान इस बातका अनुभव करके गुंग हो गये थे कि डॉन की सारी आशाओं पर पानी फिरा जा रहा है। शा ने जो कुछ कहा वह सत्य है। संसार बदल रहा है। बुलार्ड जैसे लोग समाप्त हो चुके हैं और शॉ जैसे लोग अब पृथ्वी का उत्तराधिकार ले रहे हैं। अब मुनीम और गणक ही शक्तिशाली हो रहे हैं। रेखा खीचनेवाला डंडा ही अब राजदंड बन रहा है।

जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने अपना गला ठीक किया—"क्या आप यह सुझाना चाहते हैं श्री शॉ, कि अब श्री बुलार्ड जैसे कॉर्पोरेशन-अध्यक्षों का कोई स्थान नहीं रह गया है?"

यह पहली बार ऐवरी बुलार्ड का नाम लिया गया था और यह वज्राघात के समान अचानक आया भी। उस कक्ष में बैठे हुए सब लोगों की आँखें लॉरेन शॉ की ओर घूम गयीं यहाँ तक कि मेरी ने कृतज्ञतापूर्वक देखा कि डॉन वॉलिंग भी उसे बड़े ध्यान से देखने लगा।

शॉ अपने दायें हाथ की मुट्ठी में रूमाल का गोला बना रहा था, किन्तु जब एक क्षण के पश्चात् वह बोला तो उसके स्वर में उस घबराहट के तनाव का कोई चिन्ह नहीं था, जो उसको उँगलियाँ बता रही थीं—"मैं साधारण स्थिति की बात कर रहा था—ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के सम्बन्ध में विशेष रूप से नहीं।"

"फिर भी मैं आपका अभिमत जानना चाहूँगी।" जूलिया ट्रेडवे प्रिंस ने मधुरताके साथ कहा—"मुझे विश्वास है कि और लोग भी यही चाहते हैं।"

वह रूमाल शॉ के हाथ में कसे जाने से कठोर गेंद बन गया था, किन्तु उसका स्वर अब भी अत्यन्त सावधानी के [illegible] [illegible] हुआ था—"यह बात कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि श्री बुलार्ड के प्रकार के लोग हमारे व्यावसायिक अतीत में बड़े महत्त्व के रह चुके हैं। वे हमारे वाणिज्य-इतिहास के महत्त्वपूर्ण युग के व्यक्ति थे। मैं पहला व्यक्ति हूँगा, जो ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के प्रारंभिक विकास और उसके मौलिक निर्माण में नेतृत्व करने के लिए श्री बुलार्ड का बहुत अधिक ऋण मानता हूँ।"

जिस ढंग से शॉ ने श्री ऐवरी बुलार्ड को सुदूर अतीत का बना डाला था, वह इतना उद्देश्यपूर्ण था कि मेरी वॉलिंग को विश्वास हो गया कि डॉन भी

उसे समझने से बचा नहीं होगा। उसने अपने पति की ओर देखा और उसके मुखपर वह विचित्र अर्ध मुस्कान धुँधली पड़ती देखी, जिसने उसके मन में कोई स्मृति जगा दी। तब अचानक इस बात की भावना से वह सब भूल गयी, कि डॉन कुछ बोलने वाला था–कि अब वह आक्रमण करके पछाड़नेवाला था। आशा हो या न हो वह प्रयत्न करेगा ही। वह जानती थी कि उसका प्रयास उनकी पराजय को और भी कटु बना देगा।

डॉन बोला–"जहाँ तक मैं आपकी बात समझ सका हूँ, श्री लॉरेन! आप यह मानते हैं कि ऐवरी बुलार्ड ही इस कंपनी को बनानेके लिए ठीक व्यक्ति था। किन्तु अब जब कि कंपनी बन गयी है, तब हमें किसी दूसरे प्रकार के प्रबन्ध की आवश्यकता पड़ गयी है, जिससे कि हम कंपनी के द्वारा भागीदारों को अधिक-से-अधिक के लाभ का द्रव्य दे सकें।"

मेरी वॉलिंग ने अत्यन्त ध्यान से अपने पति की मुद्रापर चकित होते हुए उसे देखा। उसने आशा की थी अर्धक्रोधी ज्वाला की, किन्तु उसका स्वर स्पष्टतः क्रोधहीन था। शॉ भी आश्चर्यचकित हुआ। उसकी झिझक भी किसी गुप्त जाल की खोज में घूमती प्रतीत हुई–"यह तो मैं नहीं जानता कि मैंने ठीक इन्हीं शब्दों में कहा था; किन्तु हाँ, मुख्यतः यही बात मैंने कही थी।"

उस कक्ष में अत्यन्त प्रत्याशित शान्ति व्याप्त हो गयी और जार्ज कासवेल ने घबराहट के साथ ऐसे दबे हुए विवश स्वर में मौन भंग किया–"मैं नहीं समझता कि यह बात हमें आज यहीं स्थिर करनी है। हममें से कोई भी आज स्पष्टतः स्थिति समझ नहीं सकता। और फिर......"

उसने अपनी कलाई की घड़ी की ओर देखा और तत्काल स्थिर हो गया। उसकी आँखें स्थिर होकर घूरने लगीं और कुछ देर में उसने मंद स्वर में कहा–"संयोग ही है। मैं अभी अपनी घड़ी की ओर देख रहा था। ठीक ढाई बजे हैं।"

मेरी ने अन्य शून्य दृष्टियों की ओर भी देखा जो उसकी दृष्टियों से मिलती-जुलती थीं।

"ठीक चौबीस घंटे।" कासवेल ने अत्यन्त मन्द स्वर में कहा–"कल ढाई बजे ही उसकी मृत्यु हुई है।"

मेरी वॉलिंग का दिल डूब चला–इस भय से कि डॉन ने अपना अवसर खो दिया; इस भय से कि शोक का यह बादल जो अब इस कक्ष पर छा गया है, वह हट नहीं सकेगा। तब उसने जूलिया ट्रेडवे प्रिंस को कहते सुना–"ऐवरी

बुलार्ड की मृत्यु हो गयी। उसे कोई बदल नहीं सकता, चाहे हम जितनी देर तक उनके सम्बन्ध में बात करना रोके रखें।"

उसके स्वर में शक्ति थी, किन्तु जब वह घूमी तो मेरी ने बड़ी उलझन के साथ यह देखा कि उसकी आँखों में आँसू की भाप भरी हुई है। वह जानती थी कि जूलिया ने क्या किया है—उसने डॉन के लिए यह स्थिति सँभाल ली है। किन्तु एक बात स्पष्ट थी। जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के समर्थन के सम्बन्ध में डॉन का पूरा विश्वास था। उसके और एल्डर्सन के मत के साथ उसे केवल एक और मत की आवश्यकता थी। वह कहाँ से आयगी? उसकी आँखें उन तीनों व्यक्तियों की ओर घूम गयीं जो उसके सामने बैठे थे— शॉ, कासवेल और डडले.......कंधे से कंधा भिड़ाये और दृढ़। उनके इस दृढ़ विरोध के बाँध को तोड़ने के लिए डॉन अब क्या करेगा?

अचानक ड्वाइट प्रिंस ने कहा—"मुझे प्रायः बुलार्ड-जैसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में बड़ा आश्चर्य हुआ है। वे बहुत कुछ मेरे पिताजी के समान थे। आप जानते ही हैं कि वे कंपनी के लिए सारा जीवन उत्सर्ग करनेको तैयार तथा अपना सब कुछ व्यवसाय के देवता की वेदी पर बलिदान करने को भी हरदम तैयार रहते थे। मैंने प्रायः अपने मन में पूछा है। यह करने की प्रेरणा उन्हें कौन देता था? क्या वे स्वयं अपनेसे यह पूछने को रुकते थे कि इससे उन्हें जो कुछ मिलता था वह क्या उस परिश्रम के अनुरूप था? मैं नहीं समझता कि वे रुकते थे।"

"सफलता ही मनुष्य को चलाये रखती है।" डडले ने विक्रय-प्रबंधक के स्वर में कहा—"यही मैं अपने गणों से कहता हूँ—रुपये का कोई महत्त्व नहीं है। कार्य करनेकी भावना का महत्त्व है।"

डॉन वॉलिंग की आँखों में एक विचित्र मुस्कराहट दौड़ गयी जब उसने लॉरिन शॉ की ओर ध्यान से देखा—"व्यवस्था के सम्बन्ध में तुम समझते हो लॉरिन! कि कंपनी को अब से उस प्रकार के प्रबंध की आवश्यकता है, जिसे अपनी सफलता केवल भागीदारों के लाभकी दृष्टिसे मापनी होगी। उस प्रकार की व्यवस्था के अध्यक्ष के लिए हमें बड़े दृढ़ व्यक्ति की आवश्यकता होगी, क्यों?"

एक धुँधले प्रवाह ने लॉरिन शॉ का मुँह गरम कर दिया—"हाँ।"

"और किसी योग्य व्यक्ति के लिए भी यह बड़ा काम होगा! उसे अपने आपको उसमें डाल देना पड़ेगा—इस काम में उसे आत्म-बलिदान

करना पड़ेगा ?"

शॉ झिझका और स्थिर दृष्टि से देखने लगा—"यदि वह ठीक व्यक्ति हुआ तो उस ओर से उसे चिन्ता करने की बात नहीं है।"

"उसे किस बात से ऐसी प्रेरणा प्राप्त होगी ?" डॉन वॉलिंग ने पूछा और प्रथम बार उसके स्वर में आक्रमण की तीव्र कड़क भरी हुई थी— "यह तुम मानोगे कि कोई प्रेरणा तो होनी ही चाहिए ?"

लॉरेन शॉने बलपूर्वक ठंडी हँसी हँस दी —"मैं कह सकता हूँ कि साठ सहस्र डालर प्रतिवर्ष तो बहुत अच्छी प्रेरणा होगी।"

"तुम कर सकोगे ?" डॉन वॉलिंग का स्वर आश्चर्य के साथ तड़प गया— "क्या तुम सचमुच समझते हो कि उस योग्यता का व्यक्ति रुपये के लिए अपना जीवन बेचने को तैयार होगा—टैक्स देनेके पश्चात् साठ हज़ार में से उसके पास जो कुछ रहेगा उसके लिए ?"

ड्वाइट प्रिस की दबी हुई ध्वनि बीच में अचानक टोक उठी—"आप पुरस्कार में उसे एक विमान भी दे सकते हैं।"

शॉ के कंठ पर इसका प्रवाह चलते हुए धब्बे के समान फैल गया—"हाँ, अवश्य; उसमें रुपये से भी अधिक बात है।"

"क्या ?" डॉन वॉलिंग ने पूछा—"जो अभी वाल्ट ने कार्य करने की भावना की बात कही है। क्या उससे तुम्हें संतोष होगा, लॉरेन ? मान लो, तुम्हीं ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष होते।" मेरी वॉलिंग का हृदय स्थिर हो गया। अब उसका शरीर डॉन के कथन की आघात की लहर से तन गया। उसे उसकी आशा नहीं थी... कि यह बात खुले में ला दी जायगी... और उस विचित्र शान्ति ने यह स्पष्ट कर दिया कि औरों को भी इसकी आशा नहीं थी।

डॉन वॉलिंग आगे की ओर झुक गया—"मान लो, तुम्हें अगले बीस वर्ष बिताने हैं। अपने सारे सक्रिय-जीवन को—वह करनेमें, जो तुम कहते हो कि करना चाहिए। क्या तुम अपने जीवन का कार्य इस बात से माप कर सन्तुष्ट हो जाओगे कि तुमने भागीदारों का लाभ कितना चढ़ा दिया है ? क्या तुम अपने जीवन को सफल मानोगे यदि तुमने यह लाभ तीन डालर, चार डालर या पाँच या छः या सात तक बढ़ा दिया। क्या यही तुम मरने के पश्चात् अपनी समाधि के पत्थर पर खुदवा देना चाहते हो— ट्रेडवे कॉर्पोरेशन के लाभ की पराकाष्ठा ?"

शॉ के मुख पर रक्त का रंग दौड़ गया, किन्तु मेरी वॉलिंग ने देखा कि यह

उस प्रकार की विवशता का रंग नहीं है, जो पराजय स्वीकार कर ले, वरन् निराशा से उत्पन्न क्रोध का रंग है।

पराजित योद्धा की भाँति शॉ ने बात बदल कर इस आक्रमण से बचने का प्रयत्न किया—"यह सब ठीक है, श्री वॉलिंग। यह उदात्त प्रवृत्ति बनाना कि रुपये का कोई महत्त्व नहीं है। किन्तु तुम अगले महीने कैसे काम करोगे यदि श्रमिक संघवालों से काम तो पूरा करने को कहोगे और वे जो छः सेंट प्रति घंटा माँग रहे हैं वह नहीं दोगे ?"

जार्ज कासवेल अपनी कुर्सी में असुविधा के साथ इधर-उधर करते हुए कुड़बुड़ाने लगा। मेरी वॉलिंग ने शॉ के इस बात को टालने के दुर्बल ढंग पर उसकी निराशा समझ ली। क्या डॉन ने भी यह देख लिया था ? क्या उसने यह समझ लिया कि कासवेल भी शॉ से अलग किया जा सकता है— कि कासवेल संभवतः उसे वह एक मत दे दे जिसकी उसे आवश्यकता थी। डॉन वॉलिंग की आँखे अभी तक शॉ पर जमी हुई थीं—"काम पूरा करने की कौन-सी भावना तुम मुझे दोगे ? यह आशा कि यदि वे कुछ थोड़ा काम बढ़ा दें और अपना पसीना बहाकर उत्पादन को और भी वेगशील कर लें, कि हम अपने भागीदारों के लाभ को दो डालर से बढ़ाकर दो डालर दस सेंट कर दें ?"

उसके स्वर में मुस्कान भरी हुई थी, जो उसके व्यंग्य को मंद किये जा रही थी। किन्तु अब ज्योंही उसकी आँखों ने शॉ को छोड़ा और सारे कमरे को घूमकर देखा तो उसे अपना पक्ष सधा हुआ प्रतीत हुआ—"लॉरेन ठीक कहते हैं कि भागीदारों के प्रति भी हमारा कुछ कर्तव्य है। किन्तु केवल लाभ देनेकी अपेक्षा सबसे बड़ा धर्म यह है कि हमें यह कंपनी जीवित बनाये रखनी होगी। यही महत्त्व की बात है। कंपनी भी मनुष्य के समान ही होती है। कोई भी मनुष्य केवल रुपयेके लिए ही काम नहीं करता। यही पर्याप्त नहीं है। यदि आप यह प्रयत्न करते हैं तो आप उसकी आत्मा को भूखा मारते हैं और इसी प्रकार आप इसी कंपनी को भी मृत्यु के मुख में पहुँचा सकते हैं। हाँ, मैं जानता हूँ, कभी-कभी हमारे कारखाने के लोग ऐसे प्रतीत होते हैं कि उन्हें केवल अपने वेतन में और वृद्धि चाहिए—एक के बाद दूसरी वृद्धि, फिर तीसरी, चौथी—बस केवल वृद्धि—वेतनवृद्धि ! इसीसे हम समझते हैं कि उनके लिए अधिक पैसा ही सब कुछ है। किन्तु क्या हम उसके लिए उन्हें दोष दे सकते हैं ? ईश्वर जानता है। हमने ही उन्हें यह विश्वास दिलाने का पूर्ण प्रयास किया है कि रुपया ही हमारी पूर्णता का मानदंड रह गया है। गत वर्ष हमने जो सूचना-कार्यक्रम बनाया

था उसे ही ले लीजिए। हमने एक चलचित्र बनाया था, जिसमें हमारे आर्थिक विवरण का विश्लेषण किया गया था और जो हमने अपने सभी कारखानों में बतलाया था। लोग हमारे आर्थिक विवरण में बहुत रस नहीं ले रहे थे। हम जानते थे कि आरंभ करनेका यही उपाय है। तो हम लोगों ने क्या किया? हम लोगों ने उन्हें रस लेनेके लिए विवश किया। हमने डालरों को कारटून में बदला। कारटून के छोटे-छोटे डालर जो श्रमिकों की जेबों में, बटुओं में कूदकर पहुँच गये और दूसरे छोटे-छोटे कारटून-डॉलर जो लकड़ियों के ढेर-के-ढेर खींच लाये और कारखाने बनाने लगे और एक मोटा-सा बड़ा डॉलर जो वाशिंगटन गया और जिसे अँकल सॉम निगल गये। ओह! वह बहुत चतुराई के साथ बनाया गया था। उसे इस बातपर पुरस्कार भी मिला कि लोगों में व्यावसायिक समझ उत्पन्न करने के लिए यह अत्यन्त सुंदर साधन है। समझे? आप जानते हैं कि हमारे काम करनेवालों ने उसे क्या समझा—केवल एक बात, एक भयंकर बात कि इस कंपनी की व्यवस्था में अब केवल डॉलर का ही महत्त्व है—डालरों का—डॉलरों का और किसी बातका नहीं।"

"किन्तु वह कार्यक्रम भी श्री बुलार्ड का अपना विचार था।" शॉ ने तीव्र छुरी के वार के समान उसे काट दिया।

मेरी वॉलिंग इतनी पूर्णता के साथ भावमग्न हो गयी थी कि उसकी सावधानी समाप्त हो गयी और शॉ की रुकावट अत्यन्त घातक आश्चर्य के समान प्रकट हुई। उसकी आँखें अपने पति की ओर चमक उठीं—क्या कहीं वह कुठौर पर तो नहीं पकड़ गया है?

"नहीं; मैं नहीं समझता कि आप उसे केवल श्री बुलार्ड का ही विचार कह सकते हैं।" डॉन वॉलिंग ने कहा—"यह ऐसी बात है जो आज सारे वातावरण में व्याप्त है, व्यवसाय के बहुत-से शीर्षस्थ लोग जानते हैं कि उन्होंने कुछ खो दिया है, पर यह निश्चय नहीं कह पा रहे हैं कि उन्होंने क्या खो दिया है और न यही कि उन्होंने कैसे खो दिया है। श्री बुलार्ड उन्हीं लोगों में से थे। वे एक विशाल उत्पादन का यंत्र बनाने में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने यह नहीं देखा कि वे उसे क्यों बना रहे हैं? यदि वे वास्तव में उसे जानते! संभवतः उन्होंने नहीं जाना।"

जूलिया ट्रेडवे प्रिंस का स्वर मेरी वॉलिंग के कानों के इतने पास बोला कि धीमी-सी फुसफुसाहट भी शान्ति में विस्फोट-सी प्रतीत हुई। उसने कहा—"क्या तुम जानते हो?"

मेरी वॉलिंग इस शान्ति के क्षण में साँस रोके बैठी रही। क्या मेरा पति इस प्रश्न का उत्तर दे सकता है ?

डॉन के मुख पर एक मुस्कराहट चमक गयी।

"हाँ; मैं समझता हूँ, मैं जानता हूँ।" उसने कहा—"आप जानती हैं कि श्री बुलार्ड के लिए व्यापार भी एक खेल था। बहुत गंभीर खेल था, फिर भी खेल था— उसी प्रकार जैसे योद्धा के लिए युद्ध खेल होता है। वे कभी रुपये के लिए किसी काम की चिन्ता नहीं करते थे। मैंने एक बार उन्हें कहते सुना था कि डॉलर तो काम चलायें रखने के साधन हैं। मैं नहीं समझता कि वे व्यक्तिगत अधिकार के सम्बन्ध में भी बहुत चिंतित थे—केवल अधिकार के लिए अधिकार। मैं समझता हूँ कि महापुरुष में प्रेरणा बनाये रखने की बात को समझाने के लिए यही सरल उपाय है—अधिकार के लिए लोभ। किन्तु मैं नहीं समझता कि ऐवरी बुलार्ड के सम्बन्ध में यह बात सत्य थी। उन्हें जो बात चलाये रखती थी, वह थी अपने में भयंकर विश्वास। यह बलीयसी प्रेरणा कि ऐसे काम किये जायें जो पृथ्वी पर कोई दूसरा न कर सके। उन्होंने उस समय कंपनी को बचाया, जब अन्य सभी व्यक्तियों ने उसे छोड़ दिया था। उन्होंने एक ऐसे व्यवसाय का बड़ा कॉर्पोरेशन बना दिया जिसमें सब कहते थे कि केवल छोटी कंपनियाँ ही सफल हो सकती थीं। उन्हें तभी प्रसन्नता होती थी, जब वे असंभव काम करने लगते थे और वे करते थे। अपने अहं को सन्तुष्ट करने के लिए वे कभी प्रशंसा और बड़ाई नहीं चाहते थे। यह भी नहीं चाहते थे कि कोई उनके इस कार्य को समझे। वे अकेले थे, किन्तु मैं नहीं समझता कि उस अकेलेपन ने कभी उन्हें बहुत चिंतित किया हो। वे इस टॉवर के शिखरपर स्थित व्यक्ति थे—आलंकारिक रूप में भी और वास्तव में भी। इसीसे उनके अहं की तृप्ति होती थी। यही उनकी शक्ति थी। किन्तु वास्तव में यही उनकी दुर्बलता भी थी।"

मेरी वॉलिंग ने आश्चर्य के साथ सुना। ये शब्द कहाँ से आ रहे हैं? ये शब्द जो वह पहले कह नहीं सकता था, किन्तु जो अब इतनी सरलता से इसके ओठों से निकले पड़ रहे हैं, क्या सचमुच डॉन बोल रहा है.....वही व्यक्ति, जो पहले उस अंधेरी रातके प्रश्नों का भी उत्तर नहीं दे सकता था ? उसने उसे अपनी कुर्सी से खड़े होते देखा और उस खड़े होने में वह उस दैत्य के समान प्रतीत हुआ, जो धरती से बाँध रखने वाले अपने कंधों को तोड़ रहा हो.. उन बंधनों को तोड़ फेंक रहा हो, जिन्होंने उसे ऐवरी बुलार्ड की अंधभक्ति में

बाँध रखा हो। वह अब अकेला खड़ा था. . . . स्वतंत्र।

"एक बात थी जो ऐवरी बुलार्ड कभी नहीं समझे।" डॉन वॉलिंग कहता गया—"उन्होंने यह कभी नहीं समझा कि दूसरे लोगों को भी वैसा ही गर्व होना चाहिए—कि एक बड़ी कंपनी के पीछे एक व्यक्ति के गर्व से कुछ अधिक होना चाहिए—कि वह सहस्रों लोगों का गर्व होना चाहिए। कंपनी तो सेना के समान है। वह अपने गर्व पर युद्ध करती है। आप केवल वेतन के चेक देकर युद्ध नहीं जीत सकते। संसार के इतिहास में किराये की कोई बड़ी सेना कभी नहीं बनी। जो व्यक्ति अपना जीवन उत्सर्ग करनेके लिए प्रस्तुत हो, उसका मूल्य आप पैसे से नहीं दे सकते। वह रुपये से कुछ अधिक चाहता है। संभवतः ऐवरी बुलार्ड ने यह बात कभी समझी हो—संभव है वे भूल गये हों। किन्तु यही उनकी भूल थी। पिछले वर्षों में वे बहुत अधिक व्यस्त हो गये थे। बहुत बड़ी कंपनी बनाने के युद्ध में वे विजयी हो गये थे। भवन बन चुका था—कमसे कम उस समय के लिए तो। उनके अहं को सन्तुष्ट करने के लिए कुछ और होना चाहिए और भी अधिक बिक्री—अधिक लाभ— कुछ भी। जैसे सोलह सौ सीरीज का बनाना।"

वह घूम कर डडले के सामने खड़ा हो गया— "क्या जब आप अपनी सोलह सौ वाली सीरीज बेचते हैं, तब आपके कार्यकर्ता प्रसन्न होते हैं? जब वे जानते हैं कि इसकी चमक उखड़ जायगी, पटरे खुल जायँगे और पाये ढीले हो जायेंगे?"

"किन्तु ये तो सस्ते सामान हैं।" डडले ने बुदबुदाहट के साथ आत्मरक्षा में कहा—"उसकी आवश्यकता है। हम किसी को धोखा नहीं देना चाहते। ग्राहक जानते हैं कि वे इतने मूल्य में इससे अच्छा नहीं पा. . . . . "

"क्या आप जानते हैं कि कारीगर लोग इसे बनाते समय क्या अनुभव करते हैं?" डॉन वॉलिंग ने पूछा। उसकी आँखें डडले से शॉ की ओर घूम गयीं— "आप उस संस्था के सम्बन्ध में क्या सोचते हैं, जो इस प्रकार का दरिद्र सामान बेचनेके लिए तैयार हो जाय, जिससे लाभ में एक पैनी वार्षिक और जुड़ जाय? क्या आप जानते हैं कि पाइक स्ट्रीट में ऐसे बहुत-से लोग हैं, जिन्होंने इस सोलह सौ वाली रीति पर काम करना अस्वीकार कर दिया है; ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने चार सेंट प्रति घंटा कटौती कराकर दूसरे विभागों में अपना नाम बदलवा लिया है।"

"नहीं; मैं यह नहीं जानता।" शॉ ने कहा और उसके स्वर के धीमेपन में उसके कवच में पहली पतली दरार का संकेत मिला—"मैं नहीं समझता कि

इस काम को छोड़ने से हमारी कोई बहुत बड़ी हानि हो जायगी। यह तो हमारे व्यवसाय का छोटा-सा भाग है।"

मेरी वॉलिंग के मन में एक स्वर अपने पतिकी ओर चिल्लाकर बोलना चाहता था कि तुमने आक्रमण करके जो आखेट किया है, उसे समाप्त करके विजय प्राप्त करो!.... क्या तुम नहीं देखते कि शॉ परास्त हो गया है, कि कासवेल तुम्हारा समर्थन कर रहा है, कि डडले केवल आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है?

किन्तु, डॉन वॉलिंग घूमा, खिड़की से बाहर देखते हुए और उसका स्वर इस प्रकार दूरसे सुनायी पड़ा मानो वह ट्रेडवे टॉवर के उस दूरस्थ श्वेत स्तंभ के शिखर से आ रहा हो।

"हाँ; हम वह काम बंद कर देंगे। हम कभी किसी व्यक्ति को ऐसा काम करने के लिए नहीं कहेंगे, जो उसके अपने भीतर के अभिमान को विष दे दे। हम किसी दिन कम मूल्य के फर्नीचर की एक दूसरी योजना खोल देंगे–एक भिन्न प्रकारका फर्नीचर–जो कुछ हम बना रहे हैं उससे पूर्णतः वैसे ही भिन्न, जैसे आजकल की मोटरगाड़ी प्राचीन मिल्स की गाड़ी से भिन्न थी। यह जब हम करने लगेंगे तभी वास्तव में हम बढ़ना प्रारंभ करेंगे।" उसका स्वर फिर कमरे में आ गया –"हम अब ट्रेडवे को बड़ी कंपनी समझते हैं। पर यह है नहीं। हम अपने को धोखा दे रहे हैं। हाँ, हम आजकल सबसे बड़े फर्नीचर उत्पादकों में से हैं, किन्तु इसका अर्थ क्या है?....कुछ नहीं। फर्नीचर का व्यवसाय तो बीस करोड़ डॉलर के आसपास का व्यवसाय है; किन्तु यह सारा व्यवसाय छत्तीस सौ उत्पादकों में फैला हुआ है। इस कुल का केवल तीन प्रतिशत हमारे पास है– कुल तीन प्रतिशत, बस। दूसरे व्यवसायों को देखिए; उनके मुख्य उत्पादकों का प्रतिशत देखिए। यदि जनरल मोटर्सवाले मोटर के उत्पादन के व्यवसाय का कुल तीन प्रतिशत ही काम करते रहते तो अबतक कबके बैठ गये होते? हमने तो अभी बढ़ना भी प्रारंभ नहीं किया है। मान लो कि हम कुल का पन्द्रह प्रतिशत प्राप्त कर लें और क्यों नहीं? दर्जनों व्यवसायों में, क्या यह नहीं हो रहा है–पन्द्रह प्रतिशत तो ट्रेडवे कॉर्पोरेशन आज से पाँचगुनी बड़ी हो जायगी। ठीक है, मैं जानता हूँ कि फर्नीचर के व्यवसाय में यह बात पहले कभी नहीं हुई; किन्तु क्या इसका यह अर्थ है कि हम ऐसा कर नहीं सकते? नहीं–क्योंकि यही बात हम करने जा रहे हैं।"

उसका स्वर ऊपर चढ़ाव की उस सीमा तक पहुँच चुका था कि उसके उत्तर में समवेत समर्थन होना चाहिए था। मेरी वॉलिंग ने अपने पतिके मुख पर तनाव भंग करने वाली मुस्कान देखी। जब उसने कमरे में चारों ओर दृष्टि घुमायी तो देखा कि जितने मुख उसकी ओर देख रहे थे, उन सब पर वह मुस्कान प्रतिबिंबित थी. . . .लॉरेन्स शॉ के मुख पर भी।

जार्ज कासवेल अपना हाथ बढ़ाये खड़ा हो गया—"हम सब तुम्हारे पीछे हैं, डॉन। मैं तुम्हें वचन दे सकता हूँ।"

"हा, श्रीमान् डॉन ? हम तुम्हारे साथ हैं।" वाल्ट डडले बमका।

शॉ ने चुपचाप हाथ मिलाया; किन्तु यह ऐसी मुद्रा थी जिसके लिए निष्ठा के वचन कहना आवश्यक नहीं था और अब जूलिया ट्रेडवे प्रिंस भी खड़ी हो गयी—"मैं समझती हूँ कि यह भोज का अवसर है, ड्वाइट ? क्या तुम कष्ट करोगे? हाँ नीना, क्या बात है ?"

नीना द्वार में खड़ी हुई थी—"श्री वॉलिंग के लिए टेलीफोन है। कोई सज्जन कह रहे हैं कि अत्यन्त आवश्यक है।" ड्वाइट प्रिंस आगे बढ़ा—"पीछे के भवन में उसका विस्तार है। आइए, मैं दिखा देता हूँ।" मेरी ने देखा कि जूलिया उससे कुछ बातचीत करना चाहती है; किन्तु जार्ज कासवेल बाधक बनकर आगे बढ़ गया—"मुझे भय है कि मुझे दौड़ जाना पड़ेगा। विमान प्रतीक्षा कर रहा होगा और छः बजे न्यूयॉर्क में एक विवाह के लिए लौट जाना है। सोमवार को मैं निश्चय ही आ जाऊँगा।"

"और आप मंगल को होनेवाली बोर्ड की बैठक के लिए भी ठहरेंगे।" जूलिया ने कहा।

"जहाँ तक मेरा प्रश्न है, सब ठीक हो गया है।" जॉर्ज कासवेल ने कहा—"किन्तु आप ठीक कहती हैं। हमें बोर्ड की औपचारिक रीति की आवश्यकता तो है ही।"

मेरी ने अनुभव किया कि किसी अन्यमनस्कता के क्षण में जूलिया का हाथ उसके हाथ में आ गया है और वह संसार की दृष्टि से ओझल हो गया है जिसमें बहते हुए मुख और तैरते हुए शब्द भरे हुए थे . . . . . . शॉ. . . . डडले. . . ऐरिका मार्टिन. . . सभी वही अनेक ही बातें विभिन्न रूपों में कह रहे थे . . . और तब धीरेसे यह चेतना आयी कि कोई दूसरा स्वर कुछ और कह रहा था और यह शब्द उस प्रेम के साथ कसकर पकड़े हुए हाथ से आ रहा था। अब वह जूलिया ट्रेडवे प्रिंस के साथ अकेली थी।

"तुम्हें बहुत गर्व होना चाहिए, मेरी!"

"है तो, पर भय भी है।"

"क्योंकि तुम उसे समझती नहीं?" उसे अनुभव हुआ कि उसका मन आश्चर्य से शून्य हो गया। जूलिया ट्रेडवे प्रिंस कैसे जान गयी... कोई भी कैसे जान सकता है?

"इसके सम्बन्ध में चिन्ता न करो, प्रिय?" जूलिया ने कहा– "तुम उसे कभी पूर्णतः नहीं समझ पाओगी। प्रयत्न भी मत करना। नहीं समझोगी तभी प्रसन्न रहोगी। वह भी प्रसन्न रहेगा। इस न समझने के कारण कभी-कभी तुम अकेलेपन का अनुभव करोगी, मेरी। जब वह तुम्हें बंद द्वार के पीछे रोक देगा, तब तुम सोचोगी कि वह तुम्हें भूल गया है–किन्तु जब द्वार खुलेगा और वह लौट आवेगा, तब तुम समझ लोगी कि उसकी पत्नी होना तुम्हारे लिए कितने सौभाग्य की बात है।"

"मैं जानती हूँ, मैं जानती हूँ।" वह बुदबुदायी और अपनी आँखों में झलक उठने वाले आँसुओं को पोंछने का उसने कोई प्रयत्न नहीं किया; क्योंकि उसने देखा कि जूलिया ट्रेडवे प्रिंस की आँखों के आँसू भी बिना पोंछे पड़े हैं। जूलिया ने जो कुछ कहा था, उसकी स्मृति अपने कानों में गूँजने तक उसने उन अंतिम शब्दों का अर्थ समझा, जो भूतकाल की क्रिया में कहे गये थे। क्या यह संभव है कि जूलिया ने...... दूर के पवन की सरसराहट की ध्वनि रुकती प्रतीत हुई।

नीना उनके आगे खड़ी थी। अनिश्चित रूप से एक थाली में कई गिलास और मदिरा की खुली हुई बोतल लिये हुए। श्री प्रिंस ने आठ गिलास लाने को कहा था, किन्तु.....।

"धन्यवाद है, नीना।" जूलिया ने उसके हाथसे थाली ले ली और धीरे से मेज पर रख दी। ज्योंही मेरी वॉलिंग ने जूलिया ने दिये हुए गिलास को स्पर्श किया कि एक चलते हुए क्षण में मेरी वॉलिंग ने अपने पति के मन का रहस्य समझ लिया। अब उसकी समझ में आ गया। वह बिना जाने जानती थी.... और मानो वह स्वप्न में कुछ कह रही हो। वह गिलास उठाकर कह रही थी–"ऐवरी बुलार्ड के लिए।" एक बहुत लम्बा क्षण बीता।

"धन्यवाद!" जूलिया ने कहा।

जब डॉन वॉलिंग कक्ष में लौटकर आया तो वे उस खिड़की पर खड़ी थीं, जो ट्रेडवे टॉवर की ओर थी। बहुत देर से उनमें एक शब्द की भी बातचीत नहीं हुई। शब्दों की आवश्यकता ही नहीं थी। दोनों एकसाथ घूमीं।

"खेद है कि इतनी देर लग गयी।" डॉन ने कहा—"संपर्क होने में कुछ कठिनाई हो गयी थी। क्या अन्य लोग चले गये?"

जूलिया ने सिर हिलाया।

"क्या ड्वाइट आ रहे हैं?"

"मैं समझता हूँ कि वे अभीतक वाल्ट डडले से बातचीत कर रहे हैं। मैंने उद्यान में उनका स्वर सुना है। लॉरेन शॉ तो जॉर्ज कासवेल को विमान के अड्डे पर ले जा रहे हैं।"

"फोन पर फ्रेड था"—डॉन वॉलिंग ने कहा—"आप जानती हैं कि उसने सबसे अधिक काम किया। यहाँ से वहाँ मेरी लैंड तक, जेसी ग्रिम से मिलने मेरीलैंड तक चला गया। बड़ा अच्छा काम किया—भ्रम दूर कर दिया। किन्तु मेरी यह समझ में नहीं आता कि मेरे लिए उसने इतना कष्ट किया क्यों?"

जूलिया की आँखें व्यंग्यात्मक आनंद के साथ चमक उठीं—"संभव है उसने तुम्हारे लिए न किया हो, कंपनी के लिए किया हो।"

उसका मुख धीरे-धीरे लड़कपन की खीस में फैलकर कोमल पड़ गया और वह भी बिना समझे हुए। मेरी वॉलिंग का हृदय उस समय उल्लास से दौड़ चला जब उसने डॉन को हँसकर कहते हुए सुना—"ठीक है, मैं सीख जाऊँगा। मुझे कुछ समय तो दीजिए।"

वह बदला नहीं है। वह कभी बदलेगा भी नहीं...... मुझे कभी यह न सोचना चाहिए कि वह बदल जायगा। जूलिया ठीक कहती थी..... उसे समझने का प्रयत्न न करो...... हाँ, यही सदा मेरी कठिनाई रही है। जब-जब मैंने उसे समझनेका प्रयत्न किया, तब-तब मैं भयभीत हो गयी। अब मैं कभी भयभीत नहीं होऊँगी........ कभी नहीं।

मिलबर्ग, पेंसिलवेनिया, ३.४३ तीसरा प्रहर

ऐरिका मार्टिन का हाथ दराज में बढ़ा चला गया और चिकनाहट के साथ क्रेप और साटिन की कोमलता में होता हुआ और कश्मीरी ऊनी पटकी उष्णता में होता हुआ अन्त में वहाँ पहुँचा, जहाँ उसकी अँगूठी रहित उँगलियों के छोर नें काँचकी कठोर ठंढक और चमड़े के चौखटे की कोमलता का अनुभव किया।

धीरे से उसने छिपे हुए स्थान से उसे उठा लिया। ऐवरी बुलार्ड को भी

बड़े महत्त्व का काम करता था। हाँ, लुइजी ने निश्चय कर लिया था कि मैं बड़ा भाग्यशाली व्यक्ति हूँ और वह भी ऐसे देश में, जहाँ दुर्ग के अधिष्ठाता के रूपमें सदा एक नये स्वामी (ड्यूक) का आगमन हुआ करता है।

३.५६ सायंकाल

ऐवरी बुलार्ड के कार्यालय में प्रविष्ट होनेके पश्चात् प्रारंभिक कुछ क्षणों में मेरी वॉलिंग ने अनुभव किया कि हमारा वहाँ उपस्थित होना अत्यन्त अनुचित हो रहा है। हम लोग इस प्रकार मृत्यु की सीमा में प्रविष्ट होकर अनादर के अपराधी हैं। वह जानती थी कि डॉन ने भी ऐसा ही अनुभव किया है; क्योंकि उसने भी कुछ घुमा-फिराकर कहा था—"मैं वास्तव में मंगल तक यहाँ नहीं आऊँगा।"

"मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि तुम मुझे यहाँ ले आये।" मेरी ने कहा—"अब मैं तुम्हारे यहाँ बैठे रहनेकी कल्पना कर सकती हूँ।"

"संभवतः तुम्हें बहुत बातों की कल्पना करनी पड़ेगी।" उसने ऐसे स्वर में कहा मानो वह प्रतिरोध की आशा कर रहा हो—"तुमने कभी सोचा भी नहीं होगा कि ऐसी बात हो जायगी। क्यों?"

मेरी ने कहा—"नहीं!" क्योंकि उसने सोचा कि डॉन यही कहलाना चाहता है और तब वह बोली—"आज जूलिया के यहाँ तुम बड़े भव्य दिखायी पड रहे थे। वहाँ जो कुछ तुमने कहा, उसका एक-एक शब्द मैं सदा स्मरण रखूँगी।"

"सच?" उसके हाथ ने उसकी कमर के घुमाव को घेर लिया। उसकी ओर देखते हुए मेरी ने देखा कि उसके मुँह पर स्वीकृति की लड़कपन से भरी हुई खीस विद्यमान थी—"यहाँ मैं यही स्मरण करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ कि मैंने वहाँ कहा क्या? मैने कोई सनकभरी प्रतिज्ञा तो नहीं की? क्यों?"

"केवल विश्व के पूर्णतः नवनिर्माण की।" वह हँसी और इस आशा के साथ स्तब्ध हो गयी कि यह क्षण समाप्त हो जायगा; यह विचित्र सहभागिता का क्षण, यह क्षण जब उसका और मेरा मस्तिष्क एक है, जब वह उसे पूर्णतः समझ सकती है।

किन्तु द्वार बन्द हो रहा था। डॉन का मुख गंभीर हो गया—"हे ईश्वर! कितना काम करना है? मैं समझता हूँ कि जूलिया के यहाँ ही मुझे बातचीत कर लेनी चाहिए थी... सोमवार के सबेरे के लिए उसे कुछ काम प्रारंभ